चुनिंदा मिज़ो कहानियों का हिन्दी अनुवाद और विश्लेषण

CHUNINDA MIZO KAHANIYON KA HINDI ANUVAD AUR VISHLESHAN

[मिज़ोरम विश्वविद्यालय, आइज़ोल के हिन्दी विषय में डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी (पीएच.डी.)

की उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध-प्रबंध]

A THESIS SUBMITTED IN PARTIAL FULFILLMENT OF THE REQUIREMENTS FOR THE DEGREE OF DOCTOR OF PHILOSOPHY

रोबी लललोमकिमी

ROBY LALLAWMKIMI

MZU Regd. No. 217 of 2005-06

Ph.D. Regd. No. MZU/Ph.D./1421 of 25.07.2019

हिन्दी विभाग

शिक्षा एवं मानविकी संकाय

DEPARTMENT OF HINDI

SCHOOL OF EDUCATION AND HUMANITIES

अगस्त, 2022

AUGUST, 2022

चुनिंदा मिज़ो कहानियों का हिन्दी अनुवाद और विश्लेषण

CHUNINDA MIZO KAHANIYON KA HINDI ANUVAD AUR VISHLESHAN

प्रस्तुतकर्ता

रोबी लललोमकिमी

हिन्दी विभाग

ROBY LALLAWMKIMI

Department of Hindi

शोध-निर्देशक

डॉ. अमिष वर्मा

हिन्दी विभाग

Dr. Amish Verma

Department of Hindi

मिज़ोरम विश्वविद्यालय, आइज़ोल के शिक्षा एवं मानविकी संकाय के अंतर्गत
हिन्दी विषय में डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी (पीएच.डी.) की उपाधि के
लिए अपेक्षित आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु प्रस्तुत शोध-प्रबंध

Submitted in partial fulfilment of the requirement of the degree of Doctor of Philosophy in Hindi of Mizoram University, Aizawl.

डॉ. अमिष वर्मा
सहायक आचार्य
हिन्दी विभाग
मिज़ोरम विश्वविद्यालय
आइज़ोल -796004

केंद्रीय विश्वविद्यालय
A Central University
(Accredited by NAAC with 'A' Grade)

Dr. Amish Verma
Assistant Professor
Department of Hindi
Mizoram University,
Aizawl-796004

Mobile No.: 09436334432 / 09774009181; E-mail: amishjnu@gmail.com; Website: www.mzu.edu.in

दिनांक: 01.08.2022

प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि **रोबी लललोमकिमी** ने मेरे निर्देशन में मिज़ोरम विश्वविद्यालय, आइज़ोल की **डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी (पीएच.डी.- हिन्दी)** की उपाधि हेतु **'चुनिंदा मिज़ो कहानियों का हिन्दी अनुवाद और विश्लेषण'** विषय पर शोध कार्य किया है। प्रस्तुत शोध कार्य शोधार्थी की अपनी निजी गवेषणा का फल है। यह इनका मौलिक कार्य है। जहाँ तक मेरी जानकारी है, प्रस्तुत शोध-प्रबंध या इसके किसी भी अंश को किसी विश्वविद्यालय या संस्थान में किसी प्रकार की उपाधि हेतु अद्यावधि प्रस्तुत नहीं किया गया है।

मैं प्रस्तुत शोध-प्रबंध को मिज़ोरम विश्वविद्यालय, आइज़ोल की **डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी (पीएच.डी.- हिन्दी)** की उपाधि हेतु मूल्यांकन के लिए प्रस्तुत करने की संस्तुति करता हूँ।

(डॉ. अमिष वर्मा)
शोध-निर्देशक

हिन्दी विभाग
मिज़ोरम विश्वविद्यालय
आइज़ोल

अगस्त, 2022

<u>घोषणा पत्र</u>

मैं **रोबी ललल़ोमकिमी** एतद् द्वारा घोषित करती हूँ कि प्रस्तुत शोध-प्रबंध की विषय-सामग्री मेरे द्वारा किए गए शोध कार्य का सुपरिणाम है। इस शोध-सामग्री के आधार पर न तो मुझे और जहाँ तक मुझे ज्ञात है, न किसी अन्य को कोई उपाधि प्रदान की गई है और न ही यह शोध-प्रबंध मेरे द्वारा कोई अन्य उपाधि प्राप्त करने के लिए किसी अन्य विश्वविद्यालय या संस्थान में प्रस्तुत किया गया है। इस शोध-प्रबंध लेखन के दौरान जिन ग्रंथों की सहायता ली गयी है, उसे समुचित रूप से उद्धृत किया गया है।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध मिज़ोरम विश्वविद्यालय, आइज़ोल के सम्मुख हिन्दी विषय में **डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी (पीएच.डी.- हिन्दी)** की उपाधि के लिए प्रस्तुत किया जाता है।

(रोबी ललल़ोमकिमी)
शोधार्थी

(प्रो. सुशील कुमार शर्मा)
अध्यक्ष

(डॉ. अमिष वर्मा)
शोध-निर्देशक

भूमिका

प्रस्तुत शोध प्रबंध का विषय है- 'चुनिंदा मिज़ो कहानियों का हिन्दी अनुवाद और विश्लेषण'। भारत का एक राज्य होते हुए भी मिज़ोरम से, यहाँ के समाज से, यहाँ की संस्कृति से तथा मिज़ो साहित्य से भारत के अन्य प्रदेश काफी अरसे से अनजान रहे हैं, जिसका मुख्य कारण इसकी भौगोलिक दूरी के साथ-साथ सांस्कृतिक एवं भाषागत भिन्नता है। भारत में मिज़ोरम और यहाँ के लोगों के बारे में जानने वालों की संख्या बहुत ही कम है और जो मिज़ो लोगों और यहाँ की संस्कृति के बारे में जानते हैं वे भी कई बार आधी-अधूरी बातें ही जानते हैं। किसी भी समाज को जानने का एक अच्छा और सरल माध्यम उस समाज के साहित्य का अध्ययन हो सकता है। मगर मिज़ो साहित्य को पढ़ने-समझने के लिए मिज़ो भाषा का ज्ञान होना एक अनिवार्य शर्त है, जो कि सबके लिए असंभव है। इस असंभव को संभव में बदलने के लिए अनुवाद एक बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। मिज़ो भाषा में लिखी गई कहानियों का अनुवाद जब तक हिन्दी या अँग्रेजी में नहीं किया जाएगा, तब तक इसकी पहुँच केवल मिज़ो भाषा-भाषी तक ही सीमित होकर रह जाएगी। अतः अनुवाद दोनों पहलुओं से महत्वपूर्ण और जरूरी है। मिज़ोरम के लेखक मिज़ो भाषा के अतिरिक्त अँग्रेजी में भी रचनाएँ करते हैं। मगर हिन्दी में थोड़ा-बहुत मिज़ो साहित्य के अनुवाद के अलावा मौलिक रचनाएँ न के बराबर हुई हैं। अतः मिज़ो साहित्य के विकास एवं प्रगति के लिए बहुत जरूरी है कि उनका ज्यादा-से-ज्यादा अनुवाद हिन्दी एवं अन्य भाषाओं में हो।

मैंने जब अपनी पढ़ाई को जारी रखने के लिए मिज़ोरम विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में पीएच.डी. में प्रवेश लिया, तब शुरुआत से ही मन में विषय-चयन को लेकर कई दुविधाएँ थीं। मुझे कथा-साहित्य में रुचि रही है, इसलिए चाहती थी कि मैं कथा साहित्य

पर ही शोध कार्य करूँ। जब मैंने विषय-चयन के बारे में हिन्दी विभाग के अपने शिक्षक डॉ. अमिष वर्मा से सुझाव माँगा तो उन्होंने मुझे मिज़ो कहानियों के अनुवाद पर काम करने की सलाह दी। उनके अनुसार यह अपने आप में एक नया और महत्वपूर्ण काम था। मुझे उनका सुझाव बहुत अच्छा लगा और सौभाग्य से आगे चलकर मुझे उन्हें अपने शोध-निर्देशक के रूप में चुनने का अवसर भी मिला। इस विषय के माध्यम से मुझे मिज़ो साहित्य के विषय में बहुत कुछ जानने-समझने का अवसर मिला और बहुत सारी नयी जानकारियाँ प्राप्त हुईं।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध में दस मिज़ो कहानियों का अनुवाद और विश्लेषण किया गया है। मिज़ो कहानी लेखन की शुरुआत 1937 में हुई। इस तरह मिज़ो कहानी की अवधि लगभग 85 वर्षों की है। यदि हम 85 वर्षों की इस अवधि को दशकों में बाँटें तो नौ दशक होंगे। हमने शोध-प्रबंध के लिए नौ मिज़ो लेखकों की दस कहानियों को चुना, जिसमें प्रथम मिज़ो कहानी के साथ-साथ नौ ऐसी कहानियाँ शामिल हैं, जो अपने दशक की प्रतिनिधि कहानियाँ मानी जा सकती हैं और उनके कथाकार मिज़ो साहित्य के प्रसिद्ध लेखक हैं। इनमें से कई कहानियों को उनकी लोकप्रियता एवं महत्ता के कारण मिज़ोरम के कॉलेजों एवं मिज़ोरम विश्वविद्यालय के मिज़ो विभाग के पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है। इनमें से नौ कहानियों का अँग्रेजी में भी अनुवाद किया जा चुका है। इन कहानियों को चुनने की प्रक्रिया में मुझे मिज़ोरम विश्वविद्यालय के मिज़ो एवं अँग्रेजी विभाग के शिक्षकों से काफी सहयोग मिला। अतः मैं उनकी सदा आभारी रहूँगी।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध को पाँच अध्यायों में बाँटा गया है। प्रथम अध्याय का शीर्षक **'मिज़ो कहानियों का उद्भव-विकास एवं चयनित कहानीकारों का परिचय'** है। इसके अंतर्गत दो उप-अध्याय रखे गए हैं। प्रथम उप-अध्याय है **'मिज़ो कहानियों का उद्भव और विकास'**। इसके अंतर्गत मिज़ो कहानियों के उद्भव एवं विकास का विवेचन किया गया है।

इसमें मिज़ो साहित्येतिहास के काल-विभाजन और उनके नामकरण पर बात करते हुए मौलिक मिज़ो कहानियों के उद्भव एवं उसकी विकास प्रक्रिया का अध्ययन किया गया है। इस अध्याय का दूसरा उप-अध्याय है **'चयनित कहानीकारों का परिचय'**। इसके अंतर्गत अनुवाद के लिए चुनी गईं दसों कहानियों के लेखकों का संक्षिप्त परिचय दिया गया है।

द्वितीय अध्याय **'मिज़ो कहानियों का हिन्दी में अनुवाद'** है। इस अध्याय के अंतर्गत चुनिंदा दस मिज़ो कहानियों का हिन्दी में अनुवाद किया गया है। प्रत्येक कहानी को एक उप-अध्याय के रूप में रखा गया है और इस तरह इस अध्याय में कुल दस उप-अध्याय हैं। अनुवाद के लिए मूल सामग्री कुल 182 पृष्ठों की है, जिसका अनुवाद लगभग 225 पृष्ठों में हो पाया है।

तृतीय अध्याय **'मिज़ो से हिन्दी अनुवाद की समस्याएँ'** है। इस अध्याय को दो उप-अध्यायों में बाँटा गया है। इस अध्याय का पहला उप-अध्याय **'सांस्कृतिक भिन्नता: रचना की संवेदना के अनुवाद की समस्या'** है। इस उप-अध्याय के अंतर्गत हिन्दी प्रदेश तथा मिज़ो समाज की सांस्कृतिक भिन्नता के कारण अनुवाद के दौरान उत्पन्न हुई समस्याओं पर प्रकाश डाला गया है। सांस्कृतिक भिन्नता के कारण मिज़ो भाषा के कई शब्दों का हिन्दी में समतुल्य खोजना एक चुनौती भरा काम था। कई बार अनुवाद की प्रक्रिया में समतुल्य शब्दों के अभाव में मिज़ो शब्दों हो व्याख्यायित करते हुए विस्तार से समझाना पड़ा है। इस अध्याय का दूसरा उप-अध्याय **'भाषिक भिन्नता: मिज़ो तथा हिन्दी भाषा की भिन्न प्रकृति'** है। इस उप-अध्याय के अंतर्गत हिन्दी तथा मिज़ो भाषा की भिन्नता के कारण अनुवाद के दौरान उत्पन्न हुई समस्याओं पर प्रकाश डाला गया है। मिज़ो तथा हिन्दी भाषा की प्रकृति व्याकरणिक दृष्टि से एक दूसरे से भिन्न है और मिज़ो समाज में प्रचलित कई ऐसी कहावतें एवं मुहावरे हैं जिनका हिन्दी में पर्याय नहीं मिलता है। ऐसी स्थिति में जिन-जिन

समस्याओं का सामना करना पड़ा है और जिस प्रकार उनका समाधान किया गया है, उस पर इस उप-अध्याय में प्रकाश डाला गया है।

चतुर्थ अध्याय **'अनूदित कहानियों का विश्लेषण: संवेदना पक्ष'** है। इस अध्याय को चार उप-अध्यायों में बाँटा गया है। पहला उप-अध्याय **'मिज़ो समाज और संस्कृति की अभिव्यक्ति'** है। इस उप-अध्याय में चयनित दस मिज़ो कहानियों में अभिव्यक्त मिज़ो समाज एवं संस्कृति के विभिन्न पक्षों का विश्लेषण किया गया है। दूसरा उप-अध्याय **'मिज़ो समाज पर ईसाइयत का प्रभाव'** है। मिज़ो समाज पर ईसाइयत का बहुत गहरा प्रभाव रहा है। चयनित कहानियों में भी यह दिखाई पड़ता है, जिसका इस उप-अध्याय के अंतर्गत विश्लेषण किया गया है। तीसरा उप-अध्याय **'मिज़ो समाज का स्त्री पक्ष'** है। इसके अंतर्गत मिज़ो कहानियों के माध्यम से मिज़ो समाज में स्त्रियों की वास्तविक स्थिति पर प्रकाश डाला गया है, जिसमें बिन ब्याही माँ, विधवा या सामान्य स्त्रियों की विभिन्न समस्याओं के संबंध में विवेचन किया गया है। इस अध्याय का चौथा उप-अध्याय **'अन्य विविध पक्ष'** है। इसके अंतर्गत अनूदित मिज़ो कहानियों में अभिव्यक्त अन्य विभिन्न मुद्दों का विवेचन किया गया है, जैसे मिज़ो समाज में शराब व ड्रग्स की समस्या, मिज़ो विद्रोह, मिज़ो समाज में 'लसी' की परिकल्पना, राजनीतिक भ्रष्टाचार, आदि। इस उप-अध्याय में उन तमाम पक्षों का विश्लेषण किया गया है, जिनका चित्रण अनूदित कहानियों में मिलता है।

शोध-प्रबंध का पंचम अध्याय **'अनूदित कहानियों का विश्लेषण: कला पक्ष'** है। इस अध्याय को दो उप-अध्यायों में बाँटा गया है। पहला उप-अध्याय **'कथा-शिल्प'** है। इसके अंतर्गत चयनित कहानियों में प्रयुक्त विभिन्न शैलियों जैसे वर्णनात्मक शैली, आत्मकथा

शैली, व्यंग्यात्मक शैली, पूर्वदीप्ति शैली, आदि पर विवेचन किया गया है। पंचम अध्याय का दूसरा उप-अध्याय **'भाषा'** है। इसके अंतर्गत चुनिंदा मिज़ो कहानियों की भाषा का विवेचन किया गया है। इस उप-अध्याय में मिज़ो कहानियों में प्रयुक्त अँग्रेजी तथा हिन्दी के शब्दों के साथ-साथ प्रयुक्त मुहावरों एवं कहावतों का भी विवेचन किया गया है।

अंत में उपसंहार है जिसमें शोध के निष्कर्षों का समाहार प्रस्तुत किया गया है।

प्रस्तुत शोध कार्य में अनुवाद के लिए जिन नौ कहानीकारों की दस कहानियों को चुना गया है, उनमें से वर्तमान में केवल तीन कहानीकार ही हमारे बीच जीवित हैं और अन्य छह की मृत्यु हो चुकी है। मैंने इन तीनों कहानीकारों वान्नेइहत्लुआङा, सी. ललनुनचङा और ललरममोया ङेन्ते जी से फोन पर साक्षात्कार के लिए बात की। इन तीनों कहानीकारों ने उनकी कहानियों के हिन्दी में अनुवाद किए जाने पर अपनी खुशी जाहिर की और मुझे भविष्य के लिए अपनी शुभकामनाएँ दी। वान्नेइहत्लुआङा जी अपनी पारिवारिक व्यस्तता के कारण अपना साक्षात्कार उपलब्ध नहीं करा पाए। मगर उन्होंने कहा है कि भविष्य में वे हमसे मिलने की जरूर कोशिश करेंगे। सी. ललनुनचङा जी और ललरममोया ङेन्ते जी ने मेरी लिखित प्रश्नावली का जवाब अपने साक्षात्कार के रूप में उपलब्ध कराया है। चूँकि ये दोनों ही कहानीकार हिन्दी में लिखने-बोलने में असमर्थ हैं, इसलिए इन्होंने अपना साक्षात्कार मिज़ो में लिखित रूप में उपलब्ध कराया, जिसका मैंने हिन्दी में अनुवाद किया है। हिन्दी में अनूदित साक्षात्कार को शोध प्रबंध में परिशिष्ट के अंतर्गत रखा गया है। इन दोनों लेखकों के प्रति मैं हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ कि इन्होंने अपना कीमती समय निकाला और अपने महत्वपूर्ण विचारों के साथ-साथ अपनी रचनाओं के बारे में कुछ मूलभूत जानकारियाँ उपलब्ध करायीं।

इस शोध-प्रबंध के लिए सामग्री संकलन में कई समस्याएँ आयीं। 'आउट ऑफ प्रिंट' होने के कारण कई आधार ग्रंथ एवं मिज़ो भाषा और साहित्य की किताबें दुकानों एवं पुस्तकालयों में भी अनुपलब्ध थीं। इन किताबों और शोध से जुड़ी दूसरी सामग्री उपलब्ध कराने में मिज़ोरम विश्वविद्यालय के अँग्रेजी एवं मिज़ो विभाग के शिक्षकों, गवर्नमेंट जे. थनकिमा कॉलेज के शिक्षकों, मिज़ो लेखकों एवं उनके परिजनों का और मिज़ो विभाग की विद्यार्थी ललछनहिमी और मेरे मित्र सी. ललरिनदिका का निःस्वार्थ सहयोग मिला। मैं सभी को सहृदय आभार व्यक्त करती हूँ।

मैं अपने शोध-निर्देशक डॉ. अमिष वर्मा को धन्यवाद देती हूँ, जिनके मार्गदर्शन एवं सहयोग के कारण ही मैं आज यह शोध-प्रबंध जमा कर पा रही हूँ। सबसे पहले तो उन्होंने मुझे अपने निर्देशन में कार्य करने का मौका दिया, इसके लिए मैं उनकी सदा आभारी रहूँगी। विषय चयन से लेकर शोध-प्रबंध जमा करने तक के इस सफर में मुझे उनका जो सहयोग प्राप्त हुआ है उसे शब्दों में बयाँ कर पाना मुश्किल है। उन्हीं की मेहनत, लगन व दृढ़ता का परिणाम है कि मैं यह शोध-प्रबंध समय पर जमा कर पा रही हूँ। उन्हीं के प्रोत्साहन एवं विश्वास के कारण मुझे आत्मविश्वास के साथ इस कार्य को करने की ऊर्जा मिल पाई है। इस कार्य को करने की प्रक्रिया में मुझे उनसे बहुत कुछ सीखने का और अपनी गलतियों को जानने एवं सुधारने का मौका मिला है, जो कि जीवन भर मेरे काम आएगा। इनके निःस्वार्थ निर्देशन व सहयोग के लिए मैं इन्हें हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ।

मिज़ोरम विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के गुरुजन प्रो. सुशील कुमार शर्मा, प्रो. संजय कुमार, डॉ. सुषमा कुमारी और डॉ. अखिलेश कुमार शर्मा जी को मैं तहे दिल से धन्यवाद देती हूँ जिनसे मुझे समय-समय पर सहयोग प्राप्त होता रहा है। उनके आशीर्वाद एवं प्रोत्साहन का ही परिणाम है कि मैं आज अपना शोध-प्रबंध जमा कर पा रही हूँ।

मैं अपने माता-पिता, अपनी दोनों बहनों, अपनी भांजी केरोल ललदिनत्लुआङी तथा अपने मित्र सी. ललरिनदिका के प्रति आभारी हूँ, जिनके सहयोग, प्रोत्साहन एवं आशीर्वाद से यह शोधकार्य पूरा हो पाया है।

अंत में अपने सभी मित्रों, विशेषकर पूजा शर्मा और कुसुम कुमारी के प्रति आभार प्रकट करती हूँ, जिन्होंने मुझे अपने आलस्य को त्यागकर काम को पूरा करने के लिए समय-समय पर प्रोत्साहित किया।

29 जुलाई, 2022 **रोबी लललोमकिमी**

मिज़ोरम विश्वविद्यालय

आइज़ोल

विषयानुक्रमणिका

	पृष्ठ संख्या
भूमिका	i - vii
अध्याय 1: मिज़ो कहानियों का उद्भव-विकास एवं चयनित कहानीकारों का परिचय	1 - 26
1.1 मिज़ो कहानियों का उद्भव और विकास	
1.2 चयनित कहानीकारों का परिचय	
अध्याय 2: मिज़ो कहानियों का हिन्दी में अनुवाद	27 - 256
2.1 लली (ललओमपुई) [लली (ललओमपुई)]	
2.2 आऊखोक लसी (गुंजनस्थल की लसी)	
2.3 सिल्वरथङी (सिल्वरथङी)	
2.4 राउथ्ललेङ (भटकती रूह)	
2.5 पोलितिक जिप्सी (पोलिटिक जिप्सी)	
2.6 लेमचन्ना खोवेल (दुनिया एक रंगमंच है)	
2.7 लामखुआङ (कटहल का पेड़)	
2.8 थ्ललेर पङपार (रेगिस्तान का फूल)	
2.9 थिःना थङवल्ह (मौत का महाजाल)	
2.10 खामोश है रात (खामोश है रात)	
अध्याय 3: मिज़ो से हिन्दी अनुवाद की समस्याएँ	257 - 285
3.1 सांस्कृतिक भिन्नता: रचना की संवेदना के अनुवाद की समस्या	
3.2 भाषिक भिन्नता: मिज़ो तथा हिन्दी भाषा की भिन्न प्रकृति	
अध्याय 4: अनूदित कहानियों का विश्लेषण: संवेदना पक्ष	286 - 336
4.1 मिज़ो समाज और संस्कृति की अभिव्यक्ति	
4.2 मिज़ो समाज पर ईसाइयत का प्रभाव	
4.3 मिज़ो समाज का स्त्री पक्ष	
4.4 अन्य विविध पक्ष	
अध्याय 5: अनूदित कहानियों का विश्लेषण: कला पक्ष	337 - 367
5.1 कथा-शिल्प	
5.2 भाषा	
उपसंहार	368 - 379
परिशिष्ट	380 - 399
ललरममोया डेन्ते का साक्षात्कार	
सी. ललनुनचङा का साक्षात्कार	
संदर्भ ग्रंथ सूची	400 - 403
बायो डाटा	
अनुसंधित्सु का विवरण	

अध्याय-1

मिज़ो कहानियों का उद्भव-विकास एवं चयनित कहानीकारों का परिचय

1.1 मिज़ो कहानियों का उद्भव और विकास

1.2 चयनित कहानीकारों का परिचय

1. मिज़ो कहानियों का उद्भव और विकास

विश्व की विभिन्न भाषाओं और उनके समाजों की ही तरह मिज़ो भाषा और समाज में भी साहित्य की विभिन्न विधाओं में लेखन होता रहा है। ऐतिहासिक दृष्टि से देखा जाए तो मिज़ो भाषा के लिखित साहित्य की आयु अभी बहुत ही कम है। लेकिन मिज़ो समाज में अपने विचारों, संवेदनाओं की अभिव्यक्ति के लिए साहित्य का सहारा तब से लिया जा रहा है, जब इनके पास अपनी लिपि भी न थी। यद्यपि कई मिज़ो बुजुर्गों का कहना है कि प्राचीन मिज़ो समाज में भी मिज़ो भाषा की अपनी कोई लिपि हुआ करती थी और जिसे जानवरों की खाल पर लिखा जाता था। लेकिन इस बारे में प्रामाणिक तौर पर कुछ कहा नहीं जा सकता क्योंकि उस तथाकथित प्राचीन मिज़ो लिपि में लिखा हुआ कुछ भी प्राप्त नहीं होता। ज़ाहिर है अन्य भाषा-साहित्यों की ही तरह मिज़ो साहित्य की यह परंपरा भी स्वाभाविक तौर पर मौखिक से लिखित रूप की ओर बढ़ी। यह बात सही है कि मिज़ो साहित्य अभी काफी नया है, मगर अपनी छोटी-सी आयु में जिस गति से इसका विकास हुआ है और हो रहा है, वह बेहद सरहनीय है।

मिज़ो भाषा की वर्तमान लिपि मात्र 127 वर्ष पुरानी है, अतः लिखित मिज़ो साहित्य की आयु इससे भी कम है। इस वर्तमान लिपि के आने के लगभग 20 वर्ष पूर्व ही कैप्टन थॉमस हर्बर्ट लेविन (टी. एच. लेविन) ने मिज़ो भाषा को लिपि देने का प्रयास किया था। इन्होंने सन् 1870 के आसपास मिज़ो भाषा की तीन लोककथाओं को लिपिबद्ध कर अपनी एक पुस्तक में प्रकाशित किया। ये तीन लोककथाएँ थीं- 'चेमतातरोता', 'ललरुआङा' और 'कूङओरई'[1] जो उनकी पुस्तक *'Progress Coloquial Exercises in Lushai Dialect of the 'Dzo' or Kuki Language'* में सन् 1874 में सेंट्रल प्रेस कलकत्ता से प्रकाशित हुई थीं।[2] मिज़ो लोककथाओं को लिपिबद्ध करने का यह सर्वप्रथम प्रयास था। इस

पुस्तक में कुछ मिज़ो शब्दों और मिज़ो लोककथाओं का अंग्रेजी में अनुवाद भी किया गया था। हालाँकि इनके द्वारा प्रस्तावित लिपि का इस्तेमाल आगे नहीं किया गया, फिर भी इस पुस्तक का उपयोग बाद के ईसाई-मिशनरियों ने मिज़ो सीखने के लिए किया।[3] 11 जनवरी, 1894 को दो महत्त्वपूर्ण अंग्रेज ईसाई मिशनरी जे.एच. लॉरेन और एफ.डब्ल्यू. सैविज मिज़ोरम पहुँचे।[4] इन दोनों ईसाई मिशनरियों के योगदान से 1894 ई. में वर्तमान मिज़ो लिपि का स्वरूप प्रस्तुत हुआ तथा उसके अध्ययन-अध्यापन की प्रक्रिया आरंभ हुई। मिज़ो लिपि के आविष्कार, प्रचार एवं विकास में अंग्रेज सरकारी अधिकारियों, ईसाई-मिशनरियों और मिज़ो बुद्धिजीवियों का बहुत महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इन सब में अंग्रेज अधिकारी टी.एच. लेविन (1839-1916), जिन्हें मिज़ो लोग थङलिआना कहकर पुकारते थे, का योगदान सर्वप्रथम माना जा सकता है। इनके पद चिह्नों पर चलकर ही आगे कई मिज़ो लोककथाओं, लोकगीतों और किंवदंतियों को लिपिबद्ध किया गया और उनके अनुवाद का काम भी हुआ।

मिज़ो भाषा की लिपि के आने के बाद भी मौलिक कहानियों को अस्तित्व में आने में लगभग 64 वर्ष लग गए। मगर इस बीच इस समय के अंतराल का सदुपयोग मौखिक साहित्य (लोककथाओं एवं लोकगीतों) के लिप्यंतरण और मुद्रण में, अनुवाद के कार्य में, पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन में, मिज़ो भाषा की पाठ्य-पुस्तकों के निर्माण में, मिज़ो-अंग्रेजी शब्दकोशों के निर्माण में और बाइबिल का मिज़ो भाषा में अनुवाद करने जैसे कामों में किया गया। मिज़ो समाज में मौखिक रूप से कथा सुनने-सुनाने की परंपरा बरसों से थी। लिपि के आविष्कार के बाद लोककथाओं, किंवदंतियों, लोकगीतों आदि के लिपिबद्ध हो जाने के बाद इन्हें मिज़ो साहित्य की पूर्वपीठिका के रूप में स्वीकार किया गया है।

मौखिक परंपरा के साहित्य की मिज़ो साहित्य में अपनी विशेष महत्ता है। मौखिक परंपरा की शुरुआत कब हुई, यह ठीक-ठीक बता पाना असंभव होता है। मगर सन् 1870 के बाद मिज़ो लिपि अस्तित्व में आने लगी और मिज़ो लोकसाहित्य को लिपिबद्ध किया जाने लगा। हिन्दी साहित्येतिहास में जहाँ लोक साहित्य को स्थान नहीं दिया गया है, वहीं मिज़ो साहित्येतिहास में इनकी महत्ता को ध्यान में रखते हुए इसे विशेष स्थान दिया गया है। हालाँकि आरंभिक मिज़ो साहित्येतिहासकर साङलिआना और सिआमकिमा मिज़ो साहित्य का आरंभ 1894 से मानते हैं जब से मिज़ो भाषा में मौलिक लिखित रचनाएँ की जाने लगीं।[5]

किसी भी भाषा के साहित्य का अध्ययन उसके इतिहास ज्ञान के बिना अधूरा है। मिज़ो साहित्य का इतिहास लिखने का प्रयास बहुत कम किया गया है। मिज़ो साहित्येतिहासकार बी. ललथङलिआना ने सन् 1993 में प्रकाशित अपनी साहित्येतिहास की पुस्तक 'History of Mizo Literature (Mizo Thu leh Hla)' की भूमिका में लिखा है कि सन् 1983 के आसपास मिज़ो इतिहासकार पु सिआमकिमा ने 'Mizo Literature Chanchin' (मिज़ो साहित्य का इतिहास) विषय के अंतर्गत मिज़ो साहित्य का इतिहास लिखने का प्रयास किया, मगर केवल 17 पृष्ठ लिखने के बाद तथ्यों के अभाव में उन्होंने लिखना स्थगित कर दिया और इस कार्य को पूरा किए बिना ही 13 जनवरी, 1992 को उनका देहांत हो गया।[6]

बी. ललथङलिआना ने अपनी इसी पुस्तक की भूमिका में लिखा है कि उन्होंने अपने दो अन्य विद्वान साथियों डॉ. आर. एल. थनमोया तथा डॉ. ललत्लुआङलिआना खिआङते के साथ मिलकर सन् 1992 में मिज़ो साहित्य का इतिहास लिखने की योजना बनाई थी, मगर यह योजना भी सबकी अपनी-अपनी व्यस्तता के कारण पूरी न हो पाई।

बी. ललथङलिआना मिज़ो साहित्येतिहास लिखने की जरूरतों और महत्ता को समझते थे। उनके अनुसार सन् 1983 से नेहू (उत्तर पूर्व पर्वतीय विश्वविद्यालय) के अंतर्गत बी. ए. (मिज़ो) के पाठ्यक्रम के पेपर-III में, मिज़ो साहित्य के इतिहास को शामिल किया गया था। मगर पाठ्यक्रम में शामिल होने के दस साल बाद अर्थात् सन् 1993 तक भी कोई मिज़ो साहित्येतिहास नहीं लिखा गया। अतः उन्होंने सर्वप्रथम 1989 में 'Ka Lungkham - Introduction of Mizo Literature' (मिज़ो साहित्य का परिचय) लिखा और बाद में सन् 1993 में इन्होंने मिज़ो साहित्य के इतिहास का व्यवस्थित रूप 'History of Mizo Literature (Mizo Thu leh Hla)' नाम से प्रस्तुत किया। इन्होंने समस्त मिज़ो साहित्य को चार काल-खंडों में बाँटा। इनके द्वारा किया गया काल-विभाजन और नामकरण इस प्रकार है:

1. पूर्वजों का काल (मौखिक साहित्य)- 1200-1893 ई.
   क) प्रथम काल : जब वे रुन और टियाऊ के मध्य में निवास करते थे। - 1200-1700 ई.
   ख) द्वितीय काल : टियाऊ पार करने के बाद और ज़ौसाप (मिशनरियों) के आने के पूर्व।- 1700-1893 ई.
2. ज़ौसाप काल (मिशनरियों का काल) - 1894-1919 ई.
3. मध्य काल- 1920-1965 ई.
4. वर्तमान काल- 1966-2000 ई. [7]

मिज़ो साहित्य के इतिहास को चार काल-खंडों में बाँटते हुए बी. ललथङलिआना ने प्रथम दो काल खंडों का नामकरण मिज़ो इतिहास से जुड़ी महत्त्वपूर्ण घटनाओं के आधार पर किया है। इस साहित्येतिहास की विशेषता यह है कि इसमें मौखिक साहित्य को शामिल किया गया है और साथ ही पद्य विधा के अंतर्गत ईसाई स्तुति गीतों या भजनों एवं

शृंगारपरक गीतों को भी शामिल किया गया है। स्तुति गीतों या भजनों एवं शृंगारपरक गीतों को शामिल किए जाने के विषय में वे अपनी इस पुस्तक की भूमिका में लिखते हैं कि "मिज़ो लोगों में ईसाई-गीतों और शृंगारिक गीतों का बड़ा व्यापक और प्रभावपूर्ण स्थान रहा है।...मिज़ो लोगों के बीच इसके महत्त्वपूर्ण एवं व्यापक स्थान को देखते हुए हमने यह मानते हुए कि इसे शामिल किए बिना नहीं रहा जा सकता, इसे मिज़ो साहित्य में शामिल किया है।"[8]

बी. ललथङलिआना की इस इतिहास पुस्तक के आधार पर मिज़ो मौलिक कहानी लेखन की शुरुआत तृतीय काल-खंड में 1920 के बाद हुई। इन्होंने अपनी इस पुस्तक में 'लली' (ललओमपुई) को मिज़ो भाषा का द्वितीय उपन्यास माना है, मगर बाद के मिज़ो साहित्येतिहासकारों ने इसे मिज़ो की सर्वप्रथम मौलिक कहानी के रूप में स्वीकार किया है। मिज़ो साहित्येतिहास लेखन का इनका प्रयास सबसे पहला और महत्त्वपूर्ण प्रयास था।

बी. ललथङलिआना के बाद के मिज़ो विद्वानों ने भी मिज़ो साहित्येतिहास के अंतर्गत मौखिक परंपरा के साहित्य के अध्ययन को मिज़ो साहित्य के उद्भव एवं विकास को समझने के लिए महत्त्वपूर्ण माना है। इसलिए आगे चलकर भी मिज़ो साहित्येतिहासकारों द्वारा लोकसाहित्य को मिज़ो साहित्येतिहास में स्थान दिया गया है।

सन् 2013 में मिज़ोरम विश्वविद्यालय के मिज़ो विभाग द्वारा तैयार की गई मिज़ो साहित्येतिहास की पुस्तक 'History of Mizo Literature' (Bu Thar) का प्रकाशन हुआ। इस पुस्तक में भी मिज़ो साहित्य के इतिहास में मौखिक साहित्य को स्थान दिया गया है, क्योंकि मिज़ो साहित्येतिहासकारों का मानना है कि लोकसाहित्य एवं किंवदंतियाँ मिज़ो साहित्य के उद्भव एवं विकास को समझने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

मिज़ो साहित्य के 150 वर्षों के इतिहास को इस पुस्तक में अध्ययन की सुविधा के लिए चार काल-खंडों में बाँटा गया है। इस पुस्तक में मिज़ो साहित्येतिहास का यह काल विभाजन और उनका नामकरण इस प्रकार किया गया है:-

1) आदि काल: पूर्वजों का समय (1870 ई. से पूर्व)

2) प्रारंभिक काल: अंग्रेजों का समय (1870 ई. से 1920 ई. तक)

3) मध्यकाल: निकटवर्ती पिछली पीढ़ी का समय (1920 ई. से 1970 ई. तक)

4) वर्तमान काल: नयी पीढ़ी का समय (1970 ई. से अब तक)[9]

उपर्युक्त प्रथम काल-खंड के अंतर्गत मौखित साहित्य (लोक कथा, लोक गीत व किंवदंतियां) को स्थान दिया गया है। द्वितीय काल-खंड में इन लोक कथाओं व किंवदंतियों के लिप्यंतरित रूप को शामिल किया गया है जिन्हें सन् 1870 के बाद अंग्रेजों द्वारा मिज़ो लिपि के निर्माण के बाद लिपिबद्ध किया गया। इन लोककथाओं के अंतर्गत धरती एवं आकाश के अस्तित्व संबंधी कथाएँ, पृथ्वी लोक एवं आत्माओं के बीच के संबंध की कथाएँ, छूरा की कथाएँ एवं शृंगारपरक लोककथाएँ आदि आतीं है। जैसा कि पहले भी कहा जा चुका है, इस प्रक्रिया में अंग्रेज सरकारी अधिकारियों, ईसाई-मिशनरियों अथवा मिज़ो बुद्धिजीवियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। सन् 1894 के बाद ईसाइयत के प्रचार हेतु अंग्रेजी पुस्तकों तथा बाइबिल का भी मिज़ो में अनुवाद किया गया और साथ ही मिज़ो भाषा-शिक्षण के लिए पाठ्यपुस्तकों का भी निर्माण किया गया। दस पृष्ठों वाली 'MI-ZO TIR BU' (A Lusai Primer) मिज़ो भाषा में छपी मिज़ो भाषा की सबसे पहली पुस्तक है, जिसका प्रकाशन रेव.जे.एम लॉयड के अनुसार 22 अक्टूबर, 1895 को हुआ था।[10] मगर यह पुस्तक अब उपलब्ध नहीं है। इसी समय मिज़ो भाषा की पत्र-पत्रिकाएँ भी अस्तित्व में आने लगीं। मिज़ो भाषा के लिए लिपि के अस्तित्व में आने के बावजूद दूसरे काल-खंड अर्थात् 'प्रारंभिक काल: अंग्रेजों का समय (1870 से 1920)' तक मौलिक मिज़ो कहानियाँ नहीं लिखी गईं।

कहानी लेखन के अस्तित्व में आने से पहले मिज़ो भाषा में कई अन्य विधाओं के मौलिक रूपों का जन्म हुआ, जैसे- स्तुति या भक्ति गीत और नाटक। सन् 1908 से 1911 के बीच थङा नाम के एक मिज़ो युवक ने शिलांग में पढ़ाई करते समय मिज़ोरम की याद में दो गीतों की रचना की: “Mizoram, Mizoram ka thlahlel che” और “Mizo Fate u, Finna zawng ula”।[11] हालाँकि इससे पहले किसी गैर मिज़ो ज़ौसापथरा (कोई ईसाई मिशनरी) ने सन् 1903 में मिज़ो भक्ति गीत की रचना की थी। यदि नाटकों की बात करें तो मिज़ो साहित्येतिहासकार डॉ. ललत्लुआङलिआना खिआङ्ते ने ‘History of Mizo Literature (Bu Thar)’ पुस्तक के अपने लेख ‘Lemchan: Mizo Lemchan’ (नाटक: मिज़ो नाटक) में नाटकों के इतिहास का काल-विभाजन करते हुए सन् 1912-1924 तक के काल खंड को मिज़ो नाटकों का ‘The Rooted Period’ कहा है।[12] इसका आशय है कि मिज़ो में नाटक लिखने का आरंभ सन् 1912 से माना जा सकता है। मिज़ो साहित्य को मौटे तौर पर गद्य और पद्य के रूप में देखा जा सकता है। यहाँ पद्य के अंतर्गत तरह-तरह के गीत (लोकगीत या मौलिक गीत), स्तुति या भक्ति गीत और कविताएँ आती है। बी. ललथङलिआना के अनुसार 1965 के पूर्व कविताएँ (Hla-hril) न के बराबर थीं। सन् 1949 से ज़ीकपुई पा (के. सी. ललवुङा) ने ही कविताएँ लिखना आरंभ किया।[13]

मौलिक मिज़ो कहानी लेखन की शुरुआत मिज़ो साहित्येतिहास के तृतीय काल-खंड अर्थात् ‘मध्यकाल: निकटवर्ती पिछली पीढ़ी का समय (1920 से 1970)’ के दूसरे दशक में 1937 में एल. बिआकलिआना द्वारा रचित ‘लली (ललओमपुई)’ नामक कहानी से होती है। यह कहानी मिज़ोरम में आयोजित की गई कहानी लेखन प्रतियोगिता के लिए लिखी गई थी और उस प्रतियोगिता में इसे प्रथम पुरस्कार से नवाजा गया था। ‘लली’(1937) प्रथम

मौलिक मिज़ो कहानी है तथा एल. बिआकलिआना ने ही सन् 1936 में ‘होईलौपारी’ नामक एक उपन्यास की भी रचना की थी, जिसे मिज़ो का प्रथम उपन्यास माना गया है। अतः मिज़ो मौलिक कहानी लेखन का आरंभ सन् 1937 से हुआ और तब से लेकर आज तक कई मौलिक कहानियाँ लिखी गईं और लिखी भी जा रही हैं। 1937 से अब तक तकरीबन चौरासी वर्षों की अवधि में मिज़ो कहानी कथानक और शिल्प दोनों ही दृष्टियों से काफी विकसित हुई है।

मिज़ो साहित्येतिहास के अंतिम दो काल-खंडों में ही मौलिक कहानियों की रचना हुई और इस दौर में कई कहानीकार उभरकर कर सामने आए, जिन्होंने विभिन्न विषयों पर कहानियों की रचना की। उन कहानीकारों में एल. बिआकलिआना (1918-1941), कापह्लैया (1910-1940), ललजुईथङा (1916-1950), के. सी. ललवुङा उर्फ ‘जीकपुई पा’ (1929-1994), आर. ज़ुआला (1917-1990), थनसेइया (1929-2018), खोलकूंङी (1927-2015) आदि के नाम प्रमुख हैं। इनके अलावा भी कई महत्वपूर्ण कहानीकार हुए, मगर सभी का नाम गिना पाना यहाँ संभव नहीं है और ज़रूरी भी नहीं है। मगर एक बात स्पष्ट रूप से कही जा सकती है कि पुरुष कहानीकारों की तुलना में महिला कहानीकारों की संख्या काफी कम है। बहरहाल!

आरंभिक दौर की कहानियों की प्रवृत्तियों पर अगर ध्यान दें तो उनमें ईसाइयत एवं पश्चिमी साहित्य का गहरा प्रभाव देखने को मिलता है। आज की भी कई कहानियों में यह प्रभाव प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से दिखाई पड़ता है। इसका मुख्य कारण यह हो सकता है कि मिज़ोरम में ईसाइयत के आगमन के साथ-साथ मिज़ो भाषा की लिपि अस्तित्व में आई और ईसाइयत के प्रचार-प्रसार के बाद ही मौलिक लेखन कार्य की शुरुआत हुई। ईसाइयत ने मिज़ो समाज तथा संस्कृति को बहुत गहरे रूप में प्रभावित किया है, जिसकी छाया यहाँ की कहानियों में दिखाई पड़ती है। कहानीकारों ने ईसाई जीवन मूल्यों पर आधारित

कहानियों के साथ-साथ भूत-प्रेत और अलौकिक दुनिया से संबंधित और जासूसी कहानियाँ भी लिखी हैं। कई कहानियों में प्राचीन मिज़ो संस्कृति एवं परंपराओं का भी चित्रण हुआ है और समाज में व्याप्त कुरीतियों का भी उद्घाटन किया गया है। कहानी लेखन की यह प्रक्रिया सन् 1960 के उत्तरार्द्ध में मिज़ो विद्रोह के कारण कुछ थम-सी गई थी। इस दौर में कुछ गिनी-चुनी कहानियाँ ही लिखी गईं। फिर सन् 1980 और 1990 के दौर में मिज़ो कहानी लेखन में तेज़ी दिखाई पड़ने लगी।[14]

आरंभ में मिज़ो कहानी और उपन्यास में कोई स्पष्ट अंतर नहीं किया जाता था। प्रारंभिक मिज़ो कहानियाँ काफी लंबी-लंबी और कई अध्यायों या खंडों में विभक्त हैं तथा उनमें घटनाओं की बहुलता भी देखी जा सकती है। आरंभिक दौर में मिज़ो भाषा में सभी प्रकार की कथाओं को, चाहे वह लोक-कथा हो या कहानी हो या फिर उपन्यास, 'थोंथु' ही कहा जाता था। बाद में चलकर लंबी-लंबी कहानियों के समानांतर छोटी कहानियाँ भी लिखी जाने लगीं, जो प्रारम्भिक कहानियों और उपन्यासों की तुलना में संक्षिप्त और कम अध्यायों वाली होती थीं। लेकिन इस छोटी कहानी को भी मिज़ो भाषा में 'थोंथु' ही कहा जाता रहा। 'थोंथु' कही जाने वाली इन विभिन्न कथा-विधाओं को पढ़े बिना यह स्पष्ट कर पाना कठिन होता था कि यह कहानी है या उपन्यास। आगे चलकर कहानियों की लघुता के कारण इन्हें मिज़ो में 'थोंथु' या अधिक स्पष्ट रूप से 'थोंथु तोई' (short story) कहा गया और उपन्यासों को 'थोंथु फुअःथर' की संज्ञा दी गई। मगर बाद की तथा समकालीन कहानियों में यह समस्या बहुत कम हो गई है। अब साहित्यकारों के प्रयास से कथा लेखन की विभिन्न विधाओं को अलग-अलग नाम दिया गया है तथा विधा के रूप में उनमें स्पष्ट अंतर भी देखा जा सकता है। डॉ. के.सी. वानङ्हाका (Dr. K.C. Vannghaka) ने मिज़ोरम विश्वविद्यालय के मिज़ो विभाग द्वारा तैयार की गई पुस्तक 'History of Mizo Literature' के 'Fiction: Mizo Thawnthu (Story and Fiction)' शीर्षक अपने लेख

में कहानी को 'थोंथु' और उपन्यास को 'थोंथु फुअःथर' कहा है।[15] मगर व्यवहार में आज भी कहानी और उपन्यास के लिए इन दो भिन्न-भिन्न संज्ञाओं का कम ही प्रयोग किया जाता है। इसका कारण यह भी हो सकता है कि यहाँ लोग किसी भी प्रकार की मिज़ो कथा को 'थोंथु' कहने के अभ्यस्त हो चुके हैं। विभिन्न कथा विधाओं में भेद न करने की स्थिति के कारण मिज़ो कथा विधाओं के वर्गीकरण की समस्या उत्पन्न होती है तथा यह मिज़ो साहित्य के इतिहास लेखन को भी प्रभावित करता है। हालाँकि मिज़ो कथा लेखन के आरंभिक दौर में उपन्यास एवं कहानियों के बीच अंतर स्पष्ट कर पाना कठिन है, परंतु अब इस बारे में मिज़ो साहित्यकार और साहित्येतिहासकार काफी सजग दिखाई पड़ते हैं, जिसके परिणामस्वरूप कथा विधाओं में अंतर अधिक स्पष्ट होता चला जा रहा है।

मिज़ो साहित्य के इतिहास लेखन का प्रयास कम ही किया गया है। जो प्रयास हुए भी हैं वे आलोचनात्मक न होकर विवरणात्मक ही रहें हैं। अब तक की सर्वमान्य मिज़ो साहित्येतिहास की पुस्तक 'History of Mizo Literature (Bu Thar)', जिसे मिज़ोरम विश्वविद्यालय के मिज़ो विभाग द्वारा तैयार किया गया है, के काल-विभाजन और नामकरण से मिज़ो साहित्य की समय सीमा, उसके ऐतिहासिक महत्व एवं उनके नामकरण के पीछे के ऐतिहासिक कारण की जानकारी तो मिल जाती है, परंतु किसी काल खंड के साहित्य की विशेष प्रवृत्तियों का पता नहीं चल पाता। किस काल में कौन-सी प्रवृत्ति उभर कर सामने आई तथा किस तरह के साहित्य लेखन की प्रचुरता रही- इसकी स्पष्ट जानकारी नहीं मिल पाती है। यह इतिहास विवरणात्मक प्रतीत होता है, जिसमें विभिन्न विधाओं तथा रचनाकारों का वर्णन मात्र किया गया है और थोड़ा-बहुत उसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर प्रकाश डाला गया है। इस साहित्येतिहास में आलोचनात्मक और तुलनात्मक मूल्यांकनपरक दृष्टि का सर्वथा अभाव दिखाई पड़ता है। मिज़ो कहानी के इतिहास के विषय में जो सबसे बड़ी समस्या उत्पन्न होती है वह यह है कि उनमें कहानी एवं उपन्यासों

को अलग-अलग खंडों में नहीं बांटा गया है। जिस खंड में कहानियों की बात की जा रही है, वहीं उपन्यास की भी बात की गई है। इन रचनाओं को प्रत्यक्ष रूप से देखे बिना यह कहना काफी मुश्किल हो जाता है की कहानी की बात हो रही है या उपन्यास की।

जैसा कि पहले भी कहा जा चुका है कि मिज़ो साहित्येतिहास में मौखिक साहित्य को उनके महत्व के कारण शामिल तो किया गया है, मगर इन मौखिक लोक-कथाओं या लोकगीतों की प्राचीनता और प्रामाणिकता को ठीक-ठीक साबित करना असंभव है। प्रथम काल-खंड 'आदि काल: पूर्वजों का समय (1870 से पूर्व)' की आरंभिक सीमा तय नहीं की गई है। इसलिए स्पष्ट रूप से यह समझ पाना कठिन है कि मिज़ो साहित्य का आरंभ कब से माना जाए।

मिज़ो साहित्येतिहास में एक और समस्या यह भी है कि यहाँ लेखक और उसकी रचनाओं को अलग-अलग काल-खंडों में रख दिया गया है। अर्थात् लेखक का उल्लेख किसी काल-खंड में है और उसकी रचनाओं का उल्लेख किसी दूसरे काल-खंड में। इसका कारण है कि लेखक के संदर्भ में काल निर्धारण उसके जीवन-काल के आधार पर किया गया है, जबकि रचना के संदर्भ में रचना के प्रकाशन वर्ष के आधार पर। कभी-कभी रचना के लेखन वर्ष तथा प्रकाशन वर्ष के बीच का अंतराल काफी लम्बा हो जाता है और रचना का प्रकाशन लेखक की मृत्यु के उपरांत होता है। ऐसे में लेखक और उसकी रचना का उल्लेख दो अलग-अलग काल-खंडों में किया गया है, जिससे मिज़ो साहित्य के इतिहास में कई तरह की समस्या पैदा हो गई है। उदाहरण के लिए मिज़ो साहित्यकार ललज़ुईथङा (1916-1950) का समय मिज़ो साहित्येतिहास के तृतीय काल-खंड में आता है, परन्तु उनकी कहानी 'थ्लश्राङ' 1977 में तथा 'फीरा लेह ङुरथनपारी' 1994 में प्रकाशित हुई[16] जिनका उल्लेख मिज़ो साहित्येतिहास के चतुर्थ काल खंड में हुआ है। ऐसी समस्या अन्य कई कहानीकारों और उनकी कहानियों के साथ भी है। इस प्रकार की समस्या से भ्रम की स्थिति पैदा होती है। लेकिन अच्छी बात यह है कि अब प्रिंटिग की आसान सुविधा के बाद यह

समस्या बहुत कम देखने को मिल रही है। मिज़ो साहित्येतिहास लेखन की दिशा में एक और समस्या यह भी है कि कई मौलिक रचनाएँ पुस्तक के रूप में प्रकाशित नहीं हुईं, कई कहानियाँ ऐसी हैं जो अपने समय में तो छपीं, मगर अब उपलब्ध नहीं हैं। इस तरह की समस्या से साहित्य के इतिहास के लेखन व अध्ययन में बाधा उत्पन्न होती है और मिज़ो साहित्य के महत्वपूर्ण धरोहर साहित्येतिहास में दर्ज होने से छूट जाते हैं।

स्पष्ट है कि मिज़ो साहित्येतिहास लेखन अभी अपने आरंभिक रूप में है तथा उसके सामने कई तरह की समस्याएँ और चुनौतियाँ हैं। इसको परिष्कृत रूप प्रदान करने के लिए साहित्येतिहासकारों को और सजग होने की आवश्यकता है तथा मिज़ो साहित्य को और गहरी ऐतिहासिक-आलोचनात्मक दृष्टि से देखने की जरूरत है।

1.2 चयनित कहानीकारों का परिचय

इस शोध-प्रबंध में अनुवाद एवं विश्लेषण के लिए मिज़ो के नौ लेखकों की दस कहानियों को चुना गया है। इनमें मिज़ो भाषा की प्रथम कहानी के साथ-साथ नौ ऐसी कहानियाँ हैं, जो अपने दशक की प्रतिनिधि कहानियाँ मानी जा सकती हैं और जिनके कथाकार मिज़ो साहित्य के सुप्रसिद्ध लेखक हैं। इनमें से कई कहानियों को उनकी लोकप्रियता एवं महत्ता के कारण मिज़ोरम के कॉलेजों एवं मिज़ोरम विश्वविद्यालय के मिज़ो विभाग के पाठ्यक्रम में भी शामिल किया गया है। इनमें से नौ कहानियों का अँग्रेजी में भी अनुवाद किया जा चुका है। चयनित दस कहानियों के मूल शीर्षक, अनूदित शीर्षक, प्रकाशन वर्ष एवं कहानीकार का विवरण इस प्रकार है-

क्रम सं.	कहानी का मूल शीर्षक	अनूदित शीर्षक	कहानीकार	प्रकाशन वर्ष
1.	लली (ललओमपुई) Lali (Lalawmpuii)	लली (ललओमपुई)	एल. बिआकलिआना (1918 - 1941)	1937
2.	आऊखोक लसी Aukhawk Lasi	गुंजनस्थल की लसी	ललज़ुईथङा (1916 - 1950)	1950 से पूर्व
3.	सिल्वरथङी Silvarthangi	सिल्वरथङी	के. सी. ललवुङा (ज़ीकपुई पा) (1929 - 1994)	1958
4.	राउथ्ललेङ Rauthlaleng	भटकती रूह	आर. ज़ुआला (1917- 1990)	1974

5.	पोलितिक जिप्सी Politik Gipsi	पोलिटिक जिप्सी	थनसेइया (1929 - 2018)	1983
6.	लेमचन्ना खोवेल Lemchanna Khawvel	दुनिया एक रंगमंच है	एच. ललरिनफेला (माफ़ा) (1975 - 2018)	1997
7.	लामखुआङ Lamkhuang	कटहल का पेड़	वान्नेइहत्लुआङ्ग (1957)	2002
8.	थ्ललेर पङ्पार Thlaler Pangpar	रेगिस्तान का फूल	ललरममोया ङेन्ते (1968)	2002
9.	थिःना थङ्वल्ह Thihna Thangvalh	मौत का महाजाल	एच. ललरिनफेला (माफ़ा) (1975- 2018)	2002
10.	खामोश है रात Khamosh hai Raat	खामोश है रात	सी. ललनुनचङ्ग (1970)	2011

चयनित कहानीकारों एवं उनकी रचनाओं का संक्षिप्त परिचय:

1) एल. बिआकलिआना

एल. बिआकलिआना का जन्म 26 अगस्त, 1918 को हुआ था। इनके पिता रेवेरेंड लिआनखाइआ थे तथा माता साइलो लल दौरोता की बेटी ङूरछुआनी थीं। इन्होंने मिडिल स्कूल की पढ़ाई आइज़ोल से और हाइ स्कूल की पढ़ाई सिलचर और शिलांग से पूरी की। सन् 1936 में इन्होंने मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की और उसके बाद ये कॉटन कॉलेज में इंटरमीडिएट की पढ़ाई करने चले गुवाहाटी गए। वहाँ एक साल पढ़ने के बाद टी.बी. के

कारण उनका स्वास्थ्य बिगड़ने लगा। उन्होंने मात्र 18 वर्ष की आयु में सन् 1936 में 'होइलउपारी' नामक उपन्यास की रचना की, जिसे मिज़ो का प्रथम उपन्यास माना गया है। उन्होंने एक वर्ष के बाद ही 1937 में 'लली' नामक कहानी की रचना की, जिसे मिज़ो की पहली कहानी माना गया है। कहानियों के साथ-साथ उन्होंने कविताएँ भी लिखीं। महज 23 वर्ष की उम्र में टी.बी. की बीमारी से 19 अक्टूबर, 1941 को इनका निधन हो गया।[17]

प्रमुख रचनाएँ:

क) होइलउपारी (Hawilopari) (1936, मिज़ो भाषा का प्रथम उपन्यास)

ख) लली (ललओमपुई) (Lali, Lalawmpuii) (1937, मिज़ो भाषा की प्रथम कहानी)

'लली (ललओमपुई)' मिज़ो की प्रथम कहानी मानी जाती है। इसे मिज़ो भाषा की पहली कहानी लेखन प्रतियोगिता में मिज़ो स्त्रियों की मार्मिक एवं वास्तविक परिस्थिति को दर्शाने के लिए प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ। इस कहानी की मुख्य पात्र लली है। इस कहानी में प्रारम्भिक मिज़ो ईसाई युवा-युवती के बीच प्रेम संबंध की पवित्रता, समाज व परिवार में स्त्री की निम्न स्थिति, शादी-ब्याह के संबंध में स्त्री की परतंत्रता, शराब के दुष्परिणामों, आदि का चित्रण हुआ है। इस कहानी में ईसाइयत एवं यीशु में आस्था के कारण परिवार में आए सकारात्मक परिवर्तनों का भी चित्रण हुआ है।

2) ललज़ुईथङा

ललज़ुईथङा का जन्म 16 अप्रैल, 1916 को कुलीकोन, आइज़ोल में हुआ। इनके पिता का नाम चोङबुआया था। परिवार की खराब आर्थिक स्थिति के कारण इन्होंने केवल आठवीं कक्षा तक ही पढ़ाई की। इन्होंने लगभग 20 से ज़्यादा कहानियों की रचना की है। कहानियों के अलावा इन्होंने उपन्यास, नाटकों एवं कविताओं की रचना भी की है।

साहित्यकार होने के साथ-साथ ये अच्छे चित्रकार भी थे। इन्होंने आइज़ोल मिडिल स्कूल में ड्राइंग टीचर के रूप में भी नौकरी की। कुछ समय के लिए मिज़ोरम लेबर्स के नेता रहने के बाद सन् 1943 में ये भारतीय वायु सेना में भर्ती हो गए। सन् 1948 में इन्होंने सक्रिय राजनीति में भागीदारी के लिए अपनी नौकरी छोड़ दी। महज 34 वर्ष की उम्र में, 28 सितंबर, 1950 को इनका निधन हो गया।[18]

प्रमुख रचनाएँ:

कहानियाँ:

क) आऊखोक लसी (Aukhawk Lasi)

ख) खोइमु चोई (Khawimu Chawi)

ग) सुआल मन (Sual Man)

उपन्यास:

क) थ्लश्राङ (Thlahrang) (1977)

ख) फीरा लेह ङूरथनपारी (Phira leh Ngurthanpari) (1994)

कविताएँ:

क) मूनलाइट इन कुलीकोन (Moonlight In Kulikawn)

ख) क ङ्म वे लोऊ अ नि (Ka ngam ve lo a ni)

'आऊखोक लसी' नामक कहानी का प्रकाशन हालाँकि 1983 में लेखक के मरणोपरांत हुआ, परंतु इसका रचनाकाल 1950 से पहले का माना जाता है। यह कहानी फैंटेसी पर आधारित है, जिसमें एक युवक के 'लसी' से प्रेम संबंध का वर्णन हुआ है। मिज़ो

लोककथाओं में माना जाता है कि वास्तविक दुनिया से परे एक अलग और अद्‌भुत दुनिया होती है जिसमें 'लसी' रहती हैं, जो बहुत रूपवती होती हैं तथा वे अपनी इच्छा से किसी भी युवक के सामने प्रकट होकर उन्हें आकर्षित करती हैं। यह उसी लसी और इंसान की प्रेम कहानी है।

3) के. सी. ललवुङा (ज़ीकपुई पा)

के. सी. ललवुङा का जन्म 27 दिसंबर, 1929 को हुआ। इनके पिता श्रोवा और माता लललुई दोनों अच्छे गीतकार थे। इन्होंने सन् 1953 में बी.ए. की पढ़ाई पूरी की और सन् 1962 में आई.एफ़.एस. (इंडियन फ़ॉरेन सर्विस) में भर्ती हुए। ये भारतीय राजदूत के रूप में नियुक्त हुए प्रथम मिज़ो थे। सेवानिवृत्ति के उपरांत इन्होंने सक्रिय राजनीति में भी भाग लिया। ये मिज़ो साहित्य की दुनिया में अपनी बेटी 'ज़ीकपुई के पिता' (ज़ीकपुई पा) के नाम से जाने जाते हैं। इन्हें 13 दिसंबर, 1995 को मिज़ो साहित्य अकादमी द्वारा अकादमी पुरस्कार ने नवाज़ा गया। इन्हें बीसवीं शताब्दी (1990-1999) के 'Writer of the Century' की उपाधि भी दी गई। 10 अक्टूबर, 1994 को इनका देहांत हो गया।[19]

प्रमुख रचनाएँ:

कहानियाँ:

क) सी.सी. कॉइ. नं. 27 (C.C.Coy No.27)

ख) सिल्वरथङी (Silvarthangi)

ग) हॉस्टल ओमतू (Hostel Awmtu)

घ) क्रॉस बुलाह चुआन (Kraws Bulah Chuan)

'सिल्वरथङी' एक अनाथ लड़की 'सिल्वरथङी' की कहानी है, जो अपने चाचा-चाची के धोखे, अत्याचार, उत्पीड़न का शिकार होती है। अपनी जिंदगी के संघर्षों से बचने के लिए वह जाने-अनजाने झूठे प्यार की शिकार भी बन जाती है। यह कहानी सिल्वरथङी के कष्टों एवं संघर्षों से जूझने तथा अंततः उससे निकलने की कथा है। इस कहानी में एक स्त्री के जीवन-संघर्षों के अतिरिक्त अनाथ बच्चों की दुःखद स्थिति, सरकारी नौकरी की लालच के कारण संबंधों में पड़ने वाले दरार, रिश्तों में धोखेबाज़ी, आदि का चित्रण हुआ है।

4) आर. ज़ुआला

इनका पूरा नाम राललिआनज़ुआला है। इनका जन्म 18 सितंबर, 1917 को मिशन वेंङ, आइज़ोल में हुआ था। इनके पिता उपा चो. पासेना थे और माता चोङतुआई थी। किसी कारणवश अपनी हाई स्कूल की पढ़ाई को छोड़कर इन्होंने 1 दिसंबर, 1938 से राज्यपाल के कार्यालय में क्लर्क की नौकरी करनी शुरू कर दी। सन् 1942 में युद्ध सेवा के लिए वाइसरॉय कमिशन के अंतर्गत 'रॉयल इंडियन एयर फोर्स' में इनकी भर्ती हुई। द्वितीय विश्वयुद्ध के समाप्त होने के बाद सितंबर, 1946 में सेना की नौकरी त्यागकर इन्होंने फिर से राज्यपाल के कार्यालय में क्लर्क की नौकरी की। सन् 1950 से लेकर अपनी मृत्यु तक इन्होंने मिज़ो साहित्य को अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। 5 अक्टूबर, 1990 को इनका निधन हो गया।[20]

प्रमुख रचनाएँ:

क) राउथ्ललेङ (Rauthlaleng) (1974) (कहानी संग्रह)

ख) दो वे ङाइ हेक लौ (Daw ve Ngai Hek lo) (कहानी)

ग) थ्लज़ीङ (Thlazing) (कहानी)

'राउथ्ललेङ' नामक कहानी काल्पनिक घटना पर आधारित है। इसमें लोककथाओं के पात्रों की अपनी ही दुनिया है, जहाँ कहानी का मुख्य पात्र विचित्र तरीके से पहुँच जाता है। यह कहानी अन्य कहानियों से भिन्न है, क्योंकि इस कहानी में लोककथाओं के कई पात्र फिर से जीवित हो उठे हैं तथा वे अपने से संबंधित उन घटनाओं की सच्चाई पर प्रकाश डालते हैं, जिन्हें हमने लोककथाओं में सुना-जाना है।

5) थनसेइया

थनसेइया का जन्म 5 जुलाई, 1929 को मिशन वेंङ, आइज़ोल में हुआ था। ये मिज़ोरम के प्रथम जिला शिक्षा अधिकारी थे। सरकारी नौकरी में रहते हुए इन्होंने मिज़ो साहित्य में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। इन्होंने कई कहानियों एवं नाटकों की रचना की। कला एवं संस्कृति में भी इनकी विशेष रुचि थी। अतः इन्होंने चम्फाई जिले में मिज़ोरम के प्रथम संग्रहालय की स्थापना की। 17 सितंबर, 2018 को इनका निधन हो गया।[21]

प्रमुख रचनाएँ:

कहानियाँ:

क) केई-मी (Kei-mi)

ख) पोलितिक जिप्सी (Politik Gipsi)

ग) रङकचक ठी (Rangkachak Thi)

नाटक:

क) थिःना (Thihna) (Mr. Death)

ख) मिज़ोरम क्रिसमस ह्मसा बेर (Mizoram Krismas Hmasa ber)

पोलितिक जिप्सी राजनीतिक भ्रष्टाचार से हताश व निराश युवक की कहानी है। इस कहानी में लेखक ने मिज़ोरम के सरकारी महकमे में व्याप्त भ्रष्टाचार का मार्मिक चित्रण किया है। पढ़े-लिखे युवक की मानसिकता इस व्यवस्था से किस प्रकार प्रभावित होती है, उसका चित्रण इस कहानी में हुआ है।

6) एच. ललरिनफेला

एच. ललरिनफेला को मिज़ो साहित्य जगत में 'माफ़ा' के नाम से जाना जाता है। इनका जन्म 19 मई, 1975 को त्लाङनुआम, आइज़ोल में हुआ। इन्होंने मिज़ो तथा अँग्रेजी में साहित्यिक रचनाएँ कीं। इन्हें साहित्यिक लेखन प्रतियोगिताओं में कई पुरस्कारों से नवाजा गया है। इन्होंने मात्र 18 वर्ष की आयु से लिखना आरंभ किया। 1995 में 'यंग राइटर्स एसोसिएशन' द्वारा आयोजित कविता लेखन प्रतियोगिता में इन्हें प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ। इन्होंने मिज़ो की प्रसिद्ध पत्रिका 'सेबेरेका खुआङकाइह' (Sebereka Khuangkaih) का भी संपादन कार्य संभाला। 30 सितंबर, 2018 को इनका निधन हो गया।

प्रमुख रचनाएँ:

कहानी संग्रह:

क) चोलना तुईकम (Chawlhna Tuikam) (1997)

ख) वइहना वारटिआन (Vaihna Vartian) (2010)

कविताएँ:

क) थ्रिङ्नुन ह्लिङ (Hringnun Hling)

ख) खोङे क रम? (Khawnge Ka Ram?)

ग) ज़िआकफुङ (Ziakfung), आदि।

इनकी **'लेमचन्ना खोवेल'** नामक कहानी व्यंग्यात्मक तथा आलोचनात्मक कहानी है, जिसमें लेखक ने मिज़ो समाज में व्यापक कुरीतियों का व्यंग्यात्मक तरीके से उद्घाटन किया है।

इन्हीं की **'थिःना थङ्वल्ह'** नामक कहानी मिज़ो विद्रोह (1966) की पृष्ठभूमि पर लिखी गई है। इस कहानी के माध्यम से इन्होंने मिज़ो नेशनल आर्मी तथा सामान्य मिज़ो जनता के बीच उत्पन्न तनाव एवं संदेह का मार्मिक चित्रण किया है।

7) वान्नेइहत्लुआङा

वान्नेइहत्लुआङा का जन्म 1957 में आइज़ोल में हुआ। इन्होंने ऑल इंडिया रेडियो की नौकरी त्याग कर एल. वी. आर्ट प्रिंटिंग प्रेस की स्थापना की, जहाँ से वे मिज़ो में मासिक पत्रिका 'लेङ्ज़ेम' का प्रकाशन करते हैं। ये अच्छे कहानीकार के साथ-साथ प्रसिद्ध निबंध लेखक भी हैं।[22]

प्रमुख रचनाएँ:

कहानी और निबंध संग्रह:

क) केइमाह लेह केइमाह (Keimah leh केeimah) (2002)

ख) नेइफ़ाका रिलबोम (Neihfaka Rilbawm) (2003)

निबंध:

क) खोछक मिफ़ीङ (Khawchhak Mifing)

ख) मिज़ो ह्लूई मिज़ो थर (Mizo Hlui Mizo Thar)

ग) पइते थ्लूआक ले कम्प्यूटर (Paite Thluak leh Computer), आदि।

इनकी **'लामखुआङ'** नामक कहानी प्रेम कहानी प्रतीत होते हुए भी शराब के दुष्परिणामों का उद्घाटन करती है। इस कहानी के द्वारा लेखक ने एच.आई.वी. रोगी के प्रति लोगों की संकुचित मानसिकता का भी चित्रण किया है।

8) ललरममोया ङेन्ते

ललरममोया ङेन्ते का जन्म 21 जून, 1968 को वाइरेङते में हुआ। इन्होंने सन् 1994 से लिखना आरंभ किया। ये कहानी के साथ-साथ आलेख, नाटक, उपन्यास लिखते हैं। इनकी लगभग 21 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। इनकी पुस्तक 'रिनतई ज़ूनज़ाम' को मिज़ोरम साहित्य अकादमी द्वारा 'बुक ऑफ द ईयर- 2009' घोषित किया गया है। इन्होंने 2006 से 2010 तक मासिक पत्रिका 'सबेरेका खुआङकाइह' (Sabereka Khuangkaih) का सह संपादन भी किया।

प्रमुख कृतियाँ:

क) रौह्लू (Rohlu) (लेखों का संग्रह) (1998)

ख) ह्रिङनुन ह्लिमथ्ला-1 (Hringnun Hlimthla-1) (कहानी संग्रह) (2002)

ग) ह्रिङनुन ह्लिमथ्ला-2 (Hringnun Hlimthla-2) (कहानी संग्रह) (2005)

घ) ह्मङाइह्ना पार (Hmangaihna Par) (उपन्यास) (2005)

इनकी कहानी **‘थ्ललेर पङपार’** में प्रेम संबंध में धोखा मिलने, अविवाहित स्त्री के माँ बनने तथा ऐसी स्त्रियों के प्रति समाज के दृष्टिकोण, उससे उत्पन्न विभिन्न परिस्थितियों तथा इससे स्त्री की मानसिकता पर पड़ने वाले प्रभावों का चित्रण किया गया है।

9) सी. ललनुनचङा

सी. ललनुनचङा का जन्म 3 मई, 1970 को हुआ। इन्होंने लगभग चौबीस कहानियाँ, आठ लघु नाटक और लेख, सात उपन्यास, दस कविताएँ और गीत तथा एक इतिहास की पुस्तक लिखी है। इनकी पुस्तक ‘वुतदुक कारा मेइसी’ (कहानी संग्रह) को मिज़ोरम साहित्य अकादमी द्वारा 2011 की श्रेष्ठ 10 पुस्तकों की सूची में शामिल किया गया है।[23]

प्रमुख रचनाएँ:

क) पारतेई (Partei) (उपन्यास) (1999)

ख) ह्माङाइह्ना लेह हुआतना (Hmangaihna leh Huatna) (उपन्यास) (2004)

ग) पसलठाते नि ह्नुह्नुङ (Pasalthate Ni Hnuhnung) (ऐतिहासिक उपन्यास) (2006)

घ) वुतदुक कारा मेइसी (Vutduk Kara Meisi) (कहानी संग्रह) (2011)

उक्त लेखक की **‘खामोश है रात’** नामक कहानी मिज़ोरम के इतिहास की सत्य घटना पर आधारित है। किसी मिज़ो गाँव के मुखिया द्वारा मैरी विन्चेस्टर के अपहरण के कारण अँग्रेजी सेना के मिज़ो गाँव में आगमन तथा मिज़ोरम की भूमि पर प्रथम क्रिसमस केरोल के गाए जाने की घटना पर यह कहानी आधारित है। इस घटना का मिज़ो समाज में धार्मिक दृष्टि से काफी महत्व है।

प्रस्तुत शोध कार्य में अनुवाद के लिए इन्हीं नौ मिज़ो कहानीकारों की दस कहानियों का चयन किया गया है। मिज़ो भाषा में कहानी लेखन की परंपरा बहुत पुरानी नहीं है। आलोचना की परंपरा तो कहानी लेखन की परंपरा से भी नयी है। अतः उपर्युक्त कहानीकारों पर आलोचनात्मक लेखन का भी पर्याप्त अभाव है। यही कारण है कि इन कहानीकारों का परिचय अत्यंत संक्षेप में प्रस्तुत किया जा सका है।

संदर्भ:

---

[1] हिस्ट्री ऑफ मिज़ो लिटरेचर (Bu Thar), मिज़ो विभाग, मिज़ोरम विश्वविद्यालय, आइज़ोल, 2017, पृ. 14

[2] बी. ललथङलिआना, हिस्ट्री ऑफ मिज़ो लिटरेचर (Mizo Thu leh Hla), गिलज़ोम ऑफसेट, आइज़ोल, 2019, पृ. 78 (यह किताब मिज़ो में है; संदर्भ का अनुवाद मेरा)

[3] वही, पृ. 80

[4] वही, पृ. 83

[5] हिस्ट्री ऑफ मिज़ो लिटरेचर (Bu Thar), पृ. 11

[6] बी. ललथङलिआना, हिस्ट्री ऑफ मिज़ो लिटरेचर (Mizo Thu leh Hla), पृ. V (भूमिका) (संदर्भ का अनुवाद मेरा)

[7] वही, पृ. xiii-xx (संदर्भ का अनुवाद मेरा)

[8] वही, पृ. viii (भूमिका) (संदर्भ का अनुवाद मेरा)

[9] हिस्ट्री ऑफ मिज़ो लिटरेचर (Bu Thar), पृ. 11-24 (संदर्भ का अनुवाद मेरा)

[10] बी. ललथङलिआना, हिस्ट्री ऑफ मिज़ो लिटरेचर (Mizo Thu leh Hla), पृ. 90 (संदर्भ का अनुवाद मेरा)

[11] वही, पृ. 64

[12] वही, पृ. 139

[13] वही, पृ. 301

[14] डॉ. के.सी. वानङहाका, लिटरेचर जुङज़म, लुईस बेट प्रिंट ऐंड पब्लिकेशन, आइज़ोल, 2014, पृ. 35 (यह किताब मिज़ो में है; संदर्भ का अनुवाद मेरा)

[15] हिस्ट्री ऑफ मिज़ो लिटरेचर (Bu Thar), पृ. 206

[16] डॉ. के.सी. वानङहाका, लिटरेचर जुङज़म, पृ. 29

[17] डॉ. ललत्लुआङलिआना खिआङते, ज़चम पार-छुआङ, एल. टी. एल. पब्लिकेशन, आइज़ोल, 2018, पृ. 11, 13-16

[18] डॉ. ललत्लुआङलिआना खिआङते, थङ-जुई, एल. टी. एल. पब्लिकेशन, आइज़ोल, 2018, पृ. 16, 17, 74, 75

[19] डॉ. के. सी. वानङ्हाका, लिटरेचर ज़ुङज़ाम, लुईस बेट प्रिंट एंड पब्लिकेशन, आइज़ोल, 2014, पृ. 89-95

[20] ज़थुम, डिपार्टमेंट ऑफ मिज़ो, मिज़ोरम यूनिवर्सिटी, एल. टी. एल. पब्लिकेशन, आइज़ोल, 2017, पृ. 151

[21] लेखक के परिजनों से प्राप्त उनके बायो डाटा से ।

[22] https://incubator.m.wikimedia.org/wiki/Wp/lus/Vanneihtluanga (11 फरवरी, 2022 को देखा गया।)

[23]लेखक से प्राप्त उनके बायो डाटा से।

अध्याय- 2

मिज़ो कहानियों का हिन्दी में अनुवाद

2.1 लली (ललओमपुई) [लली (ललओमपुई)]

2.2 आऊखोक लसी (गुंजनस्थल की लसी)

2.3 सिल्वरथङी (सिल्वरथङी)

2.4 राउथ्ललेङ (भटकती रूह)

2.5 पोलितिक जिप्सी (पोलिटिक जिप्सी)

2.6 लेमचन्ना खोवेल (दुनिया एक रंगमंच है)

2.7 लामखुआङ (कटहल का पेड़)

2.8 थ्ललेर पङपार (रेगिस्तान का फूल)

2.9 थिःना थङवल्ह (मौत का महाजाल)

2.10 खामोश है रात (खामोश है रात)

2.1 लली (ललओमपुई)

[लली (ललओमपुई)]

- एल. बिआकलिआना

पारिवारिक जीवन:

“माँ, पानी भरना बहुत जरूरी है, आप इसे थनी के साथ कीजिए, मैं पानी भरकर लाती हूँ,” लली ने अपनी माँ से कहा। माँ ने तुरंत कहा “ठीक है...फिर इसे थोड़ा और बुनते हैं। वह देखो तुम्हारे पिता भी आ पहुँचे हैं।” वे दोनों (लली की माँ और थनी) लली के लिए पोनपुई[1] बुन रही थीं। उस दिन उन्होंने मदद के लिए अपने पड़ोस की युवती थनमोई (थनी) को बुलाया था। माँ की बात सुनते ही लली ने देखा कि नीचे से उसके पिता शराब के नशे में चूर झूमते हुए चले आ रहे थे।

वे जहाँ रहते थे वह एक ईसाई गाँव था। मगर लली के पिता बड़े जिद्दी थे। कुछ अन्य बुजुर्गों समेत वे भी यीशु में विश्वास नहीं करते थे। ऊपर से उन्हें शराब की लत लगी थी। शराब के नशे में वे जब घर लौटते तो परिवारवालों के लिए यह समय तनाव भरा होता। उस दिन भी सुबह के निकले अभी घर लौटे थे। रात का भोजन तैयार करने का समय होने वाला था।

वे जब उनके पास पहुँचे तो लली की माँ से नशे में बार-बार कहने लगे- “ज़उवी , मेरे लिए जल्दी से खाना परोस, मुझे भूख लगी है।” लली की माँ ने कहा-“ अच्छा, बस थोड़ी देर इंतजार करो, चादर का काम ज़रा-सा अटका है।” वैसे तो शराब में चूर पति का

कहा टालने की उसकी हिम्मत न होती थी, मगर उस समय काम में ज़रा-सी व्यस्त होने के कारण उसने ऐसा कहा।

सुमह्मुन[2] से ही उन्होंने मुड़कर देखा और ज़ोर से चिल्लाने लगे, “मैंने कहा न जल्दी आओ।” स्थिति और बिगड़ गई जब चादर बुनते हुए थेमत्लेङ[3] गलत जगह जाकर फँस गया। एक मिनट भी नहीं गुजरा होगा कि अपनी बात को अनसुना होते देख, वे क्रोधित हो उठे। उन्होंने पास पड़ी जलावन की लकड़ी उठाई और डरी-सहमी अपनी ओर आती हुई अपनी पत्नी पर बिना रुके बरसाने लगे।

अपनी पत्नी के पीछे-पीछे वे घर के भीतर गए। पत्नी ने जो खाना बनाकर परोसा, नशे के कारण वे उसे खाने की हालत में भी नहीं थे। जैसे ही वे बैठते, लड़खड़ाकर गिरने लगते। लली ने कहा- “ओह! मेरे पिता भी न! चलो सहेली इसे लपेट देते हैं। हम अब बुन भी नहीं पाएँगे। रात का खाना बनाने का समय भी हो गया है, अभी और पानी भी भरना है। थनी ने भी अपनी सहेली को देखते हुए कहा “मैं भी अभी और पानी भरना चाहती हूँ।” दोनों ने बुनी जा रही चादर (पोनपुई) को लपेट दिया और पानी भरने की तैयारी करने लगीं।

पानी भरने के रास्ते में मानो वे लली के पिता को भूल ही गईं और दूसरी बातें करने लगीं। उसी दिन लली के बड़े भाई ताइया को वाइरम[4] से लौटना था। उसे सबलोग ताइया कहकर ही पुकारते थे, कोई भी उसे उसके असली नाम से नहीं पुकारता था।

लली ने बातचीत के दौरान कहा कि “मुझे डर है कि भैया से मैंने जो पुआन मँगाया है, उसे वह नहीं लाएँगे। वह तो केवल अपने कपड़ों के बारे में ही सोचते हैं।” छूटते ही थनी ने पूछा “तुमने कैसा कपड़ा मँगवाया है? मैंने तो उसे वाई[5] धागों के लिए पैसा भेजा है।” लली ने कहा “पोनपुई बुनने के कारण मैं तो पुआन[6] बुन नहीं पाऊँगी। मेरी कितनी इच्छा

थी वाई धागों से पुआनचई[7] बुनने की। मैंने उससे, तुम्हारे पुराने बोर्डर वाली डिजाइन जैसा मुलायम वाई कपड़ा खरीदने के लिए कहा है। मगर मुझे नहीं लगता वह खरीदकर लाएगा भी। अगर उसने नहीं खरीदा तो मुझे बुनने का समय भी नहीं मिलेगा। मेरे पास चोल्हनी पुआन[8] भी नहीं होगा। हमारे पास तो कभी खाली समय ही नहीं होता, उसपर से ओललेन[9] का समय तो हमारे लिए और भी ज्यादा व्यस्तता का समय होता है।" थनी ने मानो गंभीर होकर कहा "शायद यही हमारी किस्मत है।"

अपने दुर्भाग्य, जीवन की व्यस्तता और लड़कियों के जीवन की कठिनाइयों के बारे में सोचती हुई दोनों चुपचाप चलती गईं। बहुत दूर चलने के बाद थनी को अचानक कुछ याद आया और उसने पूछा, "कल के संडे स्कूल के अध्याय का विषय क्या है?", लली के जवाब देने से पहले ही उसने हँसते हुए कहा- ओहो! मुझे बार-बार लगता है कि तुम प्राइमरी में ही पढ़ाती हो, तुम्हें तो जूनियर में रख दिया गया है न।"

लड़कियों के दुर्भाग्य की जो बातें लली सोच रही थी, शायद उन बातों ने उसे अभी भी दुःखी कर रखा था। उसी मनोदशा में उसने कहा - "मैंने तो अभी तक देखा ही नहीं कि हमें क्या पढ़ाना है। अभी तक मेरे पास जूनियर की पाठ्य-पुस्तक भी नहीं है और जैसा हमने कहा मेरे पास तो पढ़ने का समय तक नहीं है। रविवार तो कल ही है। रात को गिरजा के बाद पानी भरने न गई तो घर में पानी भी बहुत कम बचेगा। कूटा हुआ सारा धान भैया बैचने ले गए है, तो और धान भी कूटना है। एक बार में मैं थोड़ा-सा ही कूट पाती हूँ। तुम भी क्या और पानी भरना चाहती हो?"

थनी ने कहा- "पता नहीं, पर तुम भरना चाहती हो तो मैं भी चल सकती हूँ। व़ानी ने भी भरा तो होगा मगर उसका भरा हुआ काफी नहीं होता।"

“तुम्हारी तो बहनें हैं। व़ानी भी जवान होने को है। घर में इकलौती लड़की होना तो बदकिस्मती है। काश! मेरी भी एक छोटी बहन होती”- लली यह कहकर हँसने लगी।

वे जब घर पहुँचीं तो ताइया भी शहर से लौट चुका था। अन्य लोगों के घर से निकलने के बाद लली ने तुरंत पूछा, “भैया,मेरे लिए पुआन लाए क्या?”

“नहीं खरीदा, चावल बहुत सस्ते में बिका ना। चावल बेचकर दो रुपया भी नहीं मिला, मुझे कैनवस का जूता चाहिए था और नमक भी खरीदना जरूरी था”- ताइया ने कहा।

“तुम कितने दुष्ट हो, मेरे पास तो पुआन ही नहीं है”- लली ने कहा।

माँ ने भी कहा- “फालतू के जूतों की जगह उसके लिए पुआन खरीदना चाहिए था ना, अभी तुम्हारी बहन के पास पुआन भी नहीं है।”

“मुझे जूता चाहिए था, मेरे सभी दोस्तों के पास भी वैसा जूता है”- ताइया यह कहकर आँगन की ओर चला गया।

माँ ने खाना तैयार किया, ज़ुआला को घर बुलाकर सभी ने खाना खाया।

लली ने जल्दी-जल्दी खाना खाया। धान निकाल कर ओखली के पास रखा और जूठी थालियों को इकट्ठा करने में अपनी माँ की मदद की। फिर धान कूटने में लग गई। माँ ने साग को साफ करके उबालने के लिए चूल्हे पर चढ़ा दिया और ज़ुआला से कहा- “ज़ुआलते (पुचकारते हुए), तुम चूल्हे को देखो, मैं धान कूटने में तुम्हारी दीदी की मदद करती हूँ।” मगर ज़ुआला, “उफ! कितना झंझट है, मैं अपने दोस्तों को बुलाने जा रहा हूँ,” कहता हुआ भाग गया।

"अरे! इससे चूल्हा भी नहीं संभाला जाता" कहती हुई माँ चूल्हे में लकड़ियों को ठीक करने लगी और लली की मदद करने निकल गई। ताइया भी सजधज कर निकल गया। उससे तो लोगों ने चूल्हे की आग संभालने की उम्मीद ही छोड़ दी थी। एक ओखली भर धान कूटते- कूटतें गिरजाघर की घंटी बज गई। उनके घर में ठहरे युवकों[10] और मेहमानों ने धान कूटने में उनकी मदद की, जिससे उन्हें गिरजाघर की संगति में जाने के लिए समय मिल गया। संगति के बाद उन्होंने कुछ युवकों को अपने घर ठहरने के लिए बुलाया जो इनके लिए तैयार थे और लली थनी के साथ पानी भरने चली गई।

लली अपनी सुंदरता के लिए प्रसिद्ध नहीं थी, मगर अपने अच्छे और मिलनसार स्वभाव के लिए पूरे गाँव में उसकी कद्र थी। चेहरा भी उतना कुरूप नहीं था। उसका कद भी औसत युवतियों-सा था, लगभग पाँच फिट दो इंच। पतली-सी मगर उतनी पतली भी नहीं। उसका चेहरा लंबा था। मिज़ो लड़कियों में भी उसकी लम्बी नाक थी। वह सुंदर निश्छल आँखों वाली, सुंदर दंतपंक्तियों वाली, कम मगर लम्बे बालों वाली थी। उसका चेहरा औसत था और वह गोरी भी नहीं थी। उसके चेहरे के पास वाले बाल घुँघराले थे। अतः उसे आजकल की तरह अपने बालों को अलग से घुँघराला बनाने की ज़रूरत नहीं थी। चेहरे से तो वह ऐसी सुंदर न थी कि दूसरी सुंदर लड़कियों को मात दे सके मगर जो भी उसके स्वभाव और व्यवहार से परिचित था, उसे वह चेहरे सी भी सुंदर मालूम पड़ने लगती थी।

दूसरों के बीच, विशेषकर लड़कों के बीच अपनी चाल-ढाल और तौर-तरीकों से तो वह शर्मीली व विनम्र मालूम पड़ती थी, मगर बातचीत के दौरान वह बिना किसी तरह की हिचकिचाहट के अच्छे से बातें किया करती थी। दूसरी युवतियों की तरह वह शर्म से झुकी न रहती और न ही अपने पुआन को दाँतों से काटती और ठीक करती रहती थी। जो उसे ठीक से पहचानते थे, उन्हें भी उसके स्वभाव को देखकर अचरज होता। इसी कारण खूब

रूपवान न होने पर भी उससे मिलने के बाद गाँव के लोग या मेहमान उसकी चर्चा किया करते थे।

परमेश्वर का कार्य:

रविवार को हमेशा की तरह वह सुबह उठी। खाना बनाते हुए वह संडे स्कूल में पढ़ाने वाले पाठ की तैयारी करने लगी। उस दिन के पाठ का विषय परमेश्वर का प्रेम था। वह उन बिंदुओं को पढ़ने लगी जिनमें बच्चों को पढ़ाने के तरीके बताए गए थे। फिर वह उस पाठ के लिए बाइबल के चुने गए पद- “क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना इकलौता पुत्र दे दिया...” के बारे में सोचने लगी।

वह मन ही मन सोचती, “परमेश्वर क्या मेरे पिता से भी प्रेम कर पाते होंगे! हमारे जैसे परिवारों के लिए ही यीशु संसार में आए और उन्होंने अपनी जान दी। यही बात संडे स्कूल में पढ़ाते हैं हमारे जैसे लोग, जो खुद अपने पिता को ही यह नहीं समझा पाते...”, अकेली बैठी वह इन सभी बातों पर विचार कर ही रही थी कि बिआकमोया जो उनके घर रात को ठहरा था, सोकर उठा और लली को पढ़ते देख उसने नींद के आलस में ही हँसते हुए कहा- “अरे! लगता है तुमने तो बहुत पढ़ लिया, मुझे क्यों नहीं जगाया?”

“तुम गहरी नींद में सोए थे इसीलिए मैंने नहीं जगाया, अभी-भी देर नहीं हुई है, सूरज भी अभी ही निकला है”, लली ने तुरंत जवाब दिया। मोया (बिआकमोया) मुँह धोने चला गया। दोनों की बातचीत के ढंग से साफ पता चलता है कि वे एक दूसरे को काफी अच्छे से पहचानते हैं।

बचपन से ही इन दोनों की दोस्ती है जो अभी तक चल रही है। संडे स्कूल में शिक्षिका होने के बाद अपने शराबी पिता और अभावग्रस्त कुजात मसीही परिवार के

बावजूद लली और उसका दोस्त बिआकमोया , मसीह के दोनों सेवक, परमेश्वर के वचनों को पढ़ते हुए उस घर-परिवार की शोभा बढ़ा देते थे।

मगर कुछ लोग उन्हें (लली और बिआकमोया को) दूसरी नजर से देखते थे और उन्हें उन सब की उल्टी-सीधी बातों का भी कभी-कभी सामना करना पड़ता था। बियाका के दोस्त भी बियाका को ईर्ष्या की नज़र से देखते। परमेश्वर की सेवा के लिए लली और बिआकमोया जो तैयारी करते उसे लली के पिता द्वारा भी भंग किए जाने का डर बना रहता। मगर परमेश्वर ने लली और परमेश्वर में अपार विश्वास रखने वाली उसकी माँ की प्रार्थनाओं को सुना और वे हँसी-खुशी रहे।

बिआकमोया तो बचपन से ही रात को लली के घर सोता था। बस एक बार किसी की मृत्यु होने पर वह उस मृतक के घर में सोया था और एक बार अपने पिता की मृत्यु पर अपने घर में। इसके अलावा वह कभी कहीं और नहीं ठहरा। मुँह धूने के बाद पास आकर मोया ने कहा- “बहुत अच्छा हुआ कि तुम्हें जूनियर वर्ग में रख दिया गया है। तुम्हें तो बहुत कुछ पता है, अब तो लगता है संडे स्कूल के लिए पाठ तय करने में कम परेशानी होगी।”

थोड़ा हँसी-मज़ाक करते हुए मुस्कुराकर उसने फिर कहा- “हमारा ज़िरनियाऊ वर्ग बड़ा मज़ेदार है। मैं तो इसे अब जूनियर नहीं ज़िरनियाऊ (जूनियर को बिगाड़कर ज़िरनियाऊ कहता है जिसका अर्थ है उल्टी-पुल्टी पढ़ाई) ही कहता हूँ क्योंकि यहाँ अच्छे से नहीं पढ़ाया जाता। मगर हमारे यहाँ की लड़कियाँ (शिक्षिका) काफी अच्छी हैं। खैर, जो भी हो तुम्हें रख दिया गया है तो मैं उसका पूरा फायदा उठाऊँगा, जो भी मुझसे याद न हो पाएगा मैं तुम्हें याद करने को कहूँगा।”

मोया के चेहरे पर हमेशा इसी तरह की मुस्कान बनी रहती थी। वह गोरा-चिट्टा युवक था। वह गरीब जरूर था, लेकिन उसके कपड़े हमेशा साफ-सुथरे रहते। लड़कियों की

तरह वह अपने पैरों को भी साफ रखता। कद में वह लली से ज़्यादा ऊँचा नहीं था, लेकिन दूसरे मिज़ो युवकों के बीच वह नाटा बिल्कुल नहीं कहा जा सकता था। वह बहुत ताकतवर था, मगर उसके दुबले और छोटे चेहरे को देखकर कई बार लोग उसे कमजोर समझने की गलती कर बैठते थे। लेकिन उसका शरीर उनलोगों के अनुमान से ज्यादा बड़ा था। ताकत में भी वह औसत युवकों से बीस था।

लली ने भी उसे मुस्कुराकर जवाब दिया, "मुझे भी कुछ याद नहीं रहता, मैं भी बड़ी भुलक्कड़ हूँ। आज जो पाठ सीखना है वह 'परमेश्वर का प्रेम' है ना?"

"हाँ, वही है।"

"शायद विषय बहुत गहरा है, इसीलिए मैं इसे ठीक से समझ नहीं पा रही," लली ने कहा।

मोया ने मुस्कुराते हुए मज़ाक में लेकिन थोड़ी गंभीरता के साथ कहा- "अरे! परमेश्वर के प्रेम को एक बार में ही पूरी तरह समझ जाओगी तो कैसे चलेगा! परमेश्वर का प्रेम तो दूर, क्या तुम्हें मनुष्य के प्रेम की भी कोई समझ है!!"

लली बिना कुछ जवाब दिए बस धीमे-से मुस्कुराई और पुस्तक को देखने लगी।

मोया ने चेहरे को पोंछा, अपनी किताब ली और पढ़ने बैठ गया। किताब को पलटते हुए उसने गंभीर होकर कहा- "प्रेम के बारे में मैं जितना सोच पाता हूँ उससे मुझे बड़ा आश्चर्य होता है। परमेश्वर का वचन कहता है- 'परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा...', मगर इस जगत के लोग, हम सब कितने पापी हैं, मैं भी अभी तक न जाने कितने बुरे काम करता हूँ।" अपने बारे में कहने पर वह हँसने लगा। लली ने कहा "मैं भी अभी यही सोच रही थी। हम अपने परिवार की बात छोड़ भी दें, तो हमसे अच्छे-अच्छे लोगों में भी कई

बुराइयाँ हैं...।" फिर दोनों खामोश बैठे रहे मानो अपनी कही बातों पर विचार कर रहें हों। रसोई से लली की माँ उन दोनों की बातों को प्यार से सुन रही थी और उसपर गर्व कर रही थी। आजकल के लड़के-लड़कियों के परमेश्वर के प्रेम के बारे में चर्चा करने पर उसकी माँ का गर्व करना अस्वाभाविक न था। मन की अतल गहराइयों से वह चाहने लगी कि वे दोनों जिस परमेश्वर के बारे में बातें कर रहें हैं, उसी परमेश्वर के प्रेम की बुनियाद पर वे अपना परिवार बसाएँ और उसके नाती और नतिनी को भी यही सीख दें।

सुबह का भोजन करने के बाद गिरजा जाने का समय हुआ, तो बच्चे अपनी माँ के साथ गिरजाघर गए। लली के पिताजी भी घूमने निकल गए थे इसलिए उनलोगों ने लकड़ी के सहारे दरवाजे को बंद कर दिया। छोटे बच्चों का संडे स्कूल जल्द ही आरंभ हो गया। जब उनका पाठ समाप्त होने वाला था तब लली ने बड़ों के संडे स्कूल की ओर देखा और पाया कि इंटर वर्ग में बच्चों की संख्या बहुत कम थी। चूँकि सभी वर्गों की संगति एक ही जगह होती थी, इसलिए बच्चों की संख्या का पता चल जाता था। उसकी बुआ का बेटा मना, जो लगभग जवान हो गया था, वह भी इंटर में पढ़ता था और उस वर्ग में सबसे बड़ा था। जब लली ने नज़र दौड़ाई तो उसे मना कहीं नहीं दिखा। वह जिन लड़कों से दोस्ती रखता था, वे लली को बड़े आवारा लगते थे, इसीलिए वह उसे कई बार डाँट भी चुकी थी और उसके लिए मन ही मन चिंतित रहा करती थी। उसके माता-पिता को लगता था कि वह उनकी बातों की तुलना में लली का कहा ज्यादा मानता था, इसलिए वे लली को उसे समझाने के लिए कहा करते थे।

संगति का कार्यक्रम समाप्त हुआ और जूनियर संडे स्कूल के शिक्षकों ने थोड़ी देर अगले रविवार को पढ़ाया जाने वाला पाठ एकसाथ पढ़ा। पाठ को बस दोहराना था, मगर उनका लीडर नहीं था तो बड़ों का कार्यक्रम समाप्त होने से पहले ही उनका कार्यक्रम समाप्त

हो गया। घर लौटते समय लली मना के बारे में बार-बार सोच रही थी। उसे डर था कि कहीं वह आगे चलकर बहुत बुरा इंसान न बन जाए।

वह जब घर पहुँची तो दरवाजा खुला था। जब वह दरवाजे को खोलकर अंदर गई तो वहाँ मना और उसके पाँच जवान साथी आपस में बातें कर रहे थे। लली को देखकर सभी सकपका गए। लली ने अपनी पुस्तक रखते हुए कहा "मना तुम संगति में क्यों नहीं गए?" मगर किसी ने उसे जवाब नहीं दिया, सभी चुपके-चुपके खी-खी कर रहे थे और फिर वे चुप हो गए। लली उनके पास बैठकर उन्हें देखने लगी। वह उन्हें देख ही रही थी कि उसे शराब की गंध आई। उसके व्यवहार का दोस्तानापन जाता रहा और वह गंभीर होकर उनसे बातें करने लगी। उसने गुस्से में कहा- "तुम लोग यहाँ छिपकर शराब पी रहे हो? कितने दुष्ट हो तुमलोग! तुम लोग ऐसा काम क्यों कर रहे हो? मुझे तो लगा था कि तुम लोग बस संगति में शामिल नहीं हुए। ऐसा बुरा काम मत सीखो, यह तो बुरे लोगों की पहचान है। आगे चलकर तुमसब लोगों की चुगली, नफरत और मज़ाक के पात्र बन जाओगे। अपने ही मामाजी को देख लो, वे कितने अस्त-व्यस्त हो गए हैं। यह इंसान को बर्बाद कर देता है। यह केवल लोगों की घृणा और मज़ाक की वस्तु ही नहीं है, बल्कि यह तो परमेश्वर के गिरजा के नियमों के खिलाफ भी है।

वे लड़के कुछ दिनों से खुद को जवान समझने लगे थे। बाकी दिन तो लली उनसे हमेशा मुस्कुराकर बातें किया करती थी, इसलिए वह उनके किशोर मन को आकर्षित करती थी तथा वे उसकी काफी इज्ज़त किया करते थे। इसके अलावा उसका स्वभाव और व्यवहार काफी अच्छा था और वह उम्र में भी उनसे बड़ी थी तो वे उसे बहन के रूप में ज्यादा देखते थे, और प्रेमिका के रूप में कम। लली की डाँट से वे पानी-पानी हो गए, क्योंकि उन्हें लगा था कि उन्होंने बिना किसी को खबर हुए शराब पी ली है और गंध भी मिटा दिया है। उन्होंने इससे पहले लली को इतने गुस्से में कभी नहीं देखा था। मना ने

अस्पष्ट स्वर में बड़बड़ाते हुए कहा- "यह उन दूसरे बड़े लड़कों की वजह से हुआ।" लली की डाँट खाकर उन बड़े लड़कों ने सब कुछ बता दिया।

अचानक उन पर गुस्सा होने पर लली को भी बुरा लगा और उसने शांत आवाज में उनसे कहा- "ऐसा काम तो आजकल कोई नहीं करता। यह तो परमेश्वर के वचनों को न मानने वाले बुरे लोगों का काम है। अगर शराब पियोगे तो कुछ ही समय में तुम सब डरपोक और बेकार युवक बन जाओगे। जरा सोचकर देखो, ऐसा काम करने वाले छिपकर ऐसा करते हैं और लोगों के रहते ऐसा करने की हिम्मत नहीं करते। वे लोगों के गिरजा जाने का समय चुनते हैं। इसका मतलब यह है कि वे सभी बुरे हैं। तुम लोग भी तो जानते ही हो, कुछ ही रात पहले कुछ लोगों को गिरजा से निकाला गया था। उनमें से कुछ तो...।"

वे सभी चुपचाप सुनते रहे। लली, जिसे वे अपनी प्रेयसी या बहन के रूप में देखते हैं, जिसे महत्व देते हैं और जिसकी प्रशंसा करते हैं, मानो उसकी बातें उनके मन में घर कर गईं। दूसरों के माता-पिता और चर्च के प्राचीनों[11] के समझाने से ज्यादा लली का समझाना उनके मन पर असर डाल रहा था। चर्च के प्राचीनों के समझाने पर तो वे उन्हें ही और चिढ़ाने लगते थे। मगर लली जो चुपके से और धीमे से उन्हें समझा रही थी, मानो इस बात से डर रही हो कि कोई और सुन न ले, उसकी गंभीर बातों को वे लड़के चुपचाप सुनते रहे। उनके चेहरे पर लली के गुस्से को भड़काने और उसे चिढ़ाने का भाव बिल्कुल न था।

उस रात एक दूसरे चर्च का प्रचारक उनके गिरजा में प्रवचन देने वाला था। अच्छी संख्या में लोग संगति में शामिल हुए। उस प्रचारक ने सुबह बच्चों के संडे स्कूल में भी भाग लिया था। शायद इसी कारण वह परमेश्वर के प्रेम के विषय में बोलने लगा। उन्होंने बाइबल का जो वचन चुना था, वह भी संडे स्कूल वाला पाठ, यूहन्ना रचित सुसमाचार,

तृतीय अध्याय का 16-वाँ पद ही था। परंतु उन्होंने कुरिन्थियों की पहली पत्री के 13वें अध्याय के वचन और रोमियों के 8वें अध्याय के अंतिम वचनों को भी पढ़ा।

लली भी इसी विषय पर विचार कर रही थी। इसलिए वह शुरूआत से ही प्रवचन को ध्यान से सुनने लगी। प्रचारक ने प्रवचन की भूमिका के रूप में प्रेम के विषय को ही उठाया। वह वचन कहते हुए माता-पिता के प्रेम, दोस्तों के बीच के प्रेम और युवक-युवती के बीच के प्रेम के विषय में कहता चला गया -

“यदि थोड़ा-सा भी प्रेम न हो, तो मनुष्य एक दूसरे के साथ नहीं रह सकते हैं। इसी प्रकार परिवार, गाँववासी और पति-पत्नी भी। परमेश्वर का वचन जिस ‘प्रेम’ की बात करता है, उससे आजकल के बहुत सारे युवक और युवतियाँ अनजान हैं। अपनी वासना को, जो प्रेम के विपरीत है, उसे ही वे प्रेम की संज्ञा देते हैं। जरा सोचिए और इसकी तुलना तो कीजिए। परमेश्वर के वचन में कहा गया है- ‘प्रेम धैर्यपूर्ण है, प्रेम दयामय है, प्रेम में ईर्ष्या नहीं होती, प्रेम अपनी प्रशंसा आप नहीं करता, प्रेम अनुचित व्यवहार नहीं करता...’। मगर आजकल बहुत सारे लोग जिस प्रेम की बात करते हैं उसके लिए तो प्रेम की उपर्युक्त विशेषताओं को उलट देना होगा। आजकल के लोगों के प्रेम में धैर्य नहीं होता, कभी-कभी उनका जीवन भी काफी खराब रहता है, वे ईर्ष्या की आग में जलते रहते हैं, अपने फायदे के लिए अपनी बड़ाई भी करते हैं, उचित अवसर पाने पर अनुचित व्यवहार करने से भी पीछे नहीं हटते। वे बहुत जल्द क्रोधित हो जाते हैं, वे इतने स्वार्थी हैं कि कभी-कभी यह भी कहते हैं कि “अगर वह मेरी नहीं हो सकती तो मैं उसे मार दूँगा”। जब वे एकांत में रहते हैं, तो उनके विचार बुराई की और ही उन्मुख होते हैं, जिससे उनके बीच अंततः यौन संबंध

स्थापित हो जाता है। इसीलिए हम प्रेम के सच्चे अर्थ की ओर ध्यान दें, ऐसा न हो कि भेड़ की खाल में लिपटे वासना रूपी भेड़िए को ही हम प्रेम समझ लें।"

शायद कुछ युवकों को उनकी बातें सच लगीं, वे दबी हुई हँसी हँसने लगे।

फिर वे परमेश्वर के प्रेम के विषय में कहते गए। वे कहने लगे "परमेश्वर ने जगत् से ऐसा प्रेम रखा... । दुनिया की बढ़ती बुराई, जर्मन सिपाहियों की हिंसक प्रवृत्ति, बहुत से शराबियों की गंदगी, पैसे के लालच में दूसरों के बच्चों का अपहरण और भयानक से भयानक बुराई के बावजूद भी कोई उस वचन को झुठला नहीं सकता..."- यह कहते हुए उनकी आवाज़ और बुलंद होती जा रही थी।

"बचपन में लोग मुझसे कहा करते थे कि 'झूठ बोलोगे तो परमेश्वर तुमसे नफरत करेगा'। मगर आज रात मैं आपको परमेश्वर के प्रेम और प्रभु यीशु के प्रकट होने की बातें बताना चाहता हूँ। जब तुम किसी की हत्या करते हो, तुम्हारे मन में बुरे विचार आते हैं और तुम उनके बारे में सोचते हो, तब भी परमेश्वर तुमसे बेहद प्रेम करता है। मगर जब परमेश्वर यह देखता है कि तुम उसके प्रेम से अनजान हो या जानते हुए भी उसे अनदेखा करते हो, तब उन्हें बहुत अफसोस होता है (अगर परमेश्वर को मनुष्य की तरह देखें तो)।

इसके ठीक उलट परमेश्वर हमसे बार-बार कहते हैं- 'ओ मेरे प्रिय बच्चे! मैं तो तुमसे कितना प्रेम करता हूँ! मैंने तुम्हारे लिए जितना सहा है, उसके बारे में जरा सोचो। जो काम तुम अभी कर रहे हो, मुझे उनसे नफरत है। पश्चाताप करो और लौट आओ। तुम क्यों अंतहीन विनाश की ओर बढ़ रहे हो? पीछे मुड़ो और लौट आओ। क्या तुम जानबूझकर खाई में कूदना चाहते हो? मैंने अपना कीमती लहू देकर तुम्हें तुम्हारे पापों से मुक्त किया

है।’ यह बात हम सच्चे रूप से जान लें कि उस महान परमेश्वर के प्रेम से मृत्यु, जीवन, वर्तमान या भविष्य या फिर कोई भी दूसरी शक्ति हमें जुदा नहीं कर सकती।

“मगर मैं अपने प्रवचन के अंत में एक खास बात की तरफ आपका ध्यान दिलाना चाहता हूँ। मैंने जो बाइबल का वचन चुना उसके अंत में यह है कि ‘...जो कोई भी उस पर विश्वास करता है, उसका नाश नहीं होता, वरन् वह अनंत जीवन पाता है।’ मैं बस यह कह रहा हूँ कि उस वचन पर दूसरी तरह से जरा विचार करें। यह वचन ‘...जो कोई भी उस पर विश्वास करता है, उसका नाश नहीं होता’ अविश्वासियों के परिणाम को स्पष्टतः प्रकट करता है- उनका नाश होगा। अतः यदि कोई ऐसा है जो परमेश्वर के महान प्रेम, जो अकथ है, उस पर विश्वास नहीं करना चाहता है, तो उसका अवश्य नाश होगा। यहाँ ‘नाश’ का सही अर्थ क्या है, वह तो हम स्पष्ट तौर पर नहीं जानते, मगर यह कुछ भयानक अवश्य है। अतः परमेश्वर के प्रेम पर विश्वास करने वालों और उससे प्रेम करने वालों! परमेश्वर के प्रेम से अनजान अपने नाश की ओर बढ़ते अन्य मनुष्यों को, अपनी जाति के लोगों को और अपने प्रिय लोगों को मत भूलो। चलो प्रयत्न करें, चलो प्रयत्न करें! हम परमेश्वर के दास हैं... परमेश्वर कृपा करें! आमीन।”

उनके महान प्रवचन ने मानो सभी के दिल को छू लिया हो! उस रात की संगति में लगभग ऐसा कोई भी नहीं था जिनकी आँख लग गई हो। उनके प्रवचन ने लली के मन को तो बहुत गहराई से छुआ। प्रवचन के समाप्त होने पर उसके मन में कई बातें उमड़ रही थीं। वह अपने संडे स्कूल के कार्य के बारे में सोच रही थी और वह सोच रही थी कि अपने पिता के लिए वह जो प्रार्थना किया करती है, उसे और मन से करे। वह अपने पिता की ही चिंता करने लगी। परमेश्वर के महान प्रेम से अपने पिता को परिचित कराने की चाह उसके मन में

और बढ़ गई। लेकिन उसे कोई उपाय सूझ नहीं रहा था। मगर परमेश्वर किस तरह मनुष्य की समझ से परे, अपनी अलग राह तैयार रखता है- यह हम शीघ्र ही जान जाएँगे।

शादी-ब्याह का विषय:

ऊपर जिस रविवार की चर्चा चल रही थी उससे लगभग एक महीना भी नहीं गुजरा था कि लली के साथ एक बात हई जो प्रायः किसी भी सामान्य स्त्री और पुरुष से साथ होती है और जो हमारे जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं में से एक है। वह थी शादी-ब्याह की बात। विवाह का मतलब तो यह होना चाहिए था कि हम भी अंग्रेजों की तरह अपनी पसंद से प्रेमी या प्रेमिका चुन पाते और जीवन भर एक-दूसरे का सहारा बनकर एक-दूसरे का साथ देते हुए शादी के बंधन में बंधते। अपनी पसंद से विवाह करना किसी के लिए भी दुनिया के सबसे अच्छे अनुभवों में से एक है।

मगर हम अंग्रेज़ नहीं हैं, हम तो मिज़ो हैं और हमारे यहाँ की वर्तमान स्थिति वैसी नहीं है, इसलिए मिज़ो लड़कियों और हमारी बहनों के लिए ऐसे वक्त का सामना करना बेहद कठिन होता है। ऐसे वक्त को वे कई बार दुःखी होकर आँसुओं के साथ गुजारती हैं। हम उन्हें गाय की तरह बेचते हैं और जैसे खरीददार जानवरों की सेहत और ताकत को परखते हैं, वैसे ही लड़कियों की अच्छाई और उनके मेहनती होने या न होने को परखा जाता है। साथ ही उनके मालिक यानी माता-पिता और भाई ज्यादा पैसे देने वालों के पास उन्हें बेच देते हैं। हम उन्हें किसी वस्तु की तरह बेचते हैं, मोल-भाव करते हैं और खरीदने के बाद भी यह कहते हैं कि “स्त्री और टूटे बाड़ को तो बदला जा सकता है”। जब चाहे हम उन्हें पीटते हैं, जब चाहे उन्हें छोड़ (तलाक) देते हैं। पुराने जमाने में संसार के महा अभिशाप रूपी दास प्रथा में जब दास और दासियों को बेचा-खरीदा जाता था, तब यह देखा जाता था कि वे काम कर सकते हैं या नहीं? उनमें ताकत है या नहीं? अगर मैं यह कहूँ कि हमारे

समाज में आजकल की सभी लड़कियों की परवरिश हम इसी तरह् कर रहे हैं, तो शायद यह् गलत हो, मगर ज़्यादातर लड़कियों की यही स्थिति है। दास-दासियों को बेचने की यह भयानक प्रथा कुछ अच्छे लोगों के कारण और कुछेक अच्छे ईसाईयों के धन-संपत्ति, जीवन और सामर्थ्य, उनके ज्ञान और उनके प्रयासों एवं कड़ी मेहनत के बल पर समाप्त हो चुकी है। अरे! क्या कोई भी जोरम (मिज़ोरम) की दासियों को मुक्त कराने वाला नहीं है?

लली भी स्त्रियों के इस अभिशाप से बच न सकी। उसके गाँव के एक संपन्न परिवार के लड़के रउज़ीका ने रिश्ते की बात चलाई। पहले भी उसके लिए कई रिश्ते आ चुके थे। मगर जैसा कि पहले ही बताया गया है, पैसे की बात पर रिश्ते ठुकरा दिए जाते। मगर इस बार बड़े ही अच्छे परिवार से रिश्ता आया था। उनके पास पैसों की भी कमी न थी। लली के पिता मन-ही-मन खुद को भाग्यशाली समझ रहे थे। वह युवक भी सुंदर और गाँव के ताकतवर युवकों में से एक था और ऊपर से अच्छे परिवार का भी था। वह सामाजिक रूप से भी बहुत सक्रिय था।

मगर लली की नजर में वह वैसा बिल्कुल नहीं था। उसके अनुसार वह अपने रूप, संपन्नता तथा ताकत पर धमंड करने वाला और सक्रिय नहीं बल्कि केवल यहाँ-वहाँ करने वाला था। गिरजा में भी शामिल न होने वाला, संगति में भी अच्छे से भाग न लेने वाला, गंदी जुबान और गंदे गाने गानेवालों का अगुआ था। ये बातें बस सुनी-सुनाई बातें न थीं। वह यह सब खुद जानती भी थी। लली को खुद गाँव के लोगों की पूरी जानकारी थी, इसलिए उसे गुप्त जानकारी थी कि वह इससे भी कहीं बदतर है। उसे पूरा विश्वास था कि जितना वह जानती है, वह उससे भी बुरा होगा। मगर ये सब बातें अभी किसी से कही भी नहीं जा सकती थीं।

सभी बातें सोचते हुए उसे लगा कि उस इंसान को जीवनभर अपने पति के रूप में स्वीकारने के लिए परमेश्वर के सामने वचन लेना बिल्कुल असंभव है। मगर उसके माता-पिता को इन सभी बातों की जानकारी न थी, उसके पिता को तो बिल्कुल ही नहीं। पता नहीं अब क्या होगा! थनी को भी ये सभी बातें मालूम थीं, मगर वह भी कुछ कर नहीं सकती थी। लली से पहले तो मज़ाक-मज़ाक में उसकी इच्छा पूछी गई। मगर उसके माता-पिता को उसकी साफ-साफ इनकार करती हुई आँखें न दिखीं। वे कहने लगे कि युवतियों का तो स्वभाव ही होता है शादी के लिए अपनी चाह को छिपाना। लली और थनी दोनों इस बारे में बातें किया करती थीं। जितना वे इस बारे में बातें करतीं, उतना ही उन्हें घुटन-सा महसूस होता। असहाय महसूस होने पर दोनों प्रार्थना करतीं, मगर उनकी, घुटन कम न होती।

एक रात की बात है। लली के मामा माङा ने लली को अलग बुलाया और उसकी माँ के साथ बैठकर उनसे विवाह के संबंध में चर्चा की। लली को बड़ी खुशी हुई कि उसके पिताजी ने उससे बात करने लिए उसके मामा को चुना। उसके लिए उसके मामा एक मित्र से कम न थे। इसलिए ही उसके पिता ने उन्हें भेजा था।

शुरुआत में लली को समझ ही नहीं आ रहा था कि वह अपनी बात कैसे रखे। कैसे कहे कि वह लड़का उसे बिल्कुल पसंद नहीं है। शादी-ब्याह के लिए इक्कीस वर्ष की आयु अब बहुत कम भी तो न थी। उन्हें सारी बातें बताना भी असुविधाजनक था। उसे नहीं लगता था कि अगर वह सबकुछ साफ-साफ बता दे, तब भी उसके माता-पिता का मन ज़रा भी बदलेगा। उसके मामा ने उससे कहा- “वह शादी के लिए बहुत अच्छा रहेगा, वैसे भी वह उनका इकलौता बेटा है, उनकी सारी संपत्ति आगे चलकर तुम्हारी ही होगी। इसके अलावा वह हमारे गाँव का ही है, तुम जब चाहो अपने घर आ-जा सकोगी। हमारी खुशकिस्मती है कि हमारे गाँव में ही हमें ऐसा रिश्ता मिला है।”

लली के लिए कहने को कुछ बचा ही नहीं। “अरे! आप लोग नहीं जानते, वह कितना बुरा है। यह आप लोग जानते ही नहीं...” वह कहती चली गई। वह उसकी शराब पीने की आदत और लड़कियों के साथ उसके संबंधों (जिसका उसे अनुमान था) के बारे में बताना चाहती थी। मगर यह सब अभी बस उसका ही मानना था। उसकी माँ ने उससे कहा- “नफरत करना तो बस बचकानी बातें हैं। तुम तो जानती ही हो कि हमारी स्थिति कितनी खराब है। ऐसा अच्छा रिश्ता शायद हमें फिर कभी नहीं मिलेगा। हाँ, उसके स्वभाव को पसंद न करने वाले को तो वह उतना अच्छा नहीं लग सकता है, मगर सभी जवान लड़के तो ऐसे ही होते हैं। कागज़ चिपका[12] दिया जाए?”

मगर लली ने कहा- “नहीं माँ नहीं, कागज़ चिपकाने को मत कहो...” उसकी आँखे भर आईं। वह जो कहना चाहती थी वह भी कह न सकी। उन्हें सूझ नहीं रहा था कि उनकी बच्ची जिद पर क्यों अड़ गई है। उन्हें चिंता-सी होने लगी कि कहीं कुछ गड़बड़ तो नहीं है। उसके मामाजी वहाँ से निकल गए। रो रही लली से माँ ने कहा- “अरे! तुम क्यों मना कर रही हो! ऐसा अच्छा इंसान तुम्हें फिर नहीं मिलेगा, तुम बूढ़ी होने तक बैठी रहना...” वह आगे कुछ कहने जा रही थी कि लली ने गुस्से में कहा- “तुम लोग भी न, ‘ऐसा अच्छा इंसान-ऐसा अच्छा इंसान’ की बार-बार रट लगा रही हो, वह कितना बुरा है तुम लोग जानती ही नहीं। रविवार को इसी ने मना और उसके साथियों को शराब पिलाया था। खुद तो छिपकर पीता है, मगर दूसरों को भी पीना सिखाता है। इसके अलावा लोग तो कहते हैं कि वह लड़कीबाज़ भी है। ऐसे बुरे इंसान से मैं तो शादी करने से रही। तुम्हें इतना ही पसंद है तो खुद ही उससे शादी कर लो न।”

अब चूँकि वहाँ केवल उसकी माँ ही थी तो वह चाहती थी कि सब कुछ बता ही दे। मगर बातों की सच्चाई जाने बिना वह किसी की बुराई नहीं करती थी और कभी करना भी नहीं चाहती थी। इसलिए उसे समझ नहीं आ रहा था कि उसने जो किया वह सही है या

गलत। उसकी माँ ने धीमे-से कहा - “अच्छा!” और चुप हो गई। उनके मन में क्या था यह कोई नहीं जानता था। लेकिन मन में जो भी हो, घर के फैसलों के मामले में स्त्रियों की तो कुछ चलती नहीं।

लली के मामा ने उसके पिता को ढूंढकर उन्हें सारी बातें बता दीं। बात करते हुए उन्हें थोड़ा सावधान होने की जरूरत महसूस हुई और बच-बच कर थोड़ा सोच-विचार कर उन्होंने आगे कहा- “मुझे कुछ सूझ नहीं रहा है। उसका उसे पसंद न करने के पीछे शायद कुछ बड़ा कारण है या फिर शायद वह उसके पसंद का लड़का नहीं है...मुझे पता नहीं। जो भी हो, उसने जिस तरह से मुझसे बहस की, उससे तो लगता है कि वह बिल्कुल तैयार नहीं है। कोई बड़ा कारण न होता तो लली अपने पिता, मामा की इच्छा को मना न करती।”

मगर लली के पिता ने कहा- “बड़ी आई! हमारे जैसों को ऐसा अच्छा रिश्ता तो फिर कभी नसीब नहीं होगा। शादी तो वह जरूर करेगी। सभी एक दूसरे को पहले से पसंद करके ही शादी थोड़े करते हैं! प्यार तो बाद में अपने-आप हो जाता है। चलो, मैं अब घर जाता हूँ।” वे माङा को छोड़कर चले गए। माङा अपने बहनोई के स्वभाव से परिचित था इसलिए उसे विश्वास था कि लली की शादी होकर ही रहेगी। मगर वह समझ नहीं पा रहे थे कि इस बात पर उन्हें खुश होना चाहिए या दुःखी। उन्हें पूरा विश्वास था कि लली के पास शादी न करने का कोई ठोस वजह जरूर है, जिसे पता लगाने की कोशिश वे करने लगे।

लली के पिता जब घर पहुँचें तो रात के भोजन का समय होने वाला था। खाना परोसती हुई लली से उसके पिता ने कहा- “लली तुमने क्यों कहा कि तुम शादी करना नहीं चाहती? ऐसा अमीर परिवार और अच्छा युवक अपने पूरे गाँव में तुम्हें कभी नहीं मिलने

वाला है। अरे! इस रिश्ते में अड़चन भी आए, तब भी हमें ही इस रिश्ते को आगे बढ़ाने की पूरी कोशिश करनी चाहिए। शादी तो तुम्हें करनी ही होगी। प्यार तो धीरे-धीरे अपने आप हो ही जाएगा।" लली अपने पिता की बातों से समझ गई कि यह उनका अंतिम फैसला है या उनसे बात करने या उनसे कुछ भी कहने का कोई मतलब नहीं है।

"फिर वही बात! मैं शादी नहीं करूंगी।"- गुस्से में कहकर लली तेजी से आँगन की ओर बढ़ गई।

उसने जवाब तो दे दिया, मगर वह जानती थी कि उसके पिता का वही अंतिम फैसला है। अगर वह बिना झगड़ा किए मेल-मिलाप से कर रहना चाहती है तो उसे उनका फैसला न चाहते हुए भी मानना ही पड़ेगा। वह सिसक-सिसककर रोने लगी। तभी उसकी माँ ने अपने मन की बात कही। वह सहमते हुए कहने लगी, "वह सही तो कह रही है। उसके न चाहते हुए जबर्दस्ती करना ठीक नहीं है। ऊपर से वह लड़का बहुत बुरा है...।"

मगर यह देखकर कि उसकी पत्नी भी वही कह रही है, लली के पिता ने एकाएक गुस्से से कहा- "बड़े आए तुम लोग! ऐसे तो शादी होने से रही। तुम लोग उसे बुरा कह रही हो! तुम लोगों से भी बुरा कोई होगा भला? खुद को और हम सब को भाग्यशाली कहने के बदले यह सब बातें कर रही हो। शादी तो होकर रहेगी, चाहे मुझे शादी वाले दिन तुम सभी को पीट-पीटकर ही क्यों न निकालना पड़े। ज़ुआला, जाओ अपने मामा को बुलाओ। उनसे कहना कि खाना-खाने के बाद यहाँ आएँ। अगर लड़के वाले कागज चिपकाना जरूरी समझते हैं तो वे (मामा) जाकर चिपका दें।"

उस समय ज़ुआला की तबीयत कुछ खराब थी और बड़ों की बातें उसे मालूम भी न थीं। उसे अपने पिता की बात टालने की हिम्मत तो नहीं थी, मगर उसने कहा- "मेरे सिर में बहुत दर्द है।" और उठकर तुइऊम[13] के पास जाकर खड़ा हो गया।

उसके पिता के गुस्से की सीमा न रही। "अब तू भी मेरी बात टाल रहा है।" कहते हुए उन्होंने जलावन की लकड़ी उसकी ओर फेंकी, जो हल्के से उसके कंधे में जा लगी। ज़ुआला धम्म से जमीन पर गिर पड़ा। वह डर के मारे धीरे-धीरे सिसकने लगा।

"कितने बुरे हो तुम, देखो तुमने उसे चोट पहुँचा दी है!"- यह कहती हुई ज़ुआला की माँ तुरंत उसकी ओर बढ़ी।

मगर लली के पिता अपना आपा खो बैठे थे। पत्नी की बातों से वे और क्रोधित हो गए, क्योंकि उनकी पत्नी ने पहले कभी उन्हें टोकने की हिम्मत नहीं की थी। "बड़ी आई! बुरी तो तू है। तेरी वजह से ही ये सभी जिद्दी हो गए हैं," कहते हुए वे उन्हें धड़-धड़ पीटने लगे।

ज़ुआला ने रोते हुए डरते-डरते कहा- "माँ, माँ!" और अपनी माँ के गले से लग गया।

घर का माहौल बाकी दिनों की तरह न रहा। ताइया ने अपने पिता को पकड़े रखने की कोशिश की। लली ने ज़ुआला को अपने पास ले लिया और अपनी माँ से कहा- "यहाँ से भाग जाओ माँ।" ताइया के लिए अपने पिता को और पकड़े रख पाना मुश्किल हो रहा था।

हालाँकि लली की माँ कई बार मार खा चुकी थी, मगर वह एक भली औरत थी, इसलिए वह कभी घर से भागी न थी। उस समय भी उन्हें घर छोड़ना तो सही नहीं लगा,

मगर अपनी बेटी की दयनीय स्थिति को देखते हुए उन्हें भागने के अलावा और कोई रास्ता न सूझा और वह निकल गई।

मगर एक प्रौढ़ औरत और जवान बेटा-बेटी की माँ होकर पति की मार के कारण घर छोड़कर निकल जाना उन्हें बिल्कुल सही नहीं लगा। वह सुमह्मुन में खड़ी हो गई। उन्हें निकलता देख लली के पिता ने कहा- "फिर कभी घर लौटकर मत आना। मेरे घर के अंदर कदम रखा तो मैं तुम्हें काट डालूँगा।"

उसके पिता गुस्से में अक्सर ऐसा कहा करते थे, इसीलिए उनके बच्चों ने उनकी बातों को गंभीरता से नहीं लिया। उसकी माँ को लगा कि लली के पिता का गुस्सा शांत होने से पहले घर लौटना ठीक नहीं है। इसलिए उसने तय किया कि वे अपने भाई के यहाँ रात को ठहरकर अगले दिन घर लौट आएगी। वह अपने भाई के यहाँ चल दी।

लली ज़ुआला के कंधे को देख रही थी और उसके पिता चूल्हे के पास झुके बैठे थे। तभी उनके घर के मेहमान कमरे से निकले। "ज़ुआला तुम क्यों रो रहे हो?" बिआकमोया ने पूछा और उत्तर की उम्मीद से लली की ओर देखा। सामान्य स्वर में बोलने की कोशिश करते हुए लली ने कहा- "पिता की बात न मानने के लिए इसने मार खाई। चलो ज़ुआलते (स्नेह से) तुम्हारा सिर दुख रहा है न, मेरे बिस्तर पर सो जाओ।"

उसने उसे अपने बिस्तर पर सुला दिया। वह अपने मेहमानों से सामान्य होकर हँसी-खुशी से बातें करने की कोशिश करती रही।

दूसरे मेहमानों को तो घर के माहौल में आए अंतर का आभास भी नहीं रहा होगा, मगर लली के पिता को चुपचाप चूल्हे के पास बैठा देख, ज़ुआला को रोता देख और लली के चेहरे को देखकर मोया समझ गया कि घर का माहौल सामान्य नहीं है। उसे लगा कि इसका कारण वह जानता है।

उसके दोस्तों ने लली से मज़ाक में पूछा, “लली तुम्हारी माँ कहाँ चली गई?” वे उसे अक्सर ऐसे ही छेड़ा करते थे और ऐसा बस वे हँसी-मज़ाक में पूछा करते थे। लली अपने रूँआसे चेहरे को छिपाने के लिए अंधेरे की ओर मुड़ी रही और मज़ाक में ही उत्तर दिया, “यहाँ-वहाँ घूम रही है!” सभी ठहाके मारकर हँसने लगे।

ठहाके से गूँज रहे उस घर के भीतर चिंता से भरे तीन लोग थे- लली के पिता, जिन्हें इस बात का अहसास था कि यह क्रोधित होने का समय नहीं है और फिर भी वे मुँह फुलाकर बैठे थे। इसके अलावा लली, जिसके हँसते चेहरे और शांत बातों के पीछे एक विचलित मन था। उसके मन में ऐसी तकलीफ बसी हुई थी, जिसे केवल वही लड़की समझ सकती है, जिसकी शादी उसकी मर्ज़ी के खिलाफ ऐसे लड़के से करा दी जाती है, जिससे वह नफरत करती है और जिसका चेहरा देखना भी वह पसंद नहीं करती।

ठहाके लगाने वालों के बीच बिआकमोया कुछ सोचता हुआ गंभीर मुद्रा में बैठा था। जैसा कि लली कह रही थी कि उसकी शादी होने वाली है, उसे लगा कि इसी विषय में उनके घर में मतभेद है। लली की शादी की बात चलते ही मोया के मन में लली के प्रति ‘प्रेम’ की भावना जगने लगी, जिसे उसने पहले कभी महसूस नहीं किया था, मगर यह उसके मन में कहीं छिपा हुआ था।

अपने प्रेम के विषय में उन दोनों ने एक-दूसरे से कभी बात नहीं की थीं। उसे हमेशा लगा कि लली प्रेम-व्रेम या किसी युवक की ओर ध्यान देने वाली नहीं है। न जाने क्यों उसे हमेशा लगा कि वह इन चीजों से अप्रभावित ही रहती है।

मोया के मन की ये बातें लली को मालूम न थीं। इन चंद दिनों से पहले खुद मोया भी इस भावना से अनजान था। मोया खुद को रउज़ीका से तुलना करने के भी काबिल नहीं समझता था। “लली यदि चाहती है तो...” उसे प्रचारक के वचन अभी भी याद हैं जिसमें

उन्होंने कहा था "प्रेम स्वार्थी नहीं होता"। "लली की इच्छा और खुशी यदि इसी में है, तो फिर उसे रोकने वाला मैं कौन होता हूँ..." वह और सोचना नहीं चाहता था, मगर इन बातों को अपने दिल से निकाल नहीं पा रहा था। "अब आगे क्या होगा! जैसी परमेश्वर की इच्छा!"

परमेश्वर की राह:

सब को लगा कि ज़ुआला सो गया है। मगर कुछ ही देर में लली ने ध्यान से सुना और अपने पास हँस रहे युवकों को चुप होने को कहा। सभी शांत हो गए। लली ने पूछा, "ज़ुआलते! तुमने मुझे पुकारा क्या?"

ज़ुआला ने रुँआसी आवाज़ में कहा- "दीदी, मुझे प्यास लगी है।"

लली ने उसे पानी दिया तो देखा कि उसका माथा गरम था। ज़ुआला ने पानी पिया। वह लेटने ही वाला था कि उसने उल्टी कर दी। लली उसकी देखभाल करने लगी। चूल्हे की आग उस कमरे में रौशनी के लिए काफी नहीं थी। बिआकमोया तुरंत उस कमरे में आ गया और फिर उसके साथी भी आ गए।

"क्या इसकी तबीयत बहुत खराब है?" सभी आकर पूछने लगे।

"नहीं ऐसा नहीं है, तीन दिनों से इसे बस जरा-सा ज़ुकाम है। मगर ऐसी हालत में भी यह अपना खेलकूद कहाँ छोड़ता है। हमने भी इसका ध्यान नहीं रखा। अभी-अभी तो सोया था। खैर! यह ठीक हो जाएगा।" लली ने कहा।

उसके साथी वहाँ से चले गए। ज़ुआला ने अपनी दीदी का हाथ थाम लिया और कहा-"दीदी, इसी तरह बैठी रहना"।

लली ने कहा- “क्यों? ज़ुआलते मुझे तो सूत कातना है।”

ज़ुआला ने फिर कहा- “दीदी, माँ कहाँ है?”

लली को उसके सवाल का जवाब देना बड़ा कठिन लगा। “मामाजी के घर गई होगी, वह जल्द ही लौट आएगी। तुम सो जाओ, सो जाओगे तो तुम ठीक हो जाओगे” कहकर वह वहाँ से चली गई।

ज़ुआला की अचानक बिगड़ी हालत देखकर उसके पिता भी अपना क्रोध भूल गए। मगर नम्र होकर बात करने में उन्हें झिझक महसूस हुई। इसलिए कठोर स्वर में उन्होंने कहा- “तुम्हारी माँ भी कहाँ चली गई?” मगर लली ने उन्हें कुछ जवाब नहीं दिया। ज़ुआला भाई-बहनों में न केवल सबसे छोटा था, बल्कि उसके और उसके दूसरे भाई-बहन की उम्र में काफी अंतराल था। उसकी ठीक बड़ी बहन लली बीस वर्ष से अधिक आयु की हो चुकी थी, वहीं वह दस साल का भी नहीं हुआ था। सभी उसे दुलार करते थे, उसे सबसे अधिक लाड़-प्यार करने वाले उसके पिता थे। लेकिन उस रात को क्रोध में आकर उसके पिता ने उसपर हाथ उठाया था। वे उठकर ज़ुआला की ओर बढ़े और बड़े प्यार से पूछा, “ज़ुआलते, कहा दर्द हो रहा है? तुम्हें क्या चाहिए?”

ज़ुआला ने जवाब दिया, “पता नहीं पिताजी, मेरे सर में जरा-सा दर्द है, मुझे ठंड भी लग रही है।”

कुछ देर चुप होकर उसने फिर पूछा, “पिताजी, माँ कहाँ हैं?”

उसके पिता ने कहा- “मैं उसे बुलवाता हूँ,” फिर चूल्हे की ओर मुड़कर उन्होंने लली से कहा- “लली अपनी माँ को बुला लाओ, पता नहीं कहाँ है वह?”

लली चरखे को किनारे कर उठी और जाने लगी। बिआकमोया ने तुरंत कहा- “मैं चला जाता हूँ उन्हें बुलाने, वह कहाँ हैं?”

“नहीं नहीं, मैं जा रहीं हूँ, तुम्हें पता नहीं होगा कि वह कहाँ हैं”- कहते हुए लली दरवाजे की ओर बढ़ी।

“जाने कहाँ छिपी बैठी है?” उनके घर पर ठहरे मेहमानों ने हँसते हुए कहा।

“मुझे भला क्यों पता नहीं होगा। बहुत अंधेरा है, मेरा इंतज़ार करो वर्ना तुम धड़ाम से गिर पड़ोगी। लली मेरा इंतज़ार करो, मैं मशाल जला रहा हूँ। तुम्हारी माँ कहाँ हैं मुझे मालूम है। तुम्हें जहाँ लगता है, वह वहाँ कतई नहीं हैं, मैंने उन्हें देखा था। जाओ थनी के घर से लालटेन ले आओ, मैं तुम्हारी माँ को बुला लाता हूँ।” यह कहता हुआ मोया लली का पीछा करता हुआ सुमह्मुन में पहुँचा और दोनों मशाल लेकर निकल पड़े।

कुछ दूर तक वे दोनों एक साथ चलते रहे, पर वे क्या बातें करते? मोया भी चुप रहा, अन्य दिनों की तरह उसे लली से बात करना आसान न लगा! लली को भी अन्य दिनों की तुलना में मोया के व्यवहार में अंतर महसूस हुआ। उसने तिरछी नज़र से उसे देखा। मोया भी उसे ही देख रहा था, तो लली ने तुरंत अपनी आँखें चुरा लीं।

उस रात लली को मोया का व्यवहार काफी बदला-बदला सा लगा। जब दोनों अलग-अलग रास्ते पर बढ़ने लगे तभी मोया ने लली को पुकारा।

“क्या हुआ?”- कहकर लली मुस्कुराते हुए झट से मुड़ी।

भले ही मोया भी मुस्कुरा रहा था, मगर लली से उसके चेहरे की गंभीरता छिप न सकी। न जाने वह क्या कहने वाला है यह सोचते हुए लली ने तुरंत उसकी ओर देखा। लली जिस बात को छिपाना चाहती थी वही उसने उससे पूछ लिया- “क्या तुम रो रही थी?”

लली समझ गई कि छिपाने की उसकी सारी कोशिश बेकार हो गई है। बिना कुछ कहे उसने मोया को देखा। दोनों ने एक-दूसरे के चेहरे पर उस बात को पढ़ लिया जिसे शब्दों में बयाँ कर पाना असंभव था।

लली को मोया के चेहरे पर अपने लिए चिंता, दया, डर और वह प्रेम दिखा, जिसे उसने पहले कभी नहीं देखा था। लली को बिना किसी संदेह के मोया के चेहरे पर उसकी मदद के लिए कुछ भी कर गुजरने की चाहत दिखी। अपनी ओर कुछ क्षण के लिए मुड़े लली के चेहरे पर मोया को भी अन्य दिनों में दिखने वाली चंचलता की जगह गहरी चिंता और मदद के लिए गुहार लगाता चेहरा दिखा और उसे लगा कि वह सबकुछ समझ रहा है।

बस उस आधे मिनट में ही उन दोनों ने एक दूसरे की अनकही बातें समझ लीं, जिसे ढेर सारे शब्दों से भी बयाँ नहीं किया जा सकता था। लली बड़ी मुश्किल से मोया को जवाब देने जा रही थी कि तभी मोया ने कहा- “मैं जानता हूँ, मैं सब समझता हूँ।” और दोनों अपने-अपने रास्ते चल पड़े।

मगर दोनों को महसूस हुआ कि उनका मन पूरी तरह से बदल गया है। लली को मोया में एक शक्तिशाली ईमानदार रक्षक दिखा। मोया को भी लगा कि उसे लली में एक ऐसी लड़की दिखी जो मदद के लिए बढ़े उसके हाथों को कभी नहीं ठुकराएगी और जो उसके अन्तर्मन को जानती है। उन दोनों ने उस संकट की रात के चंद लम्हों में उन बातों को जान लिया जिसे वे बचपन की अपनी गहरी दोस्ती के पिछले बीस वर्षों से भी अधिक समय में नहीं जान सके थे।

अकस्मात ज़ुआला की तबीयत और बिगड़ गई और उस रात वह अच्छे-से सो न सका। उसका बुखार कम होने का नाम नहीं ले रहा था। अगली सुबह लली उसे घर में छोड़ लकड़ी लेने चली गई। ताइया भी उसे छोड़ युवतियों को मिलने (तुलारीम[14]) चला गया। मगर उसकी माँ उसके पास से पल भर के लिए भी न हटी। उसके पिता भी कहीं घूमने नहीं गए। लली घर के काम से बाहर निकलती, फिर भी घर लौटने पर, इस उम्मीद में कि उसका भाई कुछ खा ले, उसे उठाकर कुछ खिलाने का प्रयास करती। मगर वह उठने का नाम ही न लेता।

बुखार कम करने के लिए उसे कई तरह की दवाएँ दी गईं, मगर उसका बुखार कम नहीं हुआ। दिन ढल गया, रात हुई।

उनके घर ठहरे युवकों ने पूछा, “ज़ुआला की हालत कैसी है? उसने खाना खाया?” और वे भी घूमने निकल गए।

ताइया भी घूमने निकल गया। लली सूत कातने के लिए चरखे पर बैठी, मगर कात न सकी। समय-समय पर ज़ुआला के माथे पर गीला कपड़ा रखना पड़ता, उसे पानी पिलाना पड़ता और कभी वह उल्टी कर देता, तो उसकी सफाई करनी पड़ती। उस छोटे बच्चे के कारण सभी बहुत परेशान हो गए थे। मोया भी कहीं घूमने नहीं निकला। जितना उससे बना, उसने उनकी मदद की। जितना उससे हो सका, वह उन्हें खुश रखने की कोशिश करता रहा। उस रात ज़ुआला ने थोड़ा-सा दूध पिया और थोड़ी खिचड़ी खाई।

देर रात हो चुकी थी। घूमने निकले युवक भी घर लौट आए। उनके घर ठहरे युवक जो चूल्हे के पास बैठे थे, उनकी आँख लगने लगी। ज़ुआला थोड़ा शांत हुआ तो मोया ने कहा- “वह अब सो पा रहा है, वह ठीक हो जाएगा।”

पानी गर्म करने गई लली ने कहा- "मना तुम सब जाकर सो जाओ, जरूरत पड़ी तो हम तुम सबको जगा देंगे। लियाना जाकर सो जाओ।"

कुछ देर तक तो उन्होंने सोने से मना किया, मगर यह कहकर कि "अगर आप लोग बिल्कुल सो नहीं पाए तो हमें जगा दीजिएगा", वे सोने के लिए बिस्तर बिछाने लगे।

लली की माँ ने कहा "मोया तुम भी सो जाओ। तुम बहुत थक गए होगे।"

मोया ने हँसते हुए और मज़ाक करते हुए कहा- "अच्छा ठीक है, मैं सो जाता हूँ। यदि मुझसे कुछ काम कराने का मन हो तो मुझे बस लात मार दीजिएगा।" उसने अपना चादर खोला और बिस्तर पर पेट के बल लेट गया। उसके सभी साथी जल्द ही खर्राटे मारने लगे।

कुछ ही देर बाद ज़ुआला फिर से जगा और उसने उल्टी की। वह दर्द में ज़ोर-ज़ोर से कराहने लगा। मोया तुरंत उठकर यह कहता हुआ निकला "न जाने क्या हुआ है? मुझे लगा यह सो सकेगा।" शादी वाली बात से परेशान लली का चिंतित मन अब कुछ शांत हो गया था और उसका व्यवहार भी सामान्य-सा होने लगा था। पानी फेंकने के लिए जाते हुए उसने हँसते हुए कहा- "तुम्हें तो लात मारकर जगाने की भी जरूरत नहीं पड़ी।"

मोया ने हँसते हुए तुरंत जवाब दिया, "मैं अच्छे से नौटंकी नहीं कर रहा था न। अगर मैं अच्छे से करता तो तुम लात मारते-मारते थक जाती!"

उस रात वे क्षण भर के लिए भी सोये नहीं। केवल उसी रात नहीं, बल्कि ऐसा बार-बार होता चला गया। कुछ दिन बीतने के बाद उनके पड़ोसियों को भी पता चल गया। वे भी उनसे मिलने उनके घर आने-जाने लगे। थनी तो उनके साथ रात भर जगी रहती। उनके घर ठहरने वाले कई थे, मगर परिवार समेत थनी और मोया के अलावा जागने वाला कोई नहीं था।

ज़ुआला की तबीयत बेहद खराब होने के एक हफ्ते बाद उसका शरीर काफी कमजोर हो गया था लेकिन उसका बुखार उतर गया था। घरवालों को लगा कि उसकी बेहोशी की हालत में भी कुछ सुधार है। वे उसे शांति से सोता हुआ जानकर थोड़े खुश हुए। मगर तब भी घरवालों के लिए निश्चिंत होकर सोना मुमकिन न था।

उस रात लगभग आधी रात गुजरने पर लली ने मोया से कहा- "तुम सो जाओ, तुम इधर लगातार रातभर जागते रहे हो, ऐसा अच्छा नहीं है। और, तुम दिन भर खाली भी तो नहीं रहते।"

उसकी माँ ने भी तुरंत कहा- "सच में, मोया सो जाओ, ऐसे तो तुम बहुत थक जाओगे। दिन में भी तुम सोते नहीं और फिर हमेशा रातभर जागते रहते हो।"

उसके पिता ने भी कहा- "सही है, सो जाओ।"

मगर मोया तो सोने के बदले घरवालों की चिंता को कम करने के तरीके खोजता हुआ हँसी-मज़ाक करता रहा। पास खड़ी लली को देखते हुए मोया ने कहा- "अगर जगना अच्छा नहीं है तो तुम ही सो जाओ। मैं तो हूबहू ङ्हश्राङ्गचल पा [15] मछली जैसा हूँ।"

तभी थनी ने हँसते हुए उससे कहा- "बड़े आए! तुम्हें भला क्या पता ङ्हश्राङ्गचल पा मछली का हाल कैसा था? हो सकता है उसे बहुत नींद आती रही हो।"

मोया ने अकड़ते हुए जवाब दिया, "मुझे पता क्यों न होगा भला! ङ्हश्राङ्गचल पा मछली तो बिना पलकें झपकाए अपनी आँखें खोले रहता हैं।"

थनी ने तुरंत कहा- "ओ, अच्छा! तुम पलकें भी नहीं झपका रहे?"

दोनों युवतियाँ ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगीं। उसकी माँ ने भी हँसते हुए कहा- “ङ्हश्राङ्गचल पा ही मिला तुम्हें!”

उनके पिता ने हँसते हुए युवतियों (थनी और लली) को देखा। उन्होंने उन्हें टोकते हुए कहा- “अरे अब बहुत हुआ।”

उनको टोकते हुए उन्हें जिस बात का डर था, वही हुआ। ज़ुआला जग गया। पलटकर उसने अपनी आँखें खोली। उसे आँखें खोलता देख माँ खुश हुई क्योंकि वह आजकल कम ही आँखें खोलता था।

“ज़ुआलते, तुम्हें क्या चाहिए?” माँ ने तुरंत पूछा।

ज़ुआला ने अपनी माँ को देखा, फिर अपने पिता को देखा और अस्पष्ट आवाज़ में एक अत्यंत कठिन प्रश्न पूछा, जिसका उत्तर संसार के सभी लोग जानना चाहते हैं।

उसने पूछा, “पिताजी, अगर मैं मर गया तो मेरा क्या होगा?”

उसके पिता का चेहरा स्याह पड़ गया। उन्होंने उससे कहा- “अरे ज़ुआलते! मरने की बात नहीं किया करते। तुम ठीक हो रहे हो।”

मगर उस बच्चे की बात ने उनके मन पर गहरा असर किया। वे न जाने क्या-क्या सोचने लगे। ज़ुआला ने आँखें मूँद लीं और करवट बदल ली। आँखें खोल कर फिर उसने पूछा, “पिताजी, मर जाऊँ तो क्या मैं स्वर्ग जाऊंगा?”

उस भयभीत बच्चे ने फिर प्रश्न किया, जो उसके पिता की समझ से परे था और जिसका उत्तर उस पिता को देते न बना। यह एक ऐसा सवाल था जिसके बारे में उन्होंने पहले कभी नहीं सोचा था। बिस्तर के पास ही खड़े मोया ने तुरंत उनकी मदद करते हुए ज़ुआला से कहा- “जरूर जाओगे ज़ुआला। हम सभी स्वर्ग जरूर जाएँगे। कुछ दिन पहले

हमने परमेश्वर का वचन पढ़ा था, तुम्हें अभी भी याद है न वह वचन-'परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा...।' मगर तुम ऐसी बातें क्यों कर रहे हो? तुम बिल्कुल ठीक हो जाओगे। तुम तो बहादुर हो।"

मगर वह बच्चा मानो अपने ठीक होने की बातें अनसुनी करता हुआ बहुत ही सुस्त स्वर में परमेश्वर का वह वचन बुदबुदाने लगा। फिर वह शांत हो गया। ज़ुआला ने फिर अपनी आँखें खोलीं और भय एवं चिंता से भरे अपने पिता को देखने लगा। "पिताजी, क्या आप भी स्वर्ग आओगे?" उसने पूछा।

मगर पिता, जो अपने पिछले सभी बुरे कर्मों के बारे में सोच रहे थे और जो खुद अपने-आप से भी यह प्रश्न नहीं पूछते थे, कोई जवाब न दे सके। वे दूसरी ओर मुड़ गए, हथेली से अपना चेहरा छिपा लिया और उनकी आँखों से झर-झर आँसू बहने लगे।

इस बार मोया भी जवाब देने में असमर्थ हो गया। सभी शांत हो गए, मगर आँसुओं के कारण उनकी आँखों के सामने अंधेरा छा गया। ज़ुआला असमंजस में अपनी माँ को देखने लगा, अपने भाई-बहन को देखने लगा, किसी का जवाब न पाकर उसने अपनी आँखें मूँद लीं। इस बात से अनजान कि उसके सवाल का कितना गहरा असर उसके पिता और परिवार वालों के मन पर पड़ा है, वह अपने दर्द के साथ करवट बदलने लगा।

मगर उसके सवाल ने उसके पिता को उस स्थिति में पहुँचा दिया जहाँ परमेश्वर का वचन बोलने में माहिर और वचन के जानकार लोग भी पहुँच नहीं पाते। वे न केवल उस स्थिति में पहुँचे, बल्कि उसने उन्हें पूरी तरह से बदल दिया। उस रात से उसके पिता अपनी पुरानी जीवन शैली में फिर कभी नहीं लौटे।

परसों से ज़ुआला को जो दस्त हो रहा था, वह और बिगड़ गया। वह उल्टियाँ और टट्टी करने लगा। कभी-कभी उसकी टट्टी में खून भी आने लगा। उसके बाद वह चार दिन और चार रात बेहोश पड़ा रहा। उसके परिवारवाले और आस-पड़ोस के लोग उसे निराश और भयभीत होकर देखते रहे।

चौथे दिन की सुबह उस बच्चे ने इस संसार को अलविदा कहा और आत्मिक-संसार में उस यीशु के पास चला गया, जिससे प्रेम करने की सीख उसके संडे स्कूल के शिक्षक दिया करते थे। उसके परिवारवालों, दोस्तों और पड़ोसियों का रुदन और गा-गाकर रोने में माहिर लोगों का विलाप भी लली के पिता (जो रो भी नहीं पा रहें थे) के निःशब्द झर-झर झर रहे आँसुओं की असीम पीड़ा को मात देने में असमर्थ रहा। असीम पीड़ा के बीच उन्हें अपने बच्चे की अंतिम बातें याद आई। उन्हें लगा मानो उनके पापों का बोझ और बढ़ गया है।

वे बार-बार सोचने-विचारने लगे। उन्हें अपनी सारी बुराईयाँ याद आने लगीं। अपने मृत बेटे के साथ किए गए सारे दुर्व्यवहार उन्हें याद आने लगे। ये बातें उनके मन को बहुत कचोट रही थीं। उन्होंने किसी से ये बातें कही नहीं, मगर उनके चेहरे पर सबकुछ साफ झलक रहा था। उनके घर इकट्ठा हुए युवक-युवतियों ने ज़ुआला के प्रति शोक-संवेदना व्यक्त करते हुए जो गीत गाया, उसे सुनकर उसके पिता को आत्मिक शांति मिल रही थी। ज़ुआला को दफनाए जाने के अगले दिन (थ्लान ओम-नी) रविवार को उसके सहपाठी शिक्षकों के साथ उनके घर आए। उन बच्चों को देखकर सभी वेदना से भर गए। उन बच्चों ने ईसाई गीतों की पुस्तक[16] से गीत सं. 427 गाकर प्रस्तुत किया:

बच्चों के लिए है एक अच्छा साथी उस उज्ज्वल स्वर्ग में,

न बदलती है उसकी अच्छाई और न कम होता है कभी उसका प्यार,

समय की तरह बदलते हैं मगर इस संसार के यार,

इस सच्चे मित्र का नाम है महान,

उस सुंदर स्वर्ग में बच्चों के विश्राम के लिए भी है स्थान,

हे पिता! हे पिता! पुकार रहे परमेश्वर के प्रेमी,

अपनी चिताओं व कष्टों से मुक्त होने के लिए,

मुक्ति-प्राप्त अनंतकाल तक करेंगे वहाँ विश्राम।

गाने के दौरान लली के पिता खुद को रोने से रोकते रहे। मगर उनके आँसू बहते चले जा रहे थे। गाने के समाप्त होने पर एक शिक्षक रेङा (थनी के पिता) बाइबल पढ़कर प्रार्थना करने के लिए खड़े हुए-

"उस रोशन स्वर्ग में, स्वर्ग के हमारे घर में, बच्चों के मित्र प्रभु यीशु के पास ज़ुआला हमें छोड़कर चला गया...।" वे आगे और कुछ कहने जा रहें थे, मगर कह न सके।

अचानक लली के पिता उठ खड़े हुए, वे रो रहें थे। अपने चेहरे को हथेली से छिपाते हुए बहुत मुश्किल से कहा- "बच्चों, तुम लोगों ने मुझे कितना भावुक कर दिया है! मैं कितना बुरा हूँ! तुम लोगों की प्रेरणा से मेरे मन में ज़ुआला के मित्र, तुम्हारे प्रभु के पास जाने की इच्छा जगी है! मैं कह नहीं सकता, मैं कह नहीं सकता। इस घड़ी से मैं भी उस पर विश्वास करूँगा।"

बच्चों को कुछ समझ नहीं आ रहा था। वे बस उन्हें ताके जा रहे थे। उनके शिक्षक और बड़े लोगों के आँसू बह रहे थे और सभी झुके हुए थे।

ललली न जाने खुशी के कारण या वेदना के कारण रोए जा रही थी। उसकी माँ भी आँगन में रो रही थी। थनी के पिता ने कभी उम्मीद करने का साहस भी न किया था कि उनके मित्र, उनके पड़ोसी का हृदय इस तरह से परिवर्तित हो जाएगा। उनके लिए वे चुपके से प्रार्थना किया करते थे। लेकिन आज सबके सामने खुलकर उन्होंने अपने आंसुओं को बहाया। अपने पापों की स्वीकारोक्ति के पश्चात ललली के पिता ने रोते हुए, परमेश्वर की प्रशंसा करते हुए प्रार्थना की, जिसमें उन्होंने अपने मन की सारी बातें उड़ेल दीं। उस साधारण से घर के भीतर बच्चों की वह सभा बड़े-से-बड़े गिरजा घर की सभा से भी महान थी।

उस रात गिरजा की सभा से लौटे चूल्हे के पास बैठे लोग आपस में कुछ फुसफुसा रहे थे। ललली की माँ को उनकी बातें कुछ सुनाई दीं तो उन्होंने पूछा, “क्या कह रहे हो मना?”

मना ने जवाब दिया, “रउज़ीका और ज़ामी के बीच संबंध है, इसलिए उन्हें गिरजा के नियमों से बाहर कर दिया गया। चूँकि आज गिरजा में कम लोग उपस्थित थे, इसलिए यह आज किया गया (ताकि उनकी कम बदनामी हो)।”

उस घर में उपस्थित सभी लोगों ने यह बात सुनी। यह सुनकर उनमें से एक युवक और एक युवती ने चैन की साँस ली। इस बात ने ललली की तय की गई शादी को खारिज कर दिया।

ज़ुआला की बीमारी और फिर उसकी मृत्यु के बीच की वेदनापूर्ण अवधि में ललली के पिता ने नए जन्म के साथ-साथ दूसरी कई कीमती चीज़ें हासिल कीं, जिनमें से एक था- बिआकमोया । ज़ुआला की बीमारी के दौरान वे बिआकमोया की अच्छाई और उसकी कीमत को साफ तौर पर देख-समझ सके।

इसलिए लगभग एक साल बाद गिरजाघर गए लोगों ने जब दीवार पर यह कागज चिपका पाया तो उन्हें कतई आश्चर्य न हुआ:

“बिआकमोया और ललओमपुई 15 जनवरी को शादी करने जा रहे हैं।”

बाइबल में हव्वा को बहकाने वाले साँप (शैतान) से परमेश्वर ने कहा था, “मैं तेरे और इस स्त्री के बीच में, और तेरे वंश और इसके वंश के बीच में बैर उत्पन्न करूँगा। तू उसकी एड़ी को डसेगा और वह तेरे सिर को कुचल डालेगा।” बाइबल के इस प्रसंग का तात्पर्य यह है कि शैतान के राज्य में तो स्त्रियों की स्थिति काफी दयनीय रहती है, लेकिन परमेश्वर का सुसमाचार स्त्री को उसकी दासता से मुक्त करके शैतान के कब्जे से छुड़ा लेता है।

संदर्भ

---

[1] बिस्तर पर बिछायी जाने वाली मिज़ो चादर।

[2] घर का बाहरी बरामदा जहाँ ओखली रखी जाती है।

[3] करघे में धागों के बीच से होकर गुजरने वाली लकड़ी की पट्टी।

[4] मिज़ोरम से बाहर के शहर।

[5] मिज़ोरम से बाहर का; बाहरी।

[6] मिज़ो औरतों द्वारा कमर में लुंगी की तरह लपेट कर पहना जाने वाला आयताकार कपड़ा।

[7] मिज़ो औरतों का सांस्कृतिक पुआन।

[8] रविवार को गिरजा घर में पहना जाने वाला पुआन।

[9] झूम खेती में फसलों की कटाई के बाद का खाली समय जब खेत में ज्यादा काम नहीं होता।

[10] मिज़ोरम में ज़ोलबूक की परंपरा के अंत होने के बाद भी कुछ युवक इस परंपरा के आदी होने के कारण अपने दोस्तों के घर ही रात को ठहरा करते थे।

[11] चर्च के चुने हुए मान्य लोग।

[12] मिज़ो ईसाई समाज में शादी का रिश्ता तय होने पर शादी के 15 दिन पहले शादी की सूचना तारीक समेत गिरजाघर की बाहरी दीवार पर चिपकाने की प्रथा है।

[13] पानी रखने का बर्तन।

[14] मिज़ो समाज में मिज़ो युवक जिन युवतियों को पसंद करते हैं उनसे मिलने उनके घर जाया करते हैं। इसे ही नुलारीम कहते हैं।

[15] एक प्रकार की मछली।

[16] मिज़ोरम के कई गिरजाघरों में इस्तेमाल होने वाली मसीही स्तुति गीतों की पुस्तक।

2.2 आऊखोक लसी

(इ ओइह् खेर न मो चु)

(गुंजनस्थल की लसी[1])

(शायद आपको विश्वास न हो...)

- ललज़ुईथङ

इस बात को बहुत साल बीत गए हैं। तब मैं जवान था और आइज़ोल आज जैसा तो बिल्कुल नहीं था, वह तो लगभग पूरा-का-पूरा जंगल ही था। ठीक-ठाक संख्या में वाई (बाहरी) लोगों का आगमन हो चुका था और लुङलई का रास्ता भी बन चुका था। आइज़ोल को आज की ही तरह सरकारी गतिविधियों का शहर और सबसे बड़ा शहर माना जा चुका था।

ङाईज़ेल तो ङाई (चीड़) के पेड़ों से भरा घना जंगल था। सरकार द्वारा बनाए गए उस रास्ते से रात के समय तो इंसानों से ज्यादा जंगली जानवर गुजरते थे।

एक रात मैं अपने साथी के साथ जरूरी संदेश देने केल्सिह गाँव से आइज़ोल की ओर जा रहा था। हम ज़्यादा दूर नहीं चले थे कि मेरे साथी के पाँव में मोच आ गई और वह आगे चल न सका। वह धीरे-धीरे वापस लौट गया। कर्त्तव्य की भावना से प्रेरित होकर मैं चाकू और भाला लिए अपनी मंजिल की ओर बढ़ चला।

हालाँकि मैं बिना किसी अनहोनी घटना के ङाईज़ेल पहुँचा। पूर्णिमा की रात थी और रात बड़ी उज्ज्वल थी। मैं निश्चिंत भाव से चल रहा था, पर जैसे ही मैं आऊखोक (गुंजनस्थली) के पास पहुँचा, मुझे किसी स्त्री के अत्यंत आनंदित होकर हँसने की स्पष्ट आवाज़ सुनाई पड़ी। मुझे महसूस हुआ कि आवाज़ रास्ते के ऊपर के पहाड़ों से आ रही है। मैं

खड़ा हो गया और ऊपर की ओर देखने लगा। पहले तो मुझे लगा मेरी आँखें मुझे धोखा दे रहीं हैं, तो मैं अपनी आँखों को मलने लगा। मैं फिर उसी ओर देखने लगा। मैंने अपनी आँखों को तीन बार मला, फिर भी मैंने वही देखा, जो पहले देखा था।

आऊखोक के नीचे, एक बेहद बूढ़े ङाई (चीड़) की झुकी डाल पर काले-लंबे बालों वाली, गोरी और बिल्कुल सफ़ेद सुंदर आकृति वाली युवती निर्वस्त्र बैठी थी। उसका शरीर पूरी तरह अन्यावृत था। चाँद की रोशनी में मुझे उसका चेहरा साफ नज़र आया। वह कितनी सुंदर थी! मुझे तो लगता है कि जिस लोङलाई की सुंदरता का बखान लोग करते हैं, वह भी इसके सामने कुछ नहीं है। वैसी सुंदर और सुडौल युवती मुझे आज तक इंसानों के बीच नहीं दिखी।

पहली बार जब वह मुझे दिखी तो मेरा रोम-रोम काँप उठा। यह कोई पागल है या फिर कोई प्रेत? रात की शीतल हवाओं से लहरा रहे उसके बाल मुझे साफ दिखाई दिए। वह फिर से हँसी। वह मेरी ओर मुड़कर मुझे ही देख रही थी, इसलिए मुझे लगा वह मुझ पर ही हँस रही है। मैंने हिम्मत जुटाकर उसे फटकारा, “कौन हो तुम?”

वह फिर मुझ पर हँसी और उसने मुझसे कहा- “तुम भी आओ ठुआमा, यहाँ बहुत मज़े हैं। मुझे पता था कि तुम आओगे, इसलिए मैं तुम्हारा इंतज़ार कर रही थी। तुम भी पेड़ पर चढ़ जाओ...” मुझे उसकी आवाज़ बहुत मधुर और आकर्षक लगी।

अगर मेरा मन आजकल के लोगों जैसा होता तो उसके एक बार बुलाने पर ही मैं उसके पास दौड़ा चला जाता। मगर मैं बहुत नादान था, मुझे भूत-प्रेत से बहुत डर लगता था। मैंने उसे जवाब नहीं दिया। उसके तीन बार पुकारने पर भी मैंने उसे जवाब न दिया। यह मानकर कि मैंने कुछ अशुभ और बुरी चीज़ देख ली है, मैं वहाँ से बढ़ने को हुआ।

"कितना अजीब है! मैं इतनी अकेली हूँ और तुम इतनी बेपरवाही से चले जा रहे हो? तुम्हारी मंज़िल बहुत निकट है, मगर हो सकता है तुम वहाँ पहुँचो ही ना..." कहकर वह मुझे डराने लगी। उसकी बात सुनकर मैं चिंता में पड़ गया। मैंने मुश्किल से तीन कदम ही बढ़ाए होंगे कि अचानक रास्ते के निचले हिस्से से एक बड़ा-सा शेर निकल कर सामने आ गया। उस युवती ने हँसते हुए कहा- "देखा... मैंने कहा था न तुम ज्यादा दूर न जा पाओगे। यहाँ आ जाओ या फिर अभी भी आगे बढ़ने के लिए तुले रहोगे?" मुझे कुछ न सूझा तो मैंने कहा- "मैं तुम्हें नहीं पहचानता। तुम मुझे कैसे जानती हो?"

"मैं राऊतिनछीङी हूँ, तुम वाकई मुझे नहीं पहचानते, मगर मैं तुम्हें बरसों से जानती हूँ...ऊपर आओ...यहाँ कुछ भी डराने चीज़ नहीं है, यहाँ कोई भी ऐसा नहीं है जिससे डरने की जरूरत हो। मेरे परिवार वाले भी दूसरी जगह चले गए हैं। मैं बहुत अकेला महसूस कर रही हूँ," कहकर उसने मुझे फिर आमंत्रित किया।

"अच्छा ठीक है मैं आता हूँ। मगर चढ़ना बड़ा कठिन होगा।"- कहकर मैंने दो कदम ही बढ़ाया तो मुझे महसूस हुआ कि मैं उड़ने लगा हूँ और मैं अचानक ही उसके पास जा बैठा।

जब मैंने देखा कि जहाँ हम बैठे हैं वह जगह जमीन से काफी ऊँचाई पर है तो मुझे चक्कर-सा आने लगा। उसपर से वह पेड़ को भी हिलाने लगी। मुझे लगा मैं गिर जाऊँगा इसलिए मैंने उसे कसकर थाम लिया। यह देख वह ज़ोर-ज़ोर से हंसने लगी।

"तुम कितने डर गए हो! तुम्हें देखकर तो मुझे हँसी आ रही है। चलो, घर के भीतर चलते हैं। बाहर हमें लोग देख लेंगे जो कि बहुत शर्म की बात होगी।"– यह कहते हुए उसने मेरी बाहें थाम लीं और मुझे अंदर ले गई। उनका घर मुझे दिन की रोशनी-सा रोशन प्रतीत हुआ।

अब जब मैं उस घर को याद करता हूँ, तो मुझे वह घर अँग्रेज़ो के विशाल घरों जैसा प्रतीत होता है। वहाँ पारदर्शी सुंदर पर्दा टँगा था। मैंने उस घर को भीतर से पूरा तो देखा नहीं, मगर वह ज्यादा विशाल नहीं था। उसने मुझे पलंग नुमा फर्नीचर पर बिठाया, जिस पर मोटा-सा आरामदायक गद्दा बिछा था। फिर उसने मुझे हाथीदाँत से बने प्याले में ज़ू[2] थमाया।

“इसे पियो, यह ज़ू मैंने बनाया है,” कहती हुई वह मेरे पास बैठ गई। मुझे बहुत प्यास लगी थी तो मैंने उसे एक घूँट में ही पी लिया। ज़ू के गले से उतरते ही मुझे ऐसा लगा मानो मैं किसी दूसरी दुनिया में पहुँच गया हूँ। मुझे अपनी मंजिल का बिल्कुल खयाल न रहा और न ही संदेश पहुँचाने का। मैं ऐसा महसूस करने लगा मानो वह मेरा ही घर हो और मैं वहाँ बरसों से रह रहा हूँ। राऊतिनछीङी भी मुझे अपनी बरसों की प्रेयसी प्रतीत होने लगी, जिसे मैंने अपने प्यार में कायल कर दिया हो। मैं आनंद की अनुभूति से भर गया।

लोगों की नज़रों से दूर हम दोनों रातभर अनंत परमानंद में डूबे रहे। अंत में मुझे बहुत नींद आने लगी। मैं उस आरामदायक पलंग पर लेट गया और वह भी मेरे बगल में लेट गई। उसने बड़े प्यार से मुझे सहलाया और मैं गहरी नींद में सो गया।

जब भोर हुई तो मैं जगा। मुझे महसूस हुआ कि राऊतिनछीङी मेरे पास ही सोई है। मगर जब मैंने उसकी ओर देखा, वह मुझे दिखी नहीं। मैं बहुत चिंतित हो गया। मैंने उठकर उसे पुकारा तो उसने दीवार के दूसरी ओर से (भीतर के किसी कमरे से) जवाब दिया।

उसने मुझसे कहा- “भोर हो गई है, इसलिए तुम मुझे देख नहीं पाओगे। मेरा हाथीदाँत का प्याला लेकर तुम अपनी मंजिल की ओर चले जाओ। कल रात तुम फिर आना।”

मैंने कई बार उससे बाहर निकलने का आग्रह किया। तब उसने मुझे बताया कि यदि वह निकल भी आई, तब भी इंसानी आँखें उसे दिन की रोशनी में देख नहीं पाएँगी।

उसने मुझसे कहा- “किसी चीज़ से मत डरो, मैं तुम्हारी रक्षा करती रहूँगी, तुम चले जाओ।”

मैंने वह प्याला लिया और दो कदम बढ़ाने पर ही मानो मैं उड़ने लगा और अपनी मंजिल के निकट पहुँच गया।

जब मैंने अपने हाथों को देखा तो वहाँ हाथीदाँत के उस प्याले की जगह मात्र मिट्टी का एक ढेला था। मगर उसे फेंकने की बजाय मैंने उसे अपने झोले में रख लिया। इसके तुरंत बाद मैंने वह विशेष संदेश पहुँचाया, जिसके लिए मैं यहाँ आया था। मैंने उन्हें अपने देर से पहुँचने का कारण भी बताया, मगर कुछ को मुझपर विश्वास न हुआ और कुछ मेरे लिए बहुत डर गए।

मुझे उसकी बड़ी याद आने लगी और मैं बहुत खालीपन महसूस करने लगा। फ़वांग ओललेन[3] का समय था इसलिए घर लौटने की भी कोई जल्दी न थी। तब भी आइज़ोल में ठहरने के लिए मुझे कोई अच्छा बहाना न मिला। इसके अलावा वहाँ मेरा कोई करीबी रिश्तेदार भी न था, तो वहाँ यूँहीं रुकने में मुझे शर्मिंदगी-सी महसूस हुई। ऊपर से मैं केवल संदेश पहुँचाने ही आया था तो मुझे वापिस लौटने की बजाय वहाँ रुकना सही नहीं लगा। उन दिनों कुलीकोन की तरफ कोई रहता नहीं था, इसलिए वहाँ के चौराहे के आसपास मैंने अपना समय यूँहीं ज़ाया कर दिया क्योंकि मैं रात को राऊतिनछींगी से मिलना चाहता था।

आखिर रात हुई और मैं निश्चिंत भाव से उत्साह के साथ जाने लगा। मैं आऊखोक (गुंजनस्थल) के पास पहुँचा। चाँद पूरब दिशा में टोई पहाड़ी से निकल रहा था। उसकी रोशनी से ङाईज़ेल के रास्ते रौशन थे। मेरे मन में किसी भी तरह का भय न था। मैं ङाई (चीड़) के पेड़ की तरफ बढ़ता हुआ पहाड़ चढ़ने लगा। फिर उसकी झुकी हुई डाल पर बैठ गया, क्योंकि मुझे पिछली रात की यही जगह याद थी। बहुत समय तक वहाँ बैठे रहने पर मैं निराश-सा होने लगा। वहाँ चारों तरफ सन्नाटा छाया हुआ था। मुझे बस थोड़ी-थोड़ी देर

पर गेको (बड़े आकार की छिपकली) के बोलने की आवाज़ सुनाई दे रही थी। मैं मन-ही-मन बहुत पछताने लगा।

मैंने अपनी झोली से मिट्टी का वह ढेला निकाला और मेरे देखते ही देखते वह फिर से हाथीदाँत के प्याले में बदल गया। मैंने देखा कि उसमें स्वच्छ पानी है और मैंने उसे पी लिया। उसे पीते ही मुझे कल रात का वह रास्ता दिखाई पड़ने लगा, जहाँ से हम गुजरे थे। मैं अकेले ही उस रास्ते पर चलने लगा। मुझे वह रास्ता जाना-पहचाना लगा, मानो मैं उससे कई बार गुजर चुका हूँ। आखिरकार मैं उस घर तक पहुँच गया और उसके भीतर घुस गया। मैंने सामने देखा कि मेरी प्रेयसी राऊतिनछीङी बड़ी गहरी नींद में सोई है और उसके पास एक बेहद खूबसूरत युवक बैठा है। वह उसके चेहरे को बड़े प्यार से सहला रहा था, मानो वह उसे बहुत चाहता हो। मुझे वाकई बड़ी जलन हुई।

उसने मुझे बिल्कुल नहीं देखा। हालाँकि मैंने उसे बहुत साफ-साफ देखा, मगर मैं समझ न सका कि वह कौन है। अंत में उसने एक मधुर और धीमा-सा गीत गया। इसे भी मैंने पहले कभी नहीं सुना था। उस गीत के बोल को मैं शायद ही कभी भूला पाऊँगा। मगर कई बार कोशिश करने पर भी उसके धुन को मैं याद नहीं कर पाता। उस गीत के बोल कुछ ऐसे हैं:

‘फैले हुए आसमान में चाँद

अपनी सुंदर रोशनी के साथ निकल आया है

नींद से जागो, राऊतिनछीङी,

अपनी तमन्नाओं को गले लगाओ

इससे पहले कि भोर हो जाए

सारी खुशियों को तुम्हारा हो जाने दो’

गाना गाने के बाद उसने अपने हाथ के प्याले से कुछ पिया और फिर उसे मुँह से फूँककर राऊतिनछीङी के शरीर पर छिड़का। मेरे देखते-ही-देखते वह खूबसूरत युवक धीरे-धीरे धुंधला होता चला गया और जल्दी ही पूरी तरह से गायब हो गया।

उसके बाद मैं राऊतिनछीङी की ओर बढ़ा। वह गहरी नींद में सो रही थी। उसका चेहरा और उसका शरीर मुझे इतना सुंदर लगा कि मैं उसे निहारता ही रहा। अगर मैं मूर्तिकार होता तो अब भी उसकी मूर्ति गढ़ सकता था। वह ऐसी ही थी कि उसे भुलाया ही नहीं जा सकता।

बहुत देर तक उसे निहारने के बाद मैं उसके पास बैठ गया और उसे अपनी बाहों में लेकर उठाया। वह उठी, उसने अपनी आँखे खोलीं और मुझे देखा; बिना कुछ कहे उसने मुझे कसकर गले लगा लिया। वह देर तक मेरे गले लगी रही।

“ओ... ठुआमा! कितना अच्छा होता कि तुम मुझे छोड़कर फिर कभी न जाते! काश! हम दोनों जिंदगी भर यहाँ एक साथ रह पाते! मैंने तुम्हें कितना याद किया”- यह कहते हुए उसने मुझे देखा। उसकी आँखें कितनी सुंदर व आकर्षक थीं! यदि हॉलीवुड का कोई निर्देशक उसे देखता तो वह भी अपनी सारी संपत्ति उसपर लुटा देने में संकोच न करता, केवल इसलिए कि वह दूसरी अभिनेत्रियों को भी अपनी आँखों की अदाएँ सिखा दे।

मैंने उससे कहा- “मगर तुम तो लसी हो और मैं इंसान, हम कर भी क्या सकते हैं? क्या कोई रास्ता है?”

“नहीं हो सकता, अगर तुम मर भी जाओ तब भी यह मुमकिन नहीं है।”- निराश होकर उसने कहा।

बहुत देर तक उस आनंददायक पलंग पर आनंदपूर्ण समय बिताने के बाद उसने कहा- "आज की रात हमारे मिलन की आखिरी रात है। कुछ समय बाद आइज़ोल बहुत बड़ा शहर हो जाएगा। यह स्थान भी दिन-रात लोगों से भरा रहेगा। उस समय हम यहाँ रह नहीं पाएँगे। मगर बरसों बाद यह रास्ता फिर से आज जैसा ही दुर्गम, बिगड़ा-पुराना और अभी से भी ज्यादा सुनसान हो जाएगा, क्योंकि पश्चिमी दिशा की ओर से नया रास्ता निकल जाएगा। उस समय मैं फिर से हर पूर्णिमा की रात यहाँ आ सकूँगी। उस समय तुम तो नहीं रहोगे, मगर तुम्हारा बेटा होगा, हू-ब-हू तुम्हारे जैसा। वह कभी-कभी मुझे देख सकेगा। मैं यही बातें तुम्हें पहले से बता सकती हूँ। चलो, बाहर निकलते हैं। मैं तुम्हें लसियों की रहस्यमयी, गोपनीय दुनिया दिखाती हूँ, जो कभी नष्ट न होगी।"- यह कहकर उसने मेरा हाथ पकड़ लिया और हम दोनों बाहर निकले।

हम दोनों ङाई के पेड़ पर चढ़ गए। "तैयार हो जाओ," कहकर उसने मुझे देखा। "मेरी कमर को कसकर पकड़ लेना,"- जब उसने कहा तो मैंने उसे कसकर पकड़ा और तैयार हो गया। उसने छलाँग लगायी और वह मुझे किस दिशा में उड़ाकर ले गई, मुझे याद नहीं। जब मैंने नीचे देखा तो मुझे एक सुंदर स्थान दिखा, जिसे देखकर मैं अनांद से भर गया। अंत में हम उस जमीन पर उतरे। मैंने एक नदी का तट देखा जो अपने पूरे वैभव में था और वह तरह-तरह के फूलों से भरा हुआ था, जिन्हें मैंने पहले कभी नहीं देखा था। वहाँ चंद्रमा का प्रकाश पहले की तुलना में काफी उज्ज्वल था।

मगर वहाँ कोई नहीं था। वहाँ एक भी घर नहीं था और हम दोनों नदी के तट पर एक चट्टान पर बैठ गए। अभी तक मैं वह दृश्य अपने ज़हन में साफ-साफ देख सकता हूँ। अगर मैं एक अच्छा चित्रकार होता तो उस दृश्य का चित्र जरूर बनाता। मैं उसकी गोद में सिर रखकर सो गया। जहाँ हम बैठे थे वह एक चट्टान था, मगर वह मुझे सूती कपड़े-सा

कोमल प्रतीत हुआ। वह धीरे-धीरे मेरे बालों को सहलाने लगी और कहा- "सो जाओ, तुम बहुत थक गए हो। मैं यहाँ तुम्हारी रक्षा करूँगी।"

"तुम मुझे छोड़कर चली गई तो"- मैंने उससे कहा।

तब उसने जवाब में कहा- "अभी रात बाकी है, अभी हम काफी समय तक एक साथ रह सकते हैं। मगर, जब भोर होगा तब हम दोनों को फिर कभी न मिलने के लिए बिछड़ना ही होगा और मुझे उसी अनहोनी का डर है। मुझे तुम्हारी बहुत याद आएगी, मगर मैं तुम्हें इस तरह फिर कभी देख न पाऊँगी।"

"कुछ देर पहले तुम जब घर में घुसे थे, तब जो युवक था वह मेरा बड़ा भाई था; वह हम सभी का मुखिया है। बहुत समय पहले से ही वह मुझे तुम्हारा चेहरा दिखाता आ रहा है। तुम्हारे जाने बिना मैं कई बार तुमसे मिल चुकी हूँ। तुमसे इस तरह मिलने की अनुमति उन्होंने मुझे कल रात से दी। मगर, दो रातों से अधिक मिलने की अनुमति देना उनके हाथ में भी नहीं है। हम दोनों के प्रेम की गहराई को वे जानते हैं। मगर केवल यही उनके वश में था जो वे हमारे लिए कर सकते थे। यदि उनके वश में होता तो वे हमारे लिए इससे भी ज़्यादा करने से बिल्कुल मना न करते।"

"मैं तो तुम्हारे जाने बिना भी तुम्हारे पास रह सकूँगी; मगर हम एक दूसरे से न बात कर सकेंगे और न एक दूसरे को पहचान सकेंगे, तुम तो मुझे देख भी न सकोगे। मगर जब तुम्हारा बेटा बड़ा होगा, तब उसकी जवानी के दौरान मैं उसे हर पूर्णिमा की रात को देख पाऊँगी और वह भी मुझे देख पाएगा। इसीलिए आज की रात हमारी अंतिम रात है, हम

दोनों जैसे चाहें वैसे रह सकते हैं। कल रात की ही तरह किसी का बंधन (रोक-टोक) नहीं है...।" – यह कहकर उसने मुझे गले लगा लिया।

हम दोनों वाकई बेहद खुश थे। कुछ क्षण के लिए मैं उसकी गोद में सिर रखकर सो गया, मगर मैं जल्दी ही जाग गया। फिर हम दोनों ने धीमी गति से बह रही नदी को पार किया और हमने कई सुंदर और आनंददायक स्थानों का भ्रमण किया। मुझे वह रात बड़ी छोटी लगी।

मैंने देखा कि एक सफ़ेद मेघ आसमान से उतर रहा था। राऊतिनछींङी ने रोते और मुझे गले लगाते हुए कहा- "अरे नहीं! ठुआमा देखो मेरा भाई फिर से आ रहा है, हमारे बिछड़ने का समय आ गया। मुझे बहुत डर लग रहा है! मैं भी क्यों इंसान के रूप में न जन्मी!"

मुझे भी 'आऊखोक की लसी" राऊतिनछींङी से बिछड़ने में वाकई काफी डर लग रहा था। बड़े भाई ने अपनी बहन को देखा, उन्हें भी उसपर काफी दया आई। अपनी बहन को सांत्वना देते हुए उसने कहा- "मामी, मैं भी वही चाहता हूँ और मैं तुम्हारी इच्छा जानता हूँ। मगर, यह मेरी क्षमता से बाहर है। इसीलिए तुम दोनों को भले ही मुश्किल क्यों न लगे, मगर तुम दोनों को मुझे जुदा करना ही होगा, क्योंकि इससे बचने का कोई और रास्ता है ही नहीं। तुम्हारी बदकिस्मती यही रही कि तुम इंसान के रूप नहीं जन्मी।"- यह कहकर उन्होंने अपनी बहन के हाथ को थामा और उसके आँसुओं को पोंछा। मेरी तरफ मुड़कर उन्होंने मुझसे कहा- "ठुआमा, भोर होने वाली है, मामी और तुम्हारा रिश्ता यहीं खत्म होता है। मगर तुम किसी चीज़ से मत डरना। तुम्हारे मरने तक हर तरह की भयानक चीज़ों से यह तुम्हारी रक्षा किया करेगी। तुम्हें किसी भी तरह की भयानक बीमारी नहीं

लगेगी। अभी हमारे जाने का समय हो गया है, तो हम चलते हैं।" फिर उन्होंने एक फूल तोड़कर मुझे देते हुए कहा- "इसे लो अपने पास रखो और नदी में कूद जाना।" उन्होंने अपनी बहन का हाथ पकड़ा, वे कूद पड़े और दोनों उड़ने लगे।

राऊतिनछींङी मेरी ओर बार-बार मुड़ती रही। वे दूर होते चले गए। मेरी नज़रें जहाँ तक उन्हें देख पाईं, देखती रहीं, लेकिन तभी भोर हो गया और मैं अब उन्हें देख न सका। फिर मैं भी अपने पास की नदी में कूद पड़ा। मेरी हालत कैसी थी, मुझे कुछ याद नहीं।

जब मुझे होश आया तब मैं अपने गाँव के ज़ोलबूक में अपने सोने की जगह पर लेटा हुआ था। जब मैंने बाहर अपनी नज़रें दौड़ाई तो देखा कि भोर हो रहा था। मैंने उठकर जब क्षितिज की ओर देखा तो मुझे अपनी कल्पना में दोनों भाई-बहन उस क्षितिज में लुप्त होते-से दिखाई दिए।

मुझे उसकी बड़ी याद सताने लगी और उस दिन से मैं हर सुबह भोर होते हुए देखता हूँ।

संदर्भ

---

[1] मिज़ो लोककथाओं में माना जाता है कि वास्तविक दुनिया से परे एक अलग और अद्भुत दुनिया होती है जिसमें 'लसी' रहती हैं, जो बहुत रूपवती होती हैं तथा वे अपनी इच्छा से किसी भी युवक के सामने प्रकट होकर उन्हें आकर्षित करती हैं।

[2] चावल ने बनायी जाने वाली पारंपरिक मिज़ो शराब।

[3] पतझड़ का समय जब खेतों में ज्यादा काम नहीं होता।

2.3 सिल्वरथङी

(सिल्वरथङी)

- के.सी. ललवुङ्ग

जो भी साईथा गाँव में रह चुका है, वह जानता होगा कि हम जब 'चौकीदार की बेटी' कहते हैं तो हमारा मतलब लिआनछूङ्ग की बेटी 'सिल्वरथङी' से होता है। चूँकि उसे अनुपम सुंदरता का वरदान मिला था, इसलिए गाँव की लगभग सभी लड़कियाँ उससे जलती थीं और उसके जैसा होना चाहती थीं। भले ही हम उसे लिआनछूङ्ग की बेटी कहते हैं, मगर उसे जन्म देने वाला पिता तो लिआनछूङ्ग का छोटा भाई लिआनकूङ्ग था। लिआनकूङ्ग ज्यादा दिन जीवित न रहा और सिल्वरथङी अपने चाचा के घर में पली-बढ़ी, इसलिए वह लिआनछूङ्ग की बेटी के रूप में जानी जाने लगी।

सिल्वरथङी के पिता और चाचा साईथा गाँव के पी.डब्ल्यू.डी. बंगला के चौकीदार, लिआनआउवा के बेटे थे। लिआनआउवा ने उस बंगले के बनने से लेकर अपनी मृत्यु तक उसकी चौकीदारी की। वे लल गाँव के सबसे भाग्यशाली और धन-संपत्ति के मामले में भी संपन्न व्यक्ति थे। वे अपने बाप-दादा के समय से ही लल के सलाहकार हुआ करते थे। इसी कारण उनका नाम लल के प्रति सम्मान प्रकट करने के लिए लिआनआउवा, लिआनकूङ्ग और लिआनछूङ्ग रखा गया था।

लिआनकूङ्ग और लिआनछूङ्ग जब नौजवान थे तब उनके बीच कोई द्वेष नहीं था। मगर जब से लिआनछूङ्ग ने शादी की और उसके बच्चे हुए तब से उनके परिवार में कभी-कभी झगड़े होने लगे। लिआनआउवा बुद्धिमान व्यक्ति थे इसलिए उन्होंने लिआनछूङ्ग को अलग रहने को कह दिया। लिआनछूङ्ग के अलग रहने के कुछ ही समय बाद उन्होंने लिआनकूङ्ग की शादी करा दी। इंग्लैंड के किंग जॉर्ज पंचम के सिल्वर जुबिली वाले साल

ही लिआनकूङा की बेटी का जन्म हुआ। उस सिल्वर जुबिली को ध्यान में रखते हुए उनके आदरणीय मुखिया ललसाइलउवा ने उस बच्ची का नाम 'सिल्वरथङी' रखा। उन दिनों उनके गाँव में वह नाम सबसे सुंदर हुआ करता था।

हालाँकि हमने कहा है कि पु लिआनआउवा अपनी मृत्यु तक चौकीदार रहे, मगर अब वे सरकारी रजिस्टर पर बस नाम के ही साईथा बंगला के चौकीदार रह गए थे। ठिङ ताम[1] के वर्ष से, बढ़ती उम्र और काम करने की क्षमता न होने के कारण उनका बेटा लिआनकूङा ही वहाँ का सारा काम करता था। द्वितीय विश्वयुद्ध के शुरू होने से कुछ समय पहले ही पु लिआनआउवा की मृत्यु हो गई।

उनकी मृत्यु के कुछ ही समय बाद वहाँ दौरे पर आए बाबू ने लोगों की अपेक्षा के विपरीत लिआनछूङा को स्थायी चौकीदार नियुक्त कर दिया। इससे उन दोनों भाइयों के बीच बहुत गहरी गलतफहमी पैदा हो गई। लिआनकूङा ने बाबू से अपील की कि वही उस नौकरी का असली हकदार है और उस बंगले में ठहरे बड़े-बड़े लोगों ने भी उसके काम से खुश होकर सरकारी रजिस्टर में उसकी तारीफ की है। इसके बावजूद भी उस बाबू ने उसकी बात को गंभीरता से नहीं लिया, क्योंकि लिआनछूङा और उसकी पत्नी ने उसे शराब और माँस के बल पर अपने पक्ष में कर रखा था। बाबू ने तर्क दिया कि "चौकीदार की नौकरी सरकारी नौकरी है, इसे साइलउ की पहाड़ी की तरह जबरदस्ती थोड़े ही छीना जा सकता है।"

लिआनछूङा की नौकरी की खुशी में जो भोज रखा गया, उसमें उन्होंने लिआनकूङा के परिवार को भी आमंत्रित भी नहीं किया। लिआनकूङा की माँ यह सोच-सोचकर क्रोधित होती कि लिआनछूङा की पत्नी उनके पिता (अपने ससुर) के मरने पर कितनी खुश हुई होगी। कभी-कभी वह क्रोध में भगवान को भी दोष देने लगती।

सरकारी नौकरी छिन जाने पर भी लिआनकूङा और उसकी पत्नी को न तो शर्मिंदगी महसूस हुई और न ही वे निराश हुए। परमेश्वर की कृपा से चौकीदारी छिन जाने का कोई खास असर उनपर न दिखा। चूँकि वे दोनों बहुत मेहनती थे, इसीलिए खेती-बारी में भी गाँव भर में उनकी पैदावार हमेशा सबसे अच्छी रहती। जिस साल उन्हें लोगों की ठुकराई हुई अनुपजाऊ जमीन भी मिलती, उनकी फसल और लोगों की फसलों से ज्यादा सुंदर होती और ऐसा लगता मानो पक्षी और चूहे भी उनका आदर करते हों। किसी को तो लगता कि उन्हें परमेश्वर की विशेष कृपा मिली है। मगर, सिल्वरथङी की बदकिस्मती थी कि उसके माता-पिता, उनके पिता लिआनलुआउवा की मृत्यु के महज़ दो साल के बाद ही एक के बाद एक महीने भर में ही गुजर गए। ऐसे सीधे-साधे लोग जिन्होंने कभी-भी किसी की बुराई नहीं की, उनके केवल एक महीने के अंतराल में गुजर जाने से गाँववालों किसी को तो लगा कि यह घटना समस्त गाँव के लिए अशुभ हो सकती है। कुछ ने तो ऐसा कहा भी।

सिल्वरथङी और उसकी दादी अकेले तो रह नहीं सकते थे। वे दोनों लिआनछूङा के भरे-पूरे परिवार में शामिल हो गईं। लिआनकूङा बहुत अमीर था। जब लिआनछूङा ने उसकी सारी धन संपत्ति बटोर ली। लोगों को लगता था कि लिआनछूङा को अपने भाई के मरने की बड़ी खुशी हुई होगी। लोगों का यह विश्वास और पक्का हो गया जब भाई की मृत्यु पर उसने आँसू की एक बूँद भी न बहाई।

जब सिल्वरथङी और उसकी दादी लिआनछूङा के घर आ गईं, तब लिआनकूङा के चार बैल, तीन दुधारू गायें, एक दोनाली बंदूक, सिलाई मशीन, पीतल का मटका, पीतल के तीन घंटे उनकी बड़ी सी गन्ने की खेत और गन्ने का रस निचोरने वाली मशीन तथा अन्य अनेक चीजों समेत सब कुछ लिआनछूङा ने हथिया लिया। इस पूरी संपत्ति पर अपना

अधिकार समझने वाली लिआनछुङा की पत्नी लाईथङपुई सिल्वरथङी और अपनी सास को खूब ताने मारा करती थी मानो वे उन्हें मुफ्त में पाल रही हो।

सिल्वरथङी को अपनी बदकिस्मती का अभी कोई अंदाज़ा नहीं था। वह तो प्यारी-सी बेहद गोरी, बड़ी-बड़ी आँखों वाली मासूम बच्ची थी। वह कुछ भी पहनती तो वह उसपस खूब जँचता। वाई कपड़ा हो या स्थानीय कपड़ा या फिर यूँहीं खेल-खेल में पहना गया सूखे पत्तों का कपड़ा, वह कुछ भी पहने, हमेशा अच्छी लगती थी। उस गाँव का शायद ही कोई व्यक्ति रहा होगा, जो उस मासूम बच्ची के इस तरह अनाथ हो जाने से उसके लिए करुणा से न भर गया हो। मगर वह भाग्यशाली थी कि उसकी दादी अभी जीवित थी, इसलिए उसे उतनी तकलीफ नहीं सहनी पड़ी, जितनी उनके बगैर सहनी पड़ती। जब कभी उसकी चाची उसे बिना किसी कारण पीटती, तब उसकी दादी उसके चाचा पर बरस पड़ती और रो-रोकर उसे कोसने लगती। उसे उंगली दिखा दिखा कर कहती- “तू अपने पिता और भाई के मरने की खुशी मना रहा है, बदमाश जा कर मर जा।” अपनी माँ के इस तरह गुस्सा होने पर वह जरा-सा नर्म पड़ जाता और उसकी पत्नी भी थोड़ी-सी सहम जाती।

इस तरह वह अपनी दादी की छत्र-छाया में जैसे-तैसे रहा करती। बूढ़ी औरत बच्ची को कितनी अच्छी तरह संभाल पाती? अतः उसका चेहरा गंदा और बाल इधर-उधर बिखरे रहते। वह बहुत खराब कपड़े पहनती और अपने चाचा के बच्चों के साथ जैसे-तैसे रहा करती। इन सब के बावजूद वह उन सब में सबसे ज़्यादा खुश रहती और रास्तों में अपने भाई-बहनों के साथ खेलती। वे सेफूङ (गोबर और अन्य जानवरों के मल में पाया जाने वाला कीड़ा) खोदकर निकाला करते। राह चलते गाँव के युवा और दूसरे राहगीर उसे देखते तो उससे ज़रूर बातें करते और उसे छेड़ा करते। यात्री जब मज़ाक-मज़ाक में उसका पीछा किया करते तो वह बहुत भाग न पाती और आखिरकार पकड़ी जाती।

इस तरह वह अपनी दादी की ममता के साये में बहुत खुश थी, मगर उसकी दादी उसके लिए हमेशा जीवित नहीं रह सकती थीं। एक दिन बिना किसी बीमारी के उसकी दादी अचानक गुजर गईं। चूँकि वह बहुत बूढ़ी हो गई थीं, इसलिए गाँव के लोगों को उनके मरने पर कोई आश्चर्य न हुआ। भले ही उनकी मृत्यु से समाज पर कोई फर्क न पड़ा हो, मगर सिल्वरथङी के लिए तो उसका सारा जीवन ही उलट गया। जब तक उसकी दादी जीवित थीं, तब तक उसके चाचा-चाची उसपर अत्याचार करने से डरते थे। मगर जब से उसकी दादी गुजरी थीं, तब से उस परिवार में उसकी स्थिति दिन-ब-दिन बिगड़ती गई। पहले जिन कठिन कामों को वह नहीं किया करती थी, अब उसने उन सब कामों को करना शुरू कर दिया था।

जब वह लगभग बारह वर्ष की हुई तब बढ़ते कद की वजह से वह दूर से युवती-सी दिखने लगी थी और छोटे-किशोर वय के लड़के भी उसके बारे में बातें करने लगे थे। उन्होंने उसका नाम चो. एफ. एन (यहाँ मिज़ो में चो- चौकीदार के लिए और एफ. एन- फनू अर्थात् बेटी के लिए प्रयुक्त हुआ है, अतः चो. एफ. एन का अर्थ हुआ चौकीदार की बेटी) रखा। किसी भी तरह के खेल या प्रतिस्पर्धा में जो अच्छा करता, वे उसे चो. एफ. एन. कहते। उस संक्षिप्त नाम का लोगों द्वारा बार-बार प्रयोग करने के कारण यह संज्ञा किसी की सुंदरता के लिए प्रचलित हो गई। वैसे चो. एफ. एन. का कोई विशिष्ट अर्थ नहीं था। चो. एफ. एन. का मतलब बस चौकीदार की बेटी था।

हालाँकि सिल्वरथङी अब बड़ी हो गई थी और अपनी किशोरावस्था में थी, मगर उसके चाचा-चाची इस बात का बिल्कुल खयाल नहीं रखते थे। वे उसके दोस्तों के सामने भी बेवजह उसे डाँटा और मारा करते थे।

शनिवार की एक शाम तीसरी बार लकड़ी बटोरकर वह घर लौटी। एक छोटी-सी बच्ची के लिए एक दिन में तीन-तीन बार लकड़ी बटोर कर लाना बहुत ही मुश्किल और थकानेवाला काम था, मगर उसकी चाची ने उसे डाँटते हुए कहा- “अरे, घर लौटने में इतनी देरी कैसे हुई? रंडी, बता तू क्या कर रही थी?” वह तो बेचारी जंगल पहुँचते ही जल्दी-जल्दी लकड़ी बटोर कर घर लौट आई थी। इसके अलावा कुछ और करने के लिए उसके पास समय बचता ही नहीं है, यह सोचकर वह समझ नहीं पाई कि अपनी ‘प्यारी चाची’ को क्या जवाब दे। हमेशा की तरह उसे अपना गुस्सा ज़ाहिर करने की हिम्मत ही न हुई और उसने सबकुछ चुपचाप सह लिया। लकड़ी रखने के बाद वह घर में घुसी ही थी कि उसकी चाची ने तुरंत उसे बच्चा पकड़ा दिया और उसे सूअर को खाना देने को कहा।

जब वह बच्चे को पीठ पर लादकर सूअर के खाने के भारी बर्तन को मुश्किल से बाहर लेकर आ रही थी, तब संतुलन खोकर उसने अपने चाचा के सबसे बड़े बेटे रउचुआ की बनाई मिट्टी की गोलियों पर गलती से पाँव रख दिया। “तुमने मेरी गोलियों पर पैर रखने की हिम्मत कैसे की?” कहते हुए उसने उसके बालों को खींचा। थङी (उर्फ सिल्वरथङी) के हाथ से सूअर के खाने का बर्तन गिर गया। तभी उसकी चाची ने “क्या हुआ रे रंडी?” कहकर उसे ज़ोर से तमाचा मारा।

“रउचुआ ने मुझे बाल पकड़कर खींचा, जिसकी की वजह से यह गिरा,” थङी ने कहा।

“झूठ मत बोल ज़ोङी[2],” रउचुआ ने कहा और थङी के पाँव में ज़ोर से लात मारी।

यह सब उसकी माँ भी देख रही थी, मगर वह कभी-भी अपने बच्चों को थङी को मारने-पीटने से रोकती नहीं थी। गुस्से से बड़बड़ाती हुई वह अंदर चली गई।

एक तो किशोरावस्था का जिद्दी मन था और उसपर से वह जानती थी कि वह सही है। इसलिए अब वह डरपोक बनी रहना नहीं चाहती थी। उसने रउचुआ को फिर से उल्टे मुँह जवाब दिया। उसपर रउचुआ को और गुस्सा आया और उसने गुस्से में उससे कहा- “झूठ मत बोल, बदमाश लड़की। तू हमारी नौकरानी है। क्या हम तुझे मुफ्त में पाल नहीं रहें हैं, गरीब लड़की? तेरा वह कपड़ा भी हमारा ही दिया हुआ है।” बाड़ में थङी का इकलौता रविवार वाला अच्छा कपड़ा टंगा था। जिसे पहनकर वह रविवार को गिरजाघर जाया करती थी। थङी ने उसे देखकर रउचुआ को जवाब दिया- “नहीं, वह तुम्हारा नहीं है।”

“हैं, मैं इसे पूरा फाड़ दूँगा, तुम्हारा इस पर कोई अधिकार नहीं है।” ऐसा कहते हुए रउचुआ ने उसके कपड़े को पूरी तरह फाड़ डाला।

वह कपड़ा उसने अगले दिन रविवार को गिरजाघर के बच्चों के सम्मेलन में पहनने के लिए धोकर साफ किया था। रउचुआ ने उसे फाड़कर पहनने लायक न छोड़ा तो थङी को बहुत दुःख हुआ। वह उससे जीत भी नहीं सकती थी, अतः गुस्से में वह फूट-फूटकर रोने लगी। रउचुआ को उल्टा जवाब देकर उसे बड़ा अफसोस हुआ और उसे अपने पागलपन पर खीझ हुई। उसे पहले से मालूम था कि रउचुआ की दुष्टता से उसे बचाने वाला कोई नहीं है। रविवार के इकलौते कपड़े के फट जाने के कारण अब उसे अपने दोस्तों से मिलने की उम्मीद भी न रही। वह साफ-साफ जानती थी कि जब उसके मित्र सम्मेलन के लिए गिरजाघर का रास्ता तय कर रहें होंगे तब वह अपने बेहद खराब और गंदे कपड़े पहनकर घर में बैठी रहेगी। रउचुआ को उल्टा जवाब देकर अब उसके पास पछताने के अलावा और कोई रास्ता नहीं था।

ऐसा नहीं था कि उसके साथ ऐसा अत्याचार पहली बार हुआ था। वह तो ऐसा कई बार सह चुकी थी। उसके चाचा का सबसे छोटा बच्चा तक यह जानता था कि वे थङी को

मुफ़्त में पाल रहे हैं। जब कभी उससे छोटी-सी भी गलती हो जाती, उसे ज़ोर से डाँट पड़ती- “बेहया लड़की निकल जा! तू बस हमारी नौकरानी है। तूने हमारा खर्चा बढ़ा दिया है, बेघर कहीं की।”

मगर थङी को पड़ोस की औरतों से पता चल चुका था कि उसके पिता की संपत्ति हथियाने के कारण ही उसके चाचा जी के परिवार की हैसियत ऐसी हो पाई थी। इसलिए वह जानती थी कि वह उनके यहाँ मुफ़्त का भोजन नहीं पा रही है। उन औरतों ने उसे यह भी बताया था कि जब वह जवान होकर शादी करेगी तब उसके पिता की संपत्ति थुआम[3] के रूप में उसे ही मिलेगी और वही उस संपत्ति की अकेली मालकिन होगी। शादी, थुआम जैसी बातें अभी उसकी समझ से परे था और इनके बारे में वह सोचती भी नहीं थी।

इस तरह की कठिनाइयों और लाचारी के बीच थङी परमेश्वर की कृपा से अच्छे स्वास्थ्य और विवेक के साथ बड़ी होने लगी। सभी उसकी खूबसूरती के कायल थे। लोगों को उसकी खूबसूरती उस छोटे-से गाँव में व्यर्थ ज़ाया होती हुई मालूम पड़ती थी। उसकी चाची को उससे जलन होने लगी थी। थङी सुंदरता के मामले में लगातार खिलती जा रही थी। गरीबी के कारण उसके पास अन्य युवतियों की तरह लिपस्टिक, पाउडर व खुशबूदार साबुन नहीं थे, लेकिन उसके चौदह वर्ष की आयु से ही साईथा के नौजवान और पथ्लोईयों[4] ने यह गाना उसके लिए बनाया था:

उसे अंग्रेजी पाउडर की जरूरत क्या है

मैं फिर से निहारूँगा तुझे

गाँव की सुंदरता बढ़ाने वाली थङी

सबसे सुंदर सेनश्री (लाल ऑर्किड) के फूल जैसी

एक बार साईथा गाँव में एक ओवरसीयर आए। उनके वहाँ आने की बात एक महीने पहले से ही गाँव में फैल गई थी। मुआलवेङ वालों ने उनके लिए रास्ते को बराबर किया और उसे सजाया। ओमपुइवेङ वालों ने बंगले की फेंसिंग के अंदर और बाहर चारों तरफ उगे घासों को काँटकर, उसके आँगन में झाड़ू मारकर साफ किया और बंगले को सजाया। चौकीदार ने भी बंगले में अच्छे-से पोछा मारकर उसे साफ किया।

चौकीदार तथा ओमपुईवेङ व मुआलवेङ के लोग पूरी तरह से तैयार थे, इसीलिए वे चाहते थे कि ओवरसीयर वहाँ जल्दी से आएँ। उन्हें उनके आने का बेसब्री से इंतज़ार था।

जिस दिन वे वहाँ पहुँचे उस दिन उन लोगों ने बंगले से दूर रास्ते में ही उनका स्वागत किया। उनके पहुँचने की सूचना पाते ही बंगले में बकरी काटी गयी और उन लोगों को थङी ने जाकर पानी दिया। लोगों की नजरों से बच-बच कर जा रही थङी पर बाबू की नजर पड़ गई और उन्होंने पूछा, “यह किसकी बेटी है?”

“चौकीदार की बेटी है।”- मेलवेङ के उपा (गाँव बूढ़ा) चोमा ने कहा।

“लिआनछूङा, यह तुम्हारी बेटी है?” बाबू ने चौकीदार लिआनछूङा से पूछा।

“हाँ” कहकर लिआनछूङा ने संक्षिप्त-सा जवाब दिया।

थङी शर्मा गई। वह तेज़-तेज़ कदमों से चलने लगी। आपस में बातचीत कर रहे बाबू और अपने चाचा के पास से वह तेज़ी से गुजर गई। मगर उसने बाबू को कहते हुए सुना- “कितनी सुंदर बेटी है तुम्हारी।” लिआनछूङा के कुछ कहने से पहले ही चोमा ने कहा- “हाँ, सचमुच बहुत सुंदर बेटी है इसकी।”

“नाम क्या है इसका?” बाबू ने पूछा।

“इसका नाम सिल्वरथङी है। यह किंग जॉर्ज पंचम की सिल्वर जुबिली के वर्ष जन्मी थी। हमारे मुखिया (लल पा) ने उसी को ध्यान में रखकर इसका नाम ‘सिल्वरथङी’ रखा।” लिआनछूङ ने जवाब दिया।

“क्या यह सचमुच तुम्हारी अपनी बेटी है?” बाबू ने फिर से पूछा।

“नहीं, नहीं, यह मेरी अपनी सगी बेटी तो नहीं है। यह मेरे भाई लिआनकूङ की बेटी है। मगर लगभग दस साल हो गए हैं इसके माता-पिता को गुजरे, तब से यह हमारे साथ ही रह रही है।” लिआनछूङ ने कहा।

वहाँ से गुजरते हुए उसे उसके चाचा और बाबू की ये बातें सुनाई दीं। बाबू के उसके बारे में इतनी गहराई से सवाल करने पर उसे काफी शर्म महसूस हुई। बाबू की आँखों में उसे कुछ अलग-सा नजर आया। वह जल्दी-जल्दी घर लौट गई। वह घर में भी उसके बारे में ही सोचने लगी। उसे बाबू को फिर से देखने की इच्छा हुई, मगर बंगले की तरफ मुड़ना भी उसे सही नहीं लगा।

शाम को अचानक उसे बंगले पर खाना-खाने के लिए बुलाया गया। उसे खुशी के साथ शर्म भी महसूस हो रही थी। वह तुरंत समझ गई कि उसे खाने पर बुलाए जाने के कारण उसकी चाची बहुत ज्यादा नाखुश है। इसलिए वह वहाँ तुरंत नहीं गई। मेलवेङ के उपा चोमा के बुलाने पर भी वह नहीं गई। कुछ देर बाद उसके चाचा ने घर के ऊपर के रास्ते से उसे धीमे मगर गुस्से से ‘सिल्वरथङ’ कहकर पुकारा, तो उसने तुरंत बाहर निकल कर जवाब दिया।

“आ जा जल्दी,” उन्होंने कहा और घर के भीतर गए बिना ही चले गए।

थङी ने डरते हुए अपनी चाची से पूछा, “चाची मैं जाऊँ क्या?”

उसकी चाची ने गुस्से से कहा- “अगर तुझे जाना है तो जा। तू क्यों हम जैसों से सलाह कर रही है?”

वह न गई तो उसे अपने चाचा जी का डर था और अगर गई तो उसे डर था कि लौटने के बाद उसे अपनी चाची की डाँट खानी पड़ेगी। कुछ देर तक वह असमंजस में पड़ी सोचती रही। उसे डर था कि कहीं उसके चाचा जी उसे फिर बुलाने न आ जाएँ। उसकी चाची मुँह फुलाए बैठी थी, तब भी वह चली गई। मगर उसे तैयार होने और सजने की हिम्मत न हुई, इसलिए अपने बाल खुले छोड़कर ही वह चल पड़ी।

बाबू भी उस माहौल में रम चुके थे। “हाय! सिल्वरथङ आओ, हम बहुत देर से तुम्हारा इंतज़ार कर रहे हैं, है न चोमा? कोला (नौकर का नाम) इन्हें बैठने को कुछ दो।” बाबू ने तुरंत कहा। कोला कुर्सी ले आया।

“यहाँ बैठो सिल्वरथङ।” बाबू ने उससे कहा।

थङी को बहुत शर्म आई और वह अंदर घुसे बिना ही बाहर सुमह्मुन[5] में एक खंभे को पकड़कर खड़ी रही। नौकर कोला और चोमा ने उसे हाथ पकड़कर अंदर खींच लाने की कोशिश की। “नहीं, नहीं” कहकर थङी अड़ी रही। बाबू भी उसे घर के अंदर से ‘सिल्वरथङ’ कहकर पुकार रहे थे और कह रहे थे कि “मैं और सिल्वरथङी एक साथ मेज़ पर खाना खाएँगे। आज रात इस बंगले के अंदर सिल्वरथङी का ही राज होगा।” मेलवेङ वाले खूब हँस रहे थे। थङी को और शर्म आने लगी। उसका दिल ज़ोर से धडक रहा था। शर्म के मारे वह अंधेरे की ओर मुड़कर कभी जीभ दिखाने लगती तो कभी हँसने लगती। उसे ऐसा लगा मानो कोई उसके सीने को अपने हाथों से पकड़कर खींच रहा हो।

बाबू पेट्रोमैक्स लैम्प लेकर बाहर निकल आए और उसे सुमह्मुन के खनछुक (मिज़ो घरों में दो दीवारों के बीच का बीम) पर टाँग दिया। थङी को जिस अंधेरे से सहारा मिल

रहा था, वह अंधेरा भी पूरी तरह गुम हो गया। साईथा के मुखिया ललसाइलउवा भी वहाँ पहुँच चुके थे, अतः बाबू तथा उनके लोग यानी मुआलवेङ और ओमपुईवेङ वाले सभी मिलकर एक साथ बैठ गए। थङी के लिए अब छिपने की कोई जगह नहीं थी, इसलिए वह सुमह्मुन में ही बैठ गई। वह जिसे देखने के लिए काफी बेकरार थी, लाज-शर्म के कारण उसे उस बाबू पर भी गुस्सा आने लगा। चोमा को थङी का बिना किसी सहेली के अकेले बैठे रहना बुरा लगा। चुपके से उसने कहा- "नौकर कोला की एक बेटी है, लगभग सिल्वरथङी की उम्र की, दोनों बहुत अच्छी सहेलियाँ हैं। उसे भी बुला लेते हैं। क्यों? यह ठीक रहेगा न?"

"कोला!" बाबू ने पुकारा।

"हाँ जी, कपू!"

"क्या तुम्हारी भी एक बेटी है?"

"हाँ, उसका नाम त्लनथङी है।" चोमा ने जल्दी से कहा।

"मैंने तुमसे नहीं पूछा चोमखुआङ..." बाबू ने कहा और सभी हंसने लगे।

"हाँ, है कपू!" कोला ने कहा।

"उसे भी बुला लाओ। सिल्वरथङी बहुत अकेली है, हमें मज़ा नहीं आ रहा है। है न चोमा?" बाबू ने कहा।

"अच्छा चोमा, तुम उसे बुला लाओ," बाबू ने फिर कहा।

चोमा तुरंत निकल गया और कुछ ही देर में त्लनथङी को लेकर लौटा। पेट्रोमैक्स लैम्प की रोशनी में उसकी आँखें सिकुड़ रही थीं।

“यह खाना खा रही थी, पर मैं इसे खींच कर उठा लाया।” चोमा ने कहा।

त्लनथङी का चेहरा देखकर थङी का बोझ मानो कुछ हल्का हुआ। “इधर आओ दोस्त!” कहकर उसने त्लनथङी को अपने पास बुलाया और दोनों सुमह्मुन में बैठ गईं।

बाबू, मुखिया, थङी और उसकी सहेली ने एक ही मेज पर भोजन किया। अन्य लोगों ने जमीन पर सूप पर पत्ता बिछाकर भोजन किया। बाबू के मज़ाक में कुछ कहने पर वे हँसी न आने पर भी ऐसे हँसते मानो उन्हें बहुत हँसी आ रही हो। त्लनी (त्लनथङी) और थङी ही बाबू के मज़ाक का विषय थीं। शर्म के मारे दोनों ने भरपेट भोजन तक न किया। उन्हें सब्जी के स्वाद का भी कुछ पता न चला।

अगले दिन बाबू फिर अपनी मंजिल की ओर रवाना हो गए। मेलवेङ के उपा और चौकीदार ने उन्हें बहुत दूर तक छोड़ा। पिछली रात के भोजन में त्लनी और थङी के शामिल होने की बात पूरे गाँव में फैल गई और बात फैली कि “बाबू का दिल थङी पर आ गया है।” कई युवक और पथ्लोई चिंता में डूब गए। वे हर रविवार की शाम शराब बेचेने वाली विधवा के घर पर इकट्ठा होकर गाते:

सूखे में पानी के इंताजार की तरह तेरा इंतज़ार था,

मगर तुझे थाम लिया उस व्यक्ति ने जिससे हम जीत नहीं सकते।

गाते हुए वे छइ नृत्य (एक प्रकार का मिज़ो नृत्य) करते हुए झूमा करते। बाबू और थङी वाली बात चर्च को नागवार गुजरी। गिरजाघर में बैठकें भी होने लगी। युवतियाँ उनके बारे में कहतीं कि “बड़े आश्चर्य की बात है, वे अभी-अभी जवान होने को हैं और अभी से ही खुद को बाबू को सौप दिया।”

उन दोनों किशोरियों के लिए यह सब सहना बहुत कठिन हो रहा था। अपने तन-मन की पवित्रता को जानते हुए भी वे खुद को दिलासा नहीं दे पा रही थीं और औरतों के मजाक का शिकार हो रहीं थी। युवावस्था के शुरुआती पड़ाव में ही लोगों की पीड़ादायक अवहेलना को साथ-साथ सहने के कारण थङी और त्लनी की मित्रता और गहरी हो गई।

थङी के मन में कभी-कभी अचानक बाबू का खयाल आया करता था। उसे उनके स्वभाव और उनके परिवार के बारे में जानने की बहुत इच्छा हुई। मगर उसे किसी से भी कोई स्पष्ट जानकारी नहीं मिल पाई। उसे किसी से पूछने की हिम्मत भी न हुई। वह अपनी गुप्त कल्पनाओं में सोचा करती कि “काश! बाबू भी मुझे पसंद करने लगे और अपनी पत्नी बनाने के लिए मुझे अपने साथ ले जाए और हम मेरी चाची लाईथङपुई की आँखों के सामने ही आइज़ोल के लिए रवाना हों।”

मगर उसे उन कल्पनाओं, जिसे वह अपना पागलपन समझती थी, के बारे में अपनी सबसे अच्छी सहेली से भी कहने की हिम्मत नहीं होती थी। ऐसी कल्पना करने पर उसे खुद पर शर्म आती और वह खुद को चूँटी काँटने लगती। बाबू भी जाने के बाद पूरी तरह शांत ही हो गए। उसे नहीं लगता था कि बाबू ने उस भोज की रात के बारे में फिर कभी सोचा भी होगा।

साईथा गाँव के युवक और पथ्लोई अक्सर रात में थङी के घर पर बैठकर हँसी-मज़ाक किया करते थे। उन लोगों में से किसी से थङी ने प्रेम संबंध रखने की भी नहीं सोची। मगर, वे सब बिना निराश हुए प्रत्येक रात उसके घर आया करते थे। उनमें से कोई तपछक (मिज़ो रसोई) में आग के बगल में बैठकर स्थानीय गिटार बजाता तो कोई गर्मियों के मौसम में फर्श पर लेट जाया करता। उनमें से कुछ ऐसे भी थे जो लाईथङपुई, जो बिल्कुल हँसती नहीं थी, को भी जबरदस्ती हँसाना जानते थे। उनमें से कुछ ऐसे भी थे जो चाँदनी रातों में आँगन में चाँद की रोशनी के तले पूरी गंभीरता के साथ गाया करते थे:

मर भी गया तेरी याद में अगर,

तब भी तेरा दिल न जीत पाऊँगा,

मैं तो बस यूँ ही तेरा दीवाना हूँ

उत्तर की पहाड़ियों का एक तंगहाल नवयुवक...

थङी को रीम[6] करने वालों में उनके मुखिया का बेटा माङ्लुआया उसे बहुत चाहता था। माङ्लुआया एक हट्टा-कट्टा मगर अगंभीर स्वभाव वाला युवक था। अधिक शराब पीने की आदत और घमंडी स्वभाव के कारण थङी उसके बारे में सोचती भी न थी और न ही उससे दूसरे युवकों की तुलना में कुछ विशेष तरह से बात करती थी। माङ्लुआया आलसी थ और कोई काम नहीं करता था। उसके बुद्धिमान पिता ललसाइलउआ अक्सर उसे समझाते- “कुछ ही समय में हम उसका हाथ माँगेंगे। पहले तुम कुछ काम करना सीख लो। तुम्हें पढ़ाई करने के लिए बाहर भेजने पर भी तुम बाहर ज्यादा दिन टिकते नहीं हो। तुम हर तरह का काम करना शुरू करो, यही तुम्हारे लिए अच्छा होगा।”

लेकिन वह इन बातों को गंभीरता से नहीं लेता था। वह लकड़ियाँ बटोरने निकली लड़कियों के पीछे-पीछे जाया करता और कभी-कभी माफी माँगने लायक काम करके लौटता।

एक दिन थङी और त्लनी साथ-साथ लकड़ियाँ बटोरने निकलीं। त्लनी जब घाटी की तलहटी में लकड़ियाँ बटोर रही थी, तभी अचानक माङ्लुआया कहीं से थङी के पास आ धमका। कंधे से बंदूक लटकाए वह खीसें निपोर रहा था। उसकी गंध से पता चल रहा था कि उसने काफी शराब पी रखी थी। थङी ने डरते हुए कहा- “उ माङ, कहाँ गए थे?”

“तुम्हें ही ढूँढ रहा था।” कहते हुए उसने उसे अपनी बाहों से जकड़ लिया।

थङी ने तुरंत खुद को उसकी बाहों से छुड़ाया। डर और गुस्से से भरकर उसने कहा- “उ माङ, मेरे साथ ऐसा मत करना।”

“क्यों भला?” कहते हुए उसने उसे अचानक फिर से गले से लगा लिया। उसने उसे कसकर दबोच लिया। थङी ने निकलने के लिए बहुत जोर लगायी, मगर माङलुआया ने उसे और कसकर दबोच लिया और वह निकल न पाई। माङलुआया ने उसे जमीन पर गिराकर दबोच लिया।

“सिल्वरथङ, मैं तुमसे प्यार करता हूँ।” ऐसा कहते हुए, शराब की बदबू से भरे अपने मुँह से उसने थङी को चूमने की कोशिश की।

“नहीं...नहीं... त्लनी जल्दी भागकर आ...” कहते हुए थङी ज़ोर-ज़ोर से चीखने-चिल्लाने लगी, मगर त्लनी कहीं न दिखी। चीखते-चिल्लाते हुए उसने पूरी ताकत लगाकर खुद को छुड़ाने की कोशिश की। पूरी ताकत लगाने के कारण माङलुआया उसे काबू न कर पाया।

वह अचानक उठ खड़ा हुआ और थङी पर बंदूक तानते हुए कहा- “और चिल्लाएगी? मुझे मना करेगी तो मैं तुझ पर गोली चला दूँगा।” थङी ने उसका चेहरा देखा। उसकी आँखें गुस्से से लाल थीं। उसे लगा वह सचमुच उसपर गोली चला देगा। डर के मारे थङी थर-थर काँपने लगी, उसे लगा मानो उसकी आँखों के आगे अंधेरा छा रहा है और वह गिर पड़ी। वह वहीं बेहोश पड़ी रही।

उसे होश आया तो उसने अपनी आँखें मसलीं और तभी उसका डर लौट आया, “हे माँ! नहीं...नहीं...” कहकर वह रोने लगी। उसने देखा कि उसके चाची-चाचा, उसकी सहेली त्लनी और मुखिया सहित गाँव के कई लोग उसे घेरे हुए थे। त्लनी ने तबतक उन्हें

सबकुछ बता दिया था, सिवाय बंदूक दागने वाली बात के, क्योंकि यह उसे मालूम न थी। मुखिया ने लिआनछूङा से बहुत माफी माँगी। उनके बेटे माङ्लुआया की बदमाशियों और गलतियों को अब छिपाया नहीं जा सकता था, इसलिए वे सबकुछ जी खोलकर कहने लगे। किसी उपा (बुजुर्ग) ने उन्हें दिलासा देते हुए कहा कि ऐसा तो युवकों का स्वभाव होता ही है और खुशी की बात यह है कि उससे कुछ गलत काम नहीं हुआ।

इस विषय में थङी की चाची लाईथङ्पुई ने जो कुछ कहा- उससे लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने कहा- "यह सब इसी की गलती होगी। अन्य लड़कियाँ भी तो जवान होतीं हैं, मगर औरों से साथ तो ऐसा नहीं घटता।"

चूँकि माङ्लुआया थङी के साथ कुछ बुरा नहीं कर पाया था, इसलिए थङी को ज्यादा शारीरिक कष्ट और बदनामी नहीं सहनी पड़ी। मगर उस दिन से लगातार उसके मन में माङ्लुआया का खौफ बना रहा। अपनी खराब स्थिति को देखकर, यह जानकर कि उसकी रक्षा करने वाला कोई नहीं है और उसके चाचा-चाची के मन में उसके लिए रत्ती भर भी दया नहीं है, उसे लगा कि इस तरह जिंदगी भर वह इस घर में नहीं रह सकेगी। लेकिन वह यह भी नहीं जानती थी कि आखिर वह जाए कहाँ।

गाँव के लोगों को लगा कि मुखिया के बेटे पर कड़ा मुकदमा होना चाहिए। मगर थङी के परिवार वालों ने अपने गाँव को और अपने मुखिया को बदनाम करने की जगह मुखिया के द्वारा माफी के रूप में दिये गये चालीस रुपए स्वीकार कर लिये।[7] बस यही नहीं, मुखिया को लगा कि उसके चाचा-चाची भी यही चाहते हैं, तो उन्होंने अपने बेटे माङ्लुआया के लिए थङी का हाथ माँगते हुए कहा- "हम बहुत शर्मिंदा हैं, मगर आप लोगों को समझना होगा कि यह सब इसलिए हुआ क्योंकि वह उसे बहुत चाहता है, इसीलिए आप इस पर कृपा करें। चलिए इससे थङी की शादी करा देते हैं।"

यह बात साईथा गाँव में लगभग एक हफ्ते तक लोगों की चर्चा का विषय बना रहा। मगर थङी को लगा कि माङ्लुआया से शादी करने से तो अच्छा होगा कि वह अपने गाँव के झरने से या भयानक गहरी खाई में से कूद जाए।

उन्हीं दिनों उत्तर पूर्व से एक सिपाही छुट्टी में उनके गाँव आया। उसने खुद को 'आइज़ोल का हवलदार ललह्नूना लुसाई' बताया। वह बड़े गठीले शरीर वाला युवक था। साईथा की युवतियों के अनुसार वह सुंदर, हल्का-सा साँवला, थोड़ा-सा वाई (बाहरी आदमी) जैसा दिखने वाला नौजवान था। वह भी थङी को रीम करने आया करता था। वह बहुत ही मिलनसार था और उसके पास कहने को बहुत सारी बातें हुआ करती थीं, इसलिए साईथा के पुरुष भी उससे मिलते-जुलते थे। वह जिस स्थान पर तैनात था, उस जगह के बारे में बड़े रोचक तरीके से बताता और यह भी बताता कि कैसे उसे बड़े अधिकारियों का स्नेह प्राप्त था।

थङी के घर आए अन्य युवक उसकी बातों को नीरस भाव से और थोड़ी इर्ष्या के साथ सुना करते थे। वह थङी का बड़ा खयाल रखता था। वह उसे कपड़े और तरह-तरह की चीज़े दिया करता था, जो पहले उसे कभी नहीं मिलतीं थीं। इसलिए थङी भी उसे पसंद करती थी। लिआनछुङा और उसकी पत्नी भी चुपके-चुपके उसके बारे में बातें किया करते थे। चूँकि वे उसकी शादी माङ्लुआया से ही कराना चाहते थे, इसलिए वे उस युवक को रास्ते का रोड़ा समझने लगे थे। मगर वह युवक उनके घर इतना जाया करता कि थङी को कभी खाली समय ही न मिलता।

रविवार की एक रात जब थङी और त्लनी गिरजाघर से घर लौट रही थीं, तब ललह्नूना उनका पीछा करते हुए उनके पास पहुँचा। यह जानकर कि थङी भी उसे पसंद करती है, उसने उसे अकेले में बुलाया।

"थङी, अब मेरे पास समय बहुत कम है। मेरी छुट्टी खत्म होने को है। मुझे पता है कि तुम जानती हो कि मैं तुम्हें कितना चाहता हूँ। मगर मुझे तुम्हारे चाचा और चाची की तरफ से कोई उम्मीद नज़र नहीं आती। तुम्हें क्या लगता है? अगर तुम भी मुझे चाहती हो तो मेरे साथ आइज़ोल चलो। मुझे लगता है कि वहाँ पहुँचकर शादी करना सही रहेगा। तुम भी क्या मुझे अपने मन की बात नहीं बताओगी?" उसने सीधे उससे पूछा।

थङी को उसे मना करने का कोई तरीका न सूझा। उसे लगा कि उसे मना करने का मतलब था माङ्लुआया से शादी करना, मगर दूसरी ओर ऐसे परदेशी लड़के के साथ चले जाना जिसे अभी वह ठीक से जानती भी न थी, उसे सही नहीं लगा। वह बहुत देर तक सोचती रही और अंत में उसने कहा- "जरा रुको उ ह्नून! मुझे समझ नहीं आ रहा है कि मैं तुम्हारी बातों का जवाब कैसे दूँ? मैंने ऐसा करने के बारे में तो कभी सोचा ही नहीं। मैं सोचकर बताती हूँ।"

"तो फिर तुम मुझे कब बता सकोगी?"

"पता नहीं।"

"कल रात तय करते हैं।"

थङी ने बड़े ध्यान से सोचा। ललह्नूना भी उसके साथ मिलकर इस घटना से उसके घर में पैदा होने वाले तनाव और परिस्थितियों का अनुमान लगा रहा था। सहानुभूति के साथ उसके घर की बातें करने वाले ललह्नूना को थङी दूर नहीं करना चाहती थी। वह जानती थी कि यदि वह ललह्नूना के साथ नहीं गई तो उसकी शादी माङ्लुआया से जरूर कर जाएगी। स्वाभाविक रूप से वह माङ्लुआया की बजाय ललह्नूना को पसंद करती थी।

आखिरकार मन मसोसकर थङी ने उसके साथ जाने का फैसला किया। मगर उसने ललह्नूना को तुरंत यह नहीं बताया।

"मगर हम मिलेंगे कहाँ?" थङी ने पूछा।

ललह्नूना ने बड़ी गंभीरता से कहा- "मैं तुम्हारे घर के सामने के सेर (बड़ा वाला नींबू) के घने पेड़ को हिलाऊँगा। उसकी आवाज़ सुनते ही तुम बाहर आ जाना।"

माङलुआया से बचने का एकमात्र रास्ता मानकर, थङी ने न चाहते हुए भी हामी भर दी, मगर उसे खुद पर आश्चर्य हो रहा था। दोनों अपने-अपने रास्ते चले गए।

हर रात की तरह फिर से उस रात भी काफी संख्या में जवान लड़के उनके घर आए। उनमें से कोई चुटकुले सुना रहा था तो कोई रीम करने का कारण भूलकर बच्चों को छेड़ रहा था। उन्होंने लाल चाय बनाया था। उन लोगों में कुछ ऐसे भी थे, जो अब तक तीन-चार कप चाय पी चुके थे। मगर थङी खामोशी से मन-ही-मन उस युवक के बारे में सोच रही थी जिससे उसने कुछ वादा किया था। वह सोच रही थी कि यह कदम उठाकर वह क्या खोएगी। उसके चाचा-चाची को उसकी बदनामी और तकलीफ़ों की जरा-सी भी चिंता नहीं है। बचपन से ही वह कष्ट सहती आई है और अब वे जबरदस्ती उसकी शादी माङलुआया से कराना चाहते हैं, जिससे सभी नफरत करते हैं। उसने सोचा कि ललह्नूना के साथ जाने से जो बदनामी होगी वह तो समय के साथ खत्म होही जाएगी। कहा भी जाता है कि 'बदनामी के बादल तो एक-न-एक दिन छँट ही जाते हैं। जब वह उसके चेहरे को अपने मन की आँखों से देखती तो उसे लगता मानो वह और सुंदर लगने लगा हो। अतः उसने उस युवक के साथ जाने का मन बना लिया।

आधी रात को मुर्गे के बाँग मारने के बाद वह 'सुंदर नौजवान' थङी के घर के सामने के सेर के पेड़ को हिलाने लगा। उसके पहली बार हिलाने से ही थङी को पता चल गया,

मगर पहले उसने ध्यान दे देखा कि कहीं उसके घर के लोगों ने भी तो इसे नहीं सुना। जब वह आश्वस्त हो गई कि किसी और ने नहीं सुना है, तब वह धीरे से उठी और बाहर निकल गई। ललह्नूना स्वेटर पहने सजधज कर सेर के घने पेड़ के नीचे खड़ा था। जब थङी उसके पास पहुँची तो उसने उसे गले से लगा लिया और दोनों एक दूसरे को चूमने लगे।

"तो तुमने क्या सोचा है?" उसने धीरे से पूछा।

थङी को समझ नहीं आया कि वह क्या जवाब दे। उसने जो बातें कहने के लिए सोच रखी थीं, उन्हें कहने की उसे हिम्मत न हुई। बहुत देर बाद सकुचाते हुए उसने पूछा,

"उ ह्नून, क्या तुम सचमुच मुझे पसंद करते हो?"

"थङी तुम मुझसे ऐसे सवाल क्यों पूछती हो? मुझे नहीं लगता कि मुझे सफाई देने की कोई जरूरत है, मगर यदि तुम जरूरी समझती हो तो मैं फिर दोहराए देता हूँ। मैं तुमसे प्यार करता हूँ और तुम बुरा मत मानना, मुझे तुम पर दया भी आती है। मैं तुम्हारे परिवार में तुम्हारी स्थिति जानता हूँ, इसलिए तुम्हारी सारी तकलीफ़ों से तुम्हें आज़ाद कराकर, जितना हो सके, तुम्हें आराम की जिंदगी देना चाहता हूँ।" ऐसा कहकर वह थङी को अपनी ओर झुकाकर फिर से चूमने लगा।

"क्या तुम्हें अभी-भी कोई शक है?" उसने फिर पूछा।

"बिल्कुल नहीं।" उसने उत्तर दिया।

इस प्रकार वे वहाँ से निकलने का तरीका सोचने लगे। ललह्नूना को बड़ी जल्दी थी इसीलिए वह अगले दिन यानि मंगलवार को ही निकल जाना चाहता था। मगर थङी जानती थी कि इतनी जल्दी वह निकलने के लिए तैयार नहीं हो पाएगी। उन दोनों ने तय

किया कि मंगलवार को ललह्नूना पहले पड़ोस के गाँव में चला जाए और फिर एक दिन बाद बुधवार को दोनों उस गाँव में मिलेंगे और फिर वहाँ से आइज़ोल की ओर रवाना हो जाएँगे।

अगली सुबह ललह्नूना थङी के घर आया और परिवार के सभी सदस्यों से उसने हाथ मिलाया। लाईथङपुई मन-ही-मन बहुत खुश थी, मगर अपनी बातों से ऐसा ज़ाहिर कर रही थी मानो वह उसे बहुत याद करेगी।

“तुम लौट रहे हो यह बात तुमने हमें पहले क्यों नहीं बताई? हमें तुम्हारी बहुत याद आएगी। तुम हमारे गाँव अक्सर आया करना, ठीक है?” उसने बड़ी खुशकमिज़ाजी से कहा।

उन्होंने एक दूसरे को शुभकामनाएँ देकर विदाई ली।

उसी रात लिआनछूङा और उसकी पत्नी ने माङलुआया की बात फिर से छेड़ी। वे चाहते थे कि थङी की शादी उसी से हो। मगर थङी को हँसी आ गई और उसने उनकी बातों को ज्यादा महत्त्व दिए बिना कहा- “यह ठीक नहीं है।”

उसके चाचा उसकी इस बात से बहुत बिगड़ गए और उन्होंने उसे धमकाते हुए कहा- “तुझे शादी करनी ही होगी, माङलुआया तुम्हारे लिए ठीक है। क्यों कह रही है कि उचित नहीं है? तुझे शरम नहीं आती? उसने तुझ जैसी गरीब-लाचार लड़की को पसंद किया, तुझे खुशी नहीं हो रही? तुझे अपने चेहरे पर घमंड हो रहा होगा न! वह तो बस बुरे इंसानों की ही निमंत्रण देता है। जब एक दिन कोई बुरा इंसान तुझे धोखा देगा न तब सुंदर चेहरे का सारा घमंड हवा हो जाएगा। तुझे नहीं कि मालूम जब कोई बड़ा आदमी तुझे पसंद कर रहा है तो तुझे बस उसकी हाँ में हाँ मिला देना है? बस अब कुछ और बिल्कुल मत कहना।”

थङी ने अपने चाचा की बातों की ओर ध्यान न दिया। वह तो बस आने वाले कल के बारे में सोच रही थी।

बुधवार को चोफ़ाक (दोपहर का खाना) के कुछ समय बाद भी जब थङी लकड़ी बटोरकर घर नहीं लौटी तो उसकी चाची गुस्से से चिल्लाने लगी, "हमारी बेशर्म लड़की! लकड़ी बटोकर घर लौटने में कितनी देर कर देती है। लगता है अब मैं कुछ भी नहीं कर पाऊँगी।" मुँह फुलाकर वह जूठी थालियों को उठाने लगी। थङी रात के भोजन के वक्त भी घर न लौटी। थङी के चाचा-चाची को किसी युवक पर भी शक नहीं था। अंधेरा हो गया और अब उन्हें आशंका होने लगी। उन्होंने पड़ोसियों को एकत्रित किया और उनके घर आए लोगों के साथ रात को ही थङी को उस जगह खोजने लगे जहाँ वह लकड़ी बटोरने गई थी। उसके आसपास की जगहों को उन्होंने छान मारा मगर वहाँ उन्हें उसका कोई भी निशान न दिखा। साईथा के सभी युवक भी गाँव में ही उपस्थित थे।

खोजकर निराश हुए दो पथ्लोई लौटकर एक विधवा के घर में चावल से बनी देशी शराब पीने घुसे। वहाँ पहले से मौजूद दो अन्य व्यक्तियों ने उन्हें बताया कि उन्होंने एक बेहद सुंदर नुला (युवती) और एक सिपाही को एक साथ जाते हुए देखा था। यह बात जब लिआनछूङा और उसकी पत्नी को मालूम हुई तो वे आग बबूला हो गए। वे काफी शर्मिंदा महसूस कर रहे थे और वे गुस्से से चिल्ला भी रहे थे। गाँव वाले इस घटना से हतप्रभ थे।

कुछ दिनों के बाद थङी और ह्नूना आइज़ोल पहुँच गए। ललह्नूना का घर कुछ दूर था, और उन्हें घर पहुँचते-पहुँचते अंधेरा हो गया। ह्नूना एक विधवा का इकलौता बेटा था। उसकी एक बहन थी, साँवली-सी और देखने में ठीक-ठाक। उसकी माँ चावल से बनी देशी शराब बेचती थी। अंधेरा होते ही उनके घर में पुलिस वालों, सिपाहियों, घने बालों वाले स्कूली बच्चों और ड्राईवरों का जमघट लगा रहता था। बिना पूर्व सूचना के ललह्नूना और थङी के अचानक घर आ जाने पर ह्नूना की माँ को बड़ा आश्चर्य हुआ। दोनों के एक

साथ आने का मतलब समझने के बाद ‘अच्छा यह शादी का घर है’ कहते हुए सभी जोश में आ गए।

हँसी-मज़ाक करने के बावजूद ऐसा लग नहीं रहा था कि आइज़ोल के युवक थङी की सुंदरता से बहुत प्रभावित हो। मगर कुछ लोग आपस में चुपके-चुपके बातें कर रहे थे कि “अब तक जितनी नुला (युवती) देखी हैं, उन सब में यह सबसे खूबसूरत है। ललह्नूना से शादी करना तो इसकी खूबसूरती की बर्बादी है!”

एक महीना घर पर रहने के बाद ललह्नूना यूनिट में शामिल होने के लिए रवाना हो गया। उसने थङी से कहा- “यहाँ रहकर तुम मेरी माँ की मदद करना। मैं जाकर ‘कैजुअल लीव’ लेकर जल्द ही लौटूँगा और तुम्हें अपने साथ ले जाऊँगा।” साईथा में उसने कहा था कि हम आइज़ोल जाकर अच्छे से शादी करेंगे और यह बात थङी को अभी भी याद थी। मगर वह ‘कैजुअल लीव’ लेकर जल्द ही लौटने वाला था, इसीलिए उसने उससे ज्यादा सवाल-जवाब न किया।

एक महीने ललह्नूना के साथ रहकर थङी को शिकायत करने जैसी कोई बात नज़र नहीं आई। बल्कि ललह्नूना के प्रति उसका प्यार बढ़ता ही रहा। मगर एक बात उसे बड़ी अजीब लगी। वह बात यह थी कि उसके गाँव में ललह्नूना ने खुद को हवलदार बताया था, लेकिन आइज़ोल में उसने अपनी वर्दी में ‘V’ आकार की तीन धारियों वाली कोई तीन पट्टी नहीं लगायी थी। मगर उसे इन सभी चीजों की खास जानकारी नहीं थी। उसे लगा पट्टी लगाना जरूरी नहीं रहा होगा। अतः उसे किसी बात पर शक भी नहीं हुआ।

ललह्नूना को वापस लौटने में उम्मीद से अधिक समय लग रहा था। उसने तो एक-दो महीने में लौटने की बात की थी। तीन महीना बीता, चार महीना बीता, मगर उसकी कोई खोज खबर नहीं मिली। वहीं थङी के पेट का बच्चा भी काफी बड़ा हो गया था। उसे

अपने पति की बहुत याद आती थी। मगर जब उसे मालूम होता कि उसके घर आने वाले शराब के ग्राहक ललह्नूना को लापरवाह कहते हैं तो उसे बुरा लगता और वह असहज महसूस करने लगती। उसकी सास और ननद बहुत अच्छी थीं, मगर उनके स्वभाव में अंतर होने के कारण थङी उनसे बहुत करीबी रिश्ता नहीं बना पाई।

जब वह बच्चे को जन्म देने के नजदीक थी तब एक दिन एक ए.एस.आई. ललह्नूना की खोज-खबर लेने आया। जब थङी ने उसके आने का कारण पूछा तो उसने बस इतना ही कहा- “कुछ नहीं, यह तो बस यूँहीं रूटीन इन्क्वाइरी है।” थङी को इस बात से एक तरह से तसल्ली ही हुई, मगर उसकी सास और ननद कुछ चौंक-सी गईं।

थङी के बच्चे को जन्म देने के लगभग तीन महीने बाद ह्नूना ने अपने छुट्टी में आने की सूचना दी। किसी ने बताया कि उन्होंने उसे सिल्चर और वाईरेङते के आसपास देखा था। मगर उनके परिवार वालों को कुछ पता नहीं था। उसकी माँ और बहन आपस में कुछ फुसफुसाया करती थीं। इससब से थङी थोड़ी चिंतित और परेशान रहने लगी।

एक रात लगभग बारह बजे ललह्नूना अचानक घर आया धमका। थङी को उसके आने का पता भी न चला। जैसे ही उसे पता चला, वह तुरंत उठी और उसके नहाने के लिए पानी गरम किया।

“गाड़ी में सफर करने के कारण पूरा बदन टूट रहा है।” ललह्नूना ने कहा।

थङी ने उसके बदन की मालिश की। उसने थोड़ा-सा खाना खाया और सो गया।

अगली सुबह लगभग सात बजे थङी को महसूस हुआ कि कुछ लोग उसके घर के चारों ओर चक्कर लगा रहे हैं। उसने अपने पति को देखा, वह जाग रहा था। उसने लेटे हुए ही अपने पति को गले लगाया तो उसे महसूस हुआ कि उसका दिल ज़ोर-ज़ोर से धडक रहा है। थङी सतर्क होकर जाग गई। “ललह्नून, क्यों?” उसने थोड़ा चिंतित होकर पूछा। उसके

पति ने बस हँस दिया और कुछ जवाब न दिया। जैसे ही ललह्नूना बिस्तर से उठा, तभी वर्दी पहने ए.एस.आई. और दो पुलिस कांस्टेबल उनके घर में घुसे।

“क्या ललह्नूना घर पर है?” ए.एस.आई. ने नम्र आवाज़ में पूछा।

“क्या हुआ क पू?” ललह्नूना ने तुरंत पूछा।

“हम तुमसे थोड़ी देर बात करना चाहते हैं। क्या तुम थोड़ी देर के लिए बाहर आ सकते हो?” उन्होंने कहा। ललह्नूना ने शर्मिंदगी महसूस करते हुए अपनी पत्नी की तरफ देखा। उउसकी माँ रोते हुए पुलिस वाले से पूछ रही थी- “अरे! फिर क्या हो गया...इसने क्या गलती की है कपू?”

“हल्ला मत कर जोङी।” ललह्नूना गुस्से से अपनी माँ पर चिल्लाया।

जैसे ही वह बाहर निकला पुलिस वालों ने उसका हाथ पकड़ लिया और हथकड़ी पहना कर उसे अपने साथ ले गए।

थङी बिस्तर पर दूसरी तरफ पलटी और उसने अपनी बेटी को देखा। वह पूरी मासूमियत के साथ गहरी नींद में सो रही थी। उसके जहन में वह रात कौंध गई जिस रात उसने ललह्नूना के साथ भागने का फैसला किया था। उसे उसके घर के सामने का घना सेर का पेड़ नजर आया। उसे उसकी चाची और चाचा का चेहरा भी नजर आया। वह अतीत की स्मृतियों में खो गई और पु ललसाईलौआ, माङलुआया, उसकी सहेली त्लनथङी, उनके घर आने वाले साईथा के युवकों और पथ्लोईयों, मेलवेङ के उपा चोमा, नौकर कोला और त्लनी के पिता- इन सभी के चेहरे एक-एक कर उसे नज़र आ रहे थे। वह फूट-फूट कर रोने लगी और वह ललह्नूना को जी भरकर कोसने लगी।

वह चुपचाप उठी। उसे कुछ न सूझा तो उसने अपना मुँह धोया। मुँह पोंछते हुए उसने आईने में अपना चेहरा देखा तो उसे ऐसा लगा मानो उसके चाचा अपनी बात दोहरा रहे हों,"तुझे अपने चेहरे पर घमंड हो रहा होगा न, वह तो बस बुरे इंसानों को ही निमंत्रण देता है। जब एक दिन कोई बुरा इंसान तुझे धोखा देगा न तब सुंदर चेहरे का सारा घमंड हवा हो जाएगा।" साईथा की सबसे सुंदर युवती, जिसे लोग उसने नाम से न पुकारकर प्यार से 'चौकीदार की बेटी थङह्नियाङी' कहकर पुकारते थे, उसकी हालत ऐसी होगी, सोचकर उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। "आज रात इस बंगले के अंदर सिल्वरथङी का ही राज होगा।" बाबू ने जिस रात यह बात कही थी, वह रात थङी को याद आ रही थी। "काश! बाबू भी मुझे पसंद करने लगे और अपनी पत्नी बनाने के लिए मुझे अपने साथ ले जाए और हम मेरी चाची लाईथङपुई की आँखों के सामने ही आइज़ोल के लिए रवाना हों" वह अपनी उन मधुर कल्पनाओं में खो गई। वह सोचने लगी कि जहाँ वह पूरी शोभा के साथ आइज़ोल जाना चाहती थी, वहीं वह कितने शर्मनाक तरीके से यहाँ आई और उसे यह सब कितना भयानक लगा! उसे खुद पर शर्मिंदगी महसूस हुई। वह चाहती थी कि उसके सामने जमीन पर अंतहीन गहरा दरार पर जाए और वह उसमें कूद पड़े।

डिप्टी कमिश्नर के दफ्तर में जब ललह्नूना के मामले की सुनवाई हो रही थी तब थङी ने भी वह सब सुना। वहीं से उसे अपने पति की सच्चाई का पता चला। उसका पति जब असम रेजिमेंट में अवैतनिक लांस नायक था, तब वह स्टोर कीपर के रूप में नियुक्त था। तब ढेर सारे कंबल चुराकर बेचने के कारण वह फरार हो गया था। उसी समय उसने थङी को भी भगाया था। उसका केस ए.एम.सी. को दे दिया गया और उसका पता लगाकर उसे वापस यूनिट में भेज दिया गया। वहाँ से उसे समरी कोर्ट मार्शल पर छोड़ दिया गया मगर वापस मिज़ोरम लौटते हुए उसने सिल्चर में एक मिज़ो व्यापारी के एक हज़ार रुपए चुरा लिए। वहाँ से वह किसी तरह बच निकला। वह इतने पर भी नहीं रुका। कोलासीब में

उसने एक लड़की का बलात्कार किया। वहाँ से पुलिस ने उसका पीछा किया और उसे उसके घर से दबोच लिया।

ललह्नूना को डेढ़ साल कारावास की सजा सुनाई गई। सुनवाई के खत्म होने पर जब वह बाहर निकला तो उसने थङी को पीठ पर बच्ची को बाँधे खड़ा देखा।

"सिल्वरथङ, तू यहाँ क्या कर रही है?" उसे पकड़े हुए पुलिस वालों के बीच से उसने शर्म और गुस्से से चिल्लाकर कहा।

"ललह्नूना, तो ऐसी है तुम्हारी करतूत? यह सब तुमने मुझे पहले क्यों नहीं बताया?" रुआँसी आवाज़ में क्रोध से भरकर थङी ने कहा।

"सिल्वरथङ, तू अब घर लौट सकती है, तू अब मेरी पत्नी नहीं है।" उसने गुस्से में कहा।

आइज़ोल के डिप्टी कमिश्नर के दफ्तर के सामने घबराहट, उलझन और असमंजस के साथ वह खड़ी रही। उसे मालूम भी नहीं था कि अब वह कहाँ जाए। अपनी नवजात तीन महीने की बच्ची को पीठ पर लिए वह सोच ही रही थी कि वह कहाँ जाए की तभी उसके पीछे से किसी ने कठोर आवाज़ में मगर बिना किसी क्रोध के उसे पुकारा- "सिल्वरथङ!"

जब वह मुड़ी तो उसने देखा कि यह उसके चाचा थे। सिल्वरथङी डरी और शर्म से पानी-पानी हो गई। डूबते को मानो तिनके का सहारा मिल गया हो! उसने भय और खुशी के साथ लिआनछूङा को "चाचाजी" कहकर पुकारा और रोने लगी।

लिआनछूङा ने उससे कुछ और न कह कर बस इतना कहा- "आओ, लौटते हैं।"

फिर वे उसे उस जगह ले गए जहाँ वे ठहरे हुए थे। अगले दिन सिल्वरथङी ने अपने सामानों और अपने कपड़ों की पोटली बनायी, उसे अपने सिर पर रखा और उसके ऊपर अपनी तीन महीने की बच्ची को बिठाकर अपने चाचा के साथ अपने घर को चल दी।

साईथा गाँव का रास्ता तीन दिनों का था। बीच में दो रात वे अलग-अलग जगहों पर ठहरे। पूरे रास्ते एक दूसरे से बिना कुछ बात किए वे अपने गाँव पहुँचे। उनके घर पहुँचने पर उसकी चाची ने बड़े प्यार से थङी के चाचा से बात की। उन्होंने सिल्वरथङी और उसकी बेटी को अनदेखा किया। तीन दिनों तक लगातार पैदल चलकर थकने के बाद भी वह अपनी बेटी को पीठ पर लेकर पानी भरने लगी। जब वह निकली तो उसे अचानक उसकी सहेली त्लनथङी मिल गई। त्लनी ने उसके बच्चे को ले लिया और जब तक वह पानी भरती रही तब तक उसने उसका ख्याल रखा। त्लनी से मिलकर उसे बड़ी खुशी हुई क्योंकि वह जानती थी कि उस गाँव में वही उसकी अकेली शुभचिंतक थी। उस रात भी ठंड अधिक होने के कारण त्लनी ने उसको अपनी एकदम नयी रज़ाई दी। सिल्वरथङी को बहुत खुशी हुई। खुशी के आँसुओं से रज़ाई का छोर भीग गया।

इस तरह वह अपने पुराने जीवन को नए सिरे से जीने लगी। उसे तकलीफ तो बहुत हो रही थी, मगर अब वह वयस्क हो चुकी थी, उसने खुद को मजबूद किया। अब वह अपनी चाची की ओर भी विशेष ध्यान न देती थी। औरत बन चुकी सिल्वरथङी की ज़िद के आगे उसकी चाची को भी कुछ करने की न सूझी, सिवाई गालियाँ बरसाने के। मगर सबसे ज्यादा परेशानी की बात यह थी कि जब कभी उसकी चाची के साथ उसका झगड़ा होता, उसके चाचा भी उसमें शामिल हो जाते और थङी पर कभी-कभी हाथ भी उठा देते। उसने कई बार अपनी सहेली त्लनी के यहाँ शरण लिया। उन दिनों फिर से साईथा के पथ्लोई और युवक प्रत्येक रात उसे रीम करने आने लगे और इस प्रकार लिआनछूङा और लाईथङपुई का तकलीफ़ों और मनहूसियत से भरा वह घर फिर से लोगों की हँसी और चहल-पहल से आबाद हो गया।

उन्हीं दिनों एक और परेशानी सामने आई। सिल्वरथङी की बेटी धीरे-धीरे बड़ी हो रही थी। वह अपने घुटनों के बल चलने लगी और जब वह अपने पैरों से चलने की कोशिश करती तो स्वाभाविक तौर पर कभी-कभी उस बच्ची के हाथों कुछ बिगड़ जाता। लाईथङपुई अपनी जुबान पर काबू नहीं रख पाती और उसे जी भर कर कोसती- "मार डालों रंडी की इस सोन[8] औलाद को!"

सिल्वरथङी को इस बीच अपनी माँ की एक बहन थनछूङी की याद आई, जो उसके बचपन में ही कहीं और जाकर बस गई थी। उनके पति कोलरुमा की अच्छाईयों की स्मृति हालाँकि अब उसके जहन में बहुत स्पष्ट नहीं थी, मगर जब उसने ध्यान से सोचना शुरू किया तो वह स्पष्ट होती गई और आखिरकार उसने उनके पास जाने का निर्णय किया। किसी और को कुछ न बताकर उसने केवल अपनी सहेली त्लनथङी को ही इस बारे में बताया और उसके साथ मिलकर जाने की योजना बनाई।

अगर उसके चाचा को मालूम होता कि वह जा रही है तो वे अवश्य उसे जाने से न देते। अतः उसने सही समय का इंतज़ार किया। एक बार उसके चाचा को बंगले के लिए कुछ सामान लेने के लिए आइज़ोल बुलाया गया। वे कम से कम आठ दिनों के लिए जाने वाले थे। खुशकिस्मती से उसी समय त्लनथङी के यहाँ पश्चिम की ओर जाने वाले एक अतिथि ठहरे थे। त्लनी ने थङी को अपने साथ धान काटने के बहाने खेत में कुछ दिन रहने के लिए बुलाया। इसी बहाने घर से निकलकर वह उस अतिथि के साथ पश्चिम दिशा की ओर चली गई। तीसरे दिन वे त्लोङ नदी की घाटी में पहुँचे। मगर सिल्वरथङी और उस अतिथि की मंजिलें अलग-अलग थीं, अतः वे अलग हो गए। वह उस नदी के तट पर अपनी बच्ची को पीठ पर लेकर अकेले चलने लगी। सूर्य के अस्त होने से पहले वह वोङोन गाँव पहुँची। मगर उसने पाया कि सेर बागान के मालिकों का वह गाँव पूरी तरह से बदल चुका है। वहाँ घर बहुत दूर-दूर थे और उसकी मौसी के परिवार के बारे में जानने वाला भी कोई नहीं था। जब तक वह उनके बारे में यहाँ-वहाँ पूछ रही थी, तब तक अँधेरा हो गया। उसे बहुत दूर

एक घर की मद्धिम-सी रोशनी दिखी। वह उस रोशनी की ओर बढ़ी। वह उस घर में गई। उस घर के लोग काफी भले थे। वे उसकी मौसी थनछूङी और मौसा कोलरुमा को पहचानते थे। मगर उन्होंने उसे बताया कि सेर की फसल खराब होने के कारण तीन साल पहले वे पूर्व दिशा के किसी गाँव में पलायन कर गए हैं। चार दिन और चार रात चलकर उसका प्यार करने वाली मौसी को खोजना मानो बर्बाद हो गया। उस रात वह चुपके-चुपके रात भर रोती रही।

उसके मेज़बान बहुत भले थे, इसीलिए वह वहाँ कई दिनों तक ठहरी। उन्होंने पूरब की ओर जाने वाले व्यक्ति की तलाश की, जिसके साथ सिल्वरथङी पूरब की ओर जा सके। थङी जहाँ जाना चाहती थी वहाँ से उस गाँव में आकर बसने वाले भी कई थे और वे कभी-कभी वहाँ जाया करते थे। जैसे ही उसे एक ऐसा व्यक्ति मिला, वह अपनी बेटी को लेकर अपनी मौसी के गाँव के लिए रवाना हो गई। उसे याद आया कि किस तरह बचपन में उसकी मौसी उसे पीठ पर बाँध लेती और प्यार करती थी। अब वह बड़ी हो चुकी थी और उसकी खुद की एक बच्ची भी थी। वह कल्पना करने लगी कि जिस प्रकार उसकी दादी ने उसकी देखभाल की थी उसी प्रकार उसकी मौसी भी बिना डाँटे-मारे उसकी नन्ही बच्ची की देखभाल करेगी। वह बहुत खुश थी और इसी कल्पना से उसकी सारी थकान भी मानो दूर हो गई। चार दिन चलने के बाद वह उस गाँव में पहुँची, जहाँ उसकी मौसी का परिवार रहता था।

उसने एक लड़के को देखा और उससे पूछा, “पु कोलरुमा का घर किधर है?”

“वह नीच वाला।” उसने कहा।

सिल्वरथङी उस घर की ओर उतरने लगी। वह घर में घुसी। घर में सन्नाटा छाया हुआ था। पु कोलरूमा चूल्हे के पास पाँव फैलाए गुमसुम बैठे थे। एक औरत घर के पीछे रतालू साफ करने में लगी हुई थी।

“मौसा जी, आप लोग ठीक है न?” सिल्वरथङी ने पु कोलरूमा से पूछा।

उसने अपनी बच्ची को बिठाया, अपने कपड़ों की गहरी को नीचे रखा और खुद पु कोलरूमा के पास बैठ गई।

पु कोलरूमा ने उसे आश्चर्य की दृष्टि से ध्यान से देखा और पूछा- “तुम कौन हो और तुम कहाँ की हो?”

सिल्वरथङी ने मुस्कुराते हुए कहा- “मौसा जी, मैं सिल्वरथङी हूँ, साईथा के चौकीदार लिआनकूङा की बेटी।”

पु कोलरूमा हैरान थे- “अरे! तुम लिआनकूङा की बेटी हो? काफी देर तक एकदम खामोश रहने के बाद उन्होंने फिर कहा- “तुम सिल्वरथङी हो?”

“हाँ, मेरी मौसी किधर है?” उसने पूछा।

पु कोलरूमा ने दूसरी तरफ मुड़कर अपनी हथेलियों से अपना मुँह छिपा लिया। उन्होंने एक शब्द भी न कहा। सिल्वरथङी कुछ ठंडी-सी पड़ गई और उसने उन्हें ध्यान से देखा।

पु कोलरूमा ने उससे धीमे-से कहा- “थङते (प्यार से), तुम्हें पहुँचने में देरी हो गई। तुम्हारी मौसी छूङी दो साल पहले हमें छोड़कर चली गई। अभी वह परमेश्वर के पास है।”

उन्होंने बड़ी मुश्किल से इतना कहा। सिल्वरथङी टूट-सी गई। वह ज़ोर-ज़ोर से रोने लगी, मानो उसके आँसुओं का बाँध टूट गया हो। जिनसे उसे अपनी सारी परेशानियों और कठिनाइयों को साझा करना था और जिनके लिए वह मिज़ोरम के लंबे-चौड़े बीहड़ रास्तों को तय करके आई थी, वही अब नहीं थी।

“ओ माँ, ओ माँ तुम्हारी बेटी तुम्हारे पास आ पहुँची है, तुम कहाँ हो? माँ, तुमसे मिलने की तमन्ना में मैं मीलों भटकी हूँ। ओह! मैं अपनी परेशानियों को तुम्हारे साथ साझा करने आई थी! माँ! मैं बस एक बार तुम्हारा चेहरा देखना चाहती हूँ।” वह फूट-फूटकर रोने लगी।

“क्या हुआ? क्या हुआ?” कहते हुए उनके पड़ोसी दौड़े चले आए।

उन्हें जवाब देने की हालत में भी कोई न था। घर के पीछे जो औरत रतालू साफ कर रही थी वह भी अंदर आ गई। पड़ोसियों से उसके बात करने अंदाज़ से सिल्वरथङी को समझ में आ गया कि वे उसके मौसाजी की नयी पत्नी हैं। उसे अचानक यह बात समझ में आई कि उस घर में उसकी स्थिति कितनी अवांछित और संदिग्ध है। वह पूरी तरह टूट गई। उसकी दुनिया एक बार फिर उजड़ गई।

उसी समय एक पथ्लोई जैसा युवक घर में घुसा। पड़ोस की औरतों और रो रही एक युवती के बीच से गुजरकर उसने घर के पीछे जाकर अपनी बदूक रखी।

“आप सब को क्या हुआ है, जमा होकर बैठे हो?” उस युवक ने पूछा।

रतालू साफ कर रही औरत ने कहा- “तुम्हारी बहन आई है।”

“कौन-सी बहन?” उसने पूछा।

उसके पिता ने जवाब दिया- “तुम्हारे मौसा लिआनकूङा की बेटी सिल्वरथङी।”

उस युवक ने उसे गौर से देखा और हैरान होकर कहा- “यह सिल्वरथङी है?”

“तुम कब आई थङते?” उसने पूछा।

सिल्वरथङी अपने बारे में बताने ही वाली थी कि उसने कहा- “जरा रुको।” फिर घर के पीछे से उसने अपनी बंदूक ली और बाहर निकल गया। कुछ ही देर में बंदूक चलने की आवाज़ आई। वह उसे देखती रही। उस युवक ने अपने पड़ोसी को पुकारा और कहा- “पुह्नून, देखो हमने सूअर मारा है। तुम इसे भूनकर साफ करो।”

कुछ दूर से उसके पिता ने पूछा, “अरे! अचानक क्यों? बिना पहले से किसी सूचना के तुमने सूअर क्यों मारा?”

“बहुत दूर से मेरी बहन आई है, इसलिए उसके स्वागत में मैंने अपने विशेष नर सूअर को मारा है। इसे उसकी आत्मा की रक्षा के लिए चढ़ायी गयी बलि भी मान सकते हैं।” उसने कहा।

उसकी बातों को सुनकर सिल्वरथङी के मन की सारी आशंकाएँ दूर हो गईं। उसके मौसाजी भले ही अब किसी और के पति हो गए हों, मगर उसका भाई रउखूमा अभी भी उसका भाई ही था। इसके अलावा उसने जब देखा कि उसके भाई ने अपने पिता से पूछे बिना ही उसके लिए सूअर मारा है तो वह समझ गई कि उस घर में उसकी भी चलती है। यह देखकर उसे कुछ राहत मिली।

फिर दो युवतियाँ झूम खेतों से लौटकर घर में हँसती हुई आईं।

“प रौ (रउखूमा) आपने सूअर क्यों काटा?” उन्होंने घर में घुसते हुए पूछा।

“यह देखो, यह सिल्वरथङी है...”

“वाह! क्या बात है! तुम कब पहुँची?” उन्होंने उससे बहुत खुश होकर पूछा।

इस तरह सिल्वरथडी को जिस नए परिवार की उम्मीद थी, वह उसे मिल गया। उसने नए सिरे से जीना आरंभ किया और वह धीरे-धीरे अपने काँटों भरे अतीत को भूलती चली गई। वे दो युवतियाँ उसकी बहन और भाभी थीं। उन दोनों में जो छोटी थी, वह थनछूडी की बेटी और रउखूमा की बहन थी और जो उम्र में बड़ी थी, वह रउखूमा की पत्नी थी। उसकी नयी मौसी, जिसने उसकी मौसी थनछूडी का स्थान लिया था, उसकी मौसी की बहुत अच्छी सहेली थी। उसने अपने बीमार पति की जी-जान से सेवा की। अपने पति की मृत्यु के बाद थनछूडी के साथ मिलकर उसने अपनी सहेली के पति यानि सिल्वरथडी के मौसाजी कोलरूमा की सेवा की। थनछूडी की अचानक मृत्यु हो जाने के कारण उसकी सहेली ने बूढ़े और अस्वस्थ पु कोलरूमा की एक पत्नी की तरह सेवा की। उन्होंने थनछूडी के बच्चों को अपने बच्चों जैसा ही माना। उन्होंने सिल्वरथडी और उसकी बच्ची को भी खूब प्यार दिया। यदि थनछूडी होती तो वह भी उन्हें वैसा ही प्यार देती। एक अच्छे खुशहाल परिवार में घुलमिल जाने के बाद थडी ने आत्ममंथन किया तो उसे अपनी गलतियों का भी एहसास हुआ। वहाँ रहते हुए उसे समझ आया कि आकाश और सूर्य की रोशनी के तले उसके हिस्से की खुशी अब धीरे-धीरे सामने आ रही है।

वक्त बीतता गया और सिल्वरथडी की बेटी भी चार साल की हो गई। वह अपनी माँ की तरह ही खूबसूरत थी और उसके हावभाव और उसकी बातों से जान पड़ता था कि वह अपनी माँ की ही तरह अच्छे स्वभाव वाली भी होगी। थडी ने अपने मौसा जी के घर को ही अपना घर मान लिया। उसका उसकी बहन लिआनछूडी के साथ बहुत अच्छा रिश्ता था। दोनों बहुत खूबसूरत थीं, इसलिए गाँव के युवक और पथ्लोई उनके पीछे लगे रहते थे। वे उन दोनों को छेड़ते हुए आपस में झूठमूठ की बहस किया करते- “इन युवतियों में कौन बेहतर है, एक बच्चे की माँ या बिना बच्चे वाली?”

कुछ कहते- “निश्चित रूप से बिना बच्चे वाली।”

“अरे! बच्चे वाली ही ज्यादा बेहतर है।” ईसा कहने वालों की संख्या भी लगभग बराबर ही हुआ करती।

एक दिन सर्दी के अंतिम दिनों में, फ़रवरी महीने के आरंभ में, सिल्वरथङी और लिआनछूङी लकड़ी बटोर रहे थे। दोपहर का समय था। मौसम बहुत ही साफ था। हमेशा की तरह उनके साथ तीन-चार युवक भी थे। मौसम बड़ा अच्छा था और जमीन भी पूरी तरह सूखी थी। सूखे पत्तों के कारण घने जंगलों में चलने पर पत्तों के कुचलने की खड़-खड़ की आवाज़ आती। अच्छे मौसम के कारण दूर के पहाड़ धुन्ध से ढककर मटमैले हो गये थे। किसी बात से सिल्वरथङी का मन गहरे विषाद से भर गया। थङी भावुक हो उठी। उसे छोटी-छोटी बात पर, जैसे भागते हुए गिरगिट को देखकर भी, वह खूब हँसती। देर शाम उन्होंने लकड़ियों का गट्ठर बनाया, युवकों ने उसे अपने कंधों पर लिया और वे सभी घर की ओर लौटने लगे।

घर की ओर लौटते वक्त कुछ राहगीर उनके पास पहुँचे। उनको देखकर थङी कुछ चौंक-सी गई। उसे बहुत समय पहले साईथा में आए बाबू की याद आ गई। शर्माते हुए उसने पूछा, “अरे! कपु, आप हैं? यहाँ क्या करने आए हैं?”

“हम यहाँ चुनाव कराने आए हैं, पर तुम यहाँ क्या कर रही हो?” बाबू ने पूछा।

रास्ते में उसने उन्हें सबकुछ बता दिया। थङी के घर पर ही बाबू के ठहरने का इंतज़ाम किया गया।

वे घर पहुँचे तो उन्होंने पाया कि उसके मौसाजी बहुत व्यस्त और खुश थे, क्योंकि उन्होंने पहले कभी-भी किसी बड़े अफसर की मेजबानी नहीं की थी। थङी की गोद में उसकी बेटी आकर बैठ गई। बच्ची बाबू को टुकुर-टुकुर देख रही थी।

“यह किसकी बेटी है?” बाबू ने पूछा।

थङी को बताने में हिचकिचाहट महसूस हुई। उसने शर्माते हुए उन्हें बताया कि वह उसकी बेटी है। बाबू को उसके जवाब पर यकीन नहीं हुआ।

संदेह व्यक्त करते हुए उन्होंने फिर पूछा, “यह तुम्हारी बेटी है?”

“हाँ।”

“अच्छा! तुम्हारी इतनी बड़ी बेटी है, तुमने बताया नहीं। पूरे रास्ते तुमने अपने बारे में बताया मगर जो बात सबसे महत्वपूर्ण है तुम उसे बताना ही भूल गई। छेमते मेरे पास आओ, मुझे लगता है तुम्हारी माँ तुम्हें भूल चुकी है।” बाबू ने उसे छेड़ते हुए कहा।

जब तक बाबू थङी के यहाँ रुके वे बहुत खुश थे। हालाँकि उन्होंने गौर किया कि कभी-कभी थङी खोई-खोई-सी नज़र आती थी। मगर अक्सर पार्टी के नेताओं से मिलने के कारण उन्हें इस बारे में बात करने का सही समय ही नहीं मिलता था। किसी और के बच्चे की माँ होने के बावजूद थङी के प्रति बाबू का नज़रिया बदला नहीं था।

एक रात, हमेशा की तरह थङी बाबू के सोने के लिए बिस्तर लगा रही थी। अन्य सभी लोग सो चुके थे इसलिए उन्हें बात करने का सही समय मिल गया। बाबू बिस्तर के पास एक कुर्सी पर बैठ गए। उन्होंने मज़ाक में मगर गंभीर होकर उसे अपनी गोद में बैठने को कहा। मगर थङी ने “मैं बिस्तर पर ही ठीक हूँ” कहा और हँस दी।

बाबू ने गंभीर होकर उससे कहा- “तुम मुझे अपने मन की बात बताओ। मैंने तुम्हें जब से देखा है तुम मेरे मन में बस गई हो। आज की रात हमें एक-दूसरे से सबकुछ साफ-साफ बता देना चाहिए।”

थङी के दिल में भी बाबू की खास जगह थी। मगर उसे कभी नहीं लगता था कि ऐसे बड़े अफसर को उस जैसी लड़की वास्तव में पसंद आएगी। उस जैसे बड़े अफसर के सामने वह तो बहुत साधारण थी, उसपर से वह नुथ्लोई[9] थी। उसे नहीं लगता था कि उनका कोई मेल हो सकता है। बाबू सरकारी ड्यूटी पर इस गाँव में आया था, इसलिए थङी को यह भी डर था कि कहीं यह भी माङलुआया और ललह्नूना की तरह बस मेरे साथ मनबहलाव तो नहीं कर रहा। इसीलिए वह से भरी हुई थी। शर्म से अपनी नजरें झुका कर विनम्र भाव से उसने कहा- “हम जैसों को तो आप अपने लायक नहीं समझोगे।”

“तो कौन होगा हमारे लायक?”

“आप मुझे सच में पसंद नहीं करोगे!” उसने फिर से हँसते हुए कहा।

बाबू ने उसका हाथ पकड़कर उसे अपनी गोद में बिठा लिया और उससे कहा- “तुम्हें मुझ पर संदेह क्यों है? मैं मज़ाक नहीं कर रहा, मैं सचमुच तुमसे प्यार करता हूँ।

थङी के मन में आशा की किरण जगी। उसे याद आया कि इस संसार के सबसे शक्तिशाली शासक, जिसके साम्राज्य में कभी सूर्य अस्त नहीं होता था, ने भी एक तलाक़शुदा स्त्री के लिए अपना ताज ठुकरा दिया था।[10] वह बाबू भी चाहे कितना ही बड़ा अफसर क्यों न हो, उसे पक्का विश्वास होने लगा कि परमेश्वर ने उन्हें उसके लिए ही सुरक्षित रखा है। मगर किसी घमंड या खुद को अच्छा साबित करने के लिए नहीं, बल्कि विनम्रता और लज्जा के कारण वह उनकी गोद से उठ गई और बिस्तर पर जाकर बैठ गई। बाबू को भी उसका यह स्वभाव पसंद आया और इस उम्मीद के साथ कि उन्हें और अच्छा मौका मिलेगा, उन्होंने भी उसका हाथ को छोड़ दिया।

“सचमुच कपु मैं तो बहुत साधारण हूँ और मुझे कभी नहीं लगता था कि आप मुझे पसंद कर सकोगे। इसलिए मुझे अपने प्यार का इज़हार करने की कभी हिम्मत न हुई। अगर प्यार की बात है तो आपके लिए मेरा प्यार आपकी उम्मीद से हीं ज्यादा है। मगर मेरे लिए तो आपकी अच्छी बातें ही काफी हैं न?” थङी ने कहा।

“दया करके बस एक बार ही सही!” ऐसा कहकर बाबू ने उसे हाथ पकड़कर खींचा और उसे अपनी गोद में फिर से बिठाकर उसे चूमने लगा। थङी मन ही मन प्रार्थना कर रही थी कि “हे भगवान! ये ललह्नूना जैसा न निकले।”

उसने अपने ‘पू’ (साहब), जिसे वह बहुत प्यार करती थी, के अनुरोध का जवाब दिया और वह भी उसके चुंबन का जवाब देने लगी। इस तरह बहुत देर तक थङी उसकी गोद में बैठी रही और वे दोनों एक दूसरे को चूमते रहे।

“थङी मैं तुमसे प्यार करता हूँ, तुम मेरे प्यार पर कभी शक मत करना, हाँ।”

“मैं भी आपसे प्यार करती हूँ, मगर कपु, मैं आपके लायक नहीं हूँ।”

“ऐसी कोई बात नहीं है। देखा जाए तो मैं भी किसी के लायक नहीं हूँ। तुम्हारे लायक भी मैं नहीं हूँ। मगर तुम मुझसे प्यार करती हो और मुझे चाहती हो, इसलिए मैं तुम्हारे लायक बन पाया हूँ।

शुरू से ही हम उस बाबू को ‘बाबू’ कह रहे हैं। उसका नाम ललसाङ्लूरा था और उसकी उम्र भी ज्यादा नहीं थी। उसकी शादी हो चुकी थी और उसके तीन बच्चे भी थे। उसकी पत्नी अमीर परिवार की थी। उसकी पत्नी के पिता ने यह शादी इसलिए कराई थी ताकि इससे उनके परिवार की प्रतिष्ठा और बढ़ सके। मगर वह उम्मीद से ज़्यादा घमंडी और बुरी थी तथा साङ्लूरा को हमेशा नीचा दिखाती थी। दोनों में अक्सर बहसें होती थीं। छोटी-से-छोटी बात में भी वह अलग होने की बात किया करती थी। स्त्री होकर उसके

इतना घमंड करने के कारण साङ्लूरा को बड़ा बुरा लगता था। मगर तीनों बच्चों के कारण उन्हें अलग होने की हिम्मत नहीं हुई।

शादी के बंधन में बंधने के बाद कई सालों तक उसकी पत्नी का किसी अन्य पुरुष के साथ संबंध रहा। साङ्लूरा को लगा कि वह अब सह नहीं पाएगा। बदनामी सहकर भी उसे घर से निकालने के अलावा और कोई चारा न रहा। इसलिए उसने उसे तलाक दे दिया। उसकी पत्नी तो यह चाहती ही थी। तलाक के बाद एक महीने से भी कम समय में उसकी पत्नी ने दूसरी शादी कर ली। उनके तलाक से ठीक पहले का ही वह समय था जब ललसाङ्लूरा और सिल्वरथङी की मुलाक़ात साईथा के बंगले में हुई थी।

उसकी स्थिति ऐसी थी इसलिए उसे सुखी पारिवारिक जीवन का कोई अर्थ ही मालूम नहीं था। उसे सुख-सुविधा की किसी भी चीज़ की कभी जरूरत महसूस नहीं होती थी, मगर उसके जीवन में एक सुखी परिवार की कमी हमेशा बनी रही। एक समय तो ऐसा था कि उसे विश्वास ही नहीं होता था कि लड़कियाँ किसी से सच्चा प्रेम भी कर सकती हैं। मगर उसका वह संदेह थङी को देखकर मानो गलत साबित हो गया। यह जानते हुए भी कि वह नुथ्लोई है और एक बच्चे की माँ है, उसके लिए सबसे बहुमूल्य थी उसकी विनम्रता। किसी गीतकार ने भी क्या खूब लिखा है-

चाहे पहले भी उसका विवाह क्यों न हुआ हो,

चाहे वह किसी और के बच्चे की माँ ही क्यों न हो,

मेरा मन तो बसा है उसी में,

इंतज़ार करता रहूँगा मैं, हे मेरी सुंदरी!

मगर उस पल उसने शादी के बारे में थङी से कुछ न कहा। वह उसे वहाँ छोड़ कर आइज़ोल लौट गया।

साङ्लूरा के लौटने के केवल दो हफ्ते बाद ही थङी को उसका पत्र मिला। अपनी जुबान से कहने की बजाय अपने पत्र में उसने बहुत ही सुंदर तरीके से थङी के प्रति अपने उत्कट प्रेम को अभिव्यक्त किया था।

जब पु कोलरूमा को पता चला कि साङ्लूरा थङी से सचमुच शादी करना चाहता है तो उन्होंने यह बात थङी के चाचा लिआनछूङ्ग को बताई। यह जानने के बाद लिआनछूङ्ग बेशर्मी के साथ थङी को अपने बच्चों में सबसे प्रिय और खुद को उसके सुख-दुःख में उसकी चिंता करने वाला बताता रहा। उसने तो यह भी कहा कि मिज़ो नियम के अनुसार थङी को उसके पिता (चाचा) के घर से ही विदा करना होगा। थङी निश्चित रूप से इसके लिए तैयार न होती। मगर उसे अपनी तरफ से कुछ कहने की ज़रूरत नहीं पड़ी, क्योंकि साङ्लूरा ने आइज़ोल में जाकर चर्च के नियमानुसार शादी करने की बात की। कोलरूमा ने इस बात की अनुमति दे दी। इस तरह साङ्लूरा और पलाईयों[11] का लोई का भोजन[12] खा लेने के बाद सिल्वरथङी अपने कुछ साथियों को लेकर उनके साथ आइज़ोल के लिए रवाना हो गई।

पाँच साल पहले आइज़ोल को शर्म और निराशा के साथ छोड़ने के बाद वह फिर पूरे वैभव और खुशी के साथ वहाँ लौट आई थी। जिस दिन वे शहर में प्रवेश करने वाले थे उस दिन थङी को बड़ी हिचकिचाहट हो रही थी। उसे लग रहा था कि उनके स्वागत-सत्कार के लिए खड़े लोगों में ललह्नूना के घर आने वाले उसके परिचित भी होंगे, जो उसे द्वेष और मज़ाक की दृष्टि से देखेंगे। मगर उनका स्वागत करने वालों में ऐसा कोई भी परिचित नहीं दिखा। उसके परिचितों में केवल उसके चाचा लिआनछूङ्ग और नौकर कोला ही थे। एक दूसरे से मिलकर वे बहुत खुश हुए। सभी के जहन में साईथा का वह बंगला ही था और उनके हँसी-मज़ाक का विषय भी बँगले की घटनाएँ ही बना रहीं।

लिआनछूङ्ग ने थङी का नुपुईमन[13] ग्रहण किया। शादी में बधाई देने वालों को धन्यवाद देते हुए उन्हें वे बार-बार यह बताते कि बचपन से सिल्वरथङी के बुरे वक्त में

उन्होंने ही उसे सहारा दिया और उसका पालन-पोषण किया। इससे साङ्लूरा के परिजनों और साथियों का उनके प्रति आदर भाव भी बढ़ा। लेकिन थङी ने उनको टोकने की जरूरत महसूस नहीं की। बल्कि उसने उस परमेश्वर का धन्यवाद किया जिसने उसे साङ्लूरा के रूप में प्यार करने वाला पति दिया और जिसने उसे यह बल दिया कि उसे अपने चाचा को टोकने की जरूरत महसूस न हुई। उसने कभी अपने मन में किसी के प्रति इर्ष्या या बुरी भावना नहीं रखी और उसे विश्वास था कि परेमेश्वर यह बात जानते हैं। इसलिए वह बहुत खुश थी।

बुधवार की एक सुहानी सुबह दोरपुई के गिरजाघर में उसने अपने प्रिय साङ्लूरा के साथ अच्छे और बुरे वक्त में, अच्छे स्वास्थ्य में तथा बीमारी में ईमानदारी से एक-दूसरे की सेवा करने और साथ देने का वचन लिया और वहाँ उपस्थित लोग इस बात के गवाह बने। उसकी सारी कमियों को नज़रअंदाज़ कर उसके कष्टों और लोगों के तानों से उसे मुक्त कराने वाले साङ्लूरा के पास जब वह गई, तब वहाँ उपस्थित लोगों ने उनके लिए गाया:

चाहे जीवन अस्त हो जाए,

चाहे छोड़ जाना पड़े इस संसार को,

अनंतकाल तक रहने के लिए साथ,

ले जाना उसे अपने घर।

पूरी शोभा और वैभव के साथ जब उसने अपने साङ्लूरा के घर प्रवेश किया तो खुशी से उसका जी भर आया। चुपके से उसके आँसू बह निकले। उसने सोचा नहीं था कि यह दिन भी उसके जीवन में कभी आ सकता है।

साङ्लूरा के परिजनों और साथियों ने पूरे वैभव और आनंद के साथ उस विवाह को संपन्न कराया।

लोगों के चले जाने के बाद दोनों धीरे से बाहर निकले और चाँद की रोशनी के तले उस बेंच पर एक-दूसरे से सटकर बैठ गए जिसपर कुछ समय पहले उनके मेहमान बैठे थे।

थडी ने अभी अपनी शादी का गाउन नहीं बदला था। वह अन्य दिनों की तुलना में बहुत ज्यादा खूबसूरत लग रही थी। चाँद की रोशनी में उसका चेहरा चमक रहा था। साङलूरा को ऐसा लगा जैसे उस पल थडी के प्रति उसका प्यार और बढ़ गया हो।

जब वे चुपचाप बैठे थे तब साङलूरा ने उसे गले लगा लिया और धीरे से पूछा- “तुम क्या सोच रही हो?”

“आपको क्या लगता है कि मैं क्या सोच रही हूँ?”

“पता नहीं, बताओ।”

“मैं बहुत सारी बातें सोच रही हूँ। साईथा के बंगले से लेकर आज रात तक जो कुछ भी हुआ, उससे मुझे बड़ा आश्चर्य होता है। अगर यह एक कहानी होती तो बड़ी दिलचस्प होती न?”

दोनों धीरे से खड़े हो गए और कसकर एक दूसरे को गले लगा लिया। वे एक दूसरे को चूमने लगे। उन्होंने अपने कमरे को देखा। उससे दीए की मद्धिम-सी रोशनी आ रही थी।

उन दोनों ने जीवन में बहुत उतार-चढ़ाव देखे थे। वे सच्चे प्यार के प्यासे थे। अपने कमरे की ओर वे इस उम्मीद के साथ बढ़े कि उनके नए जीवन का भविष्य उज्ज्वल है और इस जीवन के सुख और दुःख का सामना वे मिलकर करेंगे।

संदर्भ

---

[1] मिज़ोरम में बाँस की एक प्रजाति पाई जाती है जिसे रोठिङ कहते हैं। इस रोठिङ नामक बाँस पर जब भारी मात्रा में फूल खिलते हैं तो आगे चलकर ये बाँस मर जाते हैं, जिन्हें ठिङ ताम कहते हैं। उन फूलों को खाने से चूहों की प्रजनन क्षमता में वृद्धि होती है जो आगे चलकर खेतों को तबाह कर देते हैं। इस कहानी में 1928-1929 के ठिङ ताम का प्रसंग आया है।

[2] जोङी का शाब्दिक अर्थ बंदरिया है। मिज़ो में इसे गाली के रूप में प्रयुक्त किया जाता है।

[3] स्त्री धन, लड़की अपनी शादी के बाद अपने पिता के घर से जो सामान / संपत्ति अपने साथ अपने ससुराल लेकर जाती है।

[4] मिज़ो भाषा में तलाक़शुदा पुरुष या विधुर को पथ्लोई कहते हैं।

[5] घर का बाहरी बरामदा जहाँ ओखली रखी जाती है।

[6] मिज़ो समाज में मिज़ो युवक जिन युवतियों को पसंद करते हैं उनसे मिलने उनके घर जाया करते हैं। इसे ही नुलारीम या रीम कहते हैं।

[7] मिज़ो समाज में एक व्यवस्था है कि यदि कोई पुरुष किसी स्त्री के साथ उसकी मर्ज़ी के बिना शारीरिक संबंध बना ले या किसी किस्म का दुर्व्यवहार करे तो उसे पंचायत के सामने अपना अपराध कबूल करते हुए चालीस रुपये माफीनामे या जुर्माने के रूप में चुकाना पड़ता है।

[8] पिता द्वारा स्वीकार न किया जाने वाला बच्चा।

[9] मिज़ो में नुथ्लोई शब्द ऐसी युवा महिला के लिए प्रयुक्त किया जाता है जो नाजायज बच्चे को जन्म देती है या तलाक़शुदा या विधवा होती है।

[10] इंग्लैंड के राजा एडवर्ड अष्टम ने 1936 में एक अमरीकी तलाक़शुदा स्त्री वालिस वारफील्ड सिंपसन से शादी करने के लिए अपनी राजगद्दी त्याग दी थी।

[11] पलाई शब्द का अनुवाद मध्यस्थ के रूप में किया जा सकता है। मिज़ो परंपरा में पलाई को दो परिवारों या समूहों के बीच विवाह और अन्य मुद्दों पर मध्यस्थता के लिए भेजा जाता है, जहाँ दो समूहों या दो परिवारों को किसी महत्वपूर्ण मामलों में बातचीत करनी होती है।

[12] शादी वाले घर में या शादी के दिन तैयार किए गए भोजन को लोई चो (लोई का भोजन) कहते हैं।

[13] लड़की के परिवार को लड़के के परिवार की तरफ से दिया जाने वाला दाम।

2.4 राउथ्ललेङ

(भटकती रूह)

- आर. ज़ुआला

हालाँकि मेरा खुद अपने बारे में लिखने का कोई इरादा नहीं है, मगर अपने बारे में थोड़ा न बताऊँ तो आपको मेरी आपबीती समझने में कठिनाई होगी। इसलिए मैं थोड़ा-बहुत बता देता हूँ।

मैं हुआल्तू गाँव का निवासी हूँ, मेरा नाम श्राङ्खूमा है, मगर सभी मुझे 'खूमा' कहकर पुकारते हैं। मैं पाँच भाई-बहनों में सबसे बड़ा हूँ। मैं एक किसान परिवार से आता हूँ, इसलिए मैं छठी कक्षा की पढ़ाई भी पूरी न कर पाया और खेतों में अपने माँ-बाप की मदद में जुट गया। युवावस्था में भी मैं घुमक्कड़ नहीं रहा, इसलिए आइज़ोल भी बहुत कम ही गया हूँ।

हमारा गाँव हुआल्तू, टोइ पर्वत से कटकर दक्षिण-पूर्वी दिशा के विपरीत स्थित है। हमारा गाँव ऊँचाई पर बहुत ही अच्छी जगह पर है। मिज़ो विद्रोह[1] से पहले यह बहुत बड़ा गाँव था, जिसमें लगभग एक सौ अस्सी घर हुआ करते थे। विद्रोह के दिनों में हमें छिङ्छीप में स्थानांतरित कर दिया गया। मगर मेरी आपबीती मिज़ो विद्रोह से पहले की है।

आमतौर पर दूसरी चीजों के लिए मैं ज्यादा नहीं निकलता था, मगर मेरे पिताजी के पास काफी अच्छी दोनाली बंदूक थी, जिसे लेकर मैं अक्सर शिकार के लिए निकल जाया करता था। टोइ में जंगली-जानवरों की तादाद काफी थी, इसलिए अपने खाली समय में मैं अक्सर शिकार के लिए निकला करता। टोइ पर्वत मिज़ोरम के पर्वतों में सबसे बड़ा है।

इसके इर्द-गिर्द आठ बड़े-बड़े गाँव स्थित हैं। मिज़ोरम के सभी पर्वत उत्तर-दक्षिण दिशा की ओर फैले हुए हैं। पूर्व या फिर पश्चिम से देखने पर वे विशाल प्रतीत होते हैं, मगर दक्षिण या उत्तर की ओर से देखने पर वे प्रायः छोटे और नुकीले मालूम पड़ते हैं। परंतु टोइ को दक्षिण या उत्तर दिशा से देखने पर भी वह काफी दूर तक समतल दिखता है। वह काफी चौड़ी है, अतः उसमें पानी की मात्र भी अधिक है। वह 6600 फीट ऊँचा पर्वत है। चूँकि उसके विस्तृत शिखर पर धान नहीं बोया जा सकता था, इसलिए उसे साफ नहीं किया जाता था और वह हमेशा पेड़ों से ढका रहता। उसके पर्वत-स्कन्धों की ढाल इतनी तीखी है कि उनपर खेती करना तो दूर, कई जगहों पर इन्सानों के लिए चल पाना भी नामुमकिन था। लुङ्दाई और लेनछीम के जंगलों में उस पर्वत के कई हिस्से ऐसे हैं जिनमें खूब चौड़ी, गहरी और लंबी दरारें हैं, जिसके कारण वहाँ शिकार के लिए जाना काफी मुश्किल होता है। ऐसी स्थिति के कारण ही उस ओर का दौरा कम ही हो पाता था।

पर्वतों के बीच काफी अंदर कहीं पर एक बहुत सुंदर झील थी, मगर उसे देख पाना बहुत मुश्किल था। देखनेवालों के स्पष्ट रूप से बताने पर भी उसे खोज निकालना मुश्किल था। इसलिए उसे देखने वालों की संख्या भी ज़्यादा नहीं थी। मैंने भी कई बार खोजने की कोशिश की, मगर मुझे वह दिखी नहीं।

सन् 1950 में एक अंग्रेज़ वहाँ आया था, जिसने एक अनोखे-से दिखने वाले पक्षी को मार गिराया। उस अंग्रेज़ के अनुसार वह पक्षी ऐसी जगह नहीं रहता जहाँ कोई अच्छी झील न हो और वह झील से दो मील की दूरी पर भी बहुत कम विचरता है। उसने दावा किया कि वहाँ वाकई कोई झील है।

संभव है उसके विषय में अधिक पूछताछ करने के कारण एक रात सपने में मैंने देखा कि मैं टोइ पर्वत पर शिकार से लिए निकला। रास्ता भूलकर मैं भटकता रहा। कुछ देर

बाद मुझे पर्वतों के बीच किसी कोने में एक बहुत सुंदर झील दिखी। उसका जल बहुत ही निर्मल था। मैंने अपना मुँह-हाथ धोया। उसका जल बहुत शीतल भी था। उसके पानी के स्त्रोत के रूप में मुझे कोई छोटी-सी नदी भी न दिखी। जहाँ से उसकी धारा निकल रही थी, वहाँ से भी पानी बस धीमी गति से चू रहा था। उसकी लंबाईं तीस ह्लम[2] की रही होगी। उसके सिरे की ओर वह सबसे चौड़ा था जो लगभग दस ह्लम रहा होगा। वह दिखने में बहुत गहरा लगभग दस ह्लम की गहराई वाला लग रहा था। मुझे उसे नापने की बड़ी इच्छा हुई, मगर उसे नापने का कोई तरीका न था। उसके सिरे की ओर जहाँ से पानी बहकर निकल रहा था, उसके समीप एक चौड़ा पत्थर पड़ा हुआ था, जिसपर लगभग दस लोग एक साथ बैठकर कपड़े धो सकते थे। मैं उस पत्थर पर बैठ गया, मुँह-हाथ धोया और मैंने उसका पानी भी पिया।

"खूमा, तुमने क्यों हमारे तुइखुर[3] में मुँह-हाथ धोया?" यह पूछती हुई किसी लड़की की आवाज़ अचानक मुझे सुनाई दी। मैंने उस आवाज़ की ओर आश्चर्य से देखा तो पाया कि एक बहुत सुंदर अपरिचित युवती मेरे पास ही खड़ी थी। मुझे आश्चर्य हुआ कि वह मुझे पहले नहीं दिखी। उससे भी ज़्यादा आश्चर्य की बात यह थी कि जिसे मैं पहचानता भी नहीं था, उसने मुझे मेरे नाम से पुकारा था। जवाब देने की बजाय मैं उसे टकटकी लगाकर देखता रहा। वह वाकई बहुत सुंदर थी।

"तुम भूले-भटके हो, इसलिए मैं तुम्हें माफ कर देती हूँ। मगर, तुम्हें वचन देना होगा कि जब भी तुम्हें समय मिले, तुम हमारे गाँव आओगे।" उसने मुझसे कहा।

सपने में ही उसे वचन देते हुए मैंने उससे कहा- "हाँ, मैं जरूर आऊँगा।"

उसने मुझसे फिर कहा- “तुम जब हमारे गाँव आओगे तब हम तुम्हारे लिए नर सूअर काटेंगे।”

मैं बहुत खुश हुआ।

उसने फिर मुझसे कहा- “तुम रास्ता भटक गए हो। चलो, मैं तुम्हें लौटने का रास्ता बताती हूँ।”

“तुम झील के स्रोत की ओर बढ़ना। वहाँ तुम्हें छोटा-सा एक झरना दिखेगा, जिस पर आसानी से चढ़ा जा सकता है। तुम उस पर चढ़ जाना। फिर तुम बाईं ओर बढ़ना। वहाँ एक चट्टान होगा, जिस पर चढ़ना मुश्किल नहीं होगा। तुम उस पर फिर चढ़ जाना। उस चट्टान के ऊपर तुम एक लंबी-सी समतल जगह पर निकलोगे, जिससे कुछ ही दूरी पर दाहिनी ओर एक चौड़ी-सी गुफा है जो कि ‘लुमलेर गुफा’ है। वह हमारे गाँव का प्रवेश द्वार है। मगर तुम्हें बाईं ओर जाना है। उस खड़ी चट्टान के ऊपर की वह समतल जगह ज्यादा चौड़ी नहीं है, मगर काफी लंबी है। तुम बाईं ओर बढ़ना। वहाँ ठाङ (एक प्रकार का घास) के अलावा कोई और घास नहीं उगती। वहाँ से लगभग दस ह्लम की दूरी तय करने पर खड़ी चट्टान की दीवार पर एक विशाल-सा वृक्ष खड़ा होगा, जिसकी जड़ें चट्टानों में ही फैली हैं। वह मात्र तीन ह्लम ही ऊँचा है। तुम उस पर चढ़ जाओगे।”

“जब तुम खड़ी चट्टान के ऊपर पहुँचोगे तब वहाँ तुम्हें एक छोटा-सा नाला दिखेगा। तुम मैदान की ओर बढ़ते जाना। कुछ ही दूरी तय करने पर तुम अपनी परिचित जगह पर पहुँच जाओगे।”

सपने में ही “अच्छा” कहकर मैं चल पड़ा। सपने में मैं जब उस वृक्ष की जड़ों के सहारे ऊपर चढ़ रहा था, तभी अचानक मेरी नींद टूट गई।

कुछ समय तक मुझे मेरा वह सपना रह-रह कर याद आता और मुझे बहुत आश्चर्य होता। मगर जैसे-जैसे समय बीतता गया, मुझे वह सपना याद न रहा।

एक बार की बात है, मैं अपने दो मित्रों ह्लीरा और ज़ीका के साथ टोइ में शिकार पर निकला। हमारी किस्मत अच्छी थी कि भोजन के समय से पहले ही ह्लीरा ने चार सुम (एक सुम एक मुट्ठी की लंबाईं होती है) बड़े सूअर पर गोली चला दी। मैं उसके कुछ ही नीचे था। गोली की आवाज़ से सूअरों की झुंड में भगदड़ मच गई और वे हमारी तरफ दौड़ने लगे। मैं तुरंत सतर्क हो गया और जब मैंने ऊपर की ओर देखा तो एक सूअर जो लगभग सात सुम से कम नहीं रही होगी, मेरी तरफ दौड़ी चली आ रही थी। शायद उसने मुझे नहीं देखा, इसलिए वह मेरी ओर बढ़ती चली आ रही थी। जब मैंने उसपर गोली चलाई तब वह तीन ह्लम से भी कम की दूरी पर थी। मैंने उसके बाएँ कंधे पर गोली चलाई। शायद गोली सही निशाने पर लगी थी, जिससे वह कराहने और लुढ़कने लगी। मगर वह शायद मरी नहीं और दूसरी घाटी की ढलान की ओर लुढ़क गई। मुझे वह फिर दिखी नहीं, मगर मुझे उसकी आवाज़ सुनाई देती रही। वह नीचे की ओर लुढ़कती चली जा रही थी।

मैं भी तुरंत उस घाटी की ओर मुड़ा और उसकी आवाज़ के पीछे-पीछे बढ़ा। ज़ीका भी वहाँ तुरंत आ पहुँचा।

“क्या तुम्हारा निशाना लगा?” उसने मुझसे पूछा।

जल्दबाज़ी थी, इसलिए मेरे “हाँ लगा, वह बहुत विशाल है” कहते ही हम दोनों तुरंत उसके पीछे लग गए।

कुछ ही दूरी पर हमें उसके पैरों के निशान दिख गए। उसके आगे के बाएँ पैर के निशान बहुत ही अस्पष्ट थे। शायद मेरी गोली से उसके कंधे की हड्डी टूट गई थी। हमें उसके

खून के निशान भी दिखे। हमें कुछ घास दबी-दबी सी भी दिखी, हो सकता है वह बीच-बीच में गिर जाती रही होगी।

हम नीचे की ओर बढ़ते चले गए और कुछ ही दूरी पर हम एक छोटी-सी नाली के पास पर पहुँचे। उस जगह काफी घास दबी पड़ी थी, मानो वह मरने से पहले वहाँ छटपटाई हो। मगर वहाँ उसके पैरों के निशान और खून के बूँद नहीं थे। आगे भी घास दबी पड़ी थी, मगर पैरों के निशान बिल्कुल भी नहीं थे, कहीं-कहीं खून के धब्बे दिख रहे थे।

ह्लीरा भी फिर हमारे पास आ गया। हमने मिलकर उसे फिर तलाशा। बहुत दूर तक जाने पर भी हमें उसके पैरों के निशान नहीं दिखे। हमें उसके बेजान शरीर के मिलने की काफी उम्मीद थी, मगर हम उसे तलाशते ही रह गए। बीच-बीच में हम निराश हो जाते।

भोजन का वक्त पार हो चला था, सो हमने भोजन किया और योजना बनाने लगे। मैंने फैसला किया कि वे दोनों ह्लीरा के शिकार को लेकर गाँव लौट जाएँ, खाने के लिए भोजन भी काफी बचा हुआ था तो मैं उस घायल सूअर को और खोजूँगा, अगर जरूरत हुई तो मैं रात को वहीं ठहर जाऊँगा। जरूरत पड़ने पर वे दोनों अगले दिन लौट कर मेरे साथ फिर शामिल हो जाएँ। उन्हें भी यह सही लगा और वे घर लौट गए।

मैं फिर उस सूअर की खोज में लग गया। मैं जहाँ से जा रहा था वह खाई के किनारे का समतल रास्ता था। मैं उस सूअर को तलाशता गया। वहाँ पत्थर की दीवार जैसा कुछ था और किसी तरह का कोई निशान भी नहीं था। उस दीवार पर इंसानों के लिए चढ़ना नामुमकिन था। उस पर दूसरी तरफ काफी गहरी खाई थी। जहाँ से मैं उतरा था, बस वही जमीन कुछ समतल थी। पत्थर की उस दीवार का कोना भी लगभग तीन ह्लम

ऊँचा था। उसे सूअर को तलाशने का कोई और रास्ता बचा ही नहीं। मैं हक्का-बक्का रह गया और बस चारों ओर देखता रहा।

खाई के किनारे भी बस चट्टान ही थे। मैं वहीं टहलने लगा। खाई के किनारे एक विशाल वृक्ष के पास एक पत्थर पर मुझे फिर कुछ खून के निशान दिखे, चूँकि वह समतल चट्टान थी तो वहाँ कोई पैरों के निशान न थे। खाई के नीचे की समतल जमीन की ओर मैंने फिर से झाँका। शायद मुझे वहाँ उस सूअर के मिलने की उम्मीद थी, क्योंकि मुझे वहाँ जो भी ठङ घास दिखे, वे किसी के चलने से दबे हुए लगे। मैं और ध्यान से देखने लगा, मगर मुझे और कुछ दिखा ही नहीं। इसलिए मैंने वहाँ उतर कर मुआयना करने का निर्णय लिया।

मैंने जब ध्यान से देखा तो पाया कि उस विशाल वृक्ष की जड़ें नीचे खाई में फैली हुई है और उसके सहारे आसानी से वहाँ उतरा जा सकता है। पूरे उत्साह के साथ मैं उसके सहारे नीचे उतरने लगा। मैं लगभग एक ह्लम की दूरी तक ही उतरा था कि मुझे अचानक मेरा वह सपना याद आया। मुझे याद आया कि यही वे जड़ें हैं, जिन पर मैं अपने सपने में चढ़ा था। बिना और नीचे उतरे मैं नीचे झाँकने लगा। मुझे पूरा विश्वास था कि नीचे समतल जमीन के अंत में गुफा भी जरूर होगी। मुआयना करने के लिए मैंने अपनी गर्दन लंबी की, मगर तभी अचानक उस पेड़ की वह जड़ टूट गई जिसे मैंने पकड़ रखा था। मैं धराम से नीचे जा गिरा और फिर मुझे कुछ भी याद न रहा।

मुझे जब होश आया तो मैं उसी जगह एक बहुत सुंदर नुला (युवती) की गोद में सो रहा था। “अरे! खूमा तुम जग गए? मैं तुम्हारे पहुँचने की ही प्रतीक्षा कर रही थी। तुम इस जमीन पर गहरी नींद में सो रहे थे, इसलिए मैं यहाँ तुम्हारे जागने का इंतज़ार कर रही थी।” उसने मुझसे मुस्कुराते हुए कहा।

मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ और मुझसे कुछ कहा न गया। वह युवती वही थी, जिसे मैंने सपने में झील के किनारे देखा था। मुझे लगा कि मैं फिर से सपना ही तो नहीं देख रहा। मगर मैं जानता था कि वह सपना नहीं था।

“तुम कौन हो? किस गाँव की हो?” मैंने उससे पूछा।

“मेरा नाम त्लीङी[4] है, मैं थुआःरिआतह्नुआई[5] गाँव की निवासी हूँ।” उसने फिर मुस्कुराकर जवाब दिया।

“तुम्हारा गाँव किधर है? मैंने तो कभी सुना ही नहीं!”, मैंने फिर कहा।

“तुम्हारे गाँव के पास ही तो है। तुम्हें क्यों पता नहीं? हाँ वाकई तुम जैसे श्रिङ्खुआ[6] में रहने वालों को सबकुछ पता नहीं होता है। मगर हम तो तुम सभी को जानते हैं।”

“मैं तुम्हारे यहाँ पहुँचने की प्रतीक्षा कर रही थी। हमने तुम्हारे लिए काटने के लिए जिस सूअर को रखा था, उसे तो तुमने गोली से मार दिया, जिसके कारण मेरे पति भी जरा नाखुश हुए। मगर उसे काटना ही था तो वे यह मानकर संतुष्ट हो गए कि तुम्हारा उसे मारना और हमारा उसे तुम्हारे लिए काटना एक समान ही है। अच्छा ऐसा करो अब चलते हैं। तुम बहुत देर तक सो चुके हो। हमें बहुत देर हो जाएगी।” उसने मुझसे कहा।

उठने की कोशिश किए बिना मैंने उससे फिर पूछा- “कौन है तुम्हारा पति?”

“ङ्मा। हमारा कोई बच्चा नहीं है। हम दोनों अकेले ही रहते हैं। चलो अब, हमें बहुत देर हो जाएगी।” उसने कहा और हम उठ गए। उठते हुए जब उसने कसकर मेरे हाथों को थामा तब उसका हाथ काफी ठंडा था। भय से मेरे रोंगटे खड़े हो गए।

"बहुत समय पहले जब तुम मुझसे हमारे तुइखुर पर मिले थे तब मैंने तुम्हें हमारे गाँव के प्रवेश द्वार 'लुमलेर गुफा' के बारे में बताया था, वहाँ है। अच्छा, यह पियो, तुम्हें और होश आ जाएगा।" ऐसा कहकर उसने मुझे छोटा-सा, लगभग मेरी हथेली जितना बड़ा पोङ्पोरोल ऊम[7] दिया। वह बहुत ही ज्यादा चिकना था। मैंने उसके ढक्कन को अपने नाखूनों से पकड़कर खोला। उसमें से एक गंध आई। मुझे उसकी गंध खूब पके हुए थेइकुम (एक प्रकार का फल) के गंध जैसी लगी। मैंने उसे पी लिया। वह खूब ठंडा और थोड़ा मीठा था। जब मैंने उसे निगला तो मुझे महसूस हुआ मैं ठंडा पड़ गया। मैंने उस खाली बोतल को अपनी झोली में रख लिया।

"वह लुङलउतुइ[8] था। तुम इससे और ताज़गी महसूस करोगे।" उसने मुझसे कहा और हम आगे चलने लगे। कुछ ही दूर चलने के बाद हमने एक बड़ी-सी गुफा में प्रवेश किया। वहाँ बहुत अंधेरा था। उस गुफा की मिट्टी पूरी तरह से रेतीली थी मानों वहाँ कोई पत्थर और गड्ढा ही न हो।

"जब हम पहली बार मिले थे तब मैंने तुम्हें हमारे गाँव के प्रवेश द्वार के बारे में बताया था न? वह यही है। इसे हम लुमलेर कहते है," वह मुझे बताती गई।

मैं अपने मन की दुविधा आपसे साझा कर रहा हूँ। इस औरत ने अपना नाम त्लीङी बताया और ङमा को अपना पति कहा। त्लीङी और ङमा के बारे में तो हम अपनी लोक-कथाओं में सुनते रहे हैं और वे जीवित हों ऐसा तो हो ही नहीं सकता। कहीं ये दोनों हमारी लोककथाओं के पात्र तो नहीं? इसने मुझे जो पानी पिलाया उसे भी इसने लुङलउतुइ बताया और थुआःरिआतह्नुआई को अपना गाँव भी बताया। हमारे पूर्वजों ने हमें बताया था मरने के बाद लोग मित्थी खुआ[9] की ओर जाते हैं और श्रिङलङ त्लाङ[10] से जीवित दुनिया को देखते हैं और उन्हें उस दुनिया की बहुत याद सताती है। मगर जैसे ही वे लुङलउतुइ पीते हैं, अपने जीवित रहते समय की स्मृतियों को भूल जाते हैं।

मुझे पता था कि वह मेरा सपना नहीं हो सकता। मगर ऐसा तो क्या मैं मर कर मित्थी खुआ की ओर बढ़ रहा था? नहीं ऐसा भी नहीं हो सकता था। मैंने लुङलउतुइ भी पी मगर मुझे मेरा शिकार करना, ह्लीरा का शिकार पर गोली चलना, मेरा शिकार पर गोली चलाकर घायल करना, उसका खाई में गिरना, मेरा सपना देखना सबकुछ याद था। इसका मतलब मेरी मृत्यु भी नहीं हुई थी। यह मेरा सपना भी नहीं था और मेरी मृत्यु भी नहीं हुई थी। इसका मतलब क्या यह हकीकत थी? त्लीङी भी क्या एक आम जीवित इंसान हो सकती है? मैंने सपने में क्या देखा था, उसे कैसे पता चला? उनसे बताया कि वह मेरी प्रतीक्षा कर रही थी, मगर मैं वहाँ जाने वाला तो नहीं था। मुझे तो यह तक मालूम नहीं था कि वैसा भी कोई गाँव है। मगर वह तो मुझे अच्छी तरह से पहचानती थी। मैं वहाँ किस तरह से पहुँचा, मुझे याद न रहा और सोचने का भी कोई मतलब नहीं था। आने वाली घटना सबकुछ स्पष्ट कर देगी।

“हमारे बड़े नर सूअर को, जिसे हमने तुम्हारे आने की खुशी में तुम्हारे लिए काटने के लिए रखा था, उसे तो तुमने गोली मार दी। छोटी नाली के किनारे हमें उसकी लाश मिली और कुछ नौजवान उसे उठाकर घर ले आए। क्या तुम काफी ज़्यादा देर तक सोए? वे तो अब तक घर पहुँच गए होंगे।” उसने कहा।

मुझे समझ में आ गया कि मुझे उस सूअर के पैरों के निशान क्यों नहीं दिखे, केवल दबी हुई घास ही क्यों दिखी।

यह वाकई मेरा सपना नहीं था, मगर इसे हकीकत कहना भी मुश्किल था। सात सुम लंबे सूअर को उठाने वाले काफी संख्या में रहे होंगे। हमारे पड़ोसी गाँव तो ह्मुनठा, टोईज़उ, लुङदाई, मुआलफेङ आदि हैं, मगर हम जहाँ जा रहें थे वह इन गाँवों का रास्ता

तो बिल्कुल ही नहीं था। त्लीङी भी उन गाँवों की निवासी नहीं थी। यह हकीकत भी तो नहीं हो सकता थी। मुझे ऐसा लगने लगा कि मैं वाकई मर गया हूँ और मित्थी खुआ की ओर बढ़ रहा हूँ। अपने मन की इस दुविधा के कारण मैंने उस रास्ते की ओर ध्यान ही नहीं दिया।

एक बात थी जो मुझे सबसे ज़्यादा परेशान कर रही थी। उस गुफा के अंत में एक चट्टान की दीवार थी और गुफा का वहीं अंत हो जाता था। मगर उस चट्टान में एक दरार थी हथेली जितनी चौड़ी, जिसमें सिर तक नहीं घुस सकता था।

“यही हमारे गाँव का प्रवेश द्वार है, चलो इसमें प्रवेश करो।” त्लीङी ने बड़ी सरलता से मुझसे कहा। जिसमें सिर तक नहीं घुस सकता था, मुझे समझ नहीं आया कि मैं उसमें कैसे घुसूँ। मगर उसने मेरा एक हाथ पकड़ा और “चलो” कहकर मुझे ले गई। मैं भी उसके पीछे चला गया और हमने उसमें प्रवेश कर ही लिया। उसके अंदर भी बाहर जैसी ही चट्टानों की दीवारें थीं और वह बाहर जितनी ही बड़ी थी। मगर उस छोटी-सी हथेली जितनी चौड़ी दरार से जहाँ सिर तक नहीं घुस सकता था, हम कैसे इतनी आसानी से घुस गए, इसे स्पष्ट करने की कोशिश न ही करूँ तभी मेरी यह आपबीती सुगमता से आगे बढ़ पाएगी। उसे स्पष्ट करने का वैसे कोई तरीका भी नहीं है। खैर जो भी हो, किसी को विश्वास हो न हो, मुझे तो पूरा विश्वास हो गया था कि मैं मित्थी खुआ की ओर जा रहा हूँ।

मिज़ो गीतों में तो हम कब्र को थुआःरिआतह्नुआई ही कहते हैं। त्लीङी ने भी बताया था कि उसका गाँव पास ही में है। सभी गाँवों के कब्रिस्तान गाँवों के पास-पास ही होते हैं। मेरा खुद को मृत मानना भी पूरी तरह से अस्वाभाविक नहीं था।

बहुत देर तक चलने के बाद मैंने यहाँ-वहाँ देखा। वातावरण धीरे-धीरे प्रकाशमय होने लगा था। जहाँ हम अब चल रहे थे वह गुफा के अंदर का भाग नहीं था। हम तो अब

घने जंगल के बीच से जा रहे थे। मगर मैंने इस जगह को अपने जीवन में पहले कभी नहीं देखा था। मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ।

मुझे शिकार करने का शौक है, इसलिए मैं अपने गाँव से जिन-जिन जंगलों में जा सका, गया हूँ और मुझे उन जंगलों की अच्छी जानकारी भी है। मगर मैं जिस खाई से गिरा वहाँ से जिधर की ओर हम बढ़ रहे थे मुझे उसकी कोई जानकारी नहीं थी। यह ज़्यादा दूर भी नहीं था। मुझे आश्चर्य हुआ कि मैं पास के ही इस जंगल में पहले कभी नहीं आया!

मन की दुविधा के कारण इस बात को बार-बार बिना दोहराए रहा नहीं जाता। इस पूरी घटना की स्पष्टता और विस्तार के कारण मुझे पूरा विश्वास था कि यह सपना नहीं हो सकता था। यह सपना बिल्कुल नहीं हो सकता था।

अगर मैं इसे हकीकत कहूँ तो इसके हकीकत न होने की भी पूरी गुंजाइश थी। जिस तरह हम उस छोटी-सी दरार में आसानी से प्रवेश कर गए उससे ज़ाहिर है कि यह हकीकत नहीं थी। अगर मैं खुद को मरा मान लूँ तो मुझे अभी भी दर्द महसूस हो रहा है और उस पर से हम घने जंगल से गुजर भी तो रहे थे। हमारी ईसाई मान्यताओं के अनुसार भी ऐसा बिल्कुल नहीं हो सकता। परिस्थिति ऐसी थी कि मैं बहुत दुविधा में पड़ गया। मुझे डर-सा लगने लगा। तभी मुझे याद आया कि अब मेरे पास मेरी बंदूक और मेरा झोला नहीं था। इन बातों का अचानक याद आना इस बात का सबूत था कि मैं अभी मरा नहीं था। “यह कितने आश्चर्य की बात है।” ऐसा कहने के अलावा मेरे पास कोई और शब्द नहीं थे। मेरे पाठक केवल इसकी कल्पना कर सकते हैं।

वातावरण लगातार प्रकाशमय होता गया। जंगल विरल होता गया। कुछ ही देर में हम उस जगह पर पहुँच गए जहाँ से जलावन की लकड़ियाँ इकट्ठा करते हैं। कुछ सिआल (मिथुन) वहाँ चर रहे थे। वे हमें देख रहे थे। हमारे और पड़ोस के गाँवों के पंचों ने मिथुन पालने पर रोक लगा रखी है, अतः हम अब मिथुन नहीं पालते। मगर हमारे गाँव से कुछ ही

दूरी पर इतने सारे मिथुनों का इस तरह चरना मुझे बड़ा अजीब लगा। मगर आगे घटने वाली इससे भी अजीब घटना की कल्पना अभी तक मैंने नहीं की थी। थोड़ा और आगे बढ़ने पर हम गाँव के बाहरी इलाके में पहुँचे। वहाँ मादा सूअर भी चर रही थी। वहाँ घाटियों की शृंखला थी। उसके किनारे-किनारे से हम ऊपर की ओर चढ़ते हुए आगे की ओर बढने लगे। जब हम घाटी के ऊपर पहुँचे तो वहाँ से आगे की घाटी में जहाँ तक नजरें पहुँच सकती थीं घर-ही-घर पंक्ति बद्ध दिखाई पद रहे थे। मगर वे सभी घर छोटे-छोटे, थ्लाम (झूम की झोपड़ी) से कुछ ही बड़े और टूटे-फूटे थे। मुझे यह देखकर हैरत हुई कि हमारे गाँव के पास ऐसा भी एक गाँव था।

रास्ते पर खेल रहे बच्चों में कोई भी ऐसा नहीं था, जिसने कपड़े पहने हों। मगर किशोर बच्चियों में कुछ ऐसी थीं, जिन्होंने सिआपसुआप[11] पहन रखा था। मैंने देखा कि वे बच्चे मुझे आश्चर्य भरी नज़रों से देख रहे थे जैसे कि वे मुझसे डर रहे हों। मैं जिनके भी नजदीक जाता, वे पीछे की ओर खिसकने लगते। लगभग पाँच घर पार करने के बाद एक घर की चौखट पर एक आदमी खड़ा दिखा।

“ओहो, त्लीङी क्या यही है वह, श्रिङखुआ से आया हमारा मेहमान? क्या आप दोनों को प्यास नहीं लगी है? आइए, अंदर आइए। मेरे पास बहुत मीठा ज़ुफ़ाङ (चावल से बनी शराब) है। चलिए मिलकर पीते हैं।” उस आदमी ने कहा।

“हमें बहुत देर हो गई है। अच्छा होगा कि मैं घर जल्दी पहुँचूँ। खूमा जाओ तुम घूम आओ। ये हमारे पु नाहइया हैं। रात के भोजन के वक्त मैं तुम्हें बुलाने आ जाऊँगी। जाओ।” कहते हुए त्लीङी तुरंत चल दी।

उसके "ये नाहइया[12] हैं" कहने के कारण फिर से मेरा मन पहले जैसी ही दुविधा में पड़ गया। मेरे मन में उनसे अच्छे से बातचीत करने की इच्छा जगी। अतः मैं उस आदमी के पीछे अंदर चला गया। उन्होंने दोहथ्लेङ[13] में बैठक तैयार की और मेरे सामने की दीवार से शायद फ़रटुआ (पलाश/धाक) की लकड़ी का बना छनत्लीङ (पीढ़ा) उतार कर मुझे दिया। मैं वहीं पीढ़े पर बैठ गया।

वहाँ उपस्थित एक औरत से उन्होंने कहा- "अरे ह्निनयारी, ज़ुफ़ाङ का मटका उतार कर परोसो तो जरा। ये खूमा श्रिङखुआ से आए हैं। इन्हें प्यास लगी होगी। हम यूँहीं पिएँगे।"

वह औरत जुफ़ाङ परोसने लगी। उन दोनों ने इतने कम कपड़े पहन रखे थे कि उन्हें निवस्त्र कहा जा सकता था। नाहइया ने एक छोटा-सा श्रेनपेरेङ[14] बाँध रखा था और उस औरत से सिआपसुआप पहन रखा था। मैंने कमीज़ और पतलून पहन रखा था, मगर उनके चेहरे पर आश्चर्य का कोई भाव न था। मैंने पहले कभी शराब चखी नहीं थी। जब उन्होंने बड़े-से खुःशृयाङ[15] में शराब परोसी तो मैं बाँस के बने चम्मच से लगातार पीता चला गया।

"अच्छा, तुम यहाँ क्या करने आए हो?" उन्होंने मुझसे पूछा।

मगर मेरे लिए उसका जवाब देना बड़ा मुश्किल था। मैं यह तक नहीं जानता था कि मैं यात्रा पर था या यह मेरा सपना था या कि मैं मर गया था। अगर यात्रा करने भी आया था तब भी अपनी इच्छा से तो आया न था। न ही मेरा वहाँ कोई काम था। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि मैं उन्हें क्या जवाब दूँ।

“जरा रुकिए, कपु[16], मैं यहाँ...” मैंने कहना शुरू ही किया था कि उन्होंने मुझे टोक दिया- “अरे, अरे! पु कहकर पुकारने लायक मेरी उम्र नहीं हुई है। तुम अगर चाहते हो तो पा[17] कह सकते हो।”

मैंने फिर से शुरुआत की और अपने मन की बात कह डाली- “मुझे समझ नहीं आ रहा कि मैं आपको अपने बारे में कैसे बताऊँ। मुझे यहाँ लाने वाली त्लीङी है, जिसका पति ङमा है। त्लीङी और ङमा के बारे में तो हम लोककथाओं में सुनते हैं। उन्होंने आपको नाहइया बताया। नाहइया को भी हम अपनी लोककथाओं में सुनते-सुनाते हैं। हम छूरा के साथ उनकी कथा सुनते हैं। लोककथाओं में हम जिस नाहइया की बात करते हैं, मुझे मन-ही-मन लग रहा है कि वह आप ही हैं।”

“अच्छा, ऐसी बात है। छूरा तो हमारा पड़ोसी है और हम दोनों दोस्त भी हैं मगर कथाओं में कहने लायक तो हम हैं नहीं। कथाओं में तो प्राचीन लोगों के बारे में कहा जाता है, हम तो अभी भी जैसे-तैसे जीवित हैं। कितने ताज्जुब की बात है! अच्छा बताओ तुम लोग हमारे बारे में अपनी कथाओं में क्या कहते हो?” उन्होंने कहा।

“एक कथा में कहा गया है कि एक बार छूरा और नाहइया ने अपनी-अपनी झूम खेतों की अदला-बदली की। छूरा ने नाहइया के खेत से फूङपुइनू[18] को पकड़ा। उस फूङपुइनू ने सेकिबुःछुआक[19] देकर खुद को छुड़ाया। छूरा बड़ा बेवकूफ था। नाहइया ने उसे उल्लू बनाया और उसका सेकिबुःछुआक अपने पास रख लिया।”

मेरे यह कहते ही वे उठ खड़े हुए और दरवाजे से निकलकर अपने पड़ोस की औरत, जिसका घर उनके घर से थोड़ा नीचे था, को पुकारा- “कूती, हेहुआ के पिता हैं क्या? उनसे

कहो कि वे हमारे यहाँ आए। वे भी आकार श्रिङ्खुआ के हमारे मेहमान की बातें सुना, उन्हें भी बड़ा रोचक लगेगा।"

"छूरा की पत्नी तो कूती है, अच्छा उनका बेटा हेहुआ है" मैं मन में सोचने लगा। नाहइया ने जैसे ही घर के भीतर आकर बैठक तैयार की, तभी एक ऊँचे कद के, भली सूरत वाले आदमी ने घर में प्रवेश किया। उन्होंने मुझे जमीन पर बैठे देखा और मुस्कुराकर कहा- "अच्छा...! यही श्रिङ्खुआ से आए हमारे मेहमान हैं? इनके पास कहने को क्या है, जरा सुना जाए भई।" वे नाहइया के बगल में बैठ गए। उन्होंने मुझे फिर से देखा और मेरी पतलून की ओर इशारा करते हुए कहा- "ओहो! तुम तो बड़े तैयार हो भई! तुमने अपने दोनों पैरों में पूम थेई[20] जिनता मोटा क्या पहन रखा है? अगर इसे काट कर एक ओर से सिल दिया जाए तो इसे झोले के रूप में इस्तेमाल किया जा सकेगा।"

वे पतलून से बिल्कुल वाकिफ नहीं थे। मैंने मन में विचार किया कि वे हमारे समय के नहीं थे।

नाहइया ने हँसते हुए उनसे कहा- "अरे! तुम्हारे फूङ्पुई पकड़ने की बात, सेकिबुःछुआक पाने की बात, यह सब जानता है। और यह कहता है कि यह सब बातें कथाओं में सुनायी जाती हैं। लगता है तुमसे जुड़ी बातें श्रिङ्खुआ तक पहुँच गई हैं।"

"हाँ, कथाओं में हम यह कहते हैं कि छूरा और नाहइया ने एक दूसरे के साथ अपनी-अपनी झूम खेतों की अदला-बदली की थी। नाहइया के वाउ[21] में एक फूङ्पुईनु थी। छूरा ने उसे पकड़ लिया, मगर उसने सेकिबुःछुआक देकर खुद को छुड़ा लिया।" मैंने कहा।

छूरा ने कहा- “अरे...! तुम लोगों तक नाहइया का मज़ाक पहुँचा है। हम दोनों ने खेतों की अदला-बदली वाकई की थी। उस वर्ष नाहइया का स्वास्थ्य खराब था, वह बिल्कुल कमजोर हो गया था और निराई करने की हालत में नहीं था। यह देखकर कि ऐसे तो वे मुट्ठी भर अनाज भी नहीं पैदा कर पाएँगे, निराई के समय मैंने हम दोनों के खेतों की अदला-बदली कर दी। इससे स्थिति कुछ बेहतर हुई।”

“लगभग प्रत्येक रात कोई हमारे थ्लाम पर आक्रमण करता था। वह राख़ को बिखेर देता, जमीन पर यहाँ-वहाँ कचड़ा फैला देता। जमीन पर मरे हुए केकड़े, घोंघे, केचुए आदि पड़े रहते। मैं इन हरकतों से बड़ा परेशान हो गया। एक दिन मैंने खेत से घर लौटने का नाटक किया। थ्लाम से कुछ ही दूर ऊपर मुकपुइ[22] की घनी डालों के पीछे मैं छिप गया और मैं उसके आने की प्रतीक्षा करने लगा।”

“रात के पहले पहर में कोई बाल बिखेरे हुए और गले में बहुत कुछ लटकाए आने लगी। वह थ्लाम में घुसी और ज़ोर से आवाज़ आया और वह उछल-उछल कर ज़ोर-ज़ोर से कह रही थी, ‘छूरा नहीं है, तुमबु (केले का फूल) हूक हूक (मिथुन की आवाज़)’। उसे तो कुछ सुनाई पड़ नहीं रहा था, मैं उसकी ओर उतरने लगा। अचानक अंदर कूदकर मैंने उसे जकड़ लिया। वह चीखने-चिल्लाने लगी मानो किसी ने उसकी अँतड़ी खींच ली हो। वह चीखकर कहने लगी- ‘छूरा मुझे छोड़ दे।’ मैं उसे छोड़ने को बिल्कुल तैयार न था। वह इतनी ताकतवर थी कि मैं बस किसी तरह उसे दबोचे हुए था। वह कहने लगी- “छूरा मुझे छोड़ दे। मैं तुझे ऐसी कुल्हाड़ी दूँगी, जो अपने-आप मधुमक्खी के छत्ते को ला सकती है, ऐसी खुरपी दूँगी, जो अपने-आप खरपतवार हटाती है, उड़ने वाली चाकू दूँगी, मैं तुझे सेकिबुःछुआक दूँगी।” आखिरकार मैं किसी तरह उसे दबोचने में कामयाब हो गया। फिर मैंने अपने दियार[23] से उसके पाँव को बाँध दिया।”

"मैंने आग जलाकर देखा तो पाया कि वह तो हमारे गाँव की पागल थ्लुआइजेमी है। एक बार वह जंगल गई थी, फिर वहाँ से न लौटी और गुम हो गई। दो साल तक तो हम उसे मृत मानते रहे, मगर वह तो ऐसे रह रही थी। उसने गले मैं बाज़, केकड़े के खोल और घोंघे की माला पहन रखी थी। उसके पास बहुत ही बढ़िया सेकी[24] था, जिसके अंदर उसने कीचड़, मरे हुए केकड़े, सेफूङ[25], और गिरगिट ठूँस रखे थे और हाय! उसके बाल! आपस में उलझकर उनमें मोटी-मोटी गाँठ बन गईं थीं। मानो किसी पुरुष द्वारा बनायी गयी मोटी अनगढ़ रस्सी हो। वह तो मरी ही नहीं थी। उसका सेकी बहुत अच्छा था। मुझे लगा कि वह उसका क्या इस्तेमाल करेगी तो मैंने उसे अपने पास रख लिया। वह तो उसे सेकिबुःछुआक बता रही थी।"

"नाहइया अक्सर कभी 'तुम्हारा सेकिबुःछुआक' कहकर तो कभी 'फूङपुइनु को पकड़ सकने वाला' कहकर मुझसे मज़ाक किया करता था। लगता है तुम लोगों तक उसका वही मज़ाक पहुँचा है।"

भले ही उनके बारे में मैं जो जानता था वह पूरी तरह सही नहीं था, तब भी मुझे विश्वास हो गया कि वे दोनों ही हमारी लोककथाओं के पात्र छूरा और नाहइया ही हैं। प्रमाण के लिए मैंने फिर से उनसे दूसरा सवाल पूछा- "अच्छा फिर आपके मोङपिङ[26] गाँव जाने की वह बात।"

"हाँ मैं मोङपिङ (छेद रहित गुदा) गाँव तो गया था, मगर उसमें बताने जैसा तो कुछ भी है नहीं।" उन्होंने बड़ी सरलता से कहा।

“हम लोग कहते हैं कि मोङपिङ गाँव के सभी लोगों के नितंब छेद रहित हुआ करते थे। छूरा ने गरम लोहे से उन सबके नितंब में छेद कर दिया, जिससे कई नन्हें बच्चे मर गए।” मैंने कहा।

नाहइया हँस रहे थे। उन्होंने कहा- “अरे, हेहुआ के पिता, मुझे तो विश्वास ही नहीं हो रहा कि तुमसे जुड़ी बातें इतनी दूर-दूर तक पहुँची हैं। तुमने बहुत सारे बच्चों के छेद किये थे न?”

मुझे और विश्वास होता गया कि वे लोककथाओं के छूरा और नाहइया ही हैं। मगर मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा था, क्योंकि मैं उनसे बातें कर रहा था। पहले मुझे लगता था कि छूरा बड़े शरीर वाला, अव्यवस्थित और थोड़ा-सा मूर्ख व्यक्ति होगा, मगर मैं जिस छूरा से बातें कर रहा था, वह तो भला-सा दिखने वाला और समझदार व्यक्ति था। मगर नाहइया तो वैसे ही थे, जैसा मैंने उनके बारे में सोचा था। छोटा कद, स्वस्थ शरीर, दुबला, तीखे नैन-नक्श चेहरा और नुकीली नाक।

उन्होंने कहा- “तुम लोगों तक नाहइया के सारे फिजूल के मज़ाक ही पहुँचे हैं। एक बार मैं घड़ा बेचने मोङपिङ गाँव गया। उस गाँव में फोड़े की महामारी फैली हुई थी। बच्चे इससे खासकर प्रभावित थे। उनके नितंब में खुआङतुम[27] जितने बड़े-बड़े फोड़े थे। वे लोग भी बड़े नालायक थे। पूरे गाँव में एक भी ऐसा व्यक्ति नहीं था, जिसे फोड़ा ठीक करना आता हो। मैं जिनके घर में ठहरा था, उनके बच्चे को भी फोड़ा हुआ था। फोड़ा निचोड़ना ही ऐसा काम था जो मुझे बखूबी आता था। तो मैंने उसका फोड़ा निचोड़ दिया। ऐसे बड़े फोड़े पर लोहा गरम करके चुभाने से पीव अच्छे से बहकर निकल जाता है और फिर घाव सूख जाता है। मैंने फोड़े पर गरम लोहा चुभाया तो उससे पीव बहकर निकलने लगा। उनके

पड़ोसियों तक बात फैलती गई। सभी मुझे बुलाने लगे। मैंने फोड़ा ठीक करने में इतनी भाग-दौड़ की कि मुझे अपना घड़ा बेचने की फुर्सत भी न मिली।"

"मैंने घर लौटकर बताया तो यह नाहइया मुझे चिढ़ाते हुए मज़ाक करने लगा कि इसने मोङपिङ गाँव के बच्चों के नितंबों में गरम लोहे से छेद की। इसका यही मज़ाक तुम लोगों की कानों तक पहुँचा है।"

मेरा विश्वास और पक्का होता गया कि वे हमारी लोककथाओं के छूरा ही हैं। मुझे यह भी विश्वास होने लगा कि हम इनके बारे में जो जानते हैं, वह सब नाहइया के मज़ाक के किस्से हैं। जैसा कि कहा भी जाता है कि 'अफवाह और मुर्गी द्वारा चुगा गया घाव तेजी से फैलता है' वैसे ही मुझे विश्वास होने लगा कि छूरा से जुड़ी घटनाओं को बढ़ा-चढ़ाकर प्रस्तुत किया गया होगा। मुझे कुछ भी समझ नहीं आ रहा था। मैं बड़ी सरलता से उन प्राचीन लोगों से बातचीत कर रहा था, जिनके बारे में हम लोककथाओं में सुना करते हैं, यह जानने की कोशिश किए बिना कि वे हकीकत के इंसान हैं भी या नहीं। मगर मेरे मन में उन बातों पर विचार करने की बजाय कथाओं में बताई गई घटनाओं की प्रामाणिकता की पुष्टि करने की इच्छा अधिक प्रबल थी। अतः मैंने फिर से कुछ बातें पूछीं।

मैंने उनसे कहा- "अच्छा कपु, मैं आपसे कुछ और बातें पूछता हूँ, हाँ?"

छूरा ने मुस्कुराते हुए मुझसे कहा- "युवाओं को हम क्या बूढ़े दिखने लगे हैं? या फिर हमारा चेहरा कुछ खराब है? मुझे तुमने 'कपु' कहा। अभी हम 'पु' कहकर पुकारने लायक नहीं हुए हैं। चाहो तो तुम मुझे 'पा' कह सकते हो। तुम जो चाहते हो मुझसे पूछो। अगर मुझे पता होगा तो मैं तुम्हें बताऊँगा।"

‘पु’ कहकर पुकारना उनकी समझ से बिल्कुल परे था। मैं समझ गया कि वे बूढ़े व्यक्ति के अलावा किसी और को ‘पु’ कहकर संबोधित नहीं करते हैं। उन्हें बड़ा आश्चर्य होता अगर मैं बता देता कि हम इसका प्रयोग कहाँ-कहाँ करते हैं।

“हमारी एक कथा में ऐसा कहा जाता है कि छूरा ने किसी गाँव की यात्रा में आईऊम[28] खाया और उसे वह बहुत स्वादिष्ट लगा। मगर घर लौटते समय वह रास्ते में उस व्यंजन का नाम भूल गया और वह उसे रास्ते में खोजता रहा। क्या आपने सच में ऐसा किया था?” मैंने कहा।

वे हँसने लगे- “कितना अजीब होता है कुछ भूल जाना। तुम लोगों को जो बात पता चली वह लगभग सही है, मगर वे बातें मैंने मज़ाक में कही थीं। जब मैं मोङपिङ गाँव गया था, तब मुझे वहाँ आईऊम खिलाया गया। मुझे वह बड़ा स्वादिष्ट लगा। मगर घर लौटते समय मैं वाकई उसका नाम भूल गया। चलते-चलते मैं उसे लगातार याद करने की कोशिश करता रहा। मुझे वह याद ही नहीं आ रहा था। मैं थक गया था इसलिए रास्ते के किनारे थोड़ी अच्छी जगह बैठकर मैं पसीना सुखाने लगा और आईऊम का नाम याद करने की फिर से कोशिश करने लगा। मुझे वह याद ही नहीं आ रहा था और ऊपर से मैं बहुत थक भी गया था तो शायद मैं उदास दिख रहा था। मोङपिङ गाँव लौट रहे एक व्यक्ति ने गुजरते हुए मुझसे पूछा- “आप बड़े उदास लग रहे हैं, आपसे कुछ खो गया है क्या?”

बिना कुछ सोचे मैंने उसे “हाँ” कहकर जवाब दिया। उसने मुझसे फिर पूछा, “क्या खो गया है? मैं खोजने में आपकी मदद करता हूँ।” मगर मेरा तो कुछ खोया ही नहीं था तो मैं क्या कहता। तभी मुझे मज़ाक सूझा और मैंने कहा कि अगर मुझे पता होता कि मुझसे क्या खो गया है तो मुझे आपकी मदद की जरूरत न होती!

उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। वह मुझे टुकुर-टुकुर ताकने लगा। उसे लगा होगा कि मैं कोई पागल हूँ। "पता नहीं तुम क्या कह रहे हो? और तुमसे तो आईऊम की गंध भी आ रही है।" ऐसा कहकर वह मुझे छोड़कर चला गया। मुझे मन-ही-मन बड़ी खुशी हुई। खुशी के कारण मैं हँस पड़ा। तुम लोगों की जानकारी भी कुछ कद तक सही ही है।"

उन्होंने जो बताया वह ठीक-ठीक मेरी जानकारी जैसी तो न थी, मगर मुझे विश्वास होने लगा कि छूरा ने जो कहा वही सच होगा। इससे पता चलता है कि छूरा बुद्धिमान, मिलनसार और भीतर से मज़ाकिया व्यक्ति थे।

मैं बार-बार ज़ुफ़ाङ पी रहा था। मुझे महसूस हुआ कि मुझे चक्कर-सा आ रहा है।

छूरा अचानक उठ खड़े हुए। "मैं घर से जरा अपना सेकी लेकर आता हूँ।" इतना कहकर वे निकल गए।

खुले हुए दरवाज़ से मैं उन्हें बाहर निकलते हुए देखता रहा। जहाँ तक मेरी नज़र पहुँच पा रही थी, वहाँ तक घरों के कतार-ही-कतार थे। मैंने उन घरों को देखते हुए नाहइया से पूछा, "क्या वह सब आपका गाँव ही है?"

"हाँ एक ही गाँव जैसा कहा जा सकता हैं क्योंकि हम लोग एक-दूसरे के करीब हैं। मगर जो पहले से रह रहे हैं और जो बाद में आए हैं वे लोग आपस में ज्यादा मिलते-जुलते नहीं हैं। हालाँकि अलग-अलग नामों के कारण इन्हें दो भिन्न गाँव भी मान सकते हैं, मगर दोनों गाँव पूरी तरह से एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं।"

"उधर, घाटी के ऊपर, जिस घर का दरवाजा हमारी ओर खुला है, वह वोरसेला के पिता का घर है। उनके घर के कुछ नीचे, जो यहाँ से दिख नहीं रहा, वहाँ माउरोकेला और चेमतातरोता[29] का परिवार रहता है। वे लोग हमसे बहुत समय पहले से यहाँ रह रहे हैं।

हम एक-दूसरे को पहचानते हैं, मगर हम ज्यादा मिलते-जुलते नहीं। हम अलग-अलग गाँव की तरह रहते हैं।”

“हमारी तरफ उस घाटी के नीचे लमलीरा और मुआलकोता का परिवार भी रहता है। उनके बगल में कुछ नीचे ज़ोलथ्लीआ का परिवार रहता है। मैंने जिनती भी स्त्रियों के बाल देखे हैं, उनमें उसकी पत्नी रिमेनहोई के बाल सबसे अच्छे हैं।”

“हमारे घर से नीचे की तरफ तुम्हें यहाँ लाने वाली त्लीङी और उसका पति ङमा रहते हैं। उस घाटी की दूसरी तरफ कुछ दूरी पर ज़ोलपला और उसकी पत्नी तुआलवुङी रहते हैं और उनके पड़ोस में फुनटिआ रहता है। शायद ज़ोलपला से उसे जलन होती थी, इसलिए लोग कहते हैं कि उनके बीच कभी-कभी तनाव रहता है। उसका जलना भी स्वाभाविक है, तुआलवुङी इतनी सुंदर जो है।”

“हमारी घाटी की दूसरी ओर हमसे कुछ नए लोग रहते हैं, जिनमें बहुत ही वीर पुरुष हुआलतुङमतोना भी शामिल हैं। वे शिकार करने में बड़े माहिर हैं।” उन्होंने मुझे बताया।

मैंने तुरंत पूछा- “उनके पास अच्छी बंदूक है क्या?”

“बंदूक! वह क्या होता है?” आश्चर्य के साथ उन्होंने मुझसे पूछा। मगर इससे पहले कि मैं उन्हें समझाता, छूरा फिर से आ गए। अपने कंधे पर वे ज़ुफाङ का बड़ा-सा मटका ले आए और उसके साथ बहुत बढ़िया सेकी भी अपनी बाँह में दबाकर लाए।

उसे फर्श के बीचों-बीच रखते हुए उन्होंने कहा- “मेरा ज़ुफाङ ज़रा कड़ा हो गया होगा। पड़ोसिन इसे जरा परोसिए न। यूहीं पिया जाए।” मुझे सेकी देते हुए उन्होंने मुझसे

कहा- “यही है जिसे हमारी पागल औरत थ्लुआइजेमी ने सेकिबुःछुआक कहा था। यह बहुत बढ़िया है। इसे तुम रख लो। तुम यहाँ आए हो, इसलिए यह मेरी तरफ से तुम्हारे लिए यादगार तोहफा रहा।”

वह सेकी उसकी जोड़ी में से एक था। वह बहुत खूबसूरती से मुड़ा हुआ था और कुछ पीला-सा था। वह काफी लँबा था। मैंने उसे अपने हाथों से नापा तो वह लगभग दस खाप[30] लंबा था। यह जिस मिथुन के सिर में रहा होगा वह भी कितना बड़ा रहा होगा!

हम सब ज़ुफ़ाङ पीने लगे। मैं बिना ध्यान दिए, बातें करते हुए लगातार पी रहा था।

“कुछ और सवाल पूछते हैं। मेरा मन बड़ी दुविधा में है। मुझे सबकुछ साफ-साफ से जानने की इच्छा है।” मैंने फिर कहा।

नाहइया ने मुझसे पूछा- “वह कौन-सी बात है जो तुम्हारे मन को परेशान कर रही है?”

“आप दोनों ने अपने बारे में जो बताया, उससे मुझे पूरा विश्वास है कि आप लोग लोककथाओं के छूरबूरा (छूरा का पूरा नाम) और नाहइया ही हैं। मगर मैं यहाँ आपलोगों से बातें कर रहा हूँ, मुझे तो कुछ भी समझ में नहीं आ रहा। हम लोककथाओं में तो प्राचीन लोगों के बारे में कहते-सुनते हैं, मगर मैं तो आप लोगों से सीधे बातें कर रहा हूँ। मेरा मन बहुत बड़ी उलझन में है।” मैंने उनसे कहा।

“अरे! बड़ी अजीब बात है। तुम श्रिङखुआ से हमारे विषय में अस्पष्ट जानकारी लेकर यहाँ आए हो और तुम्हें वह कथा लग रही है। इसमें कोई परेशान होने की बात है ही नहीं। बेहतर होगा कि हम कुछ और बातें करें।” नाहइया ने बड़ी आसानी से कह दिया।

मेरा मन संतुष्ट न हुआ मगर यह स्पष्ट था कि इस बात को और लंबा खीचने का कोई मतलब नहीं था। मैं उनके साथ कुछ और बातें करने लगा।

“अच्छा फिर मैं एक और कथा के विषय में पूछता हूँ। हमारी उस कथा में कहा गया है कि एक बार छूरा और नाहइया शकरकंद खोद रहे थे। छूरा सफेद वाला बहुत बढ़िया-बढ़िया शकरकंद खोद रहा था। मगर नाहइया अच्छे से खोद नहीं रहा था। उसने बस छोटे-छोटे ही खोदकर निकाले जो अभी खाने योग्य भी नहीं थे। लौटते समय उन्होंने अपने-अपने शकरकंद को नदी में धोया। नाहइया ने अपने छोटे-छोटे शकरकंद नदी में बहा दिये और छूरा से कहा कि “देखो छूरा मेरे अच्छे-अच्छे सफ़ेद शकरकंद तुम्हारी ओर बहे जा रहे हैं। ऐसा कहकर वह छूरा का शकरकंद लेता गया। क्या यह सच है?”

छूरा हँसने लगे, मगर नाहइया काफी अचरज में नज़र आ रहे थे। उन्होंने मुझे देखा और कहा- “ऐसा था कि उस दिन मेरी तबीयत कुछ ठीक नहीं थी। सुबह के भोजन में हमने आईऊम खाया था। शायद मैंने कुछ ज़्यादा ही खा लिया था। जैसे ही हमने शकरकंद खोदना शुरू किया, मेरा पेट खराब हो गया। मैं बार-बार दस्त के लिए जाने लगा। मैं बहुत कमजोर हो गया और मुझसे शकरकंद भी न खोदा गया। जो शकरकंद इसने खोद कर निकाला था, मैं वही घर लेकर लौटा था।”

छूरा ने कहा कि “तुम लोगों को जो बातें मालूम हैं, वे बिल्कुल उल्टी हैं। नाहइया ने जो कहा वैसा ही है। यह इतना भी शकरकंद नहीं खोद पाया था कि घर लौटकर अपने बच्चों को खिला सके। जब मैंने इससे अपना शकरकंद बाँटना चाहा तो यह औपचारिकता वश के कारण मना करता रहा। इसे खाली हाथ लौटता देख पर मुझे शर्मिंदगी महसूस हुई। अतः कोई और चारा नहीं था तो मैंने उसे मूर्ख बनाया। मैंने अपने कुछ शकरकंद नदी में बहाकर उनका पीछा किया।‘नाहइया, पानी ने मेरा शकरकंद तुम्हारी ओर बहा दिया है।”

ऐसा कहकर, जहाँ वह अपना शकरकंद साफ कर रहा था, उस पानी में मैं झूठमूठ शकरकंद खोजने का नाटक करने लगा। इस तरह मैं बच्चों के लिए कुछ शकरकंद दे पाने में कामयाब हो पाया।"

मुझे उसी वक्त उनकी बातों का विश्वास हो गया। मगर उन बातों से ज़्यादा उनकी परोपकार की भावना ने, उनके बीच के गहरे संबंध ने मेरे मन को छुआ। दिखाकर मदद करने की बजाय चुपके से मदद करने के उनके स्वभाव से मुझे उनके परोपकारी मन की सत्यता का पता चला। मैं मन-ही-मन कहने लगा कि "काश! ज़ोफ़ा (मिज़ोरम के बच्चे/ लोग) के मन भी यही भावना रहती तो मिज़ोरम में रहने का मज़ा आ जाता।"

मैं लगातार ज़ुफ़ाङ पिए जा रहा था। चूँकि मैं शराब नहीं पीता था, इसलिए मुझ पर नशा चढ़ने लगा। मैं उनकी बातचीत के बीच में दखल देने लगा। अभी जब मैं उस घटना के बारें में सोचता हूँ तो मुझे खुद पर शर्म आती है।

हमारी लोककथाओं में छूरा को बहुत मूर्ख और नाहइया को उसे धोखा देने वाला बताया जाता है, मगर वास्तव में ऐसा कुछ नहीं था।

बहुत सारे लोगों को जरूर आश्चर्य होगा कि वहाँ उनके बीच रहने के विषय में, उस समय की मेरी मनःस्थिति के विषय में कहने को बहुत कुछ होते हुए भी मैंने ज़्यादा कुछ नहीं कहा। उस समय की मेरे मन की परेशानियों, भविष्य की चिंताओं और भय के बारे में मैं जितना भी कहूँ, कम होगा। जैसा कि मैंने शुरुआत में ही कहा था कि मैं अपने बारे में बताने नहीं जा रहा, बल्कि अपने साथ घटी आश्चर्यजनक घटना के बारे में ही बता रहा हूँ। इसलिए मैं जानबूझकर अपने मन की असीम दुविधा को बिना कहे छोड़ रहा हूँ। फिर भी मैं थोड़ा-बहुत कुछ कह ही देता हूँ। इसे बयाँ कर पाना भी मुश्किल है। सबकुछ कहा भी

नहीं जा सकता। मेरी मनःस्थिति की कल्पना आप तभी कर पाएँगे जब आप में खुद के ऐसी परिस्थिति में होने को महसूस कर पाएँगे।

मैंने फिर से छूरा से कहा- "एक कथा में कहा गया है कि छूरा को चेङ्केक (एक प्रकार का फल) का पेड़ दिखा जो फलों से लदा हुआ था। वह पेड़ बहुत छोटा था, इसलिए छूरा उसपर चढ़ न सका और वह पेड़ की डाल को पकड़कर और उसके फलों को छूकर कहने लगा कि नाहइया होता तो वह ऐसे तोड़ता। मगर छूरा बहुत ही ज़्यादा मूर्ख था। उसे लगा कि पेड़ पर न चढ़ पाने के कारण वह फल भी नहीं तोड़ सकता है। इसलिए उसने पेड़ की डाल को छोड़ दिया। क्या आपने ऐसा किया था?"

छूरा गंभीर बने रहे। कहीं एकटक देखते रहे और फिर कहा- "तुमलोगों ने मेरे मज़ाक को गंभीरता से ले लिया है, मगर वह भी पूरी तरह से सही नहीं है। सनम के घने जंगल में वाइज़ा[31] की छाल छीलते समय मुझे चेङ्केक (एक जंगली फल) से लदा हुआ एक पेड़ दिखा। वह काफी ज्यादा फला हुआ था और जंगल के बीचों-बीच खड़े होने के कारण, उसका पेड़ बहुत पतला और ऊँचा था। लेकिन वह बहुत कमजोर था इसलिए उसपर चढ़ा नहीं जा सकता था। मगर मुझे लालच हो रहा था। उसकी डाल को मैंने पकड़कर मोड़ने की कोशिश की, मगर वह मुझसे मोड़ी न गयी। अतः मैं उसके फल तोड़ न सका। मुझे उसके फलों का बड़ा लोभ था। अतः घर पहुँचते ही मैंने कहा कि अगर मैं नाहइया जितना ही होता, वह पेड़ मेरा भार सह पाता मैं बहुत सारे फल तोड़ता। वही बात तुम्हारे कानों तक पहुँची मगर जैसे कहा जाता है कि 'अफवाह और मुर्गी द्वारा चूगा गया घाव...' वैसे ही तुम लोगों तक कुछ असत्य बातें पहुँची हैं।" मुझे विश्वास था कि हम जो कुछ कहते हैं, उसकी जगह, उन्होंने जो कहा वही सही होगा।

अभी तो सबकुछ स्पष्ट हो गया। मैं जिन लोगों से बातें कर रहा हूँ वे हमारी लोककथाओं के छूरा और नाहइया ही हैं। मैं इनसे कैसे बातें कर पा रहा हूँ? यह बात सपष्ट है कि वह मेरा सपना तो नहीं था और न ही मेरी मृत्यु हुई थी। अगर मेरी मृत्यु हो गई होती तो मैं मित्थी खुआ न आया होता। मुझे यह भी विश्वास नहीं है कि मित्थी खुआ जैसा भी कोई गाँव होगा, अगर ऐसा है तो यह सबकुछ हकीकत होगा मगर यह हकीकत भी नहीं हो सकती। यदि छूरा और नाहइया वास्तव में हैं भी, तो यह मुमकिन नहीं मैं उनसे बातें करूँ।

मुझे नशा चढ़ने लगा। मैं जानबूझकर बेफिक्र होने लगा। “जो भी हो, किसका क्या जाता है?” मैंने सोचा और मैं ज़ुफ़ाङ पीता रहा।

नाहइया उठे और कमरे में घुसे। कमरे से निकलकर, पके हुए चोईतेश्रिङ[32] की रस्सी देते हुए उन्होंने मुझसे कहा- “इसे मैं तुम्हें एक यादगार तोहफे के रूप में देता हूँ।”

“क्या है? यह माला है ना?” मैंने पूछा।

“हाँ वही है। यह चोईतेश्रिङ है। हाथी दाँत से बनी कान की बाली में इसे पिरोया जाता है और कुछ सजने-धजने में रुचि रखने वाले युवा इसे अपने कानों में पहनते हैं, जो उनके कंधों से टकराया करता है। हेहुआ के पिता और मैं तो जंगल जाने के आदि हैं और जंगलों में तो कई ऐसी चीजें होती हैं जिनमें यह फँस जाती है। अतः इन्हें पहना नहीं जा सकता है। इसके अलावा हमें सजने में भी कोई रूचि नहीं है। इसलिए हम इसे नहीं पहनते। यह मेरे पास यूँहीं पड़ा हुआ है।”

इसके बारे में मैंने अपने बुजुर्गों से कई बार सुना था, मगर मैंने इसे पहले कभी देखा नहीं था।

लोककथाओं के अन्य सभी पात्रों को भी इन्होंने अपने गाँव का निवासी बताया, इसलिए इन दोनों के अलावा मुझे अन्य लोगों से भी मिलने की बड़ी इच्छा हुई।

“चेमतातरोता का घर यहाँ से दूर है क्या?” मैंने तुरंत पूछा।

“दूर नहीं है। उस घाटी पर मैंने तुम्हें वोरसेला के पिता का घर दिखाया था न? उसी के कुछ नीचे उसका घर है। अगर तुम उनसे जरूरी बातें करना चाहते हो, तो चलो उनके घर चलते हैं।” उन्होंने बड़ी सहजता से कहा और हम सब निकल पड़े।

घर के सामने ही रास्ते पर हमें त्लीङी मिली। “अरे! रात का भोजन तैयार होने वाला है। कहाँ जा रहे हो?” उसने मुझसे पूछा।

छूरा ने उसे जवाब देते हुए कहा- “श्रिङखुआ का हमारा यह मेहमान चेमतातरोता से बातचीत करना चाहता है। हम इसे वहाँ घुमाने ले जा रहे हैं।”

“वे तो नीचे हमारे घर में ही बैठे हैं। सबसे बुजुर्ग चेमतातरोता को हमने बुलाया तो वे तुरंत आ गए। वे तो कब से वहाँ बैठे हैं।” त्लीङी ने कहा।

“अरे त्लीङी, अपने पू को तुम यहाँ बुला लाओ न। पोतों-बच्चों के बीच जरूरी बातें करना शायद उचित न हो। हम अपने ज़ुफ़ाङ को भी ऐसे ही छोड़कर आ गए है। अच्छा होगा कि यहीं बातचीत की जाए।” नाहइया ने कहा।

त्लीङी फिर से नीचे चली गई। हम भी फिर घर में चले गए।

नाहइया की पत्नी हमारे द्वारा पिये जा रहे ज़ुफ़ाङ को उठाकर रखने ही वाली थी कि हम फिर से उसके इर्द-गिर्द बैठ गए।

कुछ ही देर में वहाँ एक उम्रदराज़, दुबला-पतला, चौड़ी-सी ठुड्डी, दबी हुई आँखों और कम दाढ़ी वाला व्यक्ति अंदर आया। जमीन पर ही वे बैठ। वे मुझे बड़ी गौर से देख रहे थे। चेहरे से मुझे वे कुछ अनमने-से व्यक्ति से मालूम पड़े।

वे बार-बार कहते रहे कि “जाने तुम मुझसे कौन-सी जरूरी बातें करना चाहते हो? हम जैसों के पास तो कुछ कहने को रहता नहीं है। तुम्हारे जानने लायक बातें शायद ही मेरे पास हो।”

“और कोई बात नहीं है। (अब मुझमें ‘पु’ या ‘पा’ जैसे संबोधन का प्रयोग करने की हिम्मत न थी।) हमारी लोककथाओं में आपकी कथाएँ बहुत प्रसिद्ध हैं। ज़उफ़ा में ऐसा कोई नहीं होगा जो आपको न जानता हो। मैं बस कुछ बातें पूछकर उन्हें और स्पष्ट करना चाहता हूँ।” मैंने उनसे कहा।

“जिन्हें तुम ज़उफ़ा कह रहे हो, वे कहाँ के निवासी हैं।” उन्होंने उल्टा मुझसे पूछा।

‘ज़उफ़ा’ शब्द को स्पष्ट कर उन्हें समझाना मुझे बड़ा कठिन लगा। मैंने अपनी पूरी क्षमता से उन्हें समझाया कि ‘ज़उफ़ा’ हमारे गाँव के और ज़उरम (मिज़ोरम) के निवासियों को कहा जाता है।

इसपर उन्होंने मुझसे कहा- “तुम लोग खुद को ज़उफ़ा कहने लगे हो। तुम्हारी बातों से लगता है कि तुम लोग भी छीनलुङ[33] से निकले लोगों में से ही एक हो। तुम कौन-सी बात जानना चाहते हो?”

"हमारी लोक-कथाओं में कहा जाता है कि चेमतातरोता एक बार छोटी-सी नदी के पत्थर पर चाकू तेज कर रहा था, तभी एक झींगे ने उसके अंडकोष में काट लिया। वह बहुत क्रोधित हुआ और क्रोध में उसने एक बड़े बाँस को काट दिया, जिसके सहारे खऊम[34] की लताएँ खड़ी थीं..." मैंने कथा कहनी शुरू की। मैंने उन्हें चेमतातरोता की पूरी कथा सुना दी।

"क्या सचमुच वैसा कुछ हुआ था?" मैंने जारी रखा।

वे सभी ठहाके मारकर हँसने लगे। "ये तो बड़े झगड़ालू और बदला लेने के आदि लगते हैं।" नाहइया ने कहा और सभी हँसने लगे।

हँसने के बाद चेमतातरोता ने कहा- "इतना ज्यादा तो नहीं था। यह तो बढ़ा-चढ़ाकर उड़ाई गयी अफवाह है। मैंने चाकू वाकई तेज की थी, मगर मुझे किसी झींगे ने बिल्कुल नहीं काटा था। मेरी चाकू तेज हुयी या नहीं यह देखने के लिए मैंने बाँस को काटा, मगर एक ही झटके में नहीं। बाँस की फुनगी पर खऊम की लताएँ थीं जो गिर पड़ीं। मगर वह जंगली मुर्गी के ऊपर बिल्कुल नहीं गिरी। उस दिन मैं वहाँ अपने द्वारा रखी गई बेआई[35] को देखने गया था, जिसमें एक बूढ़ा जंगली मुर्गा फँसा था। मैं उसे खऊम के साथ घर ले आया और बच्चों से यूँहीं मज़ाक करते हुए कहा कि मेरे बांस काटने से खऊम लताएँ जंगली मुर्गे पर जा गिरा और मेरी किस्मत बन गई। लगता है यही बात तुम लोगों के कानों तक पहुँची है।"

"तो फिर वे दूसरी बातें?" मैंने आगे फिर कहा।

"अरे! तुम्हें क्या लगता है कि तइवाङ (चींटी), जंगली सूअर और अन्य जानवर बोल सकते होंगे? किसी बढ़िया बात बनाने वाले ने उस बात को मज़ाक के साथ मिलाकर बच्चों को खुश करने के लिए यह सब गढ़ा होगा। हाँ, मगर अगली बार जब मैं जंगल गया तब मैंने एक नर सूअर को डरा दिया था। मुझे अचानक देखकर वह चौंक पड़ा और भाग खड़ा हुआ और जंगली केले के पेड़ से टकराकर उसने उस पेड़ को गिरा दिया।" उन्होंने मुझसे कहा।

उनकी बातों से मैं बिल्कुल समझ गया कि हमने चेमतातरोता की कथा कैसे गढ़ी होगी।

मैं पहले कभी शराब नहीं पीता था। शायद मैंने ज़ुफ़ाङ बहुत ही ज़्यादा पी लिया था। मुझे खूब नशा चढ़ गया था। मैं उनकी बातों में दखल भी दे रहा था। मुझे ऐसा लगा मानो चूल्हे की आग धीरे-धीरे दूर होती जा रही है और कभी लगता कि मैं उड़ रहा हूँ। मेरे होश ठिकाने न रहे। कभी मुझे लगता कि मैं एक अंधेरी गुफा में, जहाँ चलना भी मुश्किल है, वहाँ अपने घुटनों के बल रेंग रहा हूँ। मैं भ्रमित होने लगा था।

मैंने एक बार छूरा को यह कहते हुए सुना कि "देखो, हम इस मेहमान के साथ यहाँ नहीं रह सकेंगे। श्रिङ्खुआ के निवासियों का हमारे साथ थुआःरिआतह्नुआई में निवास करना बिल्कुल उचित नहीं है। त्लीङी और उसके पति को बताते हैं कि वे इसे वापस श्रिङ्खुआ भेजने का तरीका सोचे। उसका पति जब श्रिङ्खुआ में था, तब वह अपनी मर्ज़ी से हमारे गाँव आ पहुँचा था और वापस भी लौट गया था। उसे अच्छे से मालूम होगा कि हमारे इस मेहमान को शृङ्खुआ कैसे पहुँचाया जाए।" मैं यह भी जानता था कि वे जिसकी बात कर रहें हैं वह ङमा है। लोककथा में वाकई कहा गया है कि वह (ङमा) श्रिङ्खुआ गया

था। मगर मैं काफी नशे में था इसलिए मैं और ज्यादा कुछ सोच न सका और अंत में बेहोश हो गया।

जब मुझे होश आया तो मैं लेटा हुआ था और मेरी बगल में मेरे पिताजी बैठे थे। मैंने गौर से देखा तो पाया कि वह तो हमारा अपना घर था और जहाँ मैं लेटा था वह मेरा अपना बिस्तर। मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ।

“छूरा और अन्य लोग कहाँ हैं?” मैंने अचानक पूछा। पिताजी जवाब देने की बजाय आश्चर्य और दया के भाव से मुझे देखने लगे। मैं फिर सो गया। दुबारा जब मैं जगा तो सुबह के भोजन से कुछ पहले का वक्त था। मैं हर सुबह की तरह उठा, मुँह धोकर शौच के लिए निकल गया। जब मैं लौटा तो माँ ने मुझे चाय दी, मगर किसी ने मुझसे बात न की। मेरी जवान बहनें भी मुझे अजीब नजरों से देख रही थीं।

सुबह का भोजन करने के बाद मैंने अपने पिताजी से पूछा कि मैं उन्हें कैसे मिला। मेरे सवाल पूछते समय ह्लीरा और ज़ीका भी घर में आ गए।

“ह्लीरा और ज़ीका ने हमें बताया था कि तुम अपने घायल शिकार के पीछे निकले हो और अगर जरूरत पड़ी तो तुम रात को वहीं ठहर जाओगे। तुम लौटकर नहीं आए तो अगले दिन ये दोनों तुम्हारे साथ शामिल होने के लिए गए, मगर तुम इन्हें मिले ही नहीं। निराश होकर ये दोनों अंधेरा होने पर घर लौट आए। अगले दिन और लोगों को इकट्ठा कर हम तुम्हें खोजने निकले, मगर हम फिर असफल हुए। तीसरे दिन खाई के नीचे समतल जगह पर हमें तुम्हारी बंदूक मिली और तुम्हारा झोला भी मिला। हमें वहाँ एक टूटे हुए पेड़ की जड़ भी मिली जो शायद तुम्हारे हाथों से टूटा था। मगर तुम हमारी नज़रों के सामने नहीं थे। हम उस गुफा के भीतर भी कई बार गए। हमने एक भी कोना नहीं छोड़ा। हमने चप्पा-चप्पा छान मारा। अगर वहाँ छोटा-सा चूहा भी मरा होता तो वह भी दिख जाता।

उसमें जो दरारें थीं वे भी इतनी छोटी थीं कि उसमें सिर तक न घुसे। हमने उसमें भी झाँककर देखा, पूरा अंधेरा था। हमें उसमें कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। हम निराश होकर घर लौट आए। अगले दिन हमने फिर दोस्तों और रिश्तेदारों को इकट्ठा किया और फिर से तुम्हें ढूँढा। हमें पिछले दिन जहाँ पर तुम्हारी बंदूक मिली थी, तुम वहीं पर सो रहे थे और ऊपर से तुम बहुत नशे में थे। जाने कहाँ की शराब तुमने पी रखी थी। कितनी शर्मिंदगी की बात थी। हमें तुम्हें कंधे पर उठाकर घर लौटना पड़ा। जाने कहाँ का इतना बढ़िया सेकी तुमने अपने गले से लटका रखा था।" उन्होंने कहा।

उन्होंने फिर मुझसे पूछा- "तुम कहाँ चले गए थे और तुमने कहाँ की शराब पी थी?"

मैं बताने जा ही रहा था कि मुझे अचानक लगा कि इन्हें तो विश्वास होगा नहीं, इसलिए मैं चुप रह गया। मैंने अपनी पतलून की जेब में हाथ डाला और लुङ्लउतुइ की खाली बोतल और नाहइया द्वारा दिया गया चोईतेश्रिङ बाहर निकाला।

"केवल सेकी ही नहीं मेरे पास तो ये भी है।" मैंने उनसे कहा।

"तुम बहुत बेवकूफ और लापरवाह हो। तुम शराब के नशे में धुत्त थे और सारा गाँव तुम्हें ढूंढने में लगा हुआ था। हम किसी से नजर तक मिला नहीं पा रहे हैं। जल्दी बताओ कि तुम कहाँ थे।" माँ ने मुझसे गुस्से में कहा।

मुझे अपने माता-पिता, रिश्तेदारों और अच्छे दोस्तों पर बड़ी दया आई, मगर मैं कहता कैसे? उन्हें विश्वास ही नहीं होता और उन्हें यही लगता कि मैं शराब के नशे में यहाँ-वहाँ भटक रहा था। मेरा मन बहुत परेशान था।

कुछ देर बाद मैंने उनसे कहा- “कल हम सभी गुफा में चलते हैं। अगर मुझे जो चाहिए वह मुझे मिल गया तो मैं अपने बारे में बता दूँगा। अगर मुझे वह नहीं मिला तो मैं कुछ भी बताना नहीं चाहूँगा। वैसे भी किसी को विश्वास नहीं होगा।”

पिताजी ने भी राज़ी हो गए।

हम चारों गुफा में पहुँचे। मैं तुरंत दीवार की दरार की ओर दौड़ा। उस दरार के भीतर मैंने रोशनी डाली। जैसा कि मुझे उम्मीद थी, मेरी नजर जहाँ तक देख पा रही थी, मुझे त्लीङी और अपने पैरों के कई निशान दिखे। मैंने चैन की साँस ली। मैंने उन्हें बुलाया। मैंने ह्लीरा को टॉर्च दिया और कहा- “इस तरह तुम ऊपर से रोशनी करते रहना, मैं नीचे से अपना पाँव घुसाकर उस बड़े पैर के निशान के साथ अपने पैर को मिलाता हूँ। तुम जरा ध्यान से देखना।” मैंने बारी-बारी से अपने दोनों पैरों को घुसाया। मैं अपने दाएँ और बाएँ पैरों को उन पैरों के निशान के ऊपर रखता तो वे बिल्कुल ठीक बैठते। मैंने दो-तीन बार उन्हें नापा। इसमें कोई दो राय नहीं था कि वे मेरे पैरों के ही निशान थे। उन्होंने हैरत भरी नज़रों से मुझे देखा।

हम गुफा से निकल आए और बाहर बैठकर आराम किया।

“यह सब क्या है? जरा बताओ तो।” पिताजी ने मुझसे सीधे-सीधे पूछा।

पेड़ की जड़ टूटने से लेकर नाहइया के घर मेरे बेहोश होने तक मैंने उन्हें सबकुछ बता दिया। उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ। विश्वास करना उन्हें मुश्किल लगा, मगर उस दीवार की दरार के पीछे मेरे और त्लीङी के पैरों के स्पष्ट निशान देखने और मेरे पास सेकी, चोईतेश्रिङ और लुङ्लउतुइ की खाली बोतल होने के कारण उन्हें विश्वास न करना भी मुश्किल लगा। इसके अलावा उस दिन मैं ह्लीरा और ज़ीका के साथ निकला था और वे जानते थे कि मैंने शराब बिल्कुल नहीं पी थी। वे यह भी जानते थे कि यदि मैं कही शराब

पीकर गुम हो जाता और उन्हें मुझे खोजना पड़ता तो मैं जिस नशे की हालत में उन्हें मिला था, उस हालत में मैं वहाँ तक पहुँच नहीं पाता। उन्हें कुछ समझ में नहीं आ रहा था। थोड़े विश्वास और थोड़े अविश्वास के साथ हम सब घर लौट आए। सच कहूँ तो मैं स्वयं नहीं जानता था कि मैं अपनी आपबीती पर विश्वास करता था या नहीं।

रात को मैं अपने बिस्तर पर सोया और अपने साथ घटी घटनाओं के बारे में फिर से सोचने लगा। मैं यह अच्छी तरह जानता था कि वह मेरा सपना नहीं था। मगर जब मैं सोचता कि मैं मित्थी खुआ गया था तो मुझे भी विश्वास न होता। अगर मैं उन्हें सच न मानता तो मेरे लिए छूरा, नहाइया, चेमतातरोता आदि जैसे प्राचीन लोगों से बातें करने का कोई और रास्ता नहीं था। मुझे भी अपने-आप पर संदेह होने लगा।

अंत में मैंने खुद से कहा- “मैं अतीत में सफर करके आया हूँ” और बाईं ओर करवट लेकर घोड़े बेचकर अच्छी नींद सो गया।

संदर्भ

[1] बाँस का फूलना मिज़ोरम की एक विशिष्ट घटना है, जिसे माउ ताम कहते हैं। इसमें बाँस फूलने लगते हैं और इन फूलों को चूहे खाते हैं, जिससे इनकी प्रजनन क्षमता काफी बढ़ जाती है। ढेर सारे चूहे मिज़ोरम का सारा अनाज चट कर जाते हैं, जिससे अकाल की स्थिति पैदा हो जाती है। मिज़ोरम में 1958 में ऐसा ही अकाल पड़ा, जिसके प्रति असम और केंद्र सरकार की उदासीनता से मिज़ो समाज में एक तरह का असंतोष पैदा हुआ। इसी असंतोष ने विद्रोह का रूप ले लिया और 1966 में पू ललदेङा के नेतृत्व में मिज़ो विद्रोह की शुरुआत हुई, जो 1985 में केंद्र सरकार के साथ हुए शांति समझौते के साथ समाप्त हुआ।

[2] दोनों हाथों को सीधा फैलाने पर एक सिरे से दूसरे सिरे तक की लंबाई।

[3] पहाड़ से रिसता हुआ या चूता हुआ पानी किसी गड्ढे में इकट्ठा होता रहता है या इसे कोई हौज बनाकर भी इकट्ठा किया जाता है। इसी को तुइखुर कहते हैं।

[4] त्लीङी मिज़ो लोककथा की पात्र है और ङमा उसका पति है। इनसे संबंधित लोककथा के लिए देखें: रमणिका गुप्ता, पूर्वोत्तर आदिवासी सृजन मिथक एवं लोककथाएं, नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया, नयी दिल्ली, 2010, पृ. 177-178

[5] जमीन के नीचे या कब्र की दुनिया।

[6] थ्रिङ-जीवित, खुआ-गाँव अर्थात् जीवित लोगों की दुनिया।

[7] पानी की बोतल जिसे गदा के आकार की लौकी को सुखाकर बनाया जाता है।

[8] मिज़ो पूर्वजों का मानना था कि मृतकों की आत्माएँ जब मृतकों की दुनिया (मित्थी खुआ) की ओर बढ़ती हैं तो वे लुङ्लउतुइ नामक नदी का पानी पीती हैं, जिसे पीने से वे अपने बीते जीवन की यादों और जीवितों की दुनिया को पूरी तरह भूल जाती हैं।

[9] मित्थी-मृत, खुआ-गाँव अर्थात् मृतकों की दुनिया।

[10] थ्रिङ्लङ त्लाङ- यह ऐसा पर्वत है जहाँ से मृतकों की आत्माएँ जीवित लोगों की दुनिया को देख सकती हैं। मिज़ो लोक मान्यता है कि आत्मा के शाश्वत विश्राम की अंतिम यात्रा में यह पहाड़ उसे उस नश्वर दुनिया के आखिरी दर्शन कराता है, जिसे वह आत्मा पीछे छोड़ आई है।

[11] पुराने जमाने में मिज़ो स्त्रियाँ अपनी कमर और शरीर के ऊपरी हिस्से को ढँकने के लिए कपास की पतली रस्सियों से बने झालरनुमा कपड़े पहनती थीं। इन्हें ही सिआपसुआप कहा जाता है।

[12] नाहइया और छूरा मिज़ो की प्रसिद्ध लोककथाओं के पात्र हैं। छूरा और नाहाइया के विषय में जानने के लिए देखें: रमणिका गुप्ता, पूर्वोत्तर आदिवासी सृजन मिथक एवं लोककथाएं, नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया, नयी दिल्ली, 2010, पृ. 196-223

[13] मिज़ो घरों में रसोई के स्थान पर जल रही आग (चूल्हे के रूप में) के सामने बैठने का स्थान।

[14] छोटा-सा कपड़ा जिससे प्राचीन मिज़ो पुरुष अपने गुप्तांग को ढकते थे।

[15] मिट्टी की तस्तरी।

[16] दादा या नाना की उम्र वाले पुरुष के लिए संबोधन। आजकल उम्र या पद में बड़े व्यक्ति के प्रति सम्मान प्रदर्शित करने के लिए भी उनके नाम के साथ 'पु' सम्बोधन लगाते हैं।

[17] पिता की उम्र के व्यक्ति के लिए मिज़ो में प्रयुक्त संबोधन।

[18] चुड़ैल

[19] मिथुन का सींग, मिज़ो लोककथा में मिथुन के ऐसे सींग का ज़िक्र है, जिसके दोनों सिरों से हमेशा चावल और माँस निकलता रहता है।

[20] पूम थेई- कमर तक की ऊँचाई की लकड़ी की बेलनाकार पाइप की जोड़ी जिसका इस्तेमाल लोहार आग में हवा देने के लिए करते हैं। यह पायजामे की तरह दिखता है।

[21] झूम खेत की सीमा जहाँ खेत और जंगल मिलते हैं।

[22] एक प्रकार का वृक्ष, जिसका फल चिपचिपा होता है और उसे गोंद के रूप में इस्तेमाल किया जाता है।

[23] कपड़े का टुकड़ा, जिससे मिज़ो लड़के अपना सर बाँधते हैं।

[24] मिथुन के सींग की खोल जिसे बर्तन या वाद्य यंत्र की तरह इस्तेमाल किया जाता है।

[25] गोबर में पाया जाने वाला कीड़ा।

[26] ऐसा व्यक्ति जिसकी गुदा में छेद न हो। एक मिज़ो लोककथा के अनुसार छूरा नामक पात्र ऐसे गाँव में जाता है जहाँ के लोगों की गुदा में छेद नहीं होता।

[27] मिज़ो ड्रम (ढोल) बजाने वाली लकड़ी का सिरा जिसपर कपड़ा बाँधकर उसे मोटा और गोल बना दिया जाता है।

[28] मिज़ो व्यंजन जिसे तिल के साथ कच्चे केकड़े को पीसकर पत्ते में लपेटने के बाद चूल्हे के ऊपर आँच में 3-4 दिनों के लिए रख कर और फिर तेल में तलकर बनाया जाता है।

[29] चेमतातरोता के विषय में जानने के लिए देखें: मिज़ो लोक साहित्य, केन्द्रीय हिंदी संस्थान, आगरा, 2009, पृ. 213-214

[30] एक बित्ते जितनी लंबाई या चौड़ाई।

[31] एक प्रकार का पेड़ जिसकी छाल रस्सी के रूप में इस्तेमाल होती है।

[32] पुराने जमाने में मिज़ो स्त्रियों द्वारा पहनी जाने वाली एक प्रकार की माला, जिसे मोटे धागे में पिरोकर बनाया जाता है।

[33] मिज़ो लोककथाओं में माना जाता है कि मिज़ो जाति एक विशाल चट्टान की दरार से निकली है जिसे छीनलुङ कहते हैं। इस विषय में स्पष्ट जानकारी के लिए देखें: रमणिका गुप्ता, पूर्वोत्तर आदिवासी सृजन मिथक एवं लोककथाएं, नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया, नयी दिल्ली, 2010, पृ. 39

[34] एक प्रकार की जंगली लता जिसके फल के बीज को सब्जी के रूप में खाया जाता है।

[35] ऐसा फंदा जिससे जमीन पर चलने वाले पक्षियों को पकड़ा जाता है।

2.5 पोलितिक जिप्सी

(पोलिटिक जिप्सी)

- थनसेइया

लोइपू गाँव (आइज़ोल के पास का एक गाँव) के कुछ पुरुष जंगल में शिकार करने के लिए दस बजे के करीब निकले। वे त्लोङ नदी के किनारे-किनारे रइएक गाँव की ओर चले। आनंद और उत्साह के साथ वे त्लोङ नदी की छोर की ओर बढ़ते चले जा रहे थे। वे अभी ज्यादा दूर भी नहीं चले थे कि तभी उन्होंने देखा कि एक विशाल चट्टान के पीछे से धुआँ उठ रहा है। उसने दल के लीडर ने तुरंत कहा- “अरे, ये लोग कौन हो सकते हैं, जो हमसे भी पहले वहाँ पहुँच गए हैं? क्या उन्होंने रातों-रात यहाँ अपना कैंप लगा लिया है? कहीं उन्होंने हमारे पुरवा को तहस-नहस तो नहीं कर दिया?”

उस समूह के एक युवक ने चीखते हुए कहा “यदि उन्होंने ऐसा किया होगा तो हम उन्हें मजा चखाएँगे।”

वे सभी धुएँ की ओर देखने लगे। उन्होंने देखा कि कोई चट्टान पर बैठा धूप सेंकता हुआ नदी के बहते पानी में अपनी उँगलियों से तरंगे बना रहा है। वह लगभग निर्वस्त्र था। उसके लम्बे बालों के कारण यह समझ पाना भी मुश्किल था कि वह स्त्री है या पुरुष। उनके बीच काफी दूरी थी, फिर भी चट्टानों के पीछे से होते हुए जब वे उस जगह पर पहुँचे तो वहाँ उस व्यक्ति का कोई नामोनिशान न था। यह समझ पाना संभव न था कि वह किस तरफ निकल गया। उसके द्वारा जलाई गई आग और उस जगह का गौर से मुआयना करने पर उन्होंने एक बात तो तय पाई कि रात को वह व्यक्ति वहीं ठहरा था। उन्हें लगा कि उस व्यक्ति के पास न तो कोई बर्तन था, न बिस्तर। उन्होंने सोचा, हो सकता है उसने आग की गरमाहट में रेत पर ही रात गुजारी होगी। वह किस ओर गया होगा यह पता लगाना बड़ा

कठिन था। उसके पद चिह्नों से बस यह पता चल पा रहा था कि वह वाकई एक जवान पुरुष था। लेकिन यह बिल्कुल साफ नहीं हो पा रहा था कि वह नदी के किनारे बढ़ता चला गया या बाँस के घने जंगलों में गुम हो गया। वे सभी अपने-अपने ढंग से अनुमान लगाने लगे। किसी को लगा उन्होंने किसी प्रेतात्मा को देख लिया है, किसी को लगा कि वह मानसिक असंतुलन के कारण भटक रहा कोई आदमी होगा।

उनमें से किसी एक ने कहा- “रुको, मुझे कुछ याद आया, पिछले साल शायद इसी समय कुछ यात्री युवकों ने तुईपाङ और सेरकॉन के बीच कि छोटी नदी में ऐसे ही किसी व्यक्ति को देखा था। उनके अनुसार वह व्यक्ति वैसा ही था, जिसे हमने थोड़ी देर पहले देखा था। उन्होंने उससे बात भी की थी, मगर उसने उन्हें कोई जवाब नहीं दिया। उनके अनुसार वह नदी की धारा के विपरीत दिशा की ओर बढ़ता चला गया। इसीलिए मुझे लगता है वह वाकई एक आदमी ही है, न की कोई प्रेत-आत्मा।”

सभी मन में यह सोचते हुए कि उन्होंने जिसे देखा था वह कौन हो सकता है, आगे बढ़ते हुए अपनी मंजिल पर पहुँच गए।

इस घटना के ठीक एक महीने बाद छिङ्छीप गाँव का एक शिकारी जंगली सूअर के इंतजार में खेत के किनारे बैठा था। धान के दाने लगभग पक चुके थे। उसने देखा कि एक व्यक्ति उसके थ्लाम (झूम खेत के बीच में खेत की रखवाली के लिए बनी झोपड़ी) के अंदर बैठा है। उसे देखते हुए वह मन-ही-मन सोच रहा था कि “वह कौन है जो मेरे थ्लाम में बैठा है...? क्या वह भी शिकार का इंतजार कर रहा है...? क्या वह निर्वस्त्र है...? उसके बाल तो देखो कितने लम्बे हैं...!”

दिन ढल रहा था। जंगली सूअर के न दिखने पर वह अपनी थ्लाम की ओर लौटने लगा। थ्लाम में अब कोई नहीं था, मगर वहाँ जलाई गई आग अभी-भी जल रही थी। उसने

वहाँ भुने गए केले के फूल के छिलके देखे। उसके थ्लाम की दीवार पर कोयले से बड़ी-ही सुंदर लिखावट में यह लिखा हुआ था:-

“कठिनाइयाँ और दुर्भाग्य कितने मूल्यवान हैं!

मानो कुरूप मेंढक के पास स्वर्ण।”

“वह कौन था? गाँव की ओर लौट गया या शिकार का इंतजार कर रहा है? ऐसा लग रहा था कि उसने ढंग से कपड़े भी नहीं पहने थे, वह इंसान ही था या कहीं वह कोई प्रेत-आत्मा तो नहीं...?”- इन सवालों को मन में सोचता हुआ वह घर लौट गया।

अन्य स्थलों पर जैसे नदियों के किनारे, रास्ते के किनारे, मैदानों में, जंगलों में उस विचित्र व्यक्ति या प्रेतात्मा को देखे जाने की बातें लोग खूब करने लगे। गाँव के समाचार-पत्र में भी उसकी बातें छापी जाने लगीं। कोई उस व्यक्ति के प्रति संवेदना की बातें छापता तो कोई उसे भयानक और डरावना बताता। शहरों और गाँवों में भी उसकी चर्चा खूब होने लगी।

एक बार साइतुआल और केईफाङ के पास लकड़ियाँ बटोरने निकली कुछ बच्चियों को वह गाँव के बाहर मिला। वह चुपचाप चल रहा था। रास्ते के किनारे खड़े होकर उसने उन बच्चियों को नाऊबान (ऑर्किड) के फूल दिए। उसके चेहरे से वह भयानक व डरावना प्रतीत नहीं हो रहा था, बल्कि वह तो एक दोस्त की तरह और दयालु दिख रहा था। लम्बे बाल, घनी-दाढ़ी तथा फटे कपड़ों के कारण वह और भी दयनीय लग रहा था।

इस घटना के बस आधे महीने बाद चम्फाई जिले के ह्मुनह्मेलठा (Hmunhmeltha) गाँव की कुछ औरतें कहीं जा रही थीं। उन्हें केइलुङलियह नदी के किनारे, जहाँ छोकह्लेई (रोडोडेंड्रॉन) के फूल खिले हुए थे, वहाँ उन फूलों को तोड़कर

अपने बालों में लगाते हुए वह व्यक्ति दिखा। उसकी घनी और लम्बी मूछों के कारण किसी ने उसे दया की दृष्टि से देखा तो किसी को उसपर नज़र डालना भी मुश्किल लगा। उससे बात करने से पहले ही वह विपरीत दिशा में घाटी की ओर उतरता चला गया। उनमें से एक औरत ने कहा- "ओह! काश मैं भी उसके पीछे जा पाती! इसके जीने का अंदाज़ आकर्षक लग रहा है...लेकिन अगर मैं और ज्यादा बोली तो मेरे पति को इससे जलन होने लगेगी...।" उसकी बात सुनकर सभी हँसने लगे।

यह युवक जो मिज़ो पोलितिक जिप्सी (राजनीति का शिकार होकर ख़ानाबदोश जीवन जीने वाला युवक) बन गया, यह कॉटन कॉलेज, गुवाहाटी से आइ.एससी. की परीक्षा खत्म करने के बाद आइज़ोल लौट आया था। यह बड़ा ही शांत स्वभाव का अच्छे व्यक्तित्व वाला युवक था। वह मंझले कद का तंदुरुस्त युवक था। वह किसी की बुराई नहीं करता था और वह अपने दोस्तों का प्रिय भी था। कॉलेज के दिनों में उसे यूरोपीय जिप्सियों के बारे में पढ़ना बहुत अच्छा लगता था। उसकी पारिवारिक स्थिति खराब थी। उसके माता-पिता का देहांत हो चुका था। उसकी दोनों बहनों की शादी हो चुकी थी। उसका बड़ा भाई असम रेजिमेंट में था। इसलिए वह अपने चाचा, जो कोयला बनाने का काम करते थे, के साथ गाँव के कोने में रहता था। उसके चाचा ने उसे सलाह दी कि "हमारी स्थिति तो तुम समझते ही हो। अब तुम्हें अपने लायक नौकरी की तलाश करनी चाहिए। तुम ज़रा निकलकर छान-बीन करो, मैं तो ठहरा बेवकूफ। आइज़ोल के बड़े लोगों और नेताओं से ज़रा बात करो। सच्चाई और ईमानदारी के साथ सबकुछ करते रहना, भगवान तुम्हारी मदद ज़रूर करेंगे।" कहकर उसे सलाह दी।

उसने नेताओं और बड़े लोगों से बातें की। बात करने में तो सभी भले थे। उसने मन में ठान लिया कि "मुझे भी जल्द से जल्द परीक्षा में बैठना चाहिए।" परीक्षाएँ बहुत कम हो रही थीं। मगर उसी दौरान उसके कई परिचितों को नौकरियाँ मिल भी रही थीं। पूछने पर

वे उसे बताते कि "हमें अभी तो बस अस्थायी रूप से नियुक्त किया गया है, मगर बाद में नौकरी स्थायी हो जाएगी। ट्रायल के लिए अस्थायी तौर पर यूँ ही लिया जा सकता है।"

वह दो बार परीक्षा में बैठा था। उसकी परीक्षा भी बहुत अच्छी हुई तथा उसने इंटरव्यू भी दिया था। पैनल की सूची में भी उसका नाम आया था। वह चाहता था कि उसे आइज़ोल में ही कहीं शिक्षक या क्लर्क की नौकरी मिल जाए ताकि वह अपने चाचा की भी मदद कर सके। मगर पता नहीं उसके साथ क्या हो रहा था! नौकरी मिलते-मिलते रह जाती। उसे लगा कि परीक्षा में उससे खराब परिणाम वालों तथा जिनका पेनल में नाम भी नहीं था, उन्हें सिफारिश के कारण नौकरियाँ मिल रही हैं।

वह बड़ा निराश और दुःखी होने लगा। वह मन ही सोचने लगता कि "मिज़ो लोग राजनीति के नशे में पगला गए हैं! ज़हर की तरह यह राजनीति हमें तबाह कर रही है। हमारी हालत किसी गंभीर मरीज़ की तरह हो गई है, मगर सब इससे अनजान बने हुए हैं। जाने यह राजनीति कब सबकुछ बर्बाद कर देगी!"

उसकी नज़र में मिज़ोरम की आम-जनता, विशेषकर आइज़ोल की जनता तीन श्रेणियों में बँट चुकी है:-

क) उच्च और अमीर श्रेणी

ख) मध्यम श्रेणी

ग) गरीब और असहाय श्रेणी

इन श्रेणियों के बीच की दरार काफी चौड़ी होती जा रही है। कुछ ही समय में मिज़ो लोगों के बीच यह दरार इतनी चौड़ी हो जाएगी कि इनके बीच पुल लगाकर जोड़ना भी असंभव हो जाएगा। मिज़ो लोगों के बीच प्रचलित यह कहावत है कि "हम सभी मिज़ो एक हैं, हमारी स्थिति भी मुर्गी की पूँछ जैसी है, जिसके पंख समान लम्बाई वाले हैं, हमारी

वेश-भूषा, खानपान सभी समान हैं, यह हमारी खुशकिस्मती है," उसे बीते दिनों की बातें लगने लगी थीं।

उसकी दृष्टि में पहली श्रेणी के लोग भीतर-ही-भीतर दूसरी श्रेणी के लोगों से अपने को अलग मानते हैं, इनमें आपस में गहरा संबंध है और शादी-ब्याह भी अपनी श्रेणी में ही करते हैं। सुख और दुःख में ये एक-दूसरे का ख्याल रखते हैं। यहाँ तक कि नीचले तबके के लोगों का ख्याल किए बिना ये आपस में एक दूसरे के बच्चों का ही 'फेवर' करते हैं। ये सरकारी पैसों का घपला करने वाले भ्रष्ट लोग हैं, लेकिन फिर भी यह एक बहुत ही शक्तिशाली तबका है।

मध्यम श्रेणी के लोग तो मध्यम श्रेणी वाले ही हैं। ये खानपान व वेश-भूषा के मामले में जैसे-तैसे रहने वाले, उच्च श्रेणी के तलवे चाटने वाले हैं, जो उनकी चापलूसी करके कॉन्ट्रैक्ट पाना या अपना काम निकालना चाहते हैं। ये प्रायः अपने को उच्च श्रेणी के लोगों की तरह संपन्न दिखाने की कोशिश करते हैं, जो वास्तव में ये होते नहीं हैं।

तीसरी श्रेणी वाले लोग मिज़ोरम में सबसे अधिक संख्या में हैं, मगर वे दबे-कुचले हुए और जैसे-तैसे जीवन निर्वाह करने वाले लोग हैं। इन्हें केवल मतदान के समय ही अचानक महत्व मिलता है और ये अक्सर बातों से ही बहल जाते हैं। चूँकि वह इन्हीं लोगों के साथ रहता था, इसलिए 'कम्युनिस्ट','सोशलिस्ट' जैसे शब्द उसके कानों में संगीत की तरह बजते रहते थे। मगर, तब भी इनमें से कोई भी अमीर एवं बड़े लोगों के खिलाफ, खासकर भू-राजस्व और कर के मामले में उनकी बहुत ही खराब पद्धति के खिलाफ आवाज़ नहीं उठाता था और उनमें कोई एकता न थी। अतः इस श्रेणी को वह 'कायर-समूह' की संज्ञा देना चाहता था।

वह राजनीतिक पार्टियों की भी कटु आलोचना करता था। उसका मानना था कि ये पार्टियाँ केवल अपने ही नशे में चूर हैं और राजनीति की गंदी हवा में भटक गई हैं। ये राजनीति की गंदी नाली के पानी में गोते लगाती रहती हैं। वह बहुत निराश रहता। नौकरी न मिलने का कारण भी वह इसी को मानता था। उसे लगने लगा था कि किसी राजनीतिक पार्टी का सदस्य बने बगैर और किसी नेता से जान-पहचान बढ़ाए बिना उसके लिए आगे के रास्ते हमेशा बंद ही रहेंगे।

आइज़ोल में बहुत समय बिताने के बाद भी उसे कुछ नहीं सूझ रहा था तो वह किसी गाँव के मिडिल स्कूल में शिक्षक की नौकरी की खोज में निकला। मिज़ोरम के पश्चिम में किसी एक गाँव में नए प्राइवेट मिडिल स्कूल की स्थापना की गई थी, जिसमें उसे स्थायी रूप से हेडमास्टर के पद पर नियुक्त कर लिया गया। वह बहुत खुश हुआ। वह अपने एक नए मित्र के साथ वहाँ जी-जान से काम करने लगा। वह चर्च के एक गरीब और बीमार प्राचीन (चर्च एल्डर) के यहाँ रहता था। उसके डेढ़ साल काम करने के बाद स्कूल ने काफी प्रगति की। सरकार ने भी उनके स्कूल को सहायता देनी शुरू कर दी। वह बहुत खुश था। गाँव की एक युवती के साथ भी उसकी जान-पहचान बढ़ने लगी।

इसी दौरान पार्टी के एक नेता के बेटे ने पी.यू. (प्री-यूनिवर्सिटी) की परीक्षा उत्तीर्ण की। उसे हेडमास्टर के पद पर नियुक्त करने की कोशिशें होने लगीं। राजनीति की गंदी हवा फिर से चलनी शुरू हुई। फिर से चुगली और बुराई करना, अफवाहें फैलाना आरम्भ होने लगा। कुछ लोगों ने बातें बनानी शुरू कीं- “हमारे हेडमास्टर तो...अंदर-ही-अंदर दूसरी पार्टी का समर्थन करते हैं, उन्हें हमारी पार्टी के उम्मीदवार की इज्जत करनी नहीं आती, हमारी पार्टी के नेताओं के आने पर भी वह उनपर ध्यान नहीं देता...।” इन बातों ने राजनीति की आँधी को और हवा दिया। वह जिस घर में ठहरा हुआ था, उसके बुजुर्ग प्राचीन (चर्च एल्डर) के साथ सारी बातें करता और फिर दोनों मिलकर प्रार्थना किया करते। वे दोनों रात-रात भर अपनी चिंताएँ जाहिर करते- “हमारे राज्य की राजनीति ने

सामाजिक जीवन और हमारी मानसिकता को कितना खराब कर दिया है! अच्छे दोस्तों को एक दूसरे से अलग कर दिया, प्रेम की भावना को खत्म कर दिया, एक दूसरे को समझने की भावना और स्वस्थ प्रतियोगिता का नाश कर दिया, दवाइयों के बिना रोगियों को मरने के लिए छोड़ दिया। हमें पता ही नहीं चल पाता कि कौन बीमार है और किसके पास दवाइयाँ नहीं हैं, क्योंकि राजनीति की गंदी हवा ने हमारे विवेक को अंधा कर दिया है...।" वे दोनों आपस में चर्चा करते- "राजनीति पार्टियों के खराब माहौल की तुलना किससे की जाए? सीधी लकड़ी को जब पानी में डुबोया जाता है, तब जहाँ से वह पानी में डूबी रहती है, वहाँ से लकड़ी टेढ़ी मुड़ी हुई दिखाई पड़ती है, राजनीति भी वैसी ही है। हम सब भी उस लकड़ी की ही तरह एक-दूसरे को कभी सीधा नहीं पाएँगे। लगता है हेडमास्टर की इस नौकरी को भी त्याग देना ही बेहतर होगा...।"

हेडमास्टर के पद पर नियुक्ति के संबंध में गाँव के नेताओं के निर्णय लेने से पहले ही स्कूल का सत्र उस साल के लिए समाप्त हो गया। वह भी अपने चाचा के पास क्रिसमस मनाने के लिए भारी मन लेकर आइज़ोल की ओर निकल गया।

अपना सामान पीठ पर लादे वह पक्की सड़क की ओर दोपहर तक चला, जिसके कारण वह बहुत थक गया। रास्ते के किनारे किसी छोटी पहाड़ी पर वह जा बैठा। वहीं उसकी आँख लग गई। उसने सपने में देखा की नए हेडमास्टर की नियुक्ति हो गई है। गुप्त रूप से राजनीति में सक्रिय होने का आरोप लगाकर उसे नौकरी से निकाल दिया गया। वह असीम दुःख से भर गया। उसी समय मामित गाँव के दो यात्री वहाँ आ पहुँचे। उनमें से एक ने पूछा, "ऐ नौजवान! किस तरफ जा रहे हो? ऐसा करते हैं, हम सब एक साथ चलते हैं।" उसने उन्हें अच्छे से जवाब दिया, "धन्यवाद, मुझे आइज़ोल जाना है। आप लोग चलिए मैं आ जाऊँगा।" दोनों उसे पीछे छोड़कर आगे बढ़ गए। सूरज धीरे-धीरे डूब रहा था और उसे पूरी तरह अस्त होने में अब लगभग एक मूसल के बराबर दूरी ही बची थी। मुख्य सड़क

तक पहुँचने में अभी भी दो फीङ[1] की दूरी बाकी थी। उसके बाद भी यह तय नहीं था कि उसे कोई गाड़ी मिल पाएगी या नहीं। “वह वाकई बहुत धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा है”- मामित के उन युवकों ने टिप्पणी की और अपने रास्ते पर बढ़ गए।

इस युवक के विषय में आगे किसी को कुछ जानकरी नहीं। इसे सामान्य इंसान के रूप में आखिरी बार मामित के एक व्यक्ति ने पश्चिम के किसी पहाड़ पर बैठे हुए तथा शिकार पर निकले फुआइबुआङ गाँव के लोगों ने हियाङत्लाङ के जंगलों में देखा था। वह हियाङत्लाङ के पहाड़ या तुइवाई नदी के आसपास के जंगलों में कब तक रहा, पता नहीं। किसी शिकारी ने एक बार बेहद करीब से उसे देखा था, तब उसने ध्यान दिया कि वह बूढ़ा होने लगा था और उसके बाल भी पकने लगे थे। हालाँकि उनके बीच कोई बात नहीं हुई। उसका चेहरा लगभग पहले जैसा ही था। उस शिकारी ने बताया कि वह प्रेम से परिपूर्ण और भोला दिख रहा था।

उसे जंगली सूअरों की झुंड के साथ विचरना, उनकी गर्म गुफाओं में मीठी नींद सोना आता था। मादा हिरनी तथा उसके बच्चों के साथ रहने में उसे आनंद आता था। वह नुकीले सींगों वाले बारहसिंगा की पीठ सहला सकता था। बंदर उसके बाल से जुएँ निकालते थे। बाघ के साथ वह मांस बाँट सकता था, तरह-तरह के पक्षियों से दोस्ती कर सकता था। मगर उसे अब भी राजनीति के नशे में चूर लोगों से दोस्ती करना नहीं आया था और अब वह इसकी कोशिश भी नहीं करता था।

संदर्भ

---

[1]एक फीङ = एक सामान्य झूम खेत के बराबर अथवा एक फर्लांग की दूरी जो लगभग 660 फीट के बराबर होती है।

2.6 लेमचन्ना खोवेल

(दुनिया एक रंगमंच है)

- एच. ललरिनफेला (माफ़ा)

"...यह दुनिया एक रंगमंच है,

और सभी पुरुष और स्त्रियाँ इसके पात्र हैं।" (शेक्सपियर)

"शेक्सपियर से माफी चाहती हूँ,

मगर यह दुनिया अब रंगमंच नहीं रही,

यह अब सिनेमा है।" (कार्ला रपोपोर्ट)

मुट्ठी भर नमक मैंने अपने मुँह में भर लिया, मगर उसका कोई असर नहीं हुआ। मुझे चक्कर आने लगा, मेरी नज़र धुँधलाने लगी और सांस लेना मुश्किल होने लगा। ऐसा नहीं था कि मैं बच नहीं सकता था, मगर यह उम्मीद तेजी से खत्म होती गई।

मृत्यु के डर से मैं दुःखी था, मगर मुझमें जीने की कोई चाहत भी न थी। यदि फरिश्ते अपने परों को हिलाते हुए मुझे उस वैभवशाली दुनिया में मुझे ले जाने वाले होते, जहाँ मौत भी मृत्यु को प्राप्त हो चुकी होती है, तो मुझे अपने इस आखिरी वक्त में इतना संघर्ष न करना पड़ता। मैं अपने-आप खुशी से जीवन की डोर छोड़ देता। यदि मैं नाज़रेथ के निवासी उस युवक में आस्था रखता, जिसे बहुत पहले सूली पर चढ़ा दिया गया था, तो मैं भी उन प्रौढ युवकों में से एक होता जिसे उनके शुभचिंतक "अब तो शादी कर लो" कह-कह

कर शादी के लिए मनाते और आखिरकार मैं भी पागलपन में शादी के लिए तैयार हो जाता।

मेरे साथ ऐसा कोई भी नहीं था जो मेरे जीवन की डोर थामने में मेरी मदद करता।(आखिर मैंने दूसरों की नज़रों से बचने के लिए खुद को कमरे में बंद ही क्यों किया?)। मेरी साँसों की डोर मुझे 'मृत्यु-प्रमाणपत्र' देने के लिए पूरी तरह तैयार थी। मेरा दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़कने लगा, मेरी नब्ज़ तेज़ चलने लगी, मानो इन्हें मालूम हो कि अब इनका अंत करीब है। यह संसार मुझसे कह रहा है- "निकल जा" और कब्र का अंधकार लगातार मुझे बुला रहा है- "घर लौट आ।" मृत्यु के विषय में मेरा पहले का कोई भी अनुभव नहीं है। यह शायद मेरा पहला और आखिरी अनुभव होगा। जिस आत्मा ने जॉन डोन को यह घोषित करने के लिए प्रेरित किया था कि "मृत्यु धमंड मत करो"(death be not proud), काश! वही आत्मा मुझे भी स्पर्श कर ले। लेकिन मृत्यु के उस अंतिम क्षण में बहुत कोशिश करने पर भी मुझे "उज्ज्वल क्रॉस" और "रत्नजड़ित द्वार" दिख नहीं रहा था।

एक तरह से 'वान-काई-चो' (मृत्यु के पूर्व का अंतिम भोजन) के रूप में मैंने एक लंबी डूबती हुई साँस ली। तभी उस मौत ने, जिसने परमेश्वर के पुत्र को भी नहीं बख्शा था, अपने बर्फ से ठंडे और खूंखार हाथों से मुझे अपनी ओर खींच लिया। जब से मैंने ड्रग्स लेना शुरू किया, उसके छह महीने बाद ही मेरी रूह उस दुनिया से रोती हुए निकल गई जिस दुनिया में मैंने रोते हुए प्रवेश किया था। मैं पूरे वैभव के साथ 'अँग्रेज़ी ढंग'[1] से गुजर गया।

मैं पहले कभी मरा नहीं था, इसलिए मुझे कोई अंदाज़ा नहीं था, मुझे तो यह भी नहीं पता कि आगे का रास्ता ढूँढना कैसे है। मुझे यह भी अंदाज़ा नहीं कि मुझे मृत्यु लोक के रास्ते में मिलने वाले पोला के गुलेल[2] से अधिक डरना चाहिए या महान सफ़ेद सिंहासन के

सामने होने वाले 'अंतिम निर्णय' से। यह सोचकर मेरा दिमाग और चकराने लगा कि अब यहाँ सब्बथ[3] का ज्यादा महत्त्व है या पानी में डूबकर लिए गए बपतिस्मा का।[4]

जब मैं वहाँ असमंजस की स्थिति में खड़ा था, तब संसार के अपने छोटे-से सफर की, अपने जीवन की वे स्मृतियाँ मेरे दिमाग में कौंधने लगीं जब पिताजी मुझे भूलकर मंचों से उपदेश करते हुए 'रमथिम'[5] के भटके हुए लोगों की मुक्ति के प्रति अपनी चिंता जाहिर कर रहे थे। जब से मैंने लड़कियों की नजरों में अपनी मर्दानगी साबित करना सीखा था, तब से मैंने खुद को ड्रग्स इंजेक्ट करना शुरू किया; हाँ, मैंने खुद को तब तक इंजेक्ट किया जब तक मैं पूरा अँग्रेज न बन गया। ड्रग्स लेना दोस्ती बढ़ाने के लिए तो था ही, नया जन्म पाने के बाद अपनी टेस्टेमनी[6] को महान बनाने के लिए भी था। तो ऐसे में भला कौन इसे मना कर सकता है? जब मैंने खुद को ड्रग इंजेक्ट किया तब मुझे दुनिया की सबसे आनंददायक अनुभूति हुई। मैं सितारों के उस पार उड़ने लगा। उस असीम आनंद के कारण यदि गर्भ ठहर सकता तो मुझे पूरा विश्वास है की मेरे गर्भ में जुड़वाँ बच्चे होते!

शुरुआत के दिनों में मेरे पास अच्छे दोस्तों और पैसों की कमी न थी। जिनसे मैं पहली बार मिलता वे भी मुझे 'ब्रो' (यार) कहकर ही पुकारा करते। ये लोग उन लोगों की तुलना में ज्यादा मिलनसार थे, जो मुझे 'ज़ोगा' (मिज़ो गाली, शाब्दिक अर्थ: बंदर) कहकर गाली दिया करते थे और मैं ऐसे लोगों को 'ट्रीट' दिया करता था। पिताजी जो ढेर सारा पैसा सरकार से लूटते, वे पैसे मैं उनसे लूटता। इसके अलावा माँ के काले पर्स से खुद ही उधार भी ले लिया करता था। मगर रोजाना के नशे के लिए यह भी काफी नहीं था। मैं औरों से भी उधार लेने लगा। जैसे-जैसे मेरे पैसे खत्म होते गए, वैसे-वैसे ही मेरे दोस्त भी मुझसे अलग होते गए, यहाँ तक कि वे मित्र भी जो अक्सर कहा करते थे कि "हम रिश्तेदार

हैं, रिश्ते में तेरे पिताजी मेरे बुआ लगते हैं।” कई बार ऐसा भी हुआ कि सौ रुपये की उधारी वाले व्यक्ति से मैं नज़रें चुराके अपना रास्ता बादल लेता और दो-सौ रुपए उधारी वाले से जाकर टकरा जाता। कई बार मेरे दोस्तों की काली-काली आँखें मुझे पाँच रुपए के सिक्के लगतीं और मन करता कि उन्हें नोंच कर निकाल लूँ।

दुनिया में मैं पूरी तरह अकेला पड़ गया। दोस्तों से मुक़ाबला करना तो दूर, उनसे बराबरी करने की कोशिश करने की महत्वाकांसा भी मुझमें न रह गई थी। मुझे ऐसी खराब स्थिति में ढकेलने वाले ड्रग्स को मैं छोड़ने की कोशिश करता, तब भी वह मुझे नहीं छोड़ता, उसने मुझे ऐसे दबोच लिया था जैसे भालू अपने शिकार को दबोच लेता है।

जब मेरे साथ यह भयानक घटना घट रही थी तब मेरी एकमात्र माँ, परमेश्वर से प्राप्त अपने पुत्र की देखभाल के बदले सोने के गहने एकत्र करने में व्यस्त थी। अपने ही रक्त-माँस से बने, अपनी कोख से जन्मे बेटे के साथ समय बिताने के बदले वह चर्च की दूसरी औरतों के साथ ‘द बुक ऑफ रिवीलेशन्स’ के वचनों में छिपे रहस्यों को समझने के लिए, इसाई धर्म प्रचारकों के यहाँ जाया करती थी।

जब मैं श्ढिङलङ त्लाङ[7] (श्ढिङलङ पहाड़) से अपने जीवन के बीते सफर को दोबारा देख रहा था, मैंने देखा कि लोग मेरे घर की तरफ उमड़े चले आ रहे हैं, हालाँकि मैं यह नहीं जानता था कि मेरी लाश को लोगों ने कैसे ढूंढ निकाला। बड़े उत्साह के साथ वे हमारे घर को तैयार करने लगे मानो वे किसी त्योहार की तैयारी कर रहे हो। मिज़ोरम गोस्पेल सेंटेनरी का उत्सव मनाने आए अँग्रेजी मेहमानों की मदद के लिए लोग जैसे जुटे थे, वैसे ही मेरे लिए लोग जुट गए।

तभी एक बड़ी अप्रत्याशित समस्या खड़ी हो गई! आँगन में रखे ब्लैकबोर्ड पर मेरी मृत्यु का कारण लिखना जरूरी था! मगर निश्चित रूप से मेरी मृत्यु का कारण सामाजिक

रूप से स्वीकार्य नहीं था। मगर चिंता की कोई बात नहीं थी, मृत्यु का कारण लिखने में तो हमारे वाई.एम.ए[8] (यंग मिज़ो एसोसिएशन) के अध्यक्ष बड़े माहिर हैं! उन्होंने बड़ी चतुराई से भाषा में अपनी पकड़ को साबित करते हुए 'ओवर डोज़' को मिज़ो की सुंदर भाषा में 'मीतलियाम'[9] (पीलिया) लिख दिया।

मेरे जीते-जी जिन्होंने प्रेम से आँसू का एक बूंद भी मेरे लिए नहीं बहाया था, उन्हीं माता-पिता ने मुझे वेदना के आँसुओं से नहला दिया। अफसोस कि मेरे पास अब पश्चाताप का समय ही न रहा। पड़ोस की औरतें भी, यह जानते हुए कि अगले हफ्ते ही वे मेरे पिता से फिर 'कांट्रैक्ट' मांगने वालीं हैं, बाहों के नीचे पुआन दबाए मेरी लाश के करीब सम्मानपूर्वक बैठने लगीं। वे बारी-बारी से पहले से रटी-रटाई ट्राह-ह्ला[10] को धाराप्रवाह गा-गाकर स्यापा करने लगीं।

"तुम्हारा चेहरा अभी-भी मुरझाया नहीं है।" ऐसा कहते हुए वह मेरा चेहरा, जो कभी खिला ही नहीं, उसे सहलाने लगीं।

कपी (बड़ी महिलाओं के लिए सम्मान सूचक संबोधन) अब बस करो, मेरा चेहरा कभी खिला ही नहीं, अपने जीते-जी मैं एक भी युवती को अपनी ओर आकर्षित नहीं कर पाया था। अगर मैं जिंदा भी रहता तो शायद अगले चौंतीस सालों तक यही कहता रहता कि "मेरे लिए अभी शादी न करना ही बेहतर है।"

मेरी लाश के ऊपर नकली फूलों की माला रखने वाले भी अपने इन फूलों जैसे ही हैं, जो दिखते तो बहुत अच्छे हैं, मगर उनमें कोई खुशबू नहीं है। मेरी कब्र को खोदते हुए जो लोग अभी मेरी लाश का मज़ाक उड़ाते हुए ठहाके लगा रहे हैं, वे ही कुछ देर बाद मेरे

परिजनों के सामने ऐसा दुखी चेहरा बनाकर मेरे ताबूत को कब्र में डालेंगे, जैसे वे जिंदगी की तमाम खुशियों से बिल्कुल अनजान हों।

शेक्सपियर के शब्दों में जैक्स ने कितना सही कहा है:

"यह दुनिया एक रंगमंच है,

और सभी पुरुष और स्त्रियाँ इसके पात्र हैं।"

इस रंगमंच पर एक ही व्यक्ति अलग-अलग मुखौटा लगाए प्रकट होता है। तरह-तरह के चेहरे, तरह-तरह के स्वभाव, तरह-तरह की पहचान और सभी एक-दूसरे के बिल्कुल उलट और हमारी वास्तविकता से बिल्कुल परे। हमारे हाथ भले ही इसावा के हाथों जैसे क्यों न हों, मगर हमारा स्वर आखिरकार याक़ूब के स्वर जैसा हो ही जाता है। ऐसा क्यों? क्योंकि भीतर से हम सभी 'धोखेबाज़ याक़ूब'[11] ही हैं। इस रंगमंच पर हर रोज़ कोई प्रवेश करता है और कोई प्रयाण कर जाता है। इसमें एक व्यक्ति को प्रयाण के बाद दोबारा प्रवेश की अनुमति नहीं है। कुछ लोग इस रंगमंच पर लंबे समय तक रहते हैं, तो बहुत-से ऐसे लोग भी हैं जो बहुत जल्द निकल जाते हैं। चूँकि इस रंगमंच पर परिश्रम पूर्वक निरंतर अभिनय करते रहना पड़ता है, इसलिए यहाँ लंबे समय तक रहने का अर्थ है असीम कष्ट सहते रहना। जो जितना अच्छा अभिनय कर सकता है वह यहाँ उतना ही अधिक सफल होता है।

मैं दुनिया के इस रंगमंच का सबसे प्रतिभाहीन और असफल कलाकार रहा! मैं तो खैर जैसा था वैसा ही दिखता और इसलिए लोग मुझे 'निकम्मा' कहते और यही कारण था कि 'सामुदायिक जीवन सुधार' वाले साल[12] सामूहिक रूप से सभी को मेरी चिंता सताने लगी।

दूसरी तरफ मेरे मित्र अभिनय के मामले में उस्ताद हैं! उरलोक की रात[13] हम सबों की तरह अच्छे से खूब उल्टी क्यों न कर लें, चर्च में तो ऐसे संत बने उपस्थित रहते हैं जैसे सैंट पॉल के घनिष्ठ मित्र हो। चर्च की कमेटियों तथा अन्य संस्थाओं की तरह-तरह की जिम्मेदारियाँ व पद उनके पास हैं, मानो उनके अलावा और कोई इसके लायक ही न हो। सचमुच डॉ. जेकिल और मिस्टर हाइड में अंतर बताना बहुत कठिन है। अपनी युवावस्था में इन्होंने जितनी बार वोट डाले होंगे उतनी ही लड़कियों की गोद सोन (नाजायज बच्चे) से इन्होंने भरे हैं। जैसे इन्हें रमथिम में भटकी हुई आत्माओं की चिंता है, मुझे इस बात की चिंता है कि उन्हें कहीं एड्स न हो। ये इतने चालू हैं कि गोस्पेल कैम्पों और क्रूसेडों में पल भर में अपने पापों का प्रायश्चित कर लेते हैं। जीवन की पुस्तक में भी ज़रूर इनका नाम पेंसिल से लिखा जाता होगा ताकि आसानी से उन्हें मिटाया जा सके।

चर्च के नियमों का पालन कर पवित्र-विवाह के बंधन में बँधने वाले युवा जोड़े भी महज पाँच महीने के भीतर बड़े आराम से 'पूर्ण अवधि के बच्चे' को जन्म दे देते हैं। और कसाई लोग वाईरम (बाहरी लोगों का निवास स्थान, मैदानी इलाके) से लाए गए मादा सूअर के माँस को बाज़ार में 'स्थानीय नपुंसक नर सूअर' का माँस कहकर बेचते हैं और अच्छी-खासी कमाई करते हैं।

कुछ ऐसी लड़कियाँ भी हैं, जिनका नाम तो ललथिआङह्लिमी (परमेश्वर के समान पवित्र) है मगर उनके कर्म ऐसे हैं कि उनसे जान-पहचान रखने में भी शर्मिंदगी महसूस होती है। परमेश्वर की सहमति के बिना जन्मे कई सोन (अवैध संतान) ऐसे भी हैं जिनका नाम ललरेमरुआता (परमेश्वर द्वारा प्रदत्त) है। के.एस.[14] के बीच में भी कई ऐसी लड़कियाँ हैं जिनका नाम ललरोंगबोली (परमेश्वर की सेविका) है।

वास्तव में यह दुनिया ऐसे ही लोगों के लिए है, जो देर रात तक किसी विधवा के घर में, जहाँ चाय के बदले शराब बिकता है, मोक्ष के रास्ते के बारे में चर्चा करते हैं, मगर जिन्हें अपने घर का ही रास्ता याद नहीं रहता।

कई लड़कियाँ हैं जिनके बाल कल काले थे, आज लाल हैं और कल शायद भूरे हो जाएँ। उनका रूप तो आकर्षित करता है, मगर स्वभाव नहीं। इसी कारण स्नेह भरे स्वर कठोर हो जाते हैं और उन्हें प्रेम पूर्वक छोटे नाम से पुकारने के बदले पूरे नाम से पुकारना पड़ता है।[15]

हम युवक भी अपने दोस्तों का कपड़ा पहनकर तुला रीम (युवकों का अपने पसंद की लड़कियों के घर में जाना) करने जाते हैं। सोचिए मन में कितना डर बना रहता होगा कि यहाँ हम लड़की को रिझाने में व्यस्त हैं तभी कहीं कपड़े का मालिक कपड़ा लेने ना आ जाए! हम जो अपने आँगन में लगे संतरे के पेड़ पर भी नहीं चढ़ पाते, अपनी प्रेमिका से जोशीले अंदाज़ में कहते हैं कि “मैं तुम्हारे लिए आसमान के तारे भी तोड़ कर ला सकता हूँ।” हम जिसे प्रेम की दुनिया कहते हैं, वहाँ प्रेमियों का महागीत यह है:

“युवती: मुझे बहलाकर बिस्तर पर लिटाने से पहले,

वचन दिया था तुमने शादी का।

युवक: आसानी से बिस्तर पर जो लेट जाये,

उससे शादी करने से बेहतर है,

वचन तोड़ दूँ मैं खुद का।”

यह सब कितना अजीब है! ऐसे लोग जिनके लिए हम अक्सर कहते हैं "जैसा मैंने सोचा था वैसा वह नहीं है", उनकी संख्या, वैसे लोग जिनके लिए हम कहते हैं कि "जैसा मैंने नहीं सोचा था वह वैसा ही है", से कम नहीं है। इसी कारण मैं कहता हूँ कि यदि हम एक-दूसरे की जिंदगी के हर कोने और राज़ को जान लें तो हममें से कोई भी एक-दूसरे के साथ रहना नहीं चाहेगा। हमारी पहुँच और संपर्क में जो भी होता है उससे हम कह तो देते हैं कि 'मैं तुम्हें सबसे अधिक चाहता हूँ' मगर हमारी असली चाहत तो हॉलीवुड की मशहूर अभिनेत्रियाँ और मॉडल्स सिंडी क्रव्फ़ोर्ड या शेरॉन स्टोन या जोडी फॉस्टर होती हैं। हम तो बस उन चीजों से संतुष्ट होना सीख लेते हैं जो हमारी पहुँच में हैं।

लोग तो कहते हैं कि, तमाम अनाड़ी बुड्ढे तक यह दावा करते हैं कि वे अपनी जवानी के दिनों में सबसे बहादुर और सफल शिकारी हुआ करते थे। वैसी बूढ़ी औरतें, जो अपनी जवानी के दिनों में रात-रात भर पड़ोस की युवती से मिलने आने वाले युवकों के शोर से जगी रहती थीं और जिनकी शादी भी इसलिए हो सकी कि कुछ दयालु पुरुषों ने उनके प्रति दया दिखाई, उनके पोते-पोतियों से भी कुछ लोग मजा लेते हुए कहा करते है कि "तुम्हारी दादी तो गाँव की सबसे सुंदर युवती हुआ करती थी।" लगता है दुनिया के इस रंगमंच पर सभी लोग झूठे, नकली, और फरेबी हैं।

छात्रों का भी यही हाल है। जैसे ही छात्रवृत्ति के लिए आवेदन करने का समय आता है तब देखिए कैसे एक-एक करके सभी अफसरों के बच्चे चपरासी या किसान के बच्चे हो जाते हैं। कुछ बच्चे जो झूठ बोलने में थोड़ा हिचकते हैं, वे अपने पिता की नौकरी के लिए बस 'सरकारी कर्मचारी' लिख देते हैं। बीस हजार से अधिक मासिक आय वाले परिवारों की संख्या भी एकाएक घट जाती है। दुनिया के इस रंगमंच पर टिकने के लिए ऐसा रास्ता अपनाना ही पड़ता है!

लेकिन मेरा बड़बड़ाना बेकार है। मैंने देखा कि मेरे अंतिम संस्कार का कार्यक्रम आरंभ हो चुका था। परिवार की तरफ से दो-शब्द कहने के लिए मेरे पिताजी खड़े हुए; वे मेरे बारे में कहने लगे कि मैं बचपन से ही कितने सीधे स्वभाव का था, परमेश्वर में मैं कितनी आस्था रखता था, मेरी मृत्यु की सुबह मैंने कैसे भोजन के समय अनपेक्षित रूप से प्रभु यीशु की प्रार्थना की थी, गलत संगत में पड़कर किस तरह मैं ड्रग्स का दास बन गया, आदि-आदि। पिताजी के वक्तव्य के बाद हमारे क्षेत्र के चर्च एल्डर[16] अंतिम बिदाई का वचन कहने के लिए खड़े हुए। उन्होंने काले रंग का सूट पहन रखा था। यह सूट उन्होंने सूअर पालने के लिए सरकारी मदद के रूप में मिले पैसे से खरीदा था। मेरी मौत जिस परिस्थिति में हुई थी उसके बारे में बोलने के लिए वाक् चातुर्य और शब्दों का सही चुनाव बहुत ज़रूरी था। उनकी जुबान से ऐसे वचन निकलने चाहिए थे जो मेरे परिजनों को ठेस ना पहुँचाए और साथ ही भीड़ की संवेदनशीलता को भी ध्यान में रखे। संभव हो तो उन्हें किसी भी तरह यह जाहिर करना चाहिए था कि मैं अब स्वर्ग में हूँ। यह चर्च एल्डर नए धर्मांतरितों के बीच अपने कटु और आतंकित करने वाले वचन के लिए जाने जाते हैं, लेकिन मेरी बिदाई के वचन इन्होंने इतनी सुंदर भाषा में प्रस्तुत किए मानो वे शब्द सीधे इंग्लैंड से लाए गए हों।

यदि मुझे पता होता कि मेरे जनाजे पर इस तरह का तमाशा होगा तो मैं अपनी अंतिम इच्छा इस प्रकार अवश्य छोड़ जाता: “मुझसे वादा करो...जब मैं मर जाऊँगा तब मेरे ताबूत के आसपास केवल मेरे सच्चे मित्र ही खड़े होंगे, फालतू पूछताछ करने वाली भीड़ नहीं। देखना कि (ध्यान रहे कि) पादरी या कोई भी मेरी कब्र पर झूठ न बोले, अब जब कि मैं खुद की रक्षा नहीं कर सकता, मुझे एक ईमानदार नास्तिक के रूप में मेरी कब्र में उतरने दो।” मगर अब बहुत देर हो चुकी है! (नीत्शे, केल्विन मिलर, अ हंगर फॉर मीनिंग, डोनर्स ग्रूव, इलिनॉय, यू. एस. ए., 1984, पृ. 18 पर उद्धृत)

जब अंतिम बिदाई का कार्यक्रम समाप्त हो गया और मेरे ताबूत के साथ तस्वीरे खींचवाने का सिलसिला थम गया, तब मुझे कब्रिस्तान ले जाया गया। फिर, मुझे उस जगह से दूर, जहाँ हर हँसने वाला खुश नहीं होता; हर रोने वाला दुःखी नहीं होता; जहाँ प्रशंसा सुनने के लिए मुखौटा पहनना पड़ता है, जहाँ वेश्याएँ भी परमेश्वर को धन्यवाद देने के लिए अपनी कमाई का दसवाँ हिस्सा दान में देती हैं; जहाँ सत्तर साल के सरकारी कर्मचारी साठ साल के व्यक्ति के रूप में सेवानिवृत्त होते हैं; जहाँ रविवार का ड्रेस (जिसे पहनकर चर्च जाते हैं) पहने लोग फर्जी-बिल और नकली केश-मेमो बनाकर धन जमा करते हैं; जहाँ मोइतेआ जैसे युवाओं को तीसरी, चौथी, पाँचवीं बार 'सबसे प्रिय प्रेमिका' और 'पहला प्यार' मिलता है; जहाँ ईमानदारी से तीन हज़ार कमाने वाला बिना किसी अपराध-बोध के दस हज़ार खर्च करता है, ऐसी धोखे की दुनिया से दूर मेरे दुनियावी पोशाक के साथ, मेरे शरीर को दफ्न कर दिया गया। मुझे आशा है कि मेरी कब्र के पत्थर पर लोग यह नहीं लिखवाएंगे: "उस प्रभु यीशु के पास विश्राम करता हुआ जिसकी इसने ईमानदारी से सेवा की।"

"इन सब से थककर, मैं चैन की मौत के लिए गुहार लगाता हूँ।"[17]

संदर्भ

---

[1] ड्रग्स के ओवर डोज़ के कारण जिसकी मृत्यु होती है उसके लिए यह कथन मिज़ोरम में प्रचलित है।

[2] मिज़ो पारंपरिक लोक मान्यता है कि मृत्यु के बाद आत्मा मित्थी खुआ (मृत्यु लोक) में जाती है, लेकिन उसके पहले उस आत्मा को मित्थी खुआ के अलौकिक रक्षक या द्वारपाल 'पोला' का सामना करना पड़ता है, जो उसे मित्थी खुआ में प्रवेश करने से रोकने के लिए उस पर गुलेल से गोलियाँ चलता है।

[3] ईसाई धर्म के आधार पर साप्ताहिक विश्राम और ईश्वर प्रार्थना का दिन। ईसाई धर्म के ही अलग-अलग संप्रदाय इसे अलग-अलग दिन मानते हैं। मिज़ोरम में सेवेन्थ डे एडवेंटिस्ट चर्च सब्बथ का दिन शनिवार को मानते हैं और प्रेसबेटेरियन चर्च और अन्य चर्च इसे रविवार को मानते हैं।

[4] मिज़ोरम में कई चर्च हैं जिनमें बपतिस्मा की प्रक्रिया को लेकर मतभेद है। बैप्टिस्ट चर्च जहाँ पानी में पूरी तरह डूबाकर बपतिस्मा देते हैं, वहीं प्रेसबेटेरियन चर्च बस सिर पर पानी छिड़ककर।

[5] ऐसा स्थान जहाँ ईसाईयत नहीं पहुँची है।

[6] यीशु मसीह को स्वीकारने के बाद की गवाही।

[7] श्रिङलङ त्लाङ- ऐसा पहाड़ जिसके ऊपर से नश्वर दुनिया को देखा जा सकता है। मिज़ो लोक मान्यता है कि आत्मा के शाश्वत विश्राम की अंतिम यात्रा में यह पहाड़ उसे उस नश्वर दुनिया के आखिरी दर्शन कराता है, जिसे वह आत्मा पीछे छोड़ आई है।

[8] यंग मिज़ो एसोसिएशन मिज़ोरम का एक अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रभावशाली गैर सरकारी संगठन है, जिसकी मिज़ो समाज और जीवन में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका है।

[9] यहाँ शब्दों के साथ खेलते हुए 'ओवर डोज़' की जगह मीतलियाम (Mitliam) लिखा गया है जिसका सामान्य अर्थ तो पीलिया है लेकिन इसके शाब्दिक अर्थ को देखा जाए तो उसका अर्थ ओवरडोज़ के कारण मृत्यु/गुजर जाना भी हो सकता है। Mit: गुजर जाना और Liam: ओवरफ़्लो।

[10] मृतक की प्रशंसा में या उसे याद करते हुए रोते हुए गा-गाकर कही जाने वाली बातें।

[11] बाइबल का एक प्रसंग जिसमें याक़ूब धोखे से इसावा की जगह अपने पिता इसक से आशीष ले लेता है।

[12] यंग मिज़ो एसोसिएशन द्वारा सालाना एक सामाजिक रूप से महत्वपूर्ण उद्देश्य (जैसे- नशामुक्ति, संस्कृति की रक्षा, स्वच्छता, आदि) को निर्धारित करने की एक परंपरा मिज़ोरम में है। यहाँ उसी परंपरा का संदर्भ लेते हुए 'सामुदायिक जीवन सुधार के वर्ष' का उल्लेख हुआ है।

[13] क्रिसमस से ठीक पहले वाली रात जिसमें क्रिसमस की तैयारी करते हैं।

[14] Khawpui Service, शहर में सेवा देने वाली; मिज़ोरम में वेश्याओं के लिए प्रचलित शब्द।

[15] मिज़ो समाज में पूरे नाम से किसी को पुकारना रूखा व्यवहार माना जाता है।

[16] चर्च के सदस्यों द्वारा चुना गया एक सम्मानित और जिम्मेदार व्यक्ति।

[17] विलियम शेक्सपीयर द्वारा लिखे गए कुल 154 सॉनेट में से 66वाँ सॉनेट।

2.7 लामखुआङ

(कटहल का पेड़)

- वान्नेइहत्लुआङ

उस कटहल के पेड़ की जिंदगी क्षीण हो चुके पेड़ से भी व्यर्थ थी। वह पेड़ वाई (बाहरी) मजदूरों व उनके सहायकों तथा प्रवासी युवकों की यातनाओं का शिकार था। उनकी यातनाओं के निशान उस कटहल के पेड़ पर भरे पड़े थे। उसकी शाखाओं के नीचे उसपर कुल्हाड़ी से वार किये गये थे। उसकी विशाल शाखाओं के बीच बेतरतीव ढंग से सीमेंट की थैली, इकलौता चप्पल, टूटा-फूटा कुदाल तथा पुरानी लुंगी लटकी पड़ी थी।

शाखाओं के छोर पर कुछ नयी कोमल पत्तियाँ और एकाध हरे पत्ते लगे थे। दूर ऊपर आकाश में अपने में ढ़ेर सारा पानी समाए बादल मंडराते हुए दिखाई पड़ रहे थे, जो मानो सूर्य की किरणों के अस्तित्व को ही गुम कर देने की क्षमता रखते थे। कटहल का वह पेड़ अपनी कोमल पत्तियों के अलावा अन्य सूखी और मुरझाई पत्तियों के साथ मौत से जूझता हुआ, अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष करता हुआ नज़र आ रहा था।

कटहल के उस पेड़ में कुछ ऊपर जाँघ जितनी चौड़ी शाखा पर कसकर रस्सी बाँधी गई थी। उस रस्सी के दूसरे छोर से तिरपाल बँधा था तथा उसके ठीक नीचे लाउडस्पीकर टाँगा गया था। उस लाउडस्पीकर के ठीक नीचे सामुदायिक कार्यक्रमों में इस्तेमाल होने वाली बेंचें क्रम से रखी हुई थीं। उन बेंचों पर हमारे आपके जैसे ही इस लोक के आम-इंसानों को आप एक-दूसरे से सटकर बैठा देख सकते हैं। यदि ध्यान से देखने का समय मिले तो आप देख सकेंगे कि उनमें आइज़ोल के प्रसिद्ध व्यक्ति भी हैं। उनसे परे अपनी नज़र बढ़ाने पर आप एक अत्यंत साधारण-से ताबूत को देख सकेंगे जिसपर फूल के कुछ गुच्छे रखे हैं। फोटोग्राफर के कंधे के बीच से आप उस ताबूत के पास बैठे मृतक के शोकाकुल परिवार के लोगों को देख सकेंगे। संभव है मृतक के परिवार के लोगों को आप ठीक से

पहचान न पाएँ। और, ताबूत के अंदर जो इंसान है, भले ही आप उसे न पहचानें मैं आपको सबकुछ बताऊँगा। आपको जानने की इच्छा न हो, तब भी मैं आपको बताऊँगा जरूर। वह मेरी प्रेमिका है, जिसे मैं बीस साल बाद भी नहीं भूला पाया। वह मेरी प्रेयसी है। अब मैं आपको बताऊँगा और आप निश्चित रूप से आश्चर्य में पड़ जाएँगे।

अभी ऐसा लग सकता है जैसे किसी को इस घटना के बारे में पता न होने के कारण और उसकी मृत्यु हो जाने के कारण मैं उसे अपनी प्रेमिका कह रहा हूँ। मगर असल बात तो यह है कि मैं एक ऐसा इंसान हूँ जिसे यह कहना अधिक शोभा देगा कि 'मैंने उसके पुआन के छोर तक को भी नहीं छुआ!' ऐसा होते हुए भी वह मेरी 'प्रेमिका' ही है। मैं आपको पूरी बात बताऊँगा तो आपको भी यह सब विचित्र मालूम पड़ेगा।

बीस साल पहले इस कटहल के पेड़ के पास एक खाली समतल मैदान हुआ करता था। इस पेड़ के अलावा इसके आसपास कोई और पेड़ नहीं था। बच्चे कटहल के इस पेड़ को गोल पोस्ट के एक खंभे के रूप में इस्तेमाल कर वहाँ फुटबॉल खेला करते थे। इसके ठीक सामने लगभग बीस हाथ की दूरी पर जलावन की लकड़ियों का एक ढेर था, जो दूसरी टीम के लिए गोल पोस्ट एक खंभे का काम करता था। उन लकड़ियों के पीछे मुर्गी के घर के ऊपर जो भी खाली अर-बोम (मुर्गियों को रखने के लिए बनाई जाने वाली बाँस की टोकरी) मिलता, उसे गोल पोस्ट के दूसरे खम्भे के रूप में इस्तेमाल कर लिया जाता। गोल पोस्ट के खंभे के रूप में बच्चे जहाँ अर-बोम रखते, उसी के ठीक सामने एक घर का दरवाज़ा था। तो घर में घुसने के लिए अर-बोम को बार-बार हटा दिया जाता और बच्चे बिना कुछ कहे उन्हें फिर सही जगह रख देते।

मैं उस घर के दरवाज़े से उतनी ही बार अंदर-बाहर हुआ हूँ, जितनी बार संभवतः उस घर का मालिक हुआ होगा। मैं वहाँ कई बार आता-जाता था। मैं वहाँ इसलिए नहीं

जाता था कि उनका घर मुझे बहुत अच्छा लगता था या उस घर की मालकिन और उसकी जवान बेटी की अच्छाई के कारण मुझे वहाँ अपनापन महसूस होता था, बल्कि इसलिए कि मैं उन चंद लोगों में से एक था जिसे यह मालूम था कि उनके कमरे के अंदर चारपाई के नीचे एक काला बक्सा है, जिसके ऊपर 'सिपाही-संख्या' और 'एल. एस. लुशाई' लिखा है और वे उसके अंदर हमेशा दस से ज्यादा किसी 'विशेष तरल पदार्थ' की बोतलें छिपाये रखते हैं। चूँकि शराब से मेरा विशेष लगाव था, इसलिए मैं वहाँ अक्सर बेझिझक आया-जाया करता था।

एल.एस.लुशाई उस घर के मालिक थे। फौज़ में भरती होने के बाद उन्होंने शादी की और उनकी बेटी केवल तीन साल की ही हुई थी कि मिज़ोरम में विद्रोह छिड़ गया। वे अपने राज्य एवं अपनी जाति की रक्षा के लिए फौज की नौकरी छोड़कर मिज़ो बागियों में शामिल हो कर भूमिगत हो गए और इसके बाद उनके बारे में कुछ पता नहीं चला। उन दिनों भारतीय फौज़ियों का डर बढ़ता जा रहा था। फौजी अक्सर किसी भी घर की तलाशी लिया करते थे। उन दिनों जहाँ एक तरफ घर में किसी भारतीय सिपाही की तस्वीर टाँगना सुरक्षित माना जाता था, वहीं उनके परिवार के लिए ऐसा करना खतरे से खाली नहीं था। तस्वीर टाँगना तो दूर की बात थी, उन्हें तो उनकी बची-खुची निशानियों को भी नष्ट करना पड़ा। उन्होंने उनकी सभी निशानियों को बक्से में बंद कर झाड़ुओं के झाड़ के नीचे जमीन में दफना दिया। जब राज्य में शांति कायम हुई, तब उन्होंने बक्से को निकाला। बक्से के अंदर चूहे ने अपना घर बना रखा था, अतः उन्हें सिवाय बक्से के और कुछ नसीब नहीं हुआ।

बक्से को साफ करके विधवा माँ-बेटी उसे किसी और चीज के लिए इस्तेमाल न करके अपनी आजीविका के लिए शराब छिपाने के लिए इस्तेमाल करने लगे। जब भी पुरानी यादें ज़हन में ताज़ा होतीं तो पि पारी (श्रीमती पारी) यह कहते न थकतीं कि

“उनकी छोटी-से-छोटी तस्वीर भी हमने नष्ट कर डाली- इस बात का मुझे बहुत पछतावा है।” भले ही मैं एल.एस. लुशाई को व्यक्तिगत रूप से नहीं जानता था, मगर उनकी बेटी की मुखाकृति और व्यक्तित्व को देखकर मुझे लगता है कि वे भी बड़े रूपवान रहे होंगे जिसकी लोग काफी तारीफ किया करते होंगे।

नवनवी एक सयानी और बेहद खूबसूरत लड़की थी। यदि वह अच्छे परिवार में पली-बढ़ी होती तो जरूर अपनी सुंदरता के लिए पूरे आइज़ोल में चर्चित होती। भले ही वह एक गरीब विधवा की बेटी थी मगर वह खुद को हमेशा व्यवस्थित और सँवार कर रखती। वह सर से लेकर पैर तक इतनी साफ और सुंदर थी कि उनके घर में आए युवकों की कल्पना के घोड़े को दौड़ाने और उनको लुभाने में वह सहज ही सक्षम थी। उनमें से कई युवक ऐसे भी थे जो शराब के नशे में बेशुध होकर उसे गले लगाने की इच्छा रखते थे। मगर नवनवी ऐसी-वैसी लड़की नहीं थी, जिसे एकान्त में यूँहीं गले लगा लिया जा सके। उससे मिलने कई युवक आया करते थे, मगर मानो वह उन सब से ऊब गई थी। उन शराबी युवकों के रहते वह अपने कमरे में अपने को बंद कर लेती और किताबें पढ़ने लगती। वह वैसी बिल्कुल नहीं थी, जैसा लोग उसे समझते थे।

दूसरी ओर, मैं ललदाईलोवा हूँ। मगर लोग मुझे दाईया कहकर ही पुकारते हैं। और अक्सर मुझसे कम उम्र वाले और मुझसे बड़े भी मुझे “प दाईया” कहा करते हैं। मेरे पिता आइज़ोल बाजार के प्रसिद्ध व्यापारी थे। अगर मैं उनका नाम बता दूँ तो आप सभी उन्हें पहचान जाएँगे। हम तीन भाई थे और हम तीनों ने व्यापार के बदले शराब को चुना। पिताजी के गुजर जाने के बाद हमने दुकान बेच दी और यूँहीं भटकते रहे। मेरे दोनों बड़े भाई शराब के कारण गुजर चुके हैं। अब बच गया बस मैं।

मैंने दोरपुई के स्कूल से पढ़ाई की, मगर पाठ्यपुस्तकों से ज्यादा मेरा लगाव काऊ-बॉय की किताबों से रहा। मेरा ज़्यादातर समय डस्टी फ़ॉग (अँग्रेजी उपन्यासकार जे. टी.

एडसन के उपन्यासों का प्रसिद्ध पात्र) और बोई चाकू (Bowie knife, एक विशेष चाकू जिसका इस्तेमाल शिकार के लिए करते हैं।) के साथ बीतता था। युवावस्था से ही मुझे जीन्स पैंट पहनकर थोड़े अलग ढंग से सजायी गई जीप में बैठकर बंदूक लिए शिकार पर निकलना सबसे ज़्यादा अच्छा लगता था। शिकार पर सफल होने पर बड़ा मज़ा आता था। मगर असफल होने पर कुत्ते का माँस पकाने और खाने में भी ज़्यादा मज़ा आता था। शुरू में मैं दोस्तों के साथ घुलने-मिलने के लिए ही पीता था। समय के साथ शराब मेरे लिए केवल दोस्ती बढ़ाने का साधन ही नहीं रहा, बल्कि यह मेरा भोजन, मेरा जीवन...संक्षेप में कहें तो मेरा रक्त बन गया है। इसीलिए केवल बीस-बाईस वर्ष की युवावस्था में ही मेरे चेहरे पर शराब के निशान साफ नज़र आने लगे थे। मैं अपनी उम्र से ज्यादा बड़ा दिखता था। हर किसी को लगता था कि मेरी उम्र तीस से ज़्यादा है। मेरे शरीर में ताकत नहीं थी और मुझे लड़कियों की तरफ देखने का भी मन नहीं होता था। इसलिए नवनवी को लुभाने की कोशिश करने की बजाय मैं पि पारी के साथ चूल्हे के पास बैठकर उनकी जवानी की बातें सुनता और उनसे बातचीत करता था। जिस रात मैं शराब ज्यादा पी लेता, तो मैं उनके यहाँ ही रुक जाया करता। ऐसी रातों में भी नवनवी से संबंध बनाने की तमन्ना मेरे मन में कभी नहीं जगी । अन्य लोग जो वहाँ आया करते थे वे मेरे बारे में यही सोचते थे कि मैं अक्सर इसी घर में पड़ा रहता हूँ, लगभग एक आवारा कुत्ते की तरह। चूँकि मैं कद में छोटा हूँ, इसीलिए वहाँ आनेवाले युवक जब मुझे वहाँ नहीं देखते तो मेरा मज़ाक उड़ाते हुए कहते- “ प दाईया कहाँ हैं? स्टूल को जरा पलट कर देखो तो कहीं वे उसके नीचे तो नहीं हैं।” ऐसा कहकर मज़ाक उड़ाने के अलावा मैं उनके लिए ईर्ष्या का पात्र नहीं था, विशेषकर नवनवी को लेकर।

मगर आश्चर्य की बात यह हुई कि मुझ जैसे व्यक्ति, जिसे दिन और रात का होश न रहता था, से नवनवी को प्यार हो गया। मुझे बहुत आश्चर्य हुआ। मैं रात को जागते हुए

अक्सर इस बारे में सोचा करता। मैंने अपनी सारी सम्पत्ति बेच दी थी, चेहरे और डीलडौल में भी मेरे पास अच्छा कहने लायक कुछ नहीं था। मेरे पास अच्छे भविष्य की भी कोई उम्मीद न थी। ऐसी हालत में मुझ जैसे इंसान से प्यार करने का कोई कारण ही नहीं था। मुझे ऐसा लगता है कि उनके घर में पिता समान कोई पुरुष नहीं था और उस विधवा माँ-बेटी को सुरक्षा और स्थायित्व की जरूरत महसूस हुई होगी। शायद नवनवी ने अपने अंदर पनप रहे इसी डर के चलते मेरी तरफ कदम बढ़ाने की पहल की थी, क्योंकि मैं उन दोनों का सबसे करीबी था। मगर तब भी यह सही नहीं था। मैं उसके लायक बिल्कुल नहीं था। मैं शादी करने के लायक ही नहीं था।

शुरू-शुरू में मुझे यह सब अच्छा नहीं लगा। यह स्थिति मेरे शराब के स्वाद को बिगाड़ रही था। मैं इसे अनदेखा करने की जितनी कोशिश करता, समय के साथ-साथ यह उतना ही मुश्किल होता चला गया। मैं भाग जाना चाहता था। मगर कहाँ भागूँ, समझ में नहीं आ रहा था। मैं बहुत परेशान हो गया। मैं उसे अनदेखा करने में लगा रहता, मगर जब कोई युवक उसे हँसी-मज़ाक में गले लगाता तो मुझे बड़ा अटपटा महसूस होता। ऐसा मैं पहले कभी महसूस नहीं करता था। अगर यह प्यार नहीं भी था, तब भी ईर्ष्या तो अवश्य थी। मैं यह सोचने लगा कि “क्या मैं मर्द हूँ या महज एक शराब की बोतल? अगर मैं मर्द हूँ तो मेरे जीवन का कोई मतलब होना चाहिए।”

एक रात जैसे ही मैं उनके घर पहुँचा तो पि पारी को एक जुआलकौ (ऐसा व्यक्ति जिसे बुरी खबर देने के लिए दूसरे गाँव भेजा जाता है।) ने बुलाया। जुआलकौ ने सूचना दी कि पड़ोस के गाँव में उनके किसी करीबी रिश्तेदार की मौत हो गई है। “ओई, ओई, ओई! वह तो मेरा इकलौता भाई था। मेरे पिता भी अब नहीं हैं तो मुझे वहाँ जाना होगा। प दाई आप मेरी बेटी के साथ घर पर ही रहो। आँधी भी आने वाली है तो मुझे नहीं लगता कोई भी ग्राहक आएगा। वैसे भी आज मेरे पास कुछ भी नहीं है...” ऐसा कहते हुई उन्होंने अपने

भाई को ढकने के लिए युवकों द्वारा रखा पुआन लिया और चादर ओढ़कर जल्दी-जल्दी निकल गई। नवनवी और मैं वहीं बैठे रहे।

आँधी चलने लगी। नवनवी मेरे करीब आ कर बैठ गई। मुझे आँधी से डर लग रहा था या नवनवी से, पता नहीं। मैं खड़ा हुआ, नवनवी भी खड़ी हो गई। अपनी शर्म को छुपाने के लिए मैंने दरवाज़ा बंद कर दिया। नवनवी मेरे पास आ गई। मैंने फिर दरवाज़ा खोला और बाहर निकल गया। मैंने अर-बोम को उठाकर सूखी जगह पर रख दिया। नवनवी बाहर आ गई। मैं कटहल के घने पेड़ के नीचे चला गया। नवनवी भी मेरे पीछे-पीछे आ गई। हम दोनों एक दूसरे की ओर देखते हुए वहीं खड़े रहे। अचानक बिजली चमकी, उसकी रोशनी में वाह! वह कितनी खूबसूरत लग रही थी! तभी बिजली भी कट गई। दुनिया में अंधेरा छा गया। बारिश और आँधी और तेज़ हो गई। नवनवी ने मुझे कसकर गले लगा लिया। और मैं मर्द बन गया।

उस रात बारिश और आँधी के बीच उस घने कटहल के पेड़ के नीचे जो कुछ हुआ, उससे दुनिया अनजान है। केवल आँधी, बारिश और कटहल के पेड़ को ही पता है।

पता नहीं मुझे क्या हो गया था। पि पारी का घर मुझे पुकारता था मगर मुझे अब वहाँ मन नहीं लगता था। मैं कहीं और अपनी खुशी तलाश करने लगा। कुछ दिनों बाद नवनवी ने मुझे खोज निकाला और मुझे बताया कि उसे लगता है कि वह पेट से है। शराब के नशे में धुत्त मैं उसपर हँसने लगा। वह रोने लगी। निस्सहाय होकर उसने कहा कि “यह बच्चा बिना बाप के नहीं रहेगा।”

“कैसे ?”

“वह सब मैं खुद सोच लूँगी।”

बाद में मुझे कहीं से पता चला कि नवनवी ने परेशान होकर दूसरा प्रेमी खोज लिया है। उसने उनके घर आने वाले युवकों में से एक ऐसे युवक को चुना था जो उनसब में सबसे अमीर था। उनका बच्चा भी हुआ और मुझे यह भी पता चला कि दोनों पति-पत्नी की तरह रहने लगे थे। इसके अलावा मुझे कुछ पता नहीं।

सचमुच मुझे इसके अलावा कुछ पता नहीं! इन सबके बाद मेरा जीवन और भी अव्यवस्थित होता चला गया। जब भी मैं उन दिनों को पीछे मुड़कर देखता हूँ, तो पाता हूँ कि उस दिन से लेकर आजतक का मेरा जीवन बच्चे के बुरे सपने से भी बदतर है। मैं हमेशा शराब के नशे में धुत्त रहता। मैंने कई शादियाँ भी कीं। मगर किसी ने मुझे दूसरे मर्द के लिए छोड़ दिया, किसी को मैंने दूसरी औरत के लिए बदल दिया। मैं वह पुराना 'प दाईया' न रहा। मेरे परिजनों ने मुझे 'मस्टर-रोल' की नौकरी दिलाई, फिर मैं अलग-अलग गाँवों में भटकता रहा। मैंने नए सिरे से जिंदगी शुरू करने की सोची, मगर शराब की आदत के कारण मुझे नौकरी से निकाल दिया गया। मेरे लिए आइज़ोल में रहने के लिए अब कोई घर-बार नहीं था। सभी रिश्तेदार गुजर चुके थे। मैं यहाँ-वहाँ भटकता रहा। मैंने कभी-कभी शराब भी बेची, जिसके कारण मुझे कई बार घर और गाँव से भी निकाला गया। मेरी एक बेटी हुई जो अपनी माँ के साथ रहती थी। आखिर में बीस साल गुजर जाने के बाद अब मैं किसी दूसरे गाँव से आइज़ोल तक सूअर लाने का काम कर रहा हूँ।

मगर शराब के नशे की बुरी से बुरी हालत में भी मैं नवनवी को कभी भुला नहीं पाया। वह हमेशा मेरे ज़हन में बसी रही। हवा के झोंके से हिल रहे कटहल के पेड़ के नीचे नवनवी का वह चेहरा मुझे हमेशा सुकून देता है। सुख-दुःख और निराशा की घड़ी में, मुझे जहाँ तक याद है, मैं उसके बिना एक रात भी नहीं सोया। उसे इतना चाहने के बावजूद मैं उसपर क्यों हँसा, जब कि वह मेरे सामने गिड़गिड़ा रही थी? नवनवी से शादी करने के

लायक मैं बिल्कुल नहीं था। जैसे लोग लसी[1] के वश में आ जाते हैं, वैसे ही मैं नवनवी के प्यार के वश में आ गया था।

कल शाम में चम्फाई से सूअर भरकर एक ट्रक लेकर आया था। सूअरों का मालिक चम्फाई का एक रईस था, जो अपने आसपास के गाँवों से सूअरों को खरीदता था और एक ट्रिप भर हो जाने पर आइज़ोल भेजता था। रास्ते भर उन सुअरों की रखवाली करना मेरा काम था। मैं यह काम दस बार कर चुका हूँ। वैसे तो मुझे इसमें कोई फायदा नहीं हुआ। मगर काम करना मेरे शरीर के लिए फायदेमंद रहा और मैं शराब भी कम पीने लगा। सूअरों के बीच रहना रास आ रहा था। इंसानों से ज्यादा वक्त मैं सूअरों के बीच रहने लगा था और मुझे दोस्तों की भी जरूरत महसूस नहीं होती थी।

पिछली रात मैं अन्य रातों की तुलना में ज़्यादा व्यस्त रहा। सूअरों के झुंड में एक ऐसा सूअर था, जिसे अन्य सूअर परेशान कर रहे थे। मुझे आशंका हुई कि वे उसे काटकर घायल कर सकते हैं, तो उस सूअर की रखवाली करते हुए मैं ट्रक के पीछे सूअरों के बीच रात-भर खड़ा रहा। हल्की बारिश हो रही थी और सूअरों के मल से मैं लथपथ हो गया। मैं कितना गंदा और घिनौना हो गया था, मुझे उसका अंदाज़ा भी नहीं।

सुबह मैं सुअरों के बीच बैठा और मैंने सोने की कोशिश की। पर मैं सो न सका, क्योंकि मेरे मन की आँखों से मुझे नवनवी दिखाई पड़ने लगी। मैंने अपने झोले से शराब निकाल कर पीने की कोशिश की, मगर इस डर से कि कहीं शराब के नशे में नवनवी का चेहरा धुँधला न पड़ जाए, मैं पीने की हिम्मत न जुटा पाया। मुझे महसूस हुआ की होशोहवाश में मुझे उसका चेहरा काफी साफ नजर आता है। इसलिए मैंने इस बार शराब के बदले नवनवी को चुना। मैंने मन ही मन सोचा की भले ही वह किसी और की पत्नी क्यों

न हो चुकी हो, इस बार आइज़ोल पहुँचकर मैं नवनवी को खोज निकालूँगा और उसका चेहरा एक बार देखूँगा।

तड़के ही हम आइज़ोल पहुँच गए। हमने सूअरों को सुअरबाड़े में रखा। उनमें से एक सूअर की टाँग टूट गई थी तो मैं उसकी देखभाल में जुट गया। जब तक मैंने उन्हें चारा दिया, तब तक लगभग ग्यारह बजने वाला था। अभी तक मैंने सुबह का खाना भी नहीं खाया था।

मेरी कमर में दर्द हो रहा था। सिगरेट फूँकते हुए मैं आराम से बैठ गया। सुअरों के मल-मूत्र से लथपथ होने के कारण मैं घर के अंदर न घुसकर आँगन में ही बैठा था। मेरे गले से अभी-भी रस्सी लटक रही थी, जिसका इस्तेमाल मैं जिद्दी सूअरों को बाँधने के लिए करता था। मेरे बगल में एक आदमी, जो सूअर खरीदने आया था, खड़ा होकर 'वाङ्लाईनी' अखबार पढ़ रहा था। मैं भी वहीं बैठे-बैठे गर्दन उठाए अखबार की ओर यूँही ताक रहा था। मैंने अचानक उस पर यह लिखा पाया कि: "ललपिआननवी (उर्फ नवनवी) को आज दफ़नाया जाएगा।" मैंने उस आदमी से अखबार छीन लिया और फिर से ध्यान से पढ़ा। नवनवी! यह मेरी नवनवी है।

मैं अचानक अपनी सुध-बुध खो बैठा। मैंने अपने झोले को झट से उतार फेंका और लड़खड़ाता हुआ उसके घर की तरफ दौड़ा जहाँ उसे दफ़नाने से पूर्व का कार्यक्रम रखा गया था। जब मैं वहाँ पहुँचा तो वहाँ मेरी जान-पहचान का कोई नहीं था। था तो बस वह कटहल का पेड़...

अगर वह कटहल का पेड़ न होता तो मुझे पता ही न चलता कि वह नवनवी का वही पुराना घर है। उनका आँगन, कटहल के पास का मैदान जहाँ बच्चे खेला-कूदा करते थे, वे सब पास में बने मकान के मलबे के नीचे दफन हो गए थे। अपनी पुरानी जमीन में ही उन्होंने नया मकान बनवा लिया था, जिसका दरवाजा अब दूसरी ओर था। लोगों के लिए

मैं अजनबी था। भले ही मैं लोगों को नहीं पहचानता था, मगर कहाँ है वह दरवाजा, जलाऊ लकड़ियों का ढेर, अर-बोम, एल. एस. लुशाई का बक्सा? इनमें से कुछ भी तो वहाँ नहीं था। औए जिसे मैं देखना चाहता था, वह ताबूत में बंद पड़ी थी।

जब तस्वीरें ली जा रही थीं, तब मेरे पास बैठे लोग आपस में कुछ फुसफुसा रहे थे-

"अब लोग चैन की साँस ले रहे होंगे।"

"विडंबना की बात यह है कि इनका परिवार उपद्रवी था..."

"पि पारी के गुजरने के बाद की मुझे ज्यादा जानकारी नहीं..."

"नवनवी को सारी संपत्ति मिली। अब तो इन्होंने लगभग सभी जमीनें बेच दी हैं। इसके दो बच्चे हैं। जो दो बच्चे वहाँ खड़े हैं, वे ही अब परिवार में बचे हैं।"

"अब इनके साथ कौन रहेगा?"

"अब से तो वे अच्छे से रह पाएँगे। नवनवी का बेटा रिनमोइया जो है वह दूसरे युवकों की तरह नहीं है। हमारे क्षेत्र के वाइ. एम. ए. का वह सबसे सक्रिय सदस्य है। वह तो बस अपनी माँ के कारण ही बदनाम था।"

"और रिनमोइया का पिता...?"

"बहुत साल पहले शराब के कारण उसके पिता की मौत हो गई थी। नवनवी शराब के अलावा जो भी बेच सकती थी उसने बेचा, जिसके कारण देखो कितनी कम उम्र में वह चल बसी।"

दोनों कुछ देर के लिए चुप रहे। मैं उनकी बातें सुनने के लिए चौकस रहा।

“क्या यह पक्की बात है?... एच.आई.वी वाली बात?

“हाँ पक्की है। अस्पताल से उसे अच्छी तरह प्लास्टिक में लपेटकर भेजा गया है...आज तो आँधी-तूफान अवश्य चलेगी। इसे बहाना बनाकर अगर हम उसे जल्दी से जल्दी दफनाने ले जाएँ तो अच्छा रहेगा...”

मैं अब आगे कुछ नहीं सुनना चाहता था। ताबूत के पीछे नवनवी के दोनों बच्चे खड़े थे, उनकी आँखों से वेदना के आँसू बरस रहे थे। दोनों को सांत्वना देने वाला कोई नहीं था। उन दोनों में जो छोटी थी, वह लगभग 16 वर्ष की थी। वह हूबहू अपनी माँ की तरह दिख रही थी, मानो अपनी माँ का चेहरा लेकर ही पैदा हुई हो। उसे देखकर मुझे वह दिन याद आया जब मैं नवनवी से पहली बार मिला था। मेरे तो रोंगटे ही खड़े हो गए। उसके बगल में उसका भैया रिनमोइया खड़ा था, जो लगभग 20 साल का नौजवान था। उसे देखते ही मैं चौंक गया। मैं नियमित रूप से शिकार करता हूँ। भले ही मेरे शरीर के कई अंग खराब क्यों न हों, मेरी नज़रें काफी ठीक-ठाक हैं। दूर से ही सही मगर पहली बार देखने पर ही मैं पहचान गया कि रिनमोइया मेरा ही बेटा है।

मन हुआ कि रो रहे रिनमोइया के पास बढ़कर उसे गले लगाकर उसे ‘मेरा बेटा’ कहकर पुकारूँ। मगर मैंने खुद को देखा। सूअर के मल से सना हुआ मैं दूर लाचार खड़ा था। अगर मैं वहाँ गया तो लोग मुझे पागल समझेंगे। समझ नहीं आ रहा था कि क्या करूँ। उसी जगह मैं निश्चल खड़ा रहा और बुरी तरह काँपने लगा। मैंने फिर कटहल के पेड़ को देखा। मैं उसी को तो पहचानता था! मैं अब उसी का कहा मानूँगा। भले ही वह पेड़ अपनी जिंदगी के आखिरी पलों के साथ जूझ रहा था, मगर वह अब भी कितना गंभीर था!

मैं रिनमोइया को क्यों न बताऊँ कि वह मेरा बेटा है? हममें से कोई भी यहाँ सच्चा धार्मिक नहीं है...मैं पाप के द्वारा तबाह कर दिए जाने के बावजूद जिंदा हूँ, वहीं नवनवी

को उसके पापों ने परास्त कर दिया। लेकिन यह समाज हमारे बारे में सोचता है, वही सच नहीं है। किस्मत ने हमारे लिए जो रास्ता चुना, वह पहले से ही उलझा हुआ और उतार-चढ़ाव से भरा रहा। लोगों की घृणा का पात्र होने पर भी हम पवित्र हैं! लेकिन यह बात इस दुनिया की समझ से परे है। ये बातें कटहल के पेड़ को पता है, इसलिए तो वह लोगों की अवहेलना सहकर भी हमारे प्रति सहानुभूति प्रकट करने के लिए विषम परिस्थिति में भी डटकर खड़ा है। मैंने मन में ठान लिया कि मुझे जाकर रिनमोइया को सच बता देना चाहिए, चाहे लोग मेरे बारे में जो भी सोचें। इस पेड़ के जिंदा रहते रिनमोइया को सच्चाई मालूम होनी चाहिए।

तस्वीरें ले ली गई थीं। लोग कब्र तक ले जाने के लिए ताबूत उठाने वाले थे। ऊपर आसमान में काले बादल मंडरा रहे थे, तभी एकाएक बिजली गिरी! पूर्व दिशा से हवा का झोंका चलने लगा और लोग एकाएक उठ खड़े हुए। तिरपाल इधर-उधर हिलने लगी। कटहल के पेड़ से दरार पड़ने की आवाज आई। मैं ताबूत की ओर बढ़ा। उधर लोग मेरी दिशा में दौड़े चले आ रहे थे। इसी भगदड़ और धक्का-मुक्की में मैं गिर पड़ा।

युवाओं के एक समूह ने ताबूत को घर के अंदर सुरक्षित जगह पर रख दिया। लोगों में कई ऐसे थे जो चाहते थे कि बारिश होने के बावजूद ताबूत को जल्दी-से-जल्दी कब्र तक ले जाया जाए और कई ऐसे थे जो ऐसा नहीं चाहते थे। वहीं बाहर तिरपाल के ज़ोर-ज़ोर से हिलने के कारण पैदा हुए तनाव से कटहल का पेड़ लगभग गिरने ही वाला था। युवकों के समूह ने उसे उसकी छोर से पकड़े रखा। तभी गरज के साथ बारिश शुरू हो गई।

“देखो, वहाँ से हट जाओ”

“रस्सी को पेड़ से खोल दो न!”

“इस हालत में कौन पेड़ पर चढ़ने की हिम्मत करेगा?”

एक बार फिर बड़ी तेज़ हवा चली, संसार में और अंधेरा छा गया, लोगों की घबराहट और बढ़ गयी। पेड़ की शाखाओं पर टंगी चीज़े कटी पतंग की तरह आसमान में उड़ने लगीं। कटहल का पेड़ खड़ा रहने और जिंदा रहने के लिए अपनी पूरी ताकत लगाता रहा। मैं कटहल के उस पेड़ का इकलौता गवाह और समर्थक था। मगर उसकी ताकत कम पड़ गई। एक बार फिर तिरपाल जोर से हिला, तो पेड़ में दरार पड़ने की बड़ी ज़ोर की आवाज़ आई और बिजली की चमक के बीच मुझे नवनवी का चेहरा... नहीं नहीं..., कटहल का पेड़... टूटता, गिरता दिखा। मुझे लगा जैसे मैं भी खत्म हो गया। मेरे पास बेटा न रहा।

....

"जाग जाओ!..." मैंने अपने-आप से कहा- "भयानक बिजली की चमक, बादलों की गड़गड़ाहट, तूफान, बारिश मेरे सामने आओ और मुझ पर अपना अभिशाप भरा कटोरा उँड़ेल दो, मैं उन सब को सहन करूँगा। अपने नर्क की ज्वाला को और तेज करो, सभी कष्टों और यातनाओं को जमा कर मुझ अकेले को सबकुछ सहने दो।"

"अरे! तुम यहाँ मूर्ति की तरह क्या खड़े हो? तुम बर्मा के हो ना? यहाँ नाटक चल रहा है क्या जो मज़े ले रहे हो? चलो मदद करो।"

मैंने कोई जवाब नहीं दिया, बल्कि उसके बदले उसे ज़ोर से एक मुक्का मारा।

....

जब मुझे होश आया तो मैं आइज़ोल पुलिस थाने में था। मेरे पूरे बदन में न केवल दर्द हो रहा था, बल्कि पूरा बदन सूजा हुआ और खून से लथपथ था। अंदर के कमरे से

खाकी वर्दी वाले ने मुझे जगाया। मैं मुश्किल से चल पा रहा था। वे आपस में बातें कर रहे थे।

“...मुझे नहीं लगता कि वह नशे में था। वह बात करने लायक भी नहीं है...”

“वह पागल है। उसे पूरे दिन थाने में बंद क्यों रखा? उसे छोड़ दो...क्या उसके पास कोई सामान था?”

“बस एक रस्सी है जिससे उसे बांधकर लाया गया था।”

“फेंक दो, कहीं वह रस्सी से लटक के खुदखुशी न कर ले!”

मैंने धीमे-धीमे कदम बढ़ाते हुए पुलिस थाने और मुख्य सड़क के बीच का रास्ता तय किया। दोरपुई में भीड़ के बीच मैं अपने पुराने घर को आँसुओं से तर आँखों से देखता रहा। उस घर का मालिक कौन है मैं नहीं जानता, न ही वहाँ के लोग मुझे पहचानते हैं। वहाँ के किसी घर ने मुझे नहीं बुलाया। मैं बाईं ओर मुड़ा और सड़क पार करके सड़क के किनारे खड़ी टैक्सियों के पास पहुँचा। तभी मुझे एकाएक किसी गीत मंडली का मधुर गीत सुनाई दिया :

एक सुनहरी दुनिया है,
मुक्त लोगों का अद्‌भुत संसार
जो बेहद सुंदर और प्यारा है
काले-घने बादलों के उस पार

मैंने महसूस किया कि आवाज़ दोरपुई गिरजाघर से आ रही है। बचपन में मैं भी इसकी सभा में आया करता था।

“कितना मधुर है यह संगीत! कौन हैं ये लोग?”

“स्थानीय गीत मंडली। ये लोग रियाज़ कर रहे हैं।”

मैं उनकी तरफ बढ़ा। “काश! सामूहिक भोज भी होता...” मैं धीमे-से बुदबुदाया।

वे मुझपर हँसे। मुझे सुनाई दिया, पर फर्क नहीं पड़ा।

गिरजाघर के अंदर किसी ने मेरी बाहें थामकर मुझे रोका। उसने बड़े आश्चर्य से मुझे देखा।

“तुम्हें क्या चाहिए?”

“आपलोग कितना मधुर गा रहे हैं! गाने ने मेरा दिल जीत लिया।”

सभी चुप होकर मुझे देखते रहे। “बेचारा! तुम अपने पापों का प्रायश्चित करना चाहते हो न?”

“हाँ चाहता हूँ... मगर मुमकिन नहीं है।”

“किसने कहा मुमकिन नहीं है?”

“कटहल के पेड़ ने...”

संदर्भ

---

[1] मिज़ो लोककथाओं में माना जाता है कि वास्तविक दुनिया से परे एक अलग और अद्भुत दुनिया होती है जिसमें 'लसी' रहती हैं, जो बहुत रूपवती होती हैं तथा वे अपनी इच्छा से किसी भी युवक के सामने प्रकट होकर उन्हें आकर्षित करती हैं।

2.8 थ्ललेर पङपार

(रेगिस्तान का फूल)

- ललरममोया ङेन्ते

(1)

सभी को सुंदर और अच्छी चीजों की चाह होती है, मगर अक्सर हमें सुंदर और अच्छी चीजों की पहचान नहीं होती। देखने वाले की नजर में अगर सुंदर न हो, तो दुनिया का सबसे सुंदर फूल भी नज़रअंदाज़ कर दिया जाता है। और हम अक्सर ऐसी चीजों को, उनकी सुंदरता और अपनी चाह के कारण, चुन लेते हैं, जो हम जानते हैं कि हमारे लिए ठीक नहीं है। इसी तरह रेगिस्तान का फूल भी अधिकांश मनुष्यों की दृष्टि से परे अपने पूरे वैभव के साथ खिलता है। उसके पास रहने वाले, और उसकी सुंदरता की कद्र करने वाले व उसके महत्व को जानने वाले उसे सराहने से नहीं चूकते। मगर, अधिकांश लोग उसे नज़रअंदाज़ कर उसके पास से यूँहीं गुजर जाते हैं।

ह्मीङा तीस से अधिक उम्र का एक प्रौढ़ अविवाहित युवक था, जो इंजीनियर के दफ्तर में अलग कमरे में बैठने का हकदार था। मगर शादी करना तो दूर वह लड़कियों की ओर खास ध्यान भी नहीं देता था। वह अपनी जिम्मेदारियों के प्रति ईमानदार था और अपने काम को पूरी लगन से करता था। अपने काम के प्रति ऐसे समर्पण के कारण वह सामाजिक गतिविधियों और चर्च के कार्यक्रमों में ज़्यादा शामिल नहीं हो पाता था। मगर अपने काम से छुट्टी लिए बिना वह समय निकालकर मित्थी लुमेन[1], जीङकार थ्लान लइह[2], मरीजों से मिलने और ह्नतलाङ[3] जैसे कार्यों में ज़रूर शामिल होता। परिवार में किसी करीबी के मरने या कोई बहुत जरूरी काम होने पर ही वह छुट्टी लेता था। उसे पता

था कि इन्हीं कारणों से लोग उसे 'पागल, काम के नशे में धुत्त, मूर्ख, गँवार' कहते थे, मगर ह्मीङ्ग अच्छी तरह जानता था कि यह मूर्खता या पागलपन नहीं है। वह इन बातों पर ध्यान ही नहीं देता था।

उसका दफ्तर काफी बड़ा था और उसमें ढेर सारे कर्मचारी थे, जिनमें काफी संख्या में अविवाहित युवक और युवतियाँ भी थीं। कुछ ही समय में वह उस ऑफिस का मुख्य इंजीनियर बनने वाला था शायद इसलिए कई लड़कियों ने उसमें दिलचस्पी दिखाई, जिनमें कुछ अमीर लोगों की बेटियाँ भी शामिल थीं। मगर ह्मीङ्ग ने उनकी तरफ बिल्कुल ध्यान नहीं दिया। ह्मीङ्ग को क्या सचमुच लड़कियों में दिलचस्पी नहीं? वह उनकी तरफ नज़र तक नहीं डालता था। जब लड़कियाँ किसी उम्मीद में उसके करीब आतीं तो वह चिढ़ने-सा लगता। उसके काम में बाधा डालते हुए जब वे उसके कमरे में आतीं और उसके बगल में लापरवाही से बैठ जातीं तो उसे बहुत गुस्सा आता।

हालाँकि वह अपने साथ काम करने वाली लड़कियों से परेशान था, जो उससे उम्मीद लगाए बैठी थीं, मगर उसी के ऑफिस में काम करने वाली एक लड़की पुई ने उसका ध्यान अपनी ओर खींचा। पुई लगभग बाईस वर्ष की काफी शांत स्वभाव वाली, शर्मीली-सी दिखने वाली और दोस्तों के बीच भी कम बोलने वाली लड़की थी। हालाँकि ह्मीङ्ग को उससे प्यार नहीं हुआ था, मगर उसके प्रति वह आकर्षित जरूर था। दूसरों की तुलना में वह उसे कुछ ज़्यादा बेहतर भी नहीं लगी और न ही वह बहुत खूबसूरत ही थी। मगर उसके व्यक्तित्व ने उसे बहुत आकर्षित किया, भले ही वह उसकी ओर ध्यान देती न दिखे।

पुई उस ऑफिस की टाइपिस्ट थी इसीलिए वह कहीं और ध्यान दिए बिना अपने मेज पर चुपचाप अपना काम करती थी। उसके अन्य सहकर्मी इधर-उधर घूमते और तरह-

तरह के अन्य कामों में व्यस्त रहते, मगर वह अपनी कुर्सी से न के बराबर उठती थी। ऑफिस का समय समाप्त होने पर वह अपना बैग उठती और चुपचाप निकल जाती। उसी तरह अगले दिन समय पर फिर ऑफिस पहुँचती। यही उसके हर दिन का नियम था। वह किसी से ज्यादा मिलती-जुलती न थी, बस अपने में ही मस्त रहती थी।

पुई दुबली-पतली थी और उसके बाल लंबे थे। वह बहुत सादे कपड़े पहनती और ज्यादा मेक-अप भी नहीं करती थी। वह गोरी थी और उसकी साफ आँखें थीं। उसके व्यक्तित्व में एक शर्मिलापन और संकोच था, जो उसके स्त्रीत्व को मानो और बढ़ा देता था। यकीनन उसकी यही विशेषता उसके चाहने वालों को उसकी ओर और ज्यादा आकर्षित करती थी।

ह्लीङा को उससे बात करने में बहुत दिक्कत महसूस होती थी। एक तो वह लड़कियों से बात करने के मामले में अनाड़ी था, उस पर से पुई भी चंचल स्वभाव की न थी। जब कभी वह कोई बहाना बनाकर उसके पास जाता भी तब भी वे एक-दूसरे से आँखें नहीं मिला पाते। हालाँकि वह खुद को अन्य लड़कियों के सामने पूरी तरह संयम में रख पाता था मगर पुई के मामले में खुद पर नियंत्रण रखते हुए सख्त दिखना उसे मुश्किल लगता। मगर वह समझ नहीं पा रहा था कि शुरुआत कैसे करे।

उसे अंदर ही अंदर बहुत आश्चर्य होता था कि ऐसी सुंदर और प्यारी लड़की होते हुए भी उसने अभी तक शादी नहीं की। उसके बारे में वह कुछ भी नहीं जानता था और न किसी से पूछने की उसकी हिम्मत थी। वह यह भी नहीं जानता था कि उसका घर कहाँ है और उसके परिवार वाले कौन हैं। वह जानने की कोशिश करता रहा, मगर चुपके-चुपके उसे अंदर-ही-अंदर डर था कि कहीं उसके सहकर्मियों को पता न चल जाए कि वह उनमें से किसी एक को पसंद करता है और यदि पुई ने उसे पसंद न किया तो उसकी शर्मिंदगी दुगुनी हो जाएगी, इसलिए सावधानी बरतने की बहुत जरूरत थी।

एक दिन ऐसा हुआ कि दफ्तर समाप्त होते ही बहुत तेज़ बारिश होने लगी। सभी अपनी-अपनी गाड़ी और टैक्सी से घर लौट गए। ऑफिस के ढेर सारे अधूरे कामों के कारण ह्मीङ्ग बारिश से अंजान उन्हें पूरा करने में व्यस्त था। काफी वक्त बीतने के बाद ह्मीङ्ग जब घर लौटने के लिए दफ्तर से निकला तो उसने बरामदे में ऑफिस के बूढ़े चपरासी और पुई को देखा। पुई को वहाँ देखकर वह कुछ चौंका। उसके मन में कई तरह के विचार आने लगे। उसे लगा भगवान ने उन दोनों को मिलने का अच्छा मौका दिया है। वह मन ही मन बहुत खुश था और घबरा भी रहा था।

उसने जब उन दोनों को अपने साथ गाड़ी से चलने के लिए बुलाया तो, शायद उसके ऊँचे पद के कारण, दोनों उसके साथ जाने से कतराते रहे। उसके बहुत कहने और उसपर से लगातार बारिश के कारण वह बूढ़ा चपरासी खुशी-खुशी मान गया। मगर पुई अभी भी संकोच महसूस कर रही थी। उसके चहरे से लग रहा था कि वह बारिश के रुकने का इंतज़ार कर खुद लौटना चाहती थी भले ही रात क्यों न हो जाए। ह्मीङ्ग के कई बार अनुरोध करने के बाद और उस बूढ़े चपरासी की सुविधा के लिए वह अंततः मान गई।

उस बूढ़े आदमी को उन्होंने पहले घर छोड़ा, फिर दोनों पुई के घर की ओर बढ़े। ह्मीङ्ग अपने बगल में चुपचाप बैठी पुई को चुपके-चुपके तिरछी निगाहों से रह-रहकर देखता मगर वह तो बस सीधा आगे देख रही थी। उसके चेहरे से लग रहा था कि वह उसकी ओर ध्यान नहीं दे रही थी। ह्मीङ्ग ऑफिस के कामों के बारे में बात करता रहा। उसे अपने काम के बारे में बातें करना बहुत अच्छा लगता था। वह अपने काम के बारे में कभी भी कितनी भी देर बात कर सकता था जब तक कोई सुनने को इच्छुक हो। पुई चुपचाप उसकी बातें सुनती रही, मगर वह न तो उसकी तरफ मुड़ी और न अपनी तरफ से कुछ भी कहा।

ऐसी बात नहीं थी कि पुई को ह्मीङ्ग से नफरत थी। वह तो किसी भी पुरुष से मेलजोल नहीं बढ़ाना चाहती थी। किसी पुरुष के साथ घर लौटने की बजाय वह अकेले ही

लौटना पसंद करती थी। महिला साथियों के न होने पर उसे बूढ़े आदमियों से दोस्ती करना अच्छा लगता था। उनके भी न होने पर उसे अकेले रहना ही अच्छा लगता था। पुई की ऐसी मनःस्थिति किसी विशेष कारण से हुई थी, जिसकी चर्चा हम आगे करेंगे।

उस बूढ़े चपरासी को छोड़ने के कारण ही उन्होंने लंबा रास्ता तय किया था। वैसे तो पुई का घर उनके दफ्तर से ज्यादा दूर न था, केवल आधे मील की दूरी पर था। ह्मीङ्ग के घर का रास्ता भी वही था। लेकिन यह बस ही संयोग की बात थी कि वे वहाँ कभी एक दूसरे से नहीं मिले।

अपने घर के सामने पहुँचने से पहले ही पुई ने ह्मीङ्ग को गाड़ी रोकने को कहा। ह्मीङ्ग के पूछने पर भी कि उसका घर कौन-सा है, पुई ने जवाब नहीं दिया। वह गाड़ी से उतरी, उसने धीमी-आवाज़ में ह्मीङ्ग को धन्यवाद दिया, और चली गई। उसे जाते हुए देखते रहना ह्मीङ्ग को सही नहीं लगा। वह आगे बढ़ गया। गाड़ी के शीशे से वह उसे रह-रहकर देखता, पुई उसे देख भी नहीं रही थी, मगर उसे वह और अधिक सुंदर लग रही थी।

उस दिन के बाद ह्मीङ्ग को पुई से बातचीत करने या उसे अपनी कार में लिफ्ट देने का अवसर न मिला। वह हमेशा पुई के ख़यालों में रहता। उसके दफ्तर आने पर उसे विशेष आनंद का एहसास होता और उसे काम करने में भी मज़ा आता। उससे कुछ ही दूरी पर उसकी निगाहों के सामने ही पुई बैठती थी। उससे बातें न होने पर भी बस उसे देखकर ह्मीङ्ग को अपनी पूर्णता का एहसास होता। पुई के बारे में जानने की उसकी इच्छा दिन-ब-दिन बढ़ती गई।

जब भी कोई अन्य लड़की उसके कमरे में आकर मैत्री भाव से हँसी-मज़ाक करती तो ह्मीङ्ग अपने कमरे की काँच की दीवार से पुई को देखता। पुई के चेहरे पर कोई प्रतिक्रिया न देखकर वह निराश हो जाता। उसका मन यह देखकर देखकर दुःखी हो जाता कि जिस तरह वह पुई चिंता करता है, वैसे पुई उसकी चिंता नहीं करती।

एक शाम उसके पास ढ़ेर सारा जरूरी काम पड़ा था जिसे अगले दिन तक किसी भी हाल में पूरा करना था। ह्मीङा के द्वारा लिखी गई चीजों को टाइप करने में पुई भी बहुत व्यस्त थी। अन्य कर्मचारी तो समय से पहले ही घर लौट गए थे, केवल पुई ही दफ्तर में बैठी थी। ह्मीङा को बड़ा संकोच हुआ। बिना किसी शिकायत के मन लगाकर टाइप कर रही उस मासूम और सुंदर मन वाली युवती को वह रह-रहकर तिरछी नज़रों से निहारता। वह उसके बारे में क्या सोचती होगी? कहीं वह उससे नफरत तो नहीं करती? यह सोचकर वह मन-ही-मन डरने लगा।

उसका लिखना समाप्त हो गया, मगर थोड़ा-सा टाइप करना अभी बाकी था। उसे लगा इसे टाइप करने में रात हो जाएगी। पुई के साथ वहाँ अकेले रहना उसे ठीक नहीं लगा। हो सकता है उसे कोई जरूरी काम भी हो। यह सोचकर उसने बड़े संकोच के साथ कहा- “पुई, रात होने वाली है। हमारा काम भी लगभग पूरा हो चुका है। चलो घर चलते हैं। हो सकता है घर पर तुम्हें कोई जरूरी काम हो। वैसे भी ऑफिस का काम तो कभी खत्म होगा नहीं।”

टाइप कर रही पुई ने उसकी ओर देखा। पर खुशी या नाराजगी का कोई भाव न था। सच में वह विचित्र लड़की थी। उसके चेहरे को एकदम भाव-शून्य पाकर वह खुद शर्मिंदा-सा होने लगा।

“आज मैं कार लेकर नहीं आया। उसपर से अब रात होने को है। चलो मैं तुम्हें घर तक छोड़ देता हूँ...” ह्मीङा ने डरते-डरते कहा।

पुई को मुँह खोलते देख वह समझ गया कि अब वह बहस करेगी, इसलिए बिना और कुछ कहे उसने तुरंत उसे उसका बैग थमा दिया। पुई ने भी आगे कुछ न कहा।

“कभी-कभी ज़्यादा बहादुर बनने की जरूरत नहीं होती।” उसने कहा।

पुई को फिर कुछ कहते देख उसे डर लगा कि कहीं वह बहस न शुरू कर दे। मगर वह तैयार हो गई और दोनों एक साथ निकल गए।

अंधेरे रास्ते के किनारे खड़े पेड़ों की छाया सड़क पर पड़ रही थी। कुछ घरों से हल्की-हल्की रोशनी आ रही थी कि करेंट चली गई। स्ट्रीट लाइट भी बंद पड़े थे, जिसके कारण सड़क पर काफी अंधेरा था।

वे ज़्यादा दूर नहीं चले थे कि उन्हें किसी के ज़ोर-ज़ोर से चलने की आवाज़ सुनाई दी। उन्हें लगा वे शराबी होंगे। जैसे ही वे उनके पास पहुँचे, वैसे ही उनमें से एक ने पुई का बैग पकड़ लिया। इससे पहले कि वे कुछ समझ पाते, उसने बैग झपट लिया। उससे शराब की तेज बू आई। पुई की अचानक चीख सुन ह्मीङा जैसे ही मुड़ा तो उन शराबियों में से एक हट्टे-कट्टे व्यक्ति ने उसे धक्का दे दिया। ह्मीङा लड़खड़ाया, मगर गिरने से पहले ही संभल कर सीधा खड़ा हो गया।

ह्मीङा उस व्यक्ति पर चढ़ गया, जिसने उसे धक्का दिया था। अपने से कई गुना बड़े आदमी को उसने दूर ढकेल दिया क्योंकि उसे लगा नहीं कि वह उसपर हमला कर पाएगा। वह रास्ते के किनारे लगे फेंस के खंबे से जा टकराया। उसने जब पुई को पहले वाले शराबी के साथ संघर्ष करते देखा तो वह उसकी तरफ दौड़ा। पुई ज़ोर लगाकर उसकी पकड़ से निकलने की कोशिश कर रही थी, मगर निकल नहीं पा रही थी। ह्मीङा ने गुस्से में आपा खोकर अपने पास पड़ी लकड़ी के टुकड़े को उठाकर एकदम से उस शराबी के सिर पर दे मारा। वह अचानक एकदम ढीला पड़ गया। मगर उसकी चोट की आवाज़ से जान पड़ता था कि वह ज्यादा घायल नहीं हुआ है।

ह्मीङा भय से थर-थर काँपती सड़क के किनारे बैठी पुई को संभालने लगा। उसी समय एक शराबी उठ खड़ा हुआ और अपने ढेर पड़े साथी को उठाकर हड़बड़ी में दोनों

भाग निकले। अगले दिन यदि वे सामने आ जाएँ तो उन्हें पहचानने में ज़रा भी मुश्किल नहीं होगी।

ह्मीङ्ग को पुई की फिक्र थी। उसने बदमाशों के प्रति गुस्से से भरकर पुई से पूछा, "क्या उन्होंने तुम्हें चोट पहुँचायी?"

पुई ने कोमल स्वर में कहा- "नहीं, चोट नहीं पहुँचायी, वे तो बस मुझ से मेरा बैग छीनना चाहते थे। मैं ठीक हूँ।"

ह्मीङ्ग का गुस्सा अभी भी शांत नहीं हुआ था। उसने गुस्से में कहा- "राज्य में शराब बंदी कानून लागू रहते उनकी ऐसी हिम्मत? शराब पर रोक लगी है, मगर शराब बंद हुई ही नहीं। हम कहते तो हैं कि सार्वजनिक जगहों पर अब कोई शराबी नहीं दिखता, मगर सब कुछ वैसे-का-वैसा है। शराब पर रोक लगाने का भी कोई फायदा नहीं है...।" पुई उलझन में पड़ी उसे कनखियों से देख रही थी और उसकी बातें सुन रही थी। उसे देखकर ह्मीङ्ग को एहसास हुआ कि वह कुछ ज़्यादा बोल गया और यह सोचकर वह चुप हो गया ।

"तुम्हारी किस्मत अच्छी है कि तुम अकेली नहीं हो" कहकर उसने पुई को उठाया। चलते हुए ह्मीङ्ग फिर से शराब बंदी के विषय में कुछ-कुछ कहता रहा। पुई चुप थी, शायद उसकी बातें सुन रही थी।

शराब पर रोक लगने के बावजूद पीने वालों को यह आसानी से उपलब्ध है। पुलिस भी अवैध रूप से शराब बेचनेवालों में सभी को नहीं पकड़ता। पैसे वालों और जान पहचान वालों को न पकड़ कर पुलिसवाले बेरोजगार और गरीब विधवाओं को पकड़कर जेल में बंद कर देते है, जो लाचारी में आजीविका के लिए शराब बेचती हैं। उसने आगे कहा कि अगर शराब पर रोक लग भी जाए तो भी उसे विश्वास है कि वह पूरी तरह से बंद होने वाली नहीं है। मगर यदि समाज की बेहतरी के लिए हमने सरकार पर शराब बंदी के लिए

ज़ोर डाला है, तो उसे सफल बनाने के लिए हम सभी को बिना किसी पक्षपात के एक-दूसरे का साथ देना होगा। पहली बार उसने पुई से इतनी बातें कीं। इस तरह से वह किसी और के पास अपने विचारों को व्यक्त नहीं करता था।

जब वे कुछ रोशनी वाली जगह पर पहुँचे तो उन्होंने एक-दूसरे को देखा। खुशकिस्मती से उनपर कोई चोट का निशान न था और न ही उनके कपड़े फटे थे। कुछ ही देर में वे पुई के घर के सामने पहुँच गए। पुई के न बुलाने पर ह्मीङ्ग ने भी उसके घर में घुसने की कोशिश नहीं की। उसके आँगन की रोशनी में जब उसने पुई के चेहरे को देखा तो उसे उसमें अपने प्रति लालसा का कोई भाव नज़र नहीं आया, बल्कि उसे तो ऐसा लगा जैसे वह उसके जल्दी वापस जाने की प्रतीक्षा कर रही है। मन ही मन उसे बहुत दुःख हुआ।

कुछ देर बाद पुई ने अपनी सामान्य आवाज़ में कहा- "मेरी जान बचाने के लिए शुक्रिया। अच्छा, मंगठा (गुड बाई) पु..." वह अभी कह ही रही थी कि ह्मीङ्ग उसके करीब गया और उससे कहा- "पुई, प्लीज मुझे 'पु'[4] मत कहा करो। मैं ह्मीङ्ग हूँ। मुझे ह्मीङ्ग कहकर ही पुकारो।" उसे थोड़ी हिम्मत आई।

"अच्छा पु ह्मीङ। धन्यवाद। मंगठा।" पुई ने कुछ कदम पीछे हटकर कहा और ह्मीङ्ग को बिना देखे मुड़कर घर की ओर चली गई।

सड़क से ह्मीङ्ग उसे देखता रहा। उसके मन में कई बातें चल रही थीं, जिसे बयाँ कर पाना मुश्किल था। अच्छे-बुरे खयालों में डूबे हुए उसे लगा कि जिससे प्रेम नहीं करना चाहिए था, उसी से शायद वह प्रेम कर बैठा है। पुई के घर का दरवाजा खुला और एक औरत बाहर आई।

उस औरत ने पूछा ,“तुम्हें बहुत देर लगी आने में! काम कुछ ज़्यादा था?” वह उन सवालों को तो सुन पा रहा था, मगर पुई का जवाब उसे सुनाई नहीं दिया।

उस औरत के ठीक पीछे एक छोटा-सा बच्चा नजर आया। उसने पुई की ओर बाहें फैलाईं। पुई ने उसे गोद में उठाकर उसके गालों को चूमा। ह्लीङा उस बच्चे की आवाज़ में खुशी और उत्साह को महसूस कर पा रहा था, मगर उनकी बातों को सुन नहीं पा रहा था।

ऐसी सौम्य स्वभाव वाली, नाजुक, शर्मीली और आकर्षक व्यक्तित्व वाली उस लड़की के लिए उसकी जिज्ञासा और बढ़ गई, बुरे लोगों से बचाने पर भी जिसके व्यवहार में कोई परिवर्तन नहीं आया था। उसके सुंदर और आकर्षक मगर उदास चेहरे की छवि उसकी आँखों के सामने झलक रही थी, मानो वह किसी चिंता से ग्रस्त हो। उसे यकीन था कि उसमें ज़रूर कुछ रहस्य छिपा है और जिसे जानने के लिए वह बेसब्र था।

उसे अपनी पत्नी बनाने की उसकी इच्छा और तीव्र होती गई। उसे अपने पर पूरा विश्वास था कि वह जैसी भी हो, वह उसे स्वीकार करेगा। अगर वह घमंडी और लड़कों को नापसंद करने वाली भी हुई तब भी वह उसे ध्यान से संभालेगा और समय के साथ-साथ वह जरूर उसकी ओर ध्यान देगी। वह मन-ही-मन मिज़ो कहावत बुदबुदाने लगा- “लड़कियाँ और बिल्लियाँ उन्हें सहलाने वालों की तरफ ही आकर्षित होती हैं।”हालाँकि उसे बिल्कुल पता नहीं था कि वह शुरुआत कैसे करे। मगर उसे उम्मीद थी कि समय के साथ वह यह भी जान जाएगा।

(2)

पुई बचपन से ही लड़कों को नापसंद करने वाली और उनसे नफरत करने वाली नहीं थी। जब वह उन्नीस बरस की हुई थी तब बहुत सारे दूसरे लोगों की तरह वह भी प्रेम के भंवर में कूद चुकी थी। वह एक प्राइवेट फ़र्म में काम करती थी और बहुत मेहनती भी थी। उसने बहुत ऊँची पढ़ाई नहीं की थी, मगर मेहनती होने के कारण लोग उसे पसंद करते थे। उसकी सादगी और सुंदरता के कारण अमीर परिवार के कई लड़के उसकी ओर आकर्षित हुआ करते थे। मगर उन सभी में पुई का मन जीतने वाला उस प्राइवेट फ़र्म के मालिक का बेटा मुआनज़ुआला था। मुआना[5] बहुत ही रूपवान युवक था, जिसे कई लड़कियाँ पसंद करती थीं। वह अपने पिता के फ़र्म में ही एक अच्छे पद पर था। चूँकि पुई भी उसके नीचे काम करती थी, वह उससे रोज़ मिल पाता था। पुई भी उसे पहले से ही पसंद करती थी, इसीलिए लड़के के हाथ बढ़ाने पर उसने मना नहीं किया।

पुई के परिवार वाले भी मुआना को बहुत पसंद करते थे। उन्हें लगता था कि मुआना बहुत भला, अमीर लड़का है, जो उनकी बेटी को बेहद प्यार करता है। इसलिए वे भी उसे अपना दामाद बनाने की चाह रखते थे। उन्हें अपनी बेटी की सुंदरता पर भी गर्व था। उन्हें लगता था कि मुआना बहुत अच्छा दामाद बनेगा। जब भी वह पुई को रीम (प्रेमी का अपनी प्रेमिका के घर उससे मिलने जाना) करने आता तो वे वहाँ उपस्थित नहीं होते। वे उन्हें स्वतंत्र होकर एकांत में बातचीत करने का मौका दिया करते थे।

पुई को कोई अंदेशा नहीं था कि उसका प्यार मिट्टी और राख़ में बदलने वाला है। वह मुआना के प्यार के आग़ोश में खुश और महफ़ूज थी। कुछ भी हो जाए, उसे किसी भी चीज़ की परवाह न थी। अपने प्रेमी मुआना के साथ वह कुछ भी सहने के लिए तैयार थी।

वे दोनों एक दूसरे के काफी करीब आ गए और एकांत में समय बिताने लगे। एकांत का अवसर पाकर वे अपनी सीमा से काफी आगे निकल गए। वह अभी बहुत बड़ी नहीं हुई थी, मगर माहवारी के रुकने का मतलब वह भली-भाँति जानती थी।

उसे लगा कि वह अपने प्रेमी के बच्चे की माँ बनाने वाली है, इसीलिए उसे इस बात की कोई चिंता न थी कि वह किसी 'सोन'[6] को जन्म देने वाली है। अपने माता-पिता को बताने में भी कोई डर न था, क्योंकि वे भी मुआना को बहुत पसंद करते थे।

अगली बार मुआना जब उससे मिलने आया तो उसने उसे सब कुछ बता दिया। उसने उसे बड़े उत्साह के साथ यह सब बताया, क्योंकि उसे उम्मीद थी कि वह भी यह जानकर बड़ा खुश होगा। उसने सोचा था कि वे दोनों खुशी-खुशी अपनी शादी और अपने बच्चे की परवरिश के बारे में विचार करेंगे।

मगर यह खबर सुनकर मुआना के ऊपर मानो बिजली गिर पड़ी। वह चौंक गया और एकाएक उसके चेहरे के भाव बदल गए। वह लाल होने लगा और धीरे-धीरे काँपने लगा। पुई की उम्मीद के विपरीत वह बिलकुल खुश न हुआ। लाज-शर्म की परवाह किए बिना पुई ने भय से उसे गले लगा लिया। उसे लगा मुआना भी प्यार से उसे गले लगाएगा मगर वह तो जैसे पत्थर हो गया था।

"उ[7] मुआन क्या तुम खुश नहीं हो? तुम मुझसे शादी करोगे और हम दोनों अपने मिलकर बच्चे की परवरिश करेंगे। इसके अलावा मुझे और कुछ नहीं चाहिए।"

"तुम मज़ाक तो नहीं कर रही? हमने तो कभी शादी की बात ही नहीं की।"

"नहीं की, मगर जो होना था वह तो हो चुका है। मैं तुमसे प्यार करती हूँ और मेरी कोख में तुम्हारा बच्चा है। तुम मुझसे शादी करोगे न, उ मुआन?"

“तुम जानती हो कि मैं तुमसे प्यार करता हूँ।”

“हाँ, मैं जानती हूँ। मगर तुम मुझे साफ-साफ बताओ कि मुझसे शादी करोगे या नहीं। मैंने खुद को पूरी तरह तुम्हें सौंप दिया है। मैं खुशी-खुशी हमारे बच्चे की देखभाल करने और तुम्हारी सेवा करने के लिए तैयार हूँ।”

मुआना ने उससे कहा- “क्या तुम्हें मेरे प्यार पर शक है?”

“इस बात पर मुझे कोई शक नहीं कि तुम मुझसे प्यार करते हो, मगर मैं तो बस यह जानना चाहती हूँ कि तुम मुझसे शादी करना चाहते हो या नहीं। तुमने मेरे सवाल का जवाब नहीं दिया।”- पुई ने चिढ़कर और बैचेन होकर कहा।

मुआना चुप रह गया, जिससे पता चल गया कि उसके मन में तो कुछ और ही है।

पुई ने भय से बैचेन होकर पूछा, “सच्चाई तो यह है कि तुम मुझसे कभी शादी करना ही नहीं चाहते थे ना? यह बात सच है ना?” वह समझ गई कि मुआना उससे वास्तव में प्यार करता ही नहीं था। उसका दिल छलनी हो गया। उसके अपने मन ने तय किया कि मुआना उससे शादी करे या न करे, वह उस बच्चे को जन्म देगी, चाहे उसे ‘सोन’ ही क्यों न कहा जाए।

पुई को उम्मीद थी कि वह उसे बताएगा कि वह उससे कितना प्यार करता है, उसकी देखभाल करना चाहता है और उसे अपनी पत्नी बनाना चाहता है, मगर उसकी टाल-मटोल वाली बातों ने उसे चिंतित कर दिया। प्यार समझकर पुई ने उसपर अपना सबकुछ न्यौछावर कर दिया था, मगर मुआना के लिए वह सब केवल शारीरिक इच्छा की पूर्ति और रोमांस की उत्तेजना थी। मगर अब बहुत देर हो चुकी थी। वह समझ चुकी थी कि वह उससे शादी करने की बजाय केवल उसके शरीर की सुंदरता को भोगना और अपने

खाली समय में अपनी शारीरिक इच्छाओं की तृप्ति के लिए उसके शरीर का इस्तेमाल करना चाहता था। उसके दिल को काफी गहरी चोट पहुँची। यह पुई के दिल पर कभी भरा न जा सकने वाला जख्म था।

मुआना को भी उसपर दया आई, मगर वह उसे अपनी पत्नी के रूप में अपना नहीं सकता था। उसने अपने भविष्य के बारे में सोचा। उसे तो बस अभी अपने यौवन में कदम ही रखा था। केवल एक लड़की के लिए अपनी पूरी जवानी न्योछावर कर देना उसे सही नहीं लगा। पहले वह जिन लड़कियों के साथ सोया था उनमें से तो कोई कभी गर्भवती नहीं हुई। वह सोचने लगा कि अभी जो होना था वह तो हो चुका और बीते हुए समय को वापस नहीं लाया जा सकता। इसलिए वह पुई के कारण अपने उज्ज्वल भविष्य को दाँव पर नहीं लगाना चाहता था। यह सब सोचकर पुई के लिए उसका प्यार घट गया। उसे लगा कि यदि वह उस बच्चे को जन्म देगी तो उसका यौवन धीरे-धीरे एकदम नष्ट हो जाएगा।

नहीं, वह अपनी जवानी के अच्छे दिन यूँहीं दफन नहीं कर सकता। उसकी स्थिति तो अभी बेहतर होनी शुरू हुई है और जल्द ही उनके व्यापार की बागडोर पूरी तरह उसके हाथ में आने वाली है। समाज में उसकी जो हैसियत है, जो मान-सम्मान है, उन सब के बदले वह पुई को कैसे चुन सकता है?

उसे लगने लगा कि अगर वह पुई के साथ बैठा रहा तो वह रो-रोकर उसे मना लेगी और न चाहते हुए भी वह ऐसा निर्णय ले लेगा, जिससे उसे बाद में पछताना पड़े। इसलिए उसने जल्दबाज़ी में कहा- “हमें कुछ करना होगा। इससे पहले की बहुत देर हो जाए, हमें इसका समाधान खोजना होगा।” उसने उसे एक नाम सुझाया जो ढ़ेर सारे पैसे लेकर बच्चा गिरा सकता है। पुई के चिंतित और भयभीत चेहरे से नज़रें चुराकर वह कहीं और देखता रहा।

दोनों की सहमति और प्रेम से उसने जिसकी सृष्टि की है, वह बच्चा जो उसकी कोख में पल रहा है, उसे गिराने की बात सुन कर पुई को बहुत दर्द हुआ। उसने कभी नहीं सोचा था कि मुआना के विचार ऐसे हो सकते हैं। उसे लगा मानो वह एक बुरा सपना देख रही हो। मगर यह सच था। मुआना के लिए वह बच्चा एक बोझ और उसके रास्ते का रोड़ा था, मगर पुई के लिए उसके गर्भ में पल रहा वह बच्चा अनमोल था, जिसके आगे तमाम दूसरी चीजें मूल्यहीन थीं और दुनिया की किसी भी चीज़ के बदले उसे वही चुनना था।

अब वह उस मुआना का चेहरा देखना नहीं चाहती थी, जो उसे प्यार नहीं करता था, बल्कि केवल शारीरिक आनंद के लिए ही उसे चाहता था। पहले वह जिससे मिलने के लिए बेकरार रहा करती थी, जब उसी इंसान ने उनके अपने बच्चे को स्वीकार न कर के उसे मारना चाहा, तो वह उससे अथाह नफरत करने लगी।

“देर हो गई है, घर लौट जाओ।” पुई ने कठोरता से कहा। वह मुआना को अच्छे शब्दों के साथ विदा भी करना नहीं चाहती थी। मुआना ने जब उसके कठोर शब्द सुने तो वह हक्का-बक्का रह गया। वह उसे गले लगाने उसके करीब गया, मगर पुई ने न तो उसे अपने पास आने दिया और न ही खुद को छूने दिया। मुआना को ज़रा-सा पछतावा हुआ मगर उसने तय कर लिया था कि भले ही वह उसके बच्चे की माँ बनने वाली हो, मगर वह उसके लिए अपने भविष्य को दाँव पर नहीं लगा सकता था।

पुई ने पहले से भी कठोर स्वर में फिर कहा- “बहुत देर हो गई है।”

मुआना ने उससे पूछा- “क्या हम रविवार की शाम को मिल सकेंगे?”

मगर पुई ने उसके सवालों का जवाब देना जरूरी न समझा और वह मुड़कर अपने कमरे में चली गई। मुआना भी असहज और भारी मन लिए अपने घर लौट गया।

ऐसा नहीं था कि उनके रिश्ते के इस तरह समाप्त होने का असर पुई पर नहीं पड़ा। बल्कि उसे बहुत तकलीफ हुई। उसकी सारी उम्मीदें नष्ट हो गईं और उसे लगा कि अब उसका कोई भविष्य नहीं रह गया। मगर वह दृढ़ थी कि उसकी कोख में पल रहे बच्चे को वह अवश्य जन्म देगी। वह इस बच्चे की रक्षा करेगी ताकि कुछ भी इसे नष्ट न कर सके। वह जानती थी कि उसका भविष्य दुःख, बदनामी और अवहेलना लिए उसका इंतज़ार कर रहा है, मगर वह उन सब का सामना करने के लिए तैयार थी।

पुई के माता-पिता को भी बहुत बुरा लगा। साथ ही उन्हें अपनी गलती का भी एहसास हुआ। मुआना के व्यक्तित्व की सच्चाई जाने बिना ही उन्होंने उसे पसंद किया था। उनकी बेटी के साथ जो कुछ हुआ उसके लिए वे खुद को भी बराबरी का जिम्मेदार मानते थे। इसलिए उसे डाँटकर समझाना उन्हें सही नहीं लगा। उन्हें अपनी बेटी पर गर्व था और इस बात की खुशी थी कि अपनी सच्चाई को छिपाने का प्रयास किए बिना, बदनामी को स्वीकार करते हुए भी वह बच्चे को पालना चाहती थी। अपनी बेटी के साहस और उनकी ईमानदारी पर उन्हें गर्व था।

पुई की बूढ़ी दादी ने उसका साथ देते हुए कहा- “मामबोइ (बिटिया), तू बिल्कुल दुःखी मत हो। उस मुआना पर मुझे पहले से ही भरोसा नहीं था। तू उसे बहुत चाहती थी इसीलिए तेरे दिल को चोट पहुँचने के डर से मैंने कुछ नहीं कहा। तेरे साथ जो हुआ, उसके लिए तू बिल्कुल मत पछताना। परमेश्वर तेरे साथ रहेगा और हो सकता है यह सब तेरे भले के लिए ही हो।”

दादी की बातें सुनकर पुई के चिंतित मन को तसल्ली मिली।

पुई ने भी अपनी दादी से कहा- “परमेश्वर की कृपा से मैं अपने बच्चे को जरूर जीवित रख पाऊँगी। मुझे मुआना की दया की जरूरत नहीं है। मेरी खुशकिस्मती है कि मुझे उस जैसे धोखेबाज़ के साथ जिंदगी भर बँधकर रहना नहीं पड़ेगा। मुझे अब उस पर गुस्सा भी नहीं आ रहा। मगर उसका असली स्वभाव मेरी कल्पना से परे है। मैं बिल्कुल नहीं रोऊँगी, एक बार भी नहीं।”

(3)

कुछ महीने बाद ही पुई को किसी से पता चला कि मुआना कुछ समय के लिए मिज़ोरम से बाहर चला गया है। वह समझ गई कि वह क्यों गया है। वह बदनामी के डर से भाग गया। वह डरपोक था, जो अपने किए के परिणाम का सामना नहीं कर सकता था। बिस्तर पर लेटी हुई पुई ने अपने पेट को देखा और अपने बच्चे के हिलने को महसूस किया। उसकी खुशी और बढ़ गई कि उसने अपने बच्चे को नहीं गिराया। यह सब उसकी गलती का नतीजा था, मगर वह खुश थी कि वह इस पल का सामना बहादुरी के साथ कर पा रही थी। उसे कई बार ऐसा महसूस होता कि उसके पेट में पल रहा वह बच्चा भी उसे धन्यवाद कह रहा है।

मुआना ने अपने माता-पिता को पुई और अपने बारे में सबकुछ बताते हुए बच्चे को गिराने और पुई की देखभाल के लिए पैसा भेजने के लिए कहा था। पुई को मुआना के पिता का एक पत्र मिला। जब उसे वह पत्र और पचास हजार रुपए मिले तो उसे पहले बहुत गुस्सा आया और उसने सोचा कि उसे लौटाते हुए वह उनसे कहे कि “मुझे तुम लोगों के पैसों की जरूरत नहीं है”, मगर उसने जब ध्यान से सोचा कि परमेश्वर की कृपा से यदि वह बच्चा पैदा होगा तो उसे अपने और बच्चे की देखभाल के लिए पैसों की जरूरत होगी। मुआना के माता-पिता ने पुई के घर बातचीत के लिए पलाई[8] को नहीं भेजा था, इसलिए

पुई को पूरा विश्वास हो गया कि मुआना ने उसे पूरी तरह छोड़ दिया है। उसने भी उससे अपना मुँह फेर लिया है और यह तय किया कि वह कभी भी उसकी ओर नहीं देखेगी।

उसने पैसा तुरंत बैंक में जमा कर दिया। जब मुआना को पता चला कि पुई ने पैसा स्वीकार कर लिया है तो उसे कुछ ठीक नहीं लगा। उसे लगा था कि वह गुस्से में पैसा अस्वीकार कर देगी और उसके पास आकर उससे माफी माँगेगी। मगर ऐसा कतई नहीं हुआ। पुई ने निश्चय कर लिया कि अब उसका मन कभी नहीं बदलेगा। उसने निश्चय कर लिया कि वह कभी शादी नहीं करेगी। यहाँ तक कि अगर उसके बच्चे का पिता मुआना भी पछताते हुए कर उसके पास लौटे, तब भी वह तरस नहीं खाएगी। आग में उसका हाथ जल चुका था, वह दोबारा खुद को जलने नहीं देगी। आग में जल चुके व्यक्ति को आग से हमेशा डर लगता है। उनके इलाके में उसकी बातें फैलेगी, लोग उसकी चुगली और बुराई करेंगे, उसका मज़ाक उड़ाने वाले भी होंगे, मगर वह यह सब सह लेगी।

कुछ ही समय बाद पुई को सरकारी नौकरी मिल गई और उसकी पोस्टिंग आइज़ोल में हुई। उसके माता-पिता अपनी गर्भवती बेटी के लिए चिंतित थे, जो दूसरे शहर में अकेली रहने वाली थी। मगर पुई को लगा कि उसके कारण उसके माता-पिता को जिन बदनामियों और अफवाहों का सामना करना पड़ रहा है, उसके चले जाने से उससे उन्हें छुटकारा मिल जाएगा और ये सारी चीज़े धीरे-धीरे कम हो जाएँगी।

उसने अपने ऑफिस के पास ही किराए पर एक मकान लिया। उसने अस्पताल में बेटे को जन्म दिया। जब नर्स और अस्पताल के दूसरे मरीज़ बच्चे के पिता को न देखकर उत्सुकता वश बच्चे के पिता के बारे में पूछते तो वह मज़ाक में कहती- “यह पवित्र आत्मा की संतान है।” उसके इस मज़ाक को कुछ लोग समझ नहीं पाए और इसे सच मान बैठे। वे इस बारे में बातें करने लगे, मगर सच्चाई जानने के बाद उनकी हँसी छूट पड़ी।

उसके बेटे का चेहरा हूबहू उसके पिता जैसा था। इसमें कोई दो राय नहीं थी कि वह उसका ही बेटा था। पुई की मुश्किलें दोगुनी हो गईं। उसका बेटा अक्सर अस्वस्थ रहता था। उसने कई रातें बिना सोए अपने बेटे की देखभाल में अकेली, निराश और चिंतित होकर रो-रोकर बितायी थीं। उसने अपने बेटे का नाम 'वानललपेका' रखा। जिस वर्ष वह एक साल का हुआ, वह पूरा साल पुई ने चिंता में डर-डरकर बिताया। पेका (वानललपेका का संक्षिप्त रूप) के अस्वस्थ रहने का कारण शायद यह था कि जब वह गर्भ में था, उसकी माँ दर्द और तकलीफ़ों से गुजर रही थी। वह शायद ही कभी स्वस्थ रहता था। मगर उस चिंता की घड़ी में भी पुई जब अपने बेटे का चेहरा देखती तो उसकी खुशी यह सोचकर और बढ़ जाती कि उसने उस बच्चे को गिराने का फैसला न करके उसे जन्म दिया। यह सोचकर कि वह परमेश्वर के हाथों में महफ़ूज है, उसे शांति मिलती।

पुई को यह अकल्पनीय और भयानक लगता कि कैसे लोग पति-पत्नी के रिश्ते में न होने कारण अपने ही खून और माँस से बने बच्चे को पैदा न करके मार डालते हैं। भले ही वे बच्चे पूरी तरह से मनुष्य के रूप में विकसित न हुए हों, तब भी उसे अकल्पनीय लगता कि लोग कैसे परमेश्वर की इच्छा को महत्व और सम्मान नहीं दे पाते। उसे उन लोगों पर दया आती जो अपने ही अंश को मारना चाहते हैं। मगर इसका मतलब यह नहीं है कि उसे मुआना पर भी दया आई।

वह अस्वस्थ नवजात बच्चे की देखभाल करते हुए ऑफिस भी जाती रही। उसे किसी से दोस्ती बढ़ाने की हिम्मत न हुई और उसने अपने बारे में भी किसी को कुछ नहीं बताया। वह कभी नहीं भूली कि अब वह जवान लड़कियों तरह आज़ाद नहीं रह सकती। उसे हमेशा ध्यान रहता कि वह जो भी कर रही है, अपने बेटे के लिए ही कर रही है। मुआना के पिता ने जो पैसे भेजे थे उसे उसने जरूरत के समय ही इस्तेमाल करने की सोची। फिलहाल

उसका वेतन उसके बच्चे की देखभाल और बच्चे की देखभाल करने वाली आया को रखने के लिए पर्याप्त था।

बुरी तरह चोट खाने के बाद वह अब फिर से वैसी ही स्थिति में पड़कर अपने घाव पर नमक नहीं छिड़कना चाहती थी। शादी किए बिना भी उसे लगा कि उसे जीने का मकसद मिल गया था। उसे लगा कि उसके आँसुओं ने उसके सारे दर्द और उसकी सारी निराशा को धो डाला है। मगर उसके हृदय की जड़ता शायद कभी खत्म नहीं हो पाएगी।

उसने उन सभी चीजों को फेंक दिया था, जो उसे मुआना की याद दिलाती थीं, मगर एक चीज़ थी जिसे वह फेंक नहीं सकती थी। वह था उसका अपना बेटा। इस बात को नकारा नहीं जा सकता था कि वह हूबहू मुआना जैसा दिखता था। उसके बेटे में उसे मुआना की जो छवि दिखती थी, उसे मिटाया नहीं जा सकता था और वह उसे मिटने भी न देगी। मगर ऐसा नहीं था कि वह मुआना को याद रखना चाहती थी। उसने अपने मन से मुआना और उनके बीच के रिश्ते की तमाम यादों को पूरी तरह मिटा दिया था। उसने अपने पहले प्यार की तरफ से पूरी तरह मुँह मोड़ लिया था। वह लोगों की उन बातों पर विश्वास नहीं करती थी, जो कहते थे कि पहले प्यार को कभी भुलाया नहीं जा सकता। उसे कभी-कभी मुआना का नाम याद आता। इसलिए नहीं कि वह उसे प्यार करती थी, बल्कि इसलिए कि वह उसकी पुरानी कहानी का हिस्सा था। काश वह उसे हमेशा-हमेशा के लिए भुला पाती!

(4)

शराबियों के हमले वाले दिन से पुई ह्मीङा के प्रति कृतज्ञ महसूस कर रही थी। मगर ऐसा नहीं था कि वह पहले उससे नफरत करती थी। ऑफिस का सबसे बड़ा अफसर होते हुए भी ह्मीङा का व्यवहार उसके प्रति बहुत अच्छा था। ह्मीङा इस बात को लेकर

सावधान रहता कि कहीं उसकी किसी बात से पुई को कोई कष्ट न हो। पुई भी उसे नाराज़ करने से हमेशा बचती थी। उसके त्लङ्वाल (अविवाहित जवान युवक) होने के कारण वह उससे ज्यादा मेलजोल नहीं बढ़ाना चाहती थी।

कुछ समय पहले तक उसके मन में बुरे-बुरे खयाल आया करते थे, जिससे वह बहुत परेशान रहा करती थी। जैसे यदि अचानक कोई अनहोनी घटना घट जाए और उसकी मृत्यु हो जाए तो उसके बेटे पेका की स्थिति बिन माँ-बाप के अनाथ होकर कितनी दयनीय हो जाएगी। यह सब सोचकर उसका दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़कने लगता।

वह ह्मीङा की दिलचस्पी भरी नजरों को पहचानती और समझती थी। वह उसे नापसंद नहीं करती थी और वह यह भी जानती थी कि वह स्त्रियों से दोस्ती करने के मामले में कितना अनाड़ी है। पुई ने कई बार दूसरी लड़कियों को यह कहते सुना था कि कैसे वे उसके करीब जाने पर भी निराश होकर लौट आईं। उसे उनपर बहुत हँसी आती और वह मन-ही-मन सोचती कि उसकी आपबीती यदि उनपर भी बीती होती तो वे किसी त्लङ्वाल को बार-बार न छेड़तीं। वह जानती थी कि उसका अनुभव बार-बार दुहराने लायक नहीं है।

ह्मीङा द्वारा बार-बार बातचीत करने की कोशिशों को पुई समझती थी, मगर वह उसकी उम्मीदों को बढ़ावा नहीं देती थी। वह उसके लायक नहीं थी। ह्मीङा एक जवान युवक और उसपर से बड़ा अफसर था। उसके आगे एक नुथ्लोई,[9] वह भी एक बच्चे की माँ की क्या औकात? उसे लगा ऐसा होना असंभव है और गलत भी है। अगर उसे उसकी सच्चाई मालूम हो जाए, तो वह भी उसे छोड़ देगा और बदनामी तो फिर से उसी की होगी। लड़कों पर भरोसा करना वाकई कठिन है।

शराबियों का बहादुरी से सामना कर उसकी जान बचाने वाले ह्मीङा की वह इज्जत करती थी। वह उसके प्रति अपनी कृतज्ञता जाहिर करना चाहती थी। मगर उसे डर

था कि इससे वह दीवार ढह जाएगी, जिसे उसने अपनी सुरक्षा के लिए खड़ी की थी। इसमें जोखिम था और वह जोखिम लेने को तैयार नहीं थी।

वह बिस्तर पर लेटे-लेटे तरह-तरह की बातें सोचकर हँस पड़ती थी। बावजूद इसके कि उसने किसी लड़के पर भरोसा न करने की कसम खाई थी, वह जानती थी कि ह्वीङ्ग को लेकर उसके मन में उलझन है। उसने गहरी नींद में सो रहे अपने बेटे को देखा। वह जानती थी कि उसे किसी रक्षक की जरूरत है। जब वह गौर से अपने बेटे का चेहरा देखती तो पश्चाताप की भावना उसके मन को फिर छूने लगती क्योंकि उसके चेहरे से उसे मुआना और अपने अतीत की याद आने लगती। वह दूसरे को दुःख में डालना और खुद दुबारा दुःखी होने वाली परिस्थिति में पड़ना नहीं चाहती थी। वह जानती थी कि उसे अकेलेपन, दर्द और आँसुओं का सामना करना पड़ेगा, मगर उसे लगता था कि कोई गलत कदम बढ़ाने से वह दर्द हीं बेहतर है और उसके भविष्य के लिए भी अच्छा है। वह एक बार धोखा खा चुकी है। वह उन भोली-भाली लड़कियों की तरह दोबारा धोखा नहीं खाएगी, जो दूर की नहीं सोच पातीं।

एक शाम ऑफिस के बाद वह घर जल्दी लौटने लगी। मौके का फायदा उठाते हुए ह्वीङ्ग तुरंत पुई की ओर बढ़ा। पुई ने उसे अनदेखा करने की पूरी कोशिश की, मगर वह नाकाम रही। ह्वीङ्ग ने उसे पुकारकर कहा- “चलो पुई, अभी तो बहुत समय है, चलकर एकसाथ कॉफी पी जाए।”

पुई जानती थी कि वह मना करने में सफल नहीं होगी, फिर भी उसने दृढ़ स्वर में कहा- “मैं घर जल्दी जाना चाहती हूँ, घर पर बहुत सारा काम है।” पुई को डर था कि यदि उसने बहुत विनम्र होकर जवाब दिया तो उसका फायदा उठाया जा सकता है। मगर उसे कठोरता से जवाब देना भी सही नहीं लगा।

"अभी तो बहुत जल्दी है। ठीक है, चलो, मैं तुम्हें तुम्हारे घर छोड़ देता हूँ।"

पुई ने उसे देखे बिना झुककर कहा- "अभी तो दिन है, पु ह्मीङ मुझे घर छोड़ने की जरूरत नहीं।" उसकी आवाज़ इतनी धीमी थी कि खुद उसे और खासकर ह्मीङा को उसकी बात बड़ी मुश्किल से सुनाई दी होगी।

ह्मीङा ने जिद्द करते हुए उसकी बाँह पकड़ कर कहा- "चलो भई...।" पुई अब और मना न कर सकी। वे पास की ही चाय की दुकान पर गए और कॉफी मँगवाई। दोनों ने चुपचाप कॉफी पी। वहाँ से बाहर निकलते हुए ह्मीङा ने गंभीर होकर कहा- "पुई, प्लीज मुझे अपने बारे में बताओ।" पुई को उस एकदम-से सीधे सवाल की उम्मीद न थी। यह जानकर कि ह्मीङा उसके बारे में जानना चाहता है, उसकी धड़कनें तेज हो गईं और उसके होश उड़ गए। वह चुप रही और उसके मन में कई सारे विचार एकसाथ आने लगे। सोचते हुए उसने जवाब दिया- "मेरे बारे में बताने जैसा कुछ नहीं है, इसीलिए अपने बारे में बताना मैं जरूरी नहीं समझती।" उसने ह्मीङा को अपनी कनखियों से देखा, जो आश्चर्य से उसे देख रहा था, मगर अब भी उसके चेहरे पर निराशा के भाव न थे।

मुआना के साथ उसके पिछले रिश्ते ने उसके दिल पर घाव बना रखा था। वह उस ह्मीङा के दिल को ठेस नहीं पहुँचाना चाहती थी, जिसने सौम्यता के साथ उसका खयाल रखा, जो अपनी इच्छा को पूरी करने के लिए उसपर हावी न हुआ, जिसने अपने पद का घमंड कर उसके मन को जीतने की कोशिश न की, बल्कि खुद उसके आगे झुका।

लोग एक-दूसरे को कभी भी एकदम अच्छे से नहीं पहचान सकते। कोई भी अपने जीवन में गलत कदम उठा सकता है और दुर्भाग्य का शिकार हो सकता है। ऐसा होने पर खासकर लड़कियाँ अपनी सामान्य स्थिति में कभी लौट नहीं पातीं। पुई इस दुर्भाग्य का

शिकार हो चुकी थी। उसे लगता था कि यदि वह जाहिर कर भी दे कि वह ह्लीङ्ग को पसंद करती है, तब भी उसकी सच्चाई जानकर उसे ठेस पहुँचेगी और वह उसे छोड़कर चला जाएगा। वह अपने और ह्लीङ्ग के लिए ऐसा नहीं चाहती थी। उसे विश्वास था कि ह्लीङ्ग से बेहतर उसे समझने वाला, देखभाल करने वाला और उसे महत्व देने वाला और कोई नहीं होगा। किसी बच्चे को अपने पिता के साथ रहकर जो सुकून महसूस होता है, वैसा ही सुकून वह ह्लीङ्ग के साथ रहकर महसूस करती थी। हालाँकि वह उम्र में उससे ज्यादा बड़ा न था, मगर पुई को उसपर भरोसा था और वह उसके साथ की चाह रखती थी। और यही उसके मन की सबसे बड़ी दुविधा थी।

पुई ने ज़िद की कि वह उसे उसके घर तक न छोड़े।

ह्लीङ्ग ने निराश होकर एक गहरी साँस ली और पुई को गौर से देखते हुए भावुक होकर पूछ ही लिया- "पुई, तुम क्यों नहीं चाहती कि मैं तुम्हें तुम्हारे घर तक छोड़ूँ? क्या इसलिए कि तुम मुझे अपना घर दिखाना नहीं चाहती? क्या तुम्हें मुझपर भरोसा नहीं है? क्या तुम्हें मुझसे नफरत है?"

पुई ने घबरा कर कहा- "आपके जानने जैसा कुछ नहीं है और न ही आपके लिए जानने लायक कोई महत्वपूर्ण बात ही है।"

"नहीं नहीं, पुई यह तुम्हारे बारे में नहीं है, मेरे बारे में है। मैं तुमसे प्यार करता हूँ और मैं चाहता हूँ कि तुम मेरे साये में महफ़ूज रहो। जो कुछ भी तुम्हारे बारे में है, वह मेरे बारे में हैं।"

पुई चौंक पड़ी, वह काँपने लगी। मगर वह इसे छिपाने की पूरी कोशिश करती रही। ह्लीङ्ग, जिसने हिम्मत जुटाकर अपनी बात कही थी और जो उम्मीद के साथ उसके

जवाब का इंतज़ार कर रहा था, उसकी आँखों में आँखें डालकर पुई ने कहा- "उ ह्मीङ, आप मुझसे प्यार करते हैं? मुझे बहुत प्यार करते हैं? मेरे बारे में जानकर आप मुझसे प्यार करना छोड़ देंगे। यह नहीं हो सकता। ऐसा बिलकुल नहीं हो सकता...।" उसने अपनी पलकें झपकायीं कि आँसू की बूँद छलक पड़ी। उसे अब रुमाल निकालने की हिम्मत भी न हुई।

भय और लाचारी में उसे चुनौती देते हुए उसने कहा- "अगर आप चाहते हैं तो जरूर आइए।" ह्मीङ के कुछ कहने का इंतज़ार किए बिना वह तेजी से चलने लगी। उसने यह भी नहीं देखा कि ह्मीङ उसके पीछे आ रहा है या नहीं।

बिना कुछ छिपाए अपनी सारी नग्न सच्चाईयों को वह स्पष्ट रूप से दिखा देना चाहती थी। वे घर पहुँचे। उसके दरवाजा खोलते ही एक बच्चे ने उसे गले लगाया। ह्मीङ की ओर मुड़कर पुई ने कहा- "यह मेरा बेटा है।" ह्मीङ चौंक पड़ा, मगर वह उस बच्चे को ध्यान से देखने लगा, जो खुशी-खुशी अपनी माँ को और उसे बारी-बारी से ताक रहा था। उसने बच्चे की ओर अपनी बाहें फैलाईं और वह बच्चा उसकी ओर बढ़ा। बिना कुछ महसूस किए कि वह क्या सोच रहा है, वह बच्चे को काफी देर तक गोद में लिए रहा। वह कौन था? किसका बेटा था? वह नहीं जानता था।

पेका की देखभाल करने वाली आया जब उसे अलग ले गई, तब पुई ने उसे अपने बारे में बिना कुछ छिपाए सबकुछ बता दिया। सबकुछ बताने के बाद न जाने क्यों उसकी आँखे भर आईं और उसने पूछा- "अच्छा, अब बताइए उ ह्मीङ, मेरे बारे में आपके खयाल बदले या नहीं? क्या आप अब भी कहेंगे कि आप मुझसे प्यार करते हैं?"

उसकी बातों और उसके व्यक्तित्व की परिपक्वता को देखकर ह्मीङ चौंक पड़ा।

मगर बिना किसी उलझन में पड़े ह्लीङ्ग ने उससे कहा- “तुम अपनी इन्हीं परिस्थितियों के कारण मुझे मना करना चाहती हो न पुई? तुमने मुझे ठीक से नहीं पहचाना। क्या तुम्हें मैं ऐसा व्यक्ति लगता हूँ जो अपने प्यार का इज़हार करके सिर्फ इसलिए मुकर जाएगा क्योंकि चीजें वैसी नहीं हैं, जिसकी उसे उम्मीद थी? यह नहीं हो सकता, यह नहीं हो सकता।” वह बुदबुदाया।

पुई के कुछ कहने से पहले ही उसने फिर कहा- “तुम्हें लगा कि मैं वैसा आदमी हूँ, इसलिए तुम मुझसे बच रही थी न? अगर तुम भी मुझे पसंद करती हो तो मैं तुमसे शादी करना चाहता हूँ। तुम्हारा बेटा मेरा भी बेटा होगा। तुम्हारी हिम्मत और समझदारी के कारण में तुम्हें और प्यार करने लगा हूँ।”

इतना कहकर वह चुप हो गया। पुई को उसे देखने की हिम्मत तक न हुई।

उसने अपने हाथों को छुड़ाने की कोशिश न की जिन्हें ह्लीङ्ग ने स्नेह के साथ थाम रखा था। उसे ऐसा लगा कि उसके रोंगटे खड़े हो रहें हैं। उसे अजीब-सी शांति और सुकून का एहसास हुआ, जिसे उसने पहले कभी महसूस नहीं किया था। पुई ने कभी नहीं सोचा था कि कोई ऐसा पुरुष भी हो सकता है, जो सबकुछ जानते हुए दूसरे के बच्चे को अपना मानने को तैयार होगा। मगर ह्लीङ्ग इन सब के लिए तैयार था और वह जानती थी कि उसकी बातों पर शक नहीं किया जा सकता था। वह जानती थी कि उसने जो कहा है उसे वह जरूर पूरा करेगा, क्योंकि वह यह भी जानती थी कि वह मन का सच्चा और भरोसेमंद इंसान है।

पुई ने उससे कहा- “तुम्हारे परिवार वाले तुम्हारे बारे में क्या सोचेंगे? क्या वे तुम्हें अपने घर और अपनी ज़िंदगी से ही नहीं निकाल देंगे?” वह अपने आने वाले समय के बारे में सोचने लगी थी।

“जब तक तुम मेरे साथ हो, मुझे इस बात की कोई चिंता नहीं।”, ह्मीङ ने कहा। उसने प्यार से पुई को देखा जिसने अपनी आँखें बंद कर रखी थीं, जिनसे बहते आँसू उसके कोमल गालों पर ढुलक रहे थे। उसके अधखुले थे, जिन्हें वह बहुत प्यार करता था। वह उन्हें निहारता रहा। उसे खुद पर काबू रखना मुश्किल लगने लगा।

पुई ने आँखें खोले बिना ही कहा- “उ ह्मीङ, अगर आप मुझ जैसी अपवित्र हो चुकी नुथ्लोई से प्रेम करते हैं, तो मेरे पास आपको मना करने का कोई कारण नहीं है...” ह्मीङ ने उसे अपनी बात पूरी भी न करने दी और उसे अपनी ओर खींच लिया। पुई जैसे ही उसकी बाहों की ओर झुकी, उसने उसके होंठों को चूम लिया। पहली बार उसने किसी लड़की को चूमा था और वह समझ नहीं पाया कि कहीं उसने उसे ज़्यादा कसकर तो नहीं जकड़ लिया। उसे विश्वास था कि उसके अन्तर्मन में उफन रही प्रेम की लहरों को वह भी महसूस कर पा रही होगी।

उन दोनों के बीच की दीवार ढह गई। उन्होंने अपने रास्ते पर पड़े चट्टान को ढकेलकर दूर कर दिया। दोनों ने बातचीत से सबकुछ निपटा लिया। पुई के मन में रत्ती भर भी संदेह न था कि ह्मीङ ही वह मजबूत चट्टान है जिस पर वह दृढ़ता से खड़ी है। उसने फैसला कर लिया। उसने अपने अतीत को धो-पोंछकर साफ कर दिया और उससे छुटकारा पा लिया।

ह्मीङ के परिवार वालों को पहले तो कुछ समझ नहीं आया। उन्हें बहुत आश्चर्य हुआ कि उनका बेटा, जिस पर उन्हें बहुत गर्व था, एक नुथ्लोई से शादी करना चाहता है।

मगर वे अपने बेटे को अच्छी तरह पहचानते थे। वे जानते थे कि वह ऐसा इंसान नहीं है जल्दबाज़ी में कोई गलत फैसला ले, और जिसके लिए उसे बाद में पछताना पड़े इसीलिए उन्होंने उसके फैसले का सम्मान किया।

उनके दफ्तर की लड़कियाँ सबसे ज्यादा हैरान थीं। कुछ लड़कियाँ शर्मिंदा हुईं और कुछ क्रोधित। कुछ खुद को नुथ्लोई से भी गयी-गुजरी समझकर कोस रही थीं। फिर भी उनके पास अपने बॉस की खुशी में खुश होने के अलावा और कोई चारा ही न था।

पति-पत्नी बनने के बाद पुई में काफी बदलाव नज़र आने लगा था। उसके चेहरे पर असीम शांति झलकने लगी थी और उसके जीने का तरीका भी बदल गया था, मगर उसकी विनम्रता, उसके शील और उसके सहज स्वभाव में तथा दूसरों के प्रति दया व कृपा से परिपूर्ण स्वभाव में कोई बदलाव न आया। ह्मीङ्ग के माता-पिता और अन्य रिश्तेदारों ने उसे जितना अच्छे से जाना, उतना ही उसे पसंद किया। वानललपेका को भी उन्होंने अपने असली पोते की तरह स्वीकारा। वे सभी बहुत खुश थे। परमेश्वर का आशीष पाकर पेका का छोटा भाई पैदा हुआ। उन दोनों के बीच लगभग चार साल का फर्क था। उन दोनों का अपना बच्चा होने के बाद भी ह्मीङ्ग का पेका के प्रति नजरिया और स्नेह बिल्कुल न बदला। यह देखकर पुई की आँखों से अक्सर खुशी के आँसू छलक पड़ते। उसके साथ ऐसा होना स्वाभाविक ही था।

एक दिन पुई को ह्मीङ्ग ने दफ्तर से लौटकर बताया कि उसने एक मेहमान को उनके घर खाने पर बुलाया है। पुई ने बिना किसी आशंका के उत्साहित होकर रात के खाने की तैयारी की। पेका को भी अच्छे से सजाकर तैयार किया।

रात के खाने के वक्त किसी ने उनके दरवाजे पर दस्तक दी। अंदर आने का आदेश पाने पर दरवाजा खुला। खाने पर बुलाया गया वह मेहमान कोई और नहीं बल्कि वही मुआना था। मगर, पुई के चेहरे के भावों में कोई बदलाव न आया। बल्कि मुआना ही चौंक

पड़ा। वह पहचान गया कि वह कोई और नहीं पुई ही है। उसे देखकर वह समझ गया कि वह पहले से कहीं सुंदर और खुश लग रही थी। उसने देखा कि बढ़ती उम्र के साथ-साथ वह और जवान होती जा रही थी। वह हैरान था और अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हो रहा था।

पुई के पति ह्मीङा ने तुरंत बातों की शुरुआत करते हुए कहा- "मुआना, मेरे दोस्त, यह मेरी पत्नी पुई है। पुई, ये हमारे राज्य के बाहर के सबसे महत्वपूर्ण बिज़नेस पार्टनर मुआना हैं।" उसने अपने मेहमान के चेहरे के बदलते भावों को और पुई के चेहरे पर झलक रही हल्की परेशानी को पहचान लिया।

उनके बैठने के कुछ देर बाद ही पेका अपने कमरे से दौड़ा चला आया। पेका को देखकर मुआना सकते में आ गया। उसके चेहरे के भाव देखते-देखते बदल गए और उसके चेहरे का रंग उतरने लगा। दोनों की शक्ल कितनी मिलती थी! यह उसका ही बेटा है! पुई ने उस बच्चे को गिराया नहीं, बल्कि उसे जन्म दिया, इसलिए वह आज उसे जीवित देख पा रहा था। वह सच में हैरान था!

अब वानललपेका स्नेह और अच्छी देखरेख में पला एक छह साल का खुशमिजाज बच्चा था। मुआना के लिए हूबहू उसके जैसा दिखने वाले उस बच्चे को नज़र उठाकर देखना मुश्किल रहा था। क्या वह इसी बच्चे को मारना चाहता था? क्या इसी बच्चे को मारने के लिए उसने पचास हजार रुपए भिजवाए थे? उसे जबरदस्त पछतावा और शर्मिंदगी का एहसास हुआ। उसे लगा मानो उस बच्चे की मासूम आँखें उसकी सारी बुराइयों और पापों को देख पा रही हैं। उसके दिल के टुकड़े-टुकड़े होने लगे। वह अपने आपको संभाल नहीं पा रहा था। वह इस प्यारे बच्चे को मनुष्य के रूप में पूरी तरह निर्मित होने से पहले ही जान से मारना चाहता था? हे स्वर्ग के लोगों...!

ह्मीङा से वह सब देखा न गया और वह वहाँ से चला गया। मुआना ने अपने होश संभाले और खुद को संभालते हुए पेका की ओर अपनी बाहें फैलाईं। उलझन से भरा पेका भी उसकी ओर बढ़ा। पेका को उसने अपनी गोद में उठा लिया। वह अपनी भावनाओं पर काबू नहीं कर पाया और रोने लगा। खुद को सँभालकर उसने दूसरी तरफ मुँह किए पुई से पूछा- "यह हमारा बेटा है न...?" उसकी आवाज़ काँप रही थी।

पुई ने सिर हिलाकर उसे जवाब दिया। "यह वहीं है जिसकी मृत्यु की तुम्हें इच्छा थी। जिसके कारण मैंने बहुत कष्ट सहा। मगर सारा कष्ट समय के साथ गुज़र गया...।"

मुआना के पास कुछ और कहने को बचा नहीं। अपने चेहरे को पेका के बालों में छिपाकर वह पछतावा के कारण रोने लगा। अपने बेटे को वह कसकर गले लगाए रहा।

ह्मीङा के अंदर आते ही मुआना तुरंत खड़ा हो गया और उससे कहा- "तुम बहुत भाग्यशाली हो और भाग्यशाली होने के लायक भी हो। मेरे बेटे के लिए तुम निश्चय ही मुझसे बेहतर पिता हो और हमेशा रहोगे।" ह्मीङा के जवाब देने से पहले वह वह बाथरूम की ओर चला गया।

मुआना के बाथरूम में घुसते ही ह्मीङा ने अपनी पत्नी से कहा- "वही पेका का पिता है न? मैंने जब उसे पहली बार देखा था तब ही मुझे लगा था कि वह पेका का पिता ही है। मैं व्यापार के सिलसिले में उससे कई बार मिल चुका हूँ। इसलिए सही मौका देखकर मैंने उसे खाने पर बुलाया। जब मैंने उसे पहली बार देखा था, तभी मैं जान गया था कि बोइआ[10] (यहाँ पेका के लिए प्रयुक्त हुआ है) और उसके चेहरे में कोई अंतर नहीं है। तभी मुझे पूरा विश्वास हो गया कि यही बोइआ का असली पिता है।"

उसने देखा कि पुई की आकर्षक आँखें उसे देख रहीं हैं और फिर उसने उसके हाथों को और कसकर थाम लिया। उसने पुई की कसती उँगलियों को भी महसूस किया।

मुआना जब बाहर आया तो उसकी आँखें लाल थीं। वह आराम से कुर्सी पर बैठ गया मानो उसके कंधे से कोई भारी बोझ हट गया हो। किसी को विशेष रूप से संबोधित किए बिना उसने कहा- "परमेश्वर ने मेरे पापों का बदला ले लिया है। पुई के कारण मेरा बेटा बच गया, मगर मैं एक हत्यारे से कम नहीं हूँ। तुम दोनों ने मेरे बेटे को मुझसे ज्यादा प्यार और स्नेह देकर पाला-पोसा। तुम दोनों के कारण मेरा मन बदल गया है। मैं परमेश्वर और तुम दोनों के सामने वचन देता हूँ कि अब से मैं सही रास्ते पर ही चलूँगा।" उसके चेहरे से उसकी बातों की सच्चाई झलक रही थी।

ऐसे माहौल में उन्होंने बस नाम के लिए ही खाना खाया। मुआना के जाने के बाद ह्लीङा ने अपनी पत्नी पुई को, जिसे वह बेहद प्यार करता था, गोद में उठा लिया और धीरे से कहा- "मूर्खता और दुर्भाग्य से दबा हुआ इंसान वाकई दयनीय होता है। उस मूर्खता और दुर्भाग्य के लिए अक्सर हम मनुष्य ही जिम्मेदार होते हैं..." यह उम्मीद करते हुए कि उसकी पत्नी कुछ कहेगी, उसने उसे देखा और कहा- "मुझे तो लगता है कि हम उस कहावत को ही जी रहे हैं, जिसमें कहा गया है कि 'छूरा ने जो फेंका, नाआ ने उसे लिया।'[11]

वह जानता था कि उसकी पत्नी उसकी बातों और मज़ाक का बुरा नहीं मानेगी। उसने उसे अपनी गोद में उठाकर कमरे में ले गया, जहाँ उनके बच्चे चैन की नींद सो रहे थे।

संदर्भ

---

[1]मिज़ो समाज में जब किसी की मृत्यु सुबह दस बजे के बाद होती है तब उसे अगले दिन ही दफनाया जाता है। ऐसी स्थिति में मिज़ो समाज में लोग मृतक के परिवार के साथ रात भर शोक गीत गाते हुए जागते हैं।

[2] मिज़ो समाज में जब किसी की मृत्यु हो जाती है तब परोपकारी मिज़ो युवकों का समूह (यंग मिज़ो एसोसिएशन के सदस्य) मृतक के लिए सुबह कब्र खोदता है।

[3] श्रमदान, स्वैच्छिक सामाजिक कार्य।

[4]उम्र में बड़े या पद में वरिष्ठ पुरुष को मिज़ो में संबोधित करते हुए उनके नाम के पहले 'पु' लगाया जाता है। यह उस व्यक्ति के प्रति सम्मान प्रदर्शित करता है।

[5] मुआनज़ुआला का संक्षिप्त रूप। मिज़ो लोग अक्सर एक-दूसरे को छोटे नाम से पुकारते हैं।

[6] पिता द्वारा स्वीकार न किया जाने वाला बच्चा।

[7] 'उ' एक संज्ञा शब्द है जिसे अपने से बड़े उम्र के व्यक्ति (स्त्री या पुरुष) को संबोधित करने के लिए प्रयोग किया जाता है। ऐसा करना सम्मान और अच्छे आचरण को दर्शाता है।

[8] पलाई शब्द का अनुवाद मध्यस्थ के रूप में किया जा सकता है। मिज़ो परंपरा में पलाई को दो परिवारों या समूहों के बीच विवाह और अन्य मुद्दों पर मध्यस्थता के लिए भेजा जाता है, जहाँ दो समूहों या दो परिवारों को किसी महत्वपूर्ण मामलों में बातचीत करनी होती है।

[9] मिज़ो में नुथ्लोई शब्द ऐसी युवा महिला के लिए प्रयुक्त किया जाता है जो नाजायज बच्चे को जन्म देती है या तलाकशुदा या विधवा होती है।

[10] मिज़ो में प्यार से अपने बेटे को बोइआ कहकर पुकारा जाता है।

[11] यहाँ मिज़ो लोककथा के एक चरित्र छूरा का संदर्भ आया है जो अपनी मूर्खता और हँसा देने वाली हरकतों के लिए जाना जाता है। छूरा की कहानियों में आमतौर पर एक अन्य चरित्र शामिल रहता है जिसे नाआ या नाहइया के नाम से जाना जाता है जो अपने आलस्य और चालाकी के लिए जाना जाता है और जिसे छूरा का मित्र माना जाता है। छूरा और नाहाइया के विषय में जानने के लिए देखें: रमणिका गुप्ता, पूर्वोत्तर आदिवासी सृजन मिथक एवं लोककथाएं, नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया, नयी दिल्ली, 2010, पृ. 196-223

2.9 थिःना थङ्वल्ह
(मृत्यु का महाजाल)

- एच. ललरिनफेला

आमतौर पर कहानियों की एक शुरुआत होती है, जहाँ से कहानी की घटनाएँ आरंभ होती हैं और उनका अंत एक निष्कर्ष के साथ होता है। कुछ कहानियाँ ऐसी भी होती हैं, जिसकी शुरुआत उसके अंत से होती है। मगर अभी जो कहानी मैं कहने जा रहा हूँ उसमें उँगली रखकर बताया नहीं जा सकता कि 'यहाँ से इसका आरंभ होता है, यहाँ अंत', क्योंकि कहाँ से इसका आरंभ हो रहा है और कहाँ इसका अंत-यह इस कहानी में पता नहीं चल रहा। इसलिए पु थङा के जीवन की घटनाओं में से किसी विशेष घटना को मैं चुनने जा रहा हूँ।

अभी सूरज की पहली किरणों ने भूमि को स्पर्श ही किया था, मगर पु थङा की सबसे बड़ी बेटी खाना बनाने के लिए चूल्हे में आग जला चुकी थी। चूल्हा संभालते हुए वह वर्तमान राजनीतिक माहौल और मिज़ोरम के भविष्य के विषय में अपनी क्षमतानुसार विचार कर रही थी। इस एक महीने से भी कम समय में एक के बाद एक ऐसी भयानक खबरें सुनने को मिल रही थीं, जिन्हें उसने पहले कभी नहीं सुना था। 'इलेक्ट्रिक वेंग में बम विस्फोट', 'सेलेसिह के चौराहे पर गोलीबारी', 'भारतीय सेना ने जेट फाइटरों से बारूद बरसाकर वॉलंटियरों को किया तहस-नहस', 'लुङ्लेई के एस.डी.ओ. का अपहरण', चम्फाई और लुङ्लेई भी पूरी तरह उग्रवादी सरकार के कब्जे में', 'दक्षिण के सभी महत्वपूर्ण सरकारी ऑफिस को वॉलंटियरों के कब्जे में'...आदि हैरान और भयभीत कर देने वाली खबरें एक के बाद एक आने लगीं। औरतें और बच्चे भयभीत हुए, लोग सतर्क हो गए, पूरे

गाँव की जिंदगी आशंका और भय से भर गई। पु थङा की बेटी भी मिज़ोरम की इस स्थिति से चिंतित थी और उसके लिए भी चैन से सोना असंभव हो गया था।

जब वह मौजूदा हालात पर विचार करते हुए चूल्हे की आग को संभाल रही थी, तभी उसे दरवाजे के खटखटाने की आवाज़ सुनाई दी। उसने दरवाजा खोला तो वहाँ तीन व्यक्ति खड़े थे, जिनमें से एक उसके स्कूल के दिनों का सहपाठी था। इसीलिए उसने बेझिझक उनका स्वागत करते हुए कहा- “अरे! सुबह-सुबह आप लोग भूलकर हमारे घर कैसे आ गए? अंदर आइए, मैं आप लोगों के लिए चाय चढ़ाती हूँ।” उनमें से उसके परिचित सहपाठी ने कहा- “तुम्हारे पिता क्या अभी तक उठे नहीं हैं? हमारे लीडर उनसे कुछ पूछना चाहते हैं। हम उन्हें अपने यहाँ आमंत्रित करने आए हैं।” उनमें से एक ने अपनी कमर में खुँसी 32 बेरेटा (beretta) पिस्तौल को हल्के से दिखाया। वे विद्रोही वॉलंटियर थे- यह बात अब किसी से छिपी न रही। ‘अपने यहाँ आमंत्रित करने’ का असली मतलब है कि ‘हम उन्हें पकड़ रहे हैं’।

पु थङा परमेश्वर से डरने वाले, दृढ़ सिद्धांतवादी व्यक्ति थे, जो कहने से ज्यादा करने में विश्वास रखते थे। वे अपने विचारों को यूँहीं बदलने वाले व्यक्ति न थे और अपने विचारों के प्रति वे दृढ़ और अटल थे। वे कोई विशाल शरीर वाले व्यक्ति नहीं थे, परंतु वे निडर और ताकतवर थे। यहाँ तक कि वे तो भालू से भी भिड़ चुके थे! ईसाई मिशन ने उन्हें प्राथमिक विद्यालय में शिक्षक के लिए नियुक्त किया था। मिज़ोरम की सर्वप्रथम राजनीतिक पार्टी ‘मिज़ो यूनियन’ की जब नयी-नयी स्थापना हुई तब वे भी इसमें शामिल हुए थे क्योंकि उन दिनों मिशन अपने कर्मचारियों को राजनीति में भाग लेने से मना नहीं करते थे। उसी समय वे मिज़ो यूनियन पार्टी की वर्किंग कमिटी के सदस्य के रूप में नियुक्त किए गए। इसके बाद उन्होंने शिक्षक का काम छोड़कर राजनीति में सक्रिय रूप से भाग

लिया। अपनी पार्टी के सबसे ऊँचे पद 'काउंसलर' के लिए चुने जाने पर एम.एन.एफ. के द्वारा उनपर निशाना साधा जाना स्वाभाविक ही था।

पु थंङा की बेटी ने उन्हें जगाया और सारी बातें बता दीं। वे जानते थे कि उन्हें यूँहीं मिलने के लिए आमंत्रित नहीं किया गया है। मगर वे जरा-सा भी डरे नहीं, क्योंकि वे जानते थे कि उन्होंने किसी का कुछ बुरा नहीं किया है। अतः बात मानते हुए वे वॉलंटियरों के पीछे अपनी बाँहों में एक पुआन दबाकर निकल पड़े। उनके निकलते समय तक उनकी पत्नी और अन्य बच्चे भी उठ गए थे; मगर किसी को चिंतित होने का कारण नज़र नहीं आया। अभी वे लोग ज्यादा दूर नहीं निकले थे कि पु थङा ने कहा- "मैं अपनी घड़ी पहनना ही भूल गया, मैं जरा घर से होकर आऊँ?" वॉलंटियरों ने उनका चेहरा देखा। वे उन्हें धोखा देने वाले न लगे। उन्हें उनपर नजर रखने की जरूरत महसूस न हुई, इसलिए उन्होंने उन्हें घड़ी लेने के लिए घर लौटने दिया। यदि पु थङा फरार होना चाहते तो पास ही में असम राइफल्स का शिविर था, जहाँ वे भागते, तो उन्हें मालूम था कि उन्हें अवश्य शरण दिया जाता।

वे फिर उन लोगों के बीच आकर शामिल हो गए, जो उनके भागने की चिंता किए बिना सिगरेट फूँकते हुए उनका इंतज़ार कर रहे थे। बिना किसी कठिनाई के वे लुङलेङ की ओर बढ़ने लगे।

हालाँकि सुबह का यह वक्त लोगों की चहल-पहल का वक्त था, मगर शायद लगभग एक महीने तक चले हिंसात्मक विद्रोह के कारण लोग अपने-अपने घरों में छिपे थे और रास्तों पर सन्नाटा पसरा हुआ था। यह पहले की तरह कोई सुबह होती तो खेतों में जा रहे लोगों से उनकी भेंट होती, मगर उस सुबह बाहर लोग न के बराबर थे। हिंसात्मक विद्रोह के उस माहौल ने बेशक लोगों के मन में अंदर-ही-अंदर भय उत्पन्न कर रखा था। गाँव से

गुजर कर जब वे तुइसाहछुआ के टीले की ओर बढ़ रहे थे तब उन्होंने देखा कि इरलियाक पक्षियों (बड़े आकार का कोयल जैसा पक्षी) का झुंड कूकते हुए जंगल से गाँव की तरफ उड़ा आ रहा है। विद्रोही वॉलंटियरों में से एक रूढ़ियों और अंधविश्वास में यकीन करता था। वह यह सोचकर चिंतित होने लगा कि हमारे पुरखे मानते थे कि जब इरलियाक पक्षी कूक-कूक कर जंगल से गाँव की ओर उड़ते हैं तो कुछ अनहोनी घटना घटती है। इसलिए लोग भी जंगल से घरों की ओर लौटा करते थे। जब उसने ये बातें कहीं तो उसके साथियों ने उसकी बातें हँसी में उड़ा दीं।

ग्रीष्म ऋतु का शुरुआती दौर था और खेती के लिए झूम खेतों को जलाने का आखिरी दौर, अतः चारों ओर काली-सफेद राख़ दिखाई पड़ रही थी। बाकी बचे जंगलों के पेड़ों और बाँसों से मुलायम अंकुर फूट रहे थे। फ़रटुआ (पारिजात) और वाऊबे (कचनार) के रंग-बिरंगे फूलों के अलावा नाऊबान (ऑर्किड) तथा अन्य फूल भी कहीं-कहीं दिखाई पड़ रहे थे जो अंजन के लाल-लाल कोमल पत्तों के साथ मिलकर एक-दूसरे की शोभा बढ़ा रहे थे। धुन्ध से ढके पहाड़ों के बीच थेरेङ (टीं-टीं की आवाज़ करने वाला एक कीड़ा) व चेपचेप (एक तरह का कीड़ा) की ध्वनियाँ भी प्रकृति की शोभा बढ़ा रही थीं। पु थङा को लेकर उन वॉलंटियरों को जल्द ही लुङलेङ पहुँचना था, इसीलिए वहाँ मोहग्रस्त होकर ठहरने का उनके पास समय न था।

रमरी (Ramri) नदी पहुँचकर सबने मुँह-हाथ धोया और तरो-ताज़ा हो गए। वे जल्दी ही फुनचोंङज़ोल पहुँच गए। वहाँ का मौसम वाकई बड़ा सुहावना था। बिना ज्यादा थके ही वे ङ्हवोक नदी पार कर सेरलुई नदी की ओर बढ़ गए, फिर ह्लिमएन होते हुए वे सेरज़ोल पहुँच गए। ज़ोङलुङदिह की चड़ाई चढ़ते हुए सूरज बिल्कुल सिर के ऊपर था। अतः एक-एक कदम बढ़ाने में पहले से बहुत अधिक परिश्रम करना पड़ रहा था। पसीने से तर जाँघों के साथ हाँफते हुए वे चढ़ते गए। वे इतने थक चुके थे कि वॉलंटियरों में से सबसे

धैर्यवान और प्रायः न थकने वाले वॉलंटियर ने भी दो बार ठहरने की सलाह दी। रास्ते के मोड़ पर गिरे लकड़ी के कुन्दे पर विश्राम करते समय उन्हें तीन हेलीकॉप्टर उड़ते दिखे। उनमें से एक ने पू थङा से कहा- "जरूर आपके सहयोगी नए वाई अफ़सर का आगमन हो रहा है।" कुछ देर तक आपस में गपशप करने के बाद वे अपनी मंजिल की ओर फिर बढ़ने लगे। पसीने से लथपथ बहुत देर तक चढ़ाई चढ़ने के बाद जब वे त्लाङफेई पहुँचे तो वहाँ ठंडी हवा बह रही थी, जिसने तुरंत ही उनकी थकान दूर कर दी। जब वे लुङ्लेङ पहुँचे तब तक सुबह से जलावन की लकड़ी बटोरने निकले लोगों के घर लौटने का समय हो चुका था।

लुङ्लेङ में सुबह का भोजन करने के बाद वे खोरिह्नीम की ओर बढ़े। खोरिह्नीम से लुङ्फुन और दोपहर होते-होते वे काङ्ह्मुन पहुँचे। वॉलंटियरों ने अपने लीडर से सलाह-मसवरा किया।उन्हें पु थङा को लुङ्फुन की ओर ही ले जाना बेहतर लगा। वे उन्हें लेकर लुङ्फुन की ओर बढ़ गए। लुङ्फुन प्राइमरी स्कूल में ग्यारह वाई बंदियों और एक मिज़ो बंदी के साथ पु थङा को जानवरों की तरह बंद कर दिया गया। लगभग सभी वाई बंदी सरकारी कर्मचारी थे। एक जो मिज़ो बंदी था, वह पु थङा के गाँव का था, जिसे 'धोखेबाज़' कहकर बहुत पहले ही पकड़ा गया था। (उस कमरे की) सभी खिड़कियों पर लकड़ियाँ ठोंक दी गई थीं ताकि खिड़कियाँ खोली न जा सकें। दरवाज़े पर कुंडी लगा दी गयी और साथ ही तीन बंदूकधारी वॉलंटियर उनकी रखवाली के लिए तैनात हो गए।

पु थङा जब ब्वायज़ एम. ई. स्कूल में पढ़ते थे तब उन्होंने ब्वायज़ स्काउट में 'मोर्से कोड' सीखा था और वे टॉर्च के माध्यम से सूचनाओं का आदान-प्रदान करने वाली 'संकेत मंडली' के लीडर भी थे। उन्हें यह आरोप लगाकर पकड़ा गया था कि उन्होंने संकेत के माध्यम से उनके तीस से अधिक लोगों (मिज़ो वॉलंटियरों) को पकड़वाया और किसी चश्मदीद ने उनके घर से आती हुई चमचमाती रोशनी देखी थी। पु थङा बार-बार यह कहते रहे कि "मैंने कभी किसी को भी पकड़वाने या नुकसान पहुँचाने के लिए सिग्नल का

प्रयोग नहीं किया। मैंने केवल किसी की मृत्यु की सूचना देने और समाज की भलाई के लिए ही संकेत माध्यम का प्रयोग किया है।" मगर उनकी बातों को किसी ने नहीं सुना।

"यह अपनी जिद पर अड़ा है। इसे अलग बंद कर देते हैं तब इसकी अक्ल ठिकाने आ जाएगी" यह कहकर उन्हें शौचालयनुमा छोटे से कमरे में बंद कर दिया गया जहाँ कमर तक की गहराई का गड्ढा था। एक सिपाही को उन पर नज़र रखने के लिए वहाँ तैनात कर दिया गया। इस नयी जगह पर जाने से पहले पु थङा ने वह पुआन, जो वे अपने घर से लेकर आए थे, उसे अपने गाँव के मिज़ो बंदी को यह कहकर दे दिया कि "तुम्हें इसकी ज्यादा जरूरत होगी।"

उनसे पूछताछ की गई, आरोप लगाए गए, झाँसा दिया गया और उनपर तरह-तरह के अत्याचार किए गए। उनका मुँह खुलवाने के लिए उन्हें कई बार भूखा-प्यासा रखा गया। लेकिन उनकी आंतरिक शांति ने उनका धीरज बाँधे रखा। वॉलंटियरों द्वारा दी गई यातनाओं को उन्होंने धैर्य व साहस के साथ सहन किया।

अपने सच्चे होने के आत्मविश्वास के कारण उनके अंदर का साहस बढ़ता जा रहा था। इस साहस ने उन्हें निराशा की खाई में गिरने से बचाए रखा। जब कभी वॉलंटियरों को लगता कि उन्होंने पु थङा के धैर्य और साहस को तोड़ दिया है वे यह कहकर अड़े रहते कि "मुझे चाहे जितनी देर भी बंदी क्यों न बना लो तुम लोग मेरे विचार नहीं बदल पाओगे।" मुक्के की चोट के कारण उनके कटे होंठ फट गए थे और खून बहकर सूख गया था। सूखे खून पर रेंग रही चींटियों के कारण वे कई रात अचानक नींद से जाग गए थे। इस दौरान उनका वजन 5 किलो तक घट गया था। फिर भी उन्होंने वॉलंटियरों को यह कहने का मौका बिल्कुल नहीं दिया कि "हमने इसको मात दे दिया।"

तीन महीने तक लगातार तरह-तरह से पूछताछ करने के बावजूद वॉलंटियरों को कोई सफलता न मिली। उन्हें और कुछ न सूझा तो उन्होंने पु थङा को खत्म कर देने का

फैसला किया। अंतिम घड़ी का अंतिम भोजन पु थङा ने उतना ही किया, जितना वे अन्य दिन करते थे। मानो उन्हें अपनी मृत्यु की कोई चिंता न हो!

उन्हें मारने के लिए जिन वॉलंटियरों की नियुक्ति की गई थी, उनका नेतृत्व सबसे भ्रष्ट और लापरवाह बटालियन कमांडर ने किया, जो पुलिस की नौकरी से भागकर वॉलंटियर बना था। वह निर्दयी दिखने वाला, ऊँची कद-काठी, चौड़े चेहरे और छोटी गर्दन वाला व्यक्ति था। पु थङा के साथ कमरे से निकलने से पहले उसकी नज़र पु थङा की घड़ी पर पड़ी। "मृत व्यक्ति के लिए समय की पाबंदी रखने का कोई मतलब नहीं हैं, इसे मुझे दे दो"- यह कहकर उसने पु थङा की घड़ी छीन ली। पु थङा के लिए वह घड़ी काफी कीमती थी। वह घड़ी अपने समय की सबसे अच्छी घड़ी कही जाने वाली 'sowar prima' घड़ी थी, जिसे उन्होंने 200 रुपए में कलकत्ता गए अपने एक मित्र से मँगवाया था। लेकिन उनके लिए वह घड़ी कितनी भी कीमती क्यों न हो, वे इस वक्त कर भी क्या सकते थे? आखिरकार उन्हें वह घड़ी देनी ही पड़ी। वॉलंटियर पु थङा को लेकर गाँव के बाहर की ओर निकल पड़े।

अप्रैल के महीने की पूर्णिमा थी, इसलिए रात उतनी काली न थी। कीलथईश्रोक (पपीहा) की आवाज़ और त्लुमपुई (कस्तूरी बिलाव) के चिल्लाने की आवाज़ के अलावा तरह-तरह के कीड़ों की आवाज़े लगातार सुनाई पड़ रही थीं। उन सब में सबसे डरावनी चिङपिरिनु (उल्लू की एक प्रजाति) की आवाज़ थी। मगर पु थङा के चेहरे पर किसी तरह का भय न था। वे अपने आने वाले बुरे समय के लिए परेशान भी नहीं दिख रहे थे।

मेंढक की एक प्रजाति है 'उपहुक'। उपहुक पर हमला किए जाने पर वह केवल एक छलांग लगाकर खुद को खतरे से बाहर मानकर शांत हो जाता है। इसलिए मिज़ो बुजुर्ग ऐसी स्थिति को 'उपहुक लुङमुआन' (उपहुक की शांति) कहते हैं, जिसमें व्यक्ति यह जानते

हुए भी कि वह किस परिस्थिति में पड़ा है शांति का अनुभव करता है । पु थङा को भी शायद 'उपहुक की शांति' प्राप्त हुई होगी या फिर उनके शांत चित्त रहने का जरूर कोई दूसरा बेहतर कारण रहा होगा।

उनके आगे-पीछे और पास चल रहे वॉलंटियरों के हाथ राइफल और कारबाइन से लैस थे। जंगल की तरफ लगभग आधा मील चलने के बाद वे एक टीले पर पहुँचे, जो थ्लाम (झूम खेत की झोपड़ी) बनाने के लिए बहुत ही उपयुक्त जगह थी।

"ले दुष्ट इंसान, तेरा समय आ गया।"- ऐसा कहकर वॉलंटियरों के कमांडर ने पु थङा को लात मारकर जमीन पर गिरा दिया। यदि वे अपने हाथों से अपना बचाव न करते तो उनका चेहरा जमीन पर जरूर लगता। उसने उन पर 303 राइफल से निशाना साधा।

"तू गद्दार और घृणा के लायक है, इसलिए मैं तुझे इस जगह पर मारने जा रहा हूँ।"

"साहब, मुझे याद नहीं कि मैंने कभी-भी गद्दारी की हो।"

"क्या तू जानता है, मैं यदि चाहूँ तो तुझे तड़पा-तड़पाकर या फिर बिना किसी दर्द के एहसास के अपनी इच्छा से मार सकता हूँ?"

"परमेश्वर की इच्छा न हो तो तुम मेरे जीवन को नियंत्रित नहीं कर सकते।"

"हुज़ूर, परमेश्वर की इच्छा है या नहीं यह देखा जाएगा।"

उसने बंदूक की पाँच गोलियाँ निकालीं और उनसे कहा- "तू जिस गोली से मरना चाहता है, ले चुन ले।"

“जिस तरह मैं तुम्हें आदेश नहीं दे सकता, उसी तरह मैं तुम्हारी बात मानने के लिए भी बाध्य नहीं हूँ। चुनने या न चुनने का आदेश देने वाले तुम होते कौन हो?”

“तुम तो बड़े हिम्मतवाले लग रहे हो? दया या माफी माँगने का नाम ही नहीं ले रहे। अभी मैं तुझे गोली मारने जा रहा हूँ, ज़रा गहरी साँस ले और अपने परमेश्वर से अपनी रूह के लिए प्रार्थना कर।”

“मेरा परमेश्वर तो हमेशा मेरे मन में बसा है। इस तरह अंतिम घड़ी से भयभीत होकर प्रार्थना करने वाला मैं नहीं हूँ।”

“बंदूक की नोक पर भी तू मुझसे बहस कर रहा है! तुझ जैसे लोगों को मारने में मुझे बड़ा मज़ा आता है। अभी तो परमेश्वर भी स्वयं तुझे बचा न सकेंगे। चूँकि तू गोली चुनना नहीं चाहता तो चल मैं तेरे माथे पर ठोस सीसा डाल देता हूँ।”- यह कहते हुए उसने अपनी बंदूक की नोक से पु थङा के माथे को दबाया, बंदूक में गोली लोड की और बंदूक का घोड़ा दबा दिया। लेकिन गोली चली नहीं। दोबारा उसने घोड़ा दबाया, पर तब भी गोली नहीं चली।

कमांडर का चेहरा लाल पड़ गया, गर्दन की नसें तनकर फूलने लगीं, मानो अभी फट पड़ेंगीं। “कमीना! तू तो बड़ा भाग्यशाली है।” गुर्राकर उसने पु थङा की कमर पर पूरी ताकत से बंदूक दे मारा। तभी बंदूक में विस्फोट हुआ, कमांडर के दोनों पैर हवा में उछले और वह पीठ के बल गिर पड़ा। उसके गले से खून का फव्वारा फूट पड़ा। उसकी साँसें फूलने लगीं। उसके साथी घबराकर उन्मत्त हो गए। वे समझ नहीं पा रहे थे कि अब क्या किया जाए। उनमें से एक ने किसी को यह कहकर भेजा कि “जाओ लाश को कंधा देने के लिए अपने और साथियों को बुला लाओ।”

उस स्थिति में जब सभी परेशान और घबराए हुए थे, पु थङा ने कहा- “प्रार्थना करने की जरूरत है।” उनमें से एक ने घबराते हुए कहा- “हुज़ूर, आप ही प्रार्थना कीजिए।”

पु थङा उस व्यक्ति के सर पर हाथ रखकर प्रार्थना करने लगे, जिसने उन पर अत्याचार किया और उन्हें जान से मारना चाहा। प्रार्थना करने के पश्चात पु थङा ने कहा- “अब यह नहीं मरेगा।”

कुछ ही देर में उनके अन्य साथी भी वहाँ आ पहुँचे और जिसके बारे में उन्होंने सोचा भी नहीं था, उसे ही कंधा देकर उन्हें ले जाना पड़ा। सौभाग्य से बंदूक की गोली ने उसकी साँस की नली या गर्दन की हड्डी को नहीं छुआ, इसलिए वह कुछ ही महीनों में ठीक हो गया। लेकिन बाद में भारतीय सेना के साथ हुई मुठभेड़ में वह गोली से मारा ही गया।

जब वॉलंटियरों के उच्च अधिकारियों को पु थङा के साथ घटित घटना का पता चला तो उन्होंने पु थङा के विषय में निर्णय लेने के लिए तुरंत बैठक बुलाई। संगठन के गृह मंत्री ने निर्णय की घोषणा दी की- “बहुत सोच-विचार करने पर मुझे लगता है कि हम उस इंसान पर हाथ उठाने जा रहे थे, जिसकी रक्षा ‘वह’ स्वयं कर रहा है। हम कहीं परमेश्वर को नाराज़ न कर दें इसलिए अधिक नुकसान पहुँचने से पहले इसे छोड़ देते हैं।”

अतः जिसे मारने के लिए पकड़ा गया था, उसे आज़ाद कर दिया गया। मगर पु थङा के चेहरे के भाव में कोई अंतर नज़र न आया, वह एक-सा ही बना रहा, बंदी होने या आज़ाद होने दोनों ही अवस्थाओं में।

2.10 खामोश है रात
(खामोश है रात)

- सी. ललनुनचंङा

मिज़ोरम के पूर्व में ललह्लेइया के गाँव वानबोङ में कई वीर युवक गाँव के प्रवेश द्वार पर अपने दूसरे साथियों की प्रतीक्षा कर रहे थे। पोलत्लाक (दिसम्बर) का महीना था, अतः वातावरण ठंडा था। सूर्य अस्त होने को था। वह धीरे-धीरे क्षितिज पर डूब रहा था। उन पुरुषों में से किसी एक ने कँपकँपाती आवाज़ में कहा- "आज शाम तो बड़ी ठंड है भाई, उस पर कमबख़्त हवा भी तेज चल रही है।

उसके पास खड़े व्यक्ति ने कहा- "कुछ ही देर में इतनी गर्मी होगी जिसकी तुमने कल्पना भी न की होगी"। उसकी बातों में गहरा अर्थ छिपा था।

प्रवेश द्वार से पश्चिम की ओर जंगली चेरी का एक पेड़ फूलों से लदा था। कुछ पंछी चेरी के फूलों का रस पीते हुए अभी भी चहचहा रहे थे। डूबते सूर्य की किरणें अब उस पेड़ पर पड़ रही थीं और वातावरण में एक खामोश-सी तनहाई परसने लगी थी।

हालाँकि गाँव के ये वीर युवा अपने दूसरे साथियों की प्रतीक्षा करते हुए साथ खड़े थे, लेकिन इनके बीच बहुत कुछ रहस्य-सा भी थ। गाँव के मुखिया के घर के बाहर के अहाते में गाँव के लोगों का एक समूह भी इकट्ठा हो रहा था, जिन्हें वे प्रवेश द्वार से देख पा रहे थे।

यदि शांति का माहौल होता तो वीर पुरुष व गाँव के युवक हाथी का शिकार करने निकलते या फिर दो-तीन रात जंगलों में घूम-घूम कर छोटे-मोटे शिकार की खोज करते, गाँव की युवतियाँ धान ढोतीं तथा बच्चे एवं उनके माता-पिता पोलकूत मनाने की तैयारी करते। मगर, अभी तो पूरे गाँव में उदासी छायी हुई थी।

वीर युवकों में से एक है खुआङसाइया जिसके बारे में कहा जाता है कि वह रात के अंधेरे में भी अपना शिकार देख लेता है। उसी सटीक नज़र वाले खुआङसाइया ने कहा- “वह तो मुखिया की माताजी लग रही हैं।”

उसके मित्र थङकूङा ने कहा- “लगता है वे हमें रोकने के लिए आ रहे हैं।”

“उम्मीद करते हैं कि ऐसा न हो।”

“अगर मुखिया की माताजी आई तो हम उनसे कह देंगे कि हम दुश्मनों से गाँव की रखवाली कर रहे हैं।”

कुछ ही देर में वहाँ वाल उपा (युवा सलाहकार) ज़साङा तथा वीर युवकों के नेता वहाँ आ पहुँचे जहाँ वे वीर युवक इकट्ठे थे। ज़साङा ने प्रवेश द्वार पर उपस्थित लोगों को देखकर कहा- “हमारी संख्या बहुत कम है। हालाँकि इससे बहुत फर्क नहीं पड़ता। कल रात भर और आज सुबह तक हम खूब लड़े, इसीलिए शायद वे लोग अब थक गए होंगे।”

“हमारी संख्या पचास से कुछ अधिक ही हैं और इतना हमारे काम को पूरा करने के लिए काफी है। बल्कि अगर हमारी संख्या अधिक रही, तो फिज़ूल में अव्यवस्था बढ़ जाएगी। वैसे भी हम लड़ने या गोली चलाने तो जा नहीं रहे, केवल सैनिकों को परेशान करना और थकाना ही तो हैं।” थङकूङा ने कहा।

“वे वहाँ ऊपर क्या कर रहे हैं?” खुआङसाइया ने ज़साङा से पूछा।

“हमारे मुखिया की बूढ़ी माँ वाइयों (बाहरी लोग) पर गोली चलाने के लिए मना कर रही हैं। वे उपा (सलाहकार) लोगों से सलाह-मशवरा कर रही हैं।”- ऐसा कहकर वह (ज़साङा) कुछ देर चुप रहा और फिर उसने कहा- “यह बड़े दुर्भाग्य की बात है कि हमारे मुखिया की मृत्यु इतनी जल्दी हो गई।”

“वाइयों पर आक्रमण कर उन्हें जवाब देने के बजाय ‘साही की तरह फल के जमीन पर गिरने का इंतज़ार करते हुए’[1] टक-टकी लगा कर बैठे रहना हो सकता है अक्लमंदी की बात हो”- खुआङसाइया ने कहा- “मगर परसों ही उन्होंने हमारे गाँव के पास की कुछ झोपड़ियाँ जलायीं और इसके अलावा कल रातभर और आज सुबह तक हम एक-दूसरे पर गोलियाँ चलाते रहे हैं। अब इसके बाद हम उनसे और क्या उम्मीद कर सकते हैं।”

हम यहाँ इस कहानी में जिन वीर युवकों की बात कर रहें हैं वे मुखिया वानपुइलला के गाँव के निवासी हैं। परंतु लुशेई हिल्स पर अंग्रेजी सेना के सर्वप्रथम आगमन से ठीक एक साल पहले सन् 1869 में वानपुइलला को सुकते आदिवासियों ने ज़हर देकर मार डाला। उनका एक ही पुत्र था ललह्लेइया। इस घटना के समय ललह्लेइया बहुत छोटा था, इसलिए गाँव की व्यवस्था उनकी माता (मुखिया की माता) तथा लल उपाओं[2] ने अपने हाथ में ले ली थी।

“ये सिपाही वही हैं जो तुइवाई नदी के तट पर ठहरे थे। सुना है कि इतनी ही संख्या में सिपाही तुइला नदी के तट पर भी हैं। कुछ दिन पहले सिपाहियों के अफसर ने पोइबोइया के उपा दारफोंङ को पलाई (मध्यस्थ) के रूप में भेजा था। दारफोंङ के अनुसार अंग्रेज सिपाही हमारे लिए नहीं बल्कि ललबूरअ के लिए आए हैं। इस साल के शुरुआती दिनों के मैदानी आक्रमण में ललबूरअ ने जो बारह बंदूकें लूट ली थीं, वे उसे ही वापस लेने आए हैं। हमारा गाँव और पोइबोइया का गाँव उनके रास्ते में पड़ता है। यदि हमारे मुखिया की माता के कहे अनुसार हम उनपर गोली न चलाते तो वे जरूर हमारे गाँव से गुज़र कर चले जाते; मगर चूँकि हमने उनपर गोली चला दी है, इसलिए हम जिसकी शुरुआत कर चुके हैं उसे गिलहरी के दर्शन[3] के अनुसार जारी रखना ही बेहतर है।”- ज़साङ ने कहा।

जिन्हें बूढ़ी मुखिया कहा गया है, वे वानपुइलला की माँ ललह्लुपुई है। उनके पति अर्थात् वानपुइलला के पिता ङूरा के समय वे बड़े वैभव के साथ सेनत्लाङ में शासन किया करते थे। उन्होंने थाहदौ की मुखिया मुङछीङी पर आक्रमण किया और उनका गाँव जलाकर लगभग उनके सभी लोगों को मार दिया। उनके थोड़े से लोग वहाँ से भाग निकले और उन्होंने अंग्रेजी अधिकारियों से उनकी शिकायत कर दी। ङूरा को सज़ा देने व उनके गाँव को जलाने के लिए वाई (बाहरी लोग) सेना श्राङचर (वर्तमान सिलचर) से आए। ङूरा के गाँव सेनत्लाङ को उन्होंने जला कर राख़ कर दिया। गाँव के जलने की उस भयानक घटना को लोग कभी भूल नहीं पाए।

उनके गाँव के वीर-युवक बुआता ने निडर होकर कहा- "मुझे उनके गोरे अफसरों पर रत्ती भर भी विश्वास नहीं है। ऊपर से वे चट्टानों पर पड़े चील के मल की तरह सफ़ेद हैं। जब से उपा (सलाहकार) लोगों ने ललसुथ्लाआ के कैद किए जाने की बात कही है, तब से उन अंग्रेजों की बातों का कोई भी मतलब नहीं है, ठीक वैसे ही जैसे कुत्ते के कानों में फंदा डालने का कोई मतलब नहीं होता। ललसुथ्लाआ के आक्रमण और लूट के पीछे का कारण भी यही था कि अंग्रेजों ने उसके पिता के कब्र को लूटा था।" गुस्से से भरी यह बात पहली बार बुआता ने गाँव के बाहर स्थित छेक-इन (धान भंडार गृह) के जले मलबे को देखकर कही थी।

"उन सब घटनाओं के कारण हमारे गाँव के मुखिया के प्रति श्राङचर के सुप्रिंटेंडेंट का क्रोध काफी बढ़ गया है, इसलिए वे हमारी पूरी जमीन पर आक्रमण करने की तैयारी कर रहे हैं। ऐसी स्थिति में सही और गलत की पहचान नहीं की जा सकती और न ही शांतिवार्ता का कोई मतलब होगा।" ज़साङा ने कहा।

इस प्रथम 'वाई लेन' अर्थात् बाहरी लोगों (वाई) के आक्रमणकारी अभियान को मिज़ो उपा 'बोरसाप लिआन' अर्थात् 'सुप्रिंटेंडेंट का आक्रमण' कहते थे। इस आक्रमण के

पीछे का सबसे बड़ा कारण था- बेङ्खुआया द्वारा अंग्रेज बच्ची का अपहरण तथा ललबूरअ द्वारा सरकारी बंदूकों की लूट।

पिछले वर्ष सन् 1870 की सर्दियों में दक्षिण के मुखिया रउलूरा के वंशजों तथा पूर्वोत्तर के ललसवूङा के वंशजों ने मिलकर मिज़ोरम के बाहर मैदानी क्षेत्रों में आक्रमण किया। यह आक्रमण मिज़ो वीर युवकों का अब तक का सबसे हिंसक आक्रमण था।

ललबूरअ और थनश्राङा तुइरियाल नदी के तट से होते हुए कछार के मैदानों में उतरे थे। उन्होंने कई चाय बगानों को लूटा। दुश्मनों के सिर तथा दास-दासियों के अलावा ललबूरअ बारह बंदूकें लेकर लौटा। वहीं दूसरी ओर पोइबोइया, लिआनखूमा और ललह्लइया के गाँवों ने मणिपुर के मैदानों की ओर आक्रमण किया। ललबूरअ और थनश्राङा के आक्रमण की तुलना में इनके द्वारा किया गया आक्रमण अधिक हिंसक नहीं था, क्योंकि इन्हें मणिपुर की ओर जाते हुए ब्रिटिश सिपाहियों ने देख लिया था। इन्होंने नागा गाँवों पर आक्रमण किया और चालीस लोगों को मार गिराया। इनके आक्रमण से सतर्क होकर ब्रिटिश सिपाही वहाँ आ पहुँचे। अतः उन्हें जल्दी ही लौटना पड़ा।

दक्षिण के रउलूरा के वंशजों का साथ बेङ्खुआया और साङ्वुङा ने दिया। ये त्लोङ नदी के तट से होते हुए मैदान में निकले। इन्होंने कई गाँवों पर आक्रमण किया और दास-दासियों के लिए लोगों को पकड़ा। वे बहुत सारी संपत्ति लूटकर लौटे। उनके द्वारा पकड़े गए दास-दासियों में एक गोरी बच्ची शामिल थी।

ललबूरअ द्वारा लूटी गई बंदूकें और बेङ्खुआया द्वारा कैद की गई गोरी बच्ची को वापस लेने के लिए अंग्रेज़ सरकार अभियान चलाने लगी। सन् 1871 के अंतिम दिनों में ब्रिगेडियर जनरल बोरसियर के नेतृत्व में दो तोप लिए 1300 सिपाही उत्तरी दिशा से ललबूरअ को पकड़ने की मंशा से सिलचर से निकले। उनके साथ 175 हाथी और 1200 कुली भी थे।

दक्षिण दिशा से मेरी विंचेस्टर को वापस लाने के लिए ब्रिगेडियर जनरल ब्राउनलॉ समेत 1650 सिपाही दो तोप साथ लिए चटगाँव से निकले। उन्होंने अपने साथ कई हाथी और 1200 कुली भी लिए।

उत्तरी दिशा से आने वाले वाई लिआन अर्थात् गैर मिज़ो सिपाही अलग-अलग समूहों में बँट गए। सबसे पहला समूह दिसम्बर के शुरुआती दिनों में सिलचर से निकला और तुइरुआङ नदी से होते हुए मिज़ोरम में प्रवेश किया। फिर तिपाईमुख से होते हुए उन्होंने तुइवाई नदी को पार किया। ललह्लेइया के वीर-युवकों ने इस समूह पर गोली चलाई और तीन सिपाहियों को मार गिराया।

सिपाहियों को ललह्लइया के वीर युवकों का सामना करना सबसे मुश्किल लगा। इसका कारण यह था कि वे जंगल में घात लगाकर उनपर हमला करते थे और उनके जवाब देने से पहले ही वे जंगलों में ही गुम हो जाते थे। वे जंगलों से खूब अच्छी तरह परिचित थे और वे जंगलों में कार्रवाई करना जानते थे। जंगलों में चलने के मामले में वाई सिपाही मिज़ो वीर युवकों के आगे कुछ भी न थे। मगर वाई सिपाही भी धीरे-धीरे आगे बढ़ते गए और बड़ी मुश्किल से ललह्लेइया के गाँव वानबोङ पहुँचे। वे गाँव की सीमा पर आग लगाने में कामयाब हुए मगर जंगलों से वीर युवकों ने उन पर धावा बोल दिया, जिससे उन्हें कुछ कदम पीछे लौटना पड़ा। अंततः 24 दिसम्बर को वाई सिपाही ललह्लेइया की बस्ती पर कब्ज़ा करने में सफल हुए।

फिर क्रिसमस का दिन आ गया।

उन्हें झूम खेतों के पास जितने भी छेक-इन[4] और थ्लाम[5] दिखे उन्होंने उसे आग के हवाले कर दिया। क्रिसमस की पूर्व संध्या और क्रिसमस की सुबह वानबोङ के वीर युवकों और वाई सिपाहियों के बीच गोली-बारी होती रही। दोपहर के समय वाई सिपाही झूम खेतों (जिसकी फसल कट चुकी थी) की ओर लौट गए। जब सिपाही वहाँ थे, तब समय ललह्लेइया के वीर युवक उनपर आक्रमण करना चाहते थे।

उस रात कड़ाके की ठंड थी। पूर्व दिशा में क्षितिज पर चाँद धीरे-धीरे निकल रहा था। चाँद की उज्ज्वल किरणें पहाड़ों की शृंखला को एक-एक कर रोशन करने लगीं। जहाँ-जहाँ उसकी किरणें पड़तीं, वहाँ सबकुछ वैसे ही साफ-साफ दिखाई पड़ने लगता, जैसे कोई बुरा सपना देखकर जागने पर शांति व राहत का एहसास होता है। भले ही वह रात पूर्णिमा की रात नहीं थी, तब भी चाँद अपनी अनुपम चाँदनी छिटका रहा था।

"चलो भई, चलने का समय हो गया।" वाल उपा (युवा सलाहकार) ज़साङ्ग ने कहा। उनमें से किसी ने भी मशाल नहीं जलायी। चाँद की रौशनी का सहारा लेकर वे पहाड़ों के रास्ते बिना किसी जल्दबाज़ी के एक-दूसरे के पीछे-पीछे चलते हुए आगे बढ़ने लगे। "अगर हम खुले में आमने-सामने होकर उनपर आक्रमण करें तो हम उनका मुक़ाबला नहीं कर सकेंगे, क्योंकि उनके हथियार हमसे कहीं बेहतर हैं। इसलिए हम अपनी पुरानी नीति के अनुसार फिर से घात लगाकर उनपर आक्रमण करेंगे।" खुआङ्साईया ने कहा।

"चाहे हम उनकी गोलियों का मुक़ाबला कर सकें या न कर सकें, उनपर गोली चलाकर उनको परेशान करने का भी तो कुछ-न-कुछ असर होगा ही।" थङ्कूङ्ग ने कहा।

"बिल्कुल सही! केवल इसलिए कि उनके हथियार हमसे अच्छे हैं, उन्हें लगता है कि हम उनसे मुक़ाबले के काबिल नहीं। उन्हें यह दिखाना जरूरी है कि उनका पाला किन वीर युवकों से पड़ा है। उनके अनुसार हम उनका निशाना नहीं हैं, बल्कि वे तो ललबूरअ पर हमला करने के लिए हमारे गाँव से गुज़र रहें हैं। मगर तब-भी उन्हें बाढ़ के समय असहाय कुत्ते कि भाँति उन्हें चुपचाप यूँहीं गुज़रते हुए देखना हम वीर युवकों के लिए बड़ी शर्मिंदगी की बात होगी।"- खुआङ्साईया ने कहा।

वे सिपाहियों द्वारा जलाए गए छेक-इन (खलिहान) के मलबे पर से होकर गुजरे, जो अब राख बनकर हवा में उड़ रहे थे। जले हुए खलिहान के मलबे से उनके गुजरने का वह दृश्य बड़ा ही दुःखद था।

“इस साल हमें अवश्य ही अकाल का सामना करना पड़ेगा।” थङकूङा ने गुस्से में अपने सामने पड़े उस खलिहान के मलबे को देखकर सोचा, जो कल तक यहीं खड़ा था। “उन्होंने मेरी जिंदगी को तहस-नहस कर दिया है।”- उसने क्रोधित होकर मन-ही-मन कहा।

आज उसकी शादी का दिन था। यदि वाई वहाँ न आते तो आज उसकी शादी होती। उन्होंने उसके सारे किए-कराए पर पानी फेर दिया। पिछले वर्ष भी वह अपनी लोमनू[6] के साथ शादी करने वाला था। पलाई[7]भेजकर सब कुछ तय हो जाने के बाद भी किसी कारणवश उसकी शादी टल गई थी और अभी फिर ऐसी स्थिति हो गई। यदि वह फिर से उसका हाथ माँगे भी तो उसके माता-पिता शायद ही राजी हो, क्योंकि दो-बार शादी का टलना मिज़ो समाज में अशुभ माना जाता है।

“सिपाहियों ने छुनकाकअ के अनुपयोगी झूम में कैंप लगाया है न?” वाल उपा (युवा सलाहकार) बुआता ने पूछा।

“तुआला के पिता ने उनपर निगरानी रखी थी और उन्होंने तो यही कहा था। वैसे तुआला के पिता खुद भी हमारे पीछे-पीछे आ रहें हैं।” ज़साङा ने कहा।

चुलपोल[8] के मैदानी भाग में सिपाहियों ने अपने ठहरने के लिए कैंप लगाया था। इसके अलावा लकड़ियों, बाँस और पत्थरों की मदद से एक बेहद कच्चे किले का भी निर्माण किया था। उसके पास ही एक झूम की झोपड़ी औंधी गिरी पड़ी थी।

चाँद की चाँदनी पहाड़ की चोटियों, पुआल से भरे मैदानों, अकेले खड़े पेड़ तथा वाउ[9] पर पड़ रही थी।

"हम पहाड़ों की चोटी और वाउ के किनारे से उनको घेरकर गोली चलाएँगे। कुछ देर तक गोली चलाने के बाद हम रुक जाया करेंगे। भोर से पहले वे शायद ही अपने कैंप से निकलने की हिम्मत करें। उनपर इसी प्रकार तीन-चार बार आक्रमण करने के बाद हम रुककर उनके कैंप से निकलने की प्रतीक्षा करेंगे। ज़ाहिर है कि वे आसानी से निकलने की हिम्मत तो नहीं करेंगे, क्योंकि वे इस बारे में अनिश्चित होंगे कि हम चले गए हैं या नहीं। यदि आसानी से उनपर आक्रमण करने की स्थिति रही तो हम गोलीबारी जारी रखेंगे, वर्ना हमें भोर होने तक इंतज़ार करना होगा। भोर होने पर वे निश्चिंत हो जाएँगे; तभी उनके कैंप से निकलते ही हम उनपर हमला करेंगे और वहाँ से निकल जाएँगे। सिपाहियों का यह पहला दल संख्या में हमसे अधिक तो नहीं होगा, मगर हमें यह ध्यान रखना है कि उनकी बंदूकें हमसे बेहतर हैं। इसीलिए बड़ी सेना पर हमला करने की तरह हमें उनपर हमला नहीं करना है। गोलीबारी के दौरान हम उनपर लगातार गोली चलाकर पत्तों के जलने की-सी आवाज़ निकालेंगे। यदि हमारा निशाना सही जगह लगा, तो उन्हें ज्यादा मज़ा नहीं आएगा।" ज़साङ्ग ने कहा।

देङ्थीरा और वुङ्तोना दोनों जुड़वाँ भाई थे। देङ्थीरा ने अपने भाई से कहा- "वुङ्ग हम दोनों मिलकर सिपाहियों को चकमा देने के लिए झूम के किनारे बाईं ओर से उतरकर एक साथ गोली चलाते हैं ताकि सिपाहियों को लगे कि हम दोनाली बंदूक से गोली चला रहें हैं।"

"बहुत बढ़िया विचार है। अगर हम वाइयों को यकीन दिलाने में कामयाब हो जाएँ कि हमारे पास भी अच्छी बंदूकें हैं तो हो सकता है वे भी चिंतित हो जाएँ।" उनके नेता ज़साङ्ग ने कहा।

वीर युवकों ने छोटी-छोटी टुकड़ियों में बँटकर धीमे-धीमे अपना स्थान लिया। चूँकि वे सब अनुभवी शिकारी थे, अतः उन्होंने पल भर में प्रेत-आत्माओं की भाँति बिना आवाज किए सिपाहियों के कैंप को पहाड़ की चोटी और झूम की सीमा की तरफ से घेर लिया।

निशाचर जीवों की आवाज़ें पूरे वातावरण में गूँज रही थीं। पहाड़ी ढलान के किनारे एक जंगली बिल्ली म्याऊँ-म्याऊँ कर रही थी। तभी एकाएक शांतिपूर्ण, शीतल और निर्मल रात गोलियों की आवाज़ से गूँज उठी। अचानक हुए हमले से कैंप के सिपाही काफी परेशान हुए। वे गोलियों के जवाब में जंगल की ओर लक्ष्यहीन गोलियाँ चलाने लगे। मिज़ो वीर युवकों की गोलियों की आवाज़ अचानक शांत हो गई।

हालाँकि पूरे वातावरण में गोलियों की गंध भर गई थी, मगर आसमान में धीमे-धीमे सरक रहे बादल शांतिपूर्ण वातावरण का-सा आभास दे रहे थे। क्षितिज पर रोशनी दिखाई पड़ रही थी, मानो भोर होने को हो। वह कोई साधारण चाँदनी रात न थी।

यह क्रिसमस का समय था।

इन क्रूर मिज़ो वीर युवकों ने, जो हमेशा आक्रमण और लड़ाई में लिप्त रहे हैं, कभी भी दो हजार वर्ष पहले बेथलेहम में जन्मे शिशु के बारे में नहीं सुना था। इसके अलावा बेथलेहम की सीमा और वानबोङ के पुआल भरे झूम में कोई समानता भी न थी, जिसे व्यक्त किया जा सके।

जब चरवाहों ने बेथलेहम की सीमा के चारागाहों में बैठकर अपने भेड़ों की रखवाली की थी, तब हो सकता है उनके द्वारा जलाई गई आग की चिंगारी की आवाज़ के अलावा कोई और आवाज़ न हो। ऐसा भी हो सकता है कि वहाँ भेड़ों की आपस की रगड़न और उनके मिमियाने की आवाज़ के अलावा और कोई आवाज़ न हो। कल्पना कीजिए कि

उस समय जब स्वर्गदूतों के समूह ने अपना गायन आरंभ किया होगा, तब सारी ध्वनियाँ किस तरह एकाएक शांत हो गई होंगी। इस दृष्टि से बेथलेहम का वह दृश्य वानबोङ की पुआल भरी झूम खेतों के इस दृश्य के समान प्रतीत होता है। वीर युवक चुपचाप कैंप की ओर देख रहे थे। पेड़ के पत्ते भी बिना आवाज़ किए हिल रहे थे।

"मुझे कुछ ठीक नहीं लग रहा है। मुझे भी ऐसा महसूस हो रहा है जैसे कुछ प्रकट होने को है, मगर क्या... मैं नहीं जानता।" ज़कापा ने कहा।

थङकूङा ने हामी भरते हुए कहा- "मुझे भी महसूस हो रहा है कि हमारे आसपास कई आत्माएँ भटक रहीं है।"

"कैसी आत्मा?" खुआङसाइया ने भयभीत होकर पूछा।

"हमारे दोस्तों की आत्मा तो नहीं है!"

अभी चाँद आकाश के मध्य तक पहुँचा नहीं था, तभी सिपाहियों के कैंप से अचानक गाने की आवाज़ आने लगी।

'खामोश है रात! पवित्र है रात!

धरती-समुद्र शांत और सुप्त;

बेथलेहम का सितारा धीमे-से चमका।

इस्राइल की निगाहें दूर से निहारे

जहाँ जन्मा है उद्धारकर्ता।'

गाने की उस आवाज में गोरखाओं और अंग्रेजों की मिली-जुली आवाज़े थीं। उनकी आवाज़ों में आपस में कोई ताल-मेल नहीं था। अंग्रेजों की आवाज़ हॉर्नबिल पक्षियों की

आवाज़ की तरह मोटी और स्पष्ट थी। कङकङ और वबाक पक्षी भी उनसे सुर में सुर मिला रहे थे। ऐसा लग रहा था मानो बहती शीतल हवा भी उन गायकों के लिए ऊँची आवाज़ में गा रही हो। झूम की सीमा पर टूटते सूखे बाँस की टूटती आवाज़ और कोयल के खर्राटे की आवाज़ भी उनके सुर से सुर मिला रही थी। मिज़ो वीर युवक उस सन्नाटे में अचानक गूँज उठे गीत को सुनकर हक्का-बक्का रह गए। उनके गायन में बाधा डालने के भय से जैसे पूरी धरती चुप हो गई हो। रात की चाँदनी के तले ऐसा प्रतीत हुआ मानो समस्त प्राणियों ने बंधुत्व का नया पाठ-पढ़ लिया हो।

आमतौर जब चाँद अपनी चाँदनी बिखेरता है, तब तारे उसके प्रति अपना सम्मान प्रकट करते हुए उससे कहीं दूर संकोच के साथ अस्पष्ट रूप से टिमटिमाया करते हैं। परंतु आज रात मानो पूरब के क्षितिज को सुशोभित करने की मंशा से अनगिनत तारे टिमटिमा रहे हैं। बादल भी गुलाबी रंग ओढ़कर उसकी शोभा बढ़ा रहे हैं। उसी समय पश्चिमी क्षितिज पर गहरे लाल रंग के बादल उमड़ रहे थे। उन बादलों की आवाजाही से ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो अतीत और भविष्य आपस में टकरा रहे हैं और अनंत तक पहुँचने की कोशिश में लगातार ऊँचाई की ओर बढ़ रहे हैं।

थङकूङा को महसूस हुआ कि इस धरती पर कुछ अभूतपूर्व घटित हो रहा हो। उसने अपने दोस्तों से कहा- "ज़रा सुनो तो, उनका गायन तेज़ हवा और बारिश की बौछार की तरह नहीं है जो आकर कुछ ही अंतराल में गुज़र जाती है। मुझे तो ऐसा महसूस हो रहा है कि उनका गायन आकाश की ओर उठता हुआ सभी दरारों में समाकर स्वर्ग में फैल रहा है। मुझे यकीन है कि इस विषय में प्रकाश डाला जाएगा"।

बंदूकों और गोलियों के धुएँ से घिरे होने बावजूद उस पल उन्हें अपने-अपने दिलों में एक अलौकिक शांति का अनुभव हुआ जो उनकी समझ से परे था। उनके दिलों में अब सिपाहियों के प्रति नफरत की भावना भी न रही। उन सिपाहियों से श्रेष्ठ या हीन होने जैसी ऊँच-नीच की भावना से भी वे मुक्त हो गए। इन्होंने एक-दूसरे पर आक्रमण किया था,

गोली चलाई थी, युद्ध किया था, मगर चाहे वे वाई हों या अंग्रेज या फिर मिज़ो, थे तो सभी मनुष्य ही।

'स्थिर है रात! पवित्र है रात!

मौन सितारे ज्योति बिखेरें

जहाँ पर रखती अचल निगाहें

कुँवारी माँ अपने सोते शिशु पर:

यीशु महान और पवित्र!'

कोई भी समझ सकता है कि मिज़ो वीर युवक गोरों के द्वारा गाए गए उस गीत की बोली से कितने अनजान रहे होंगे। उस गीत की धुन से भी वे वाकिफ नहीं थे। इन बातों के अलावा एक और बात थी, जिससे वे अपनी मृत्यु तक अनजान रहे कि वे 'ईसाई करोल' (ईसाई भजन) सुनने वाले प्रथम मिज़ो थे।

आज अगर हम ईसाई मिज़ो लोग वानबोङ की उन कटी हुई झूम खेतों पर गोरखाओं और अंग्रेजों के गाए हुए गीत को सुनें, तो हमें बहुत कुछ समझ में आएगा। उनके सुरीले होने या न होने की बात नहीं है, बल्कि आश्चर्य की बात यह है कि बारूद के धुएँ के बीच वानबोङ के मैदानों से ऐसा सुंदर, गंभीर और भावनात्मक गीत प्रकट हुआ था।

उनके गीत में हम दूर के देशों जैसे ऑस्ट्रिया के गाँवों के बच्चों के खेलने की आवाज़, लकड़ियों के जलने (bonfire) की आवाज़, इंग्लैंड में बर्फबारी के बीच अर्धरात्रि के कार्यक्रम

में प्रार्थना की आवाज़ एवं तुइवाई नदी की तेज धारा की आवाज़ सुन सकते हैं और अपने तंबू के पास तंबाकू फूँक रहे अमेरिका के रेड इंडियंस के तंबाकू के धुएँ की गंध को महसूस कर सकते हैं।

खामोश है रात, पवित्र है रात,

हर चीज़ है मौन, हर चीज़ है शांत

माँ और शिशु के आसपास,

पवित्र शिशु का करते सत्कार,

यीशु तेरे जन्म पर।

संदर्भ

---

[1] 'साही की तरह फल के जमीन पर गिरने का इंतज़ार करने' का अर्थ है किसी चीज़ का अत्यंत धैर्य पूर्वक इंतज़ार करना। मिज़ो कहावत है कि साही पेड़ से गिरते फल को अपने काँटों में फँसा लेता है और फिर धैर्य पूर्वक उस फल के सड़ने की प्रतीक्षा करता है। अंततः फल जमीन पर गिर जाता है और साही उसे खा लेता है।

[2] मुखिया के दरबार के सलाहकार, जो मुखिया की सहायता करते हैं।

[3] गिलहरी के दर्शन के अनुसार गिलहरी वही करता है जो उसे लगता है कि उसे करना चाहिए। इस पुरानी मिज़ो मान्यता का आशय यह है कि यदि किसी ने कोई कार्य शुरू किया है तो उसे उसके अंजाम तक पहुँचाना ही चाहिए।

[4] खलिहान

[5] झूम खेत की झोपड़ी

[6] झूम में मदद करने वाली सहयोगी

[7] लड़की का हाथ माँगने के लिए लड़के की तरफ से भेजे जाने वाले लोग / मध्यस्थ/ अगुआ

[8] अनुपयोगी झूम

[9] झूम की सीमा, जहाँ खेत और जंगल मिलते हैं।

अध्याय- 3

मिज़ो से हिन्दी में अनुवाद की समस्याएँ

3.1 सांस्कृतिक भिन्नता: रचना की संवेदना के अनुवाद की समस्या

3.2 भाषिक भिन्नता: मिज़ो तथा हिन्दी भाषा की भिन्न प्रकृति

3. मिज़ो से हिन्दी में अनुवाद की समस्याएँ

भारत विविध संस्कृति, परंपराओं एवं भाषाओं और बोलियों का देश है। यह दुनिया का एक ऐसा देश है जहाँ हर राज्य की अपनी-अपनी भाषाएँ व बोलियाँ हैं। भारत के किसी एक राज्य के भीतर रहने वाले लोगों में भी कई बार सांस्कृतिक एवं भाषागत विविधता देखने को मिलती है। इन्हीं सांस्कृतिक एवं भाषागत भिन्नताओं के कई सकारात्मक एवं नकारात्मक पक्ष भी हैं। सांस्कृतिक एवं भाषागत भिन्नता के कारण एक ही देश में रहने वाले विभिन्न प्रदेशों के लोग कभी-कभी एक दूसरे को समझने और जानने में असमर्थ होते हैं। अतः एक दूसरे के साथ विदेशियों का सा व्यवहार करने लगते हैं। ऐसा व्यवहार भारत के अन्य राज्यों के लोगों की तुलना में पूर्वोत्तर राज्यों के लोगों के साथ अधिक देखने और सुनने को मिलता है। ऐसे व्यवहारों के पीछे के कई कारण गिनाएँ जा सकते हैं, जिनमें से कुछ हैं- पूर्वोत्तर के राज्यों का भौगोलिक दृष्टि से मुख्य धारा से दूर होना, पूर्वोत्तर के विभिन्न प्रदेशों की अपनी अलग-अलग एवं विशेष बोलियाँ, धार्मिक मान्यताएँ, परम्पराएँ, विशिष्ट संस्कृति एवं सभ्यताएँ, आदि। अतः ये सांस्कृतिक एवं भाषागत असमानताएँ कई बार दूसरे क समाज को समझने और परस्पर विचारों के आदान-प्रदान के रास्ते का रोड़ा बनकर उपस्थित होती हैं।

साहित्य विचारों की अभिव्यक्ति का, अपने समाज-संस्कृति के विभिन्न पक्षों एवं तत्वों को लोगों के सामने प्रस्तुत करने का एक बहुत अच्छा और सार्थक माध्यम है। परंतु उपर्युक्त विविधताओं के कारण कई बार भारत के ही विभिन्न प्रांतों के लोग एक-दूसरे को उनकी अपनी भाषा में लिखी गई साहित्यिक रचनाओं के माध्यम से समझने में सक्षम नहीं हो पाते हैं। विशेषकर ऐसी रचनाएँ जो किसी ऐसी भाषा में रची गई हों, जिसका विस्तार सीमित हो तथा जो अन्य जगहों पर प्रचलित नहीं हो, उनका प्रभाव-क्षेत्र सीमित हो जाता

है। मगर भारत में ऐसे कई लोग भी हैं जो भारत की एक से अधिक भाषाओं या बोलियों को बोलते व समझते हैं। उनमें से कई ऐसे भी हैं, जो उन भाषाओं में पढ़-लिख सकते हैं। मगर यह कहना गलत न होगा कि ऐसे लोगों की संख्या बहुत कम है। ऐसी स्थिति में किसी भी भाषा की साहित्यिक धरोहर को किसी अन्य भाषा-भाषी के साथ साझा करने में अनुवाद बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। किसी अन्य भाषा में अनूदित होने पर स्रोत भाषा के साहित्य के भौगोलिक दायरे का विस्तार होता है और लोगों तक उसकी पहुँच बढ़ जाती है। किसी भाषा के साहित्य के अनुवाद से उस समाज को भी पहचान और विस्तार मिलता है जिस समाज का वह साहित्य है। मिज़ोरम भी भारत के उन राज्यों में से एक है, जिसके बारे में भारत की अन्य जगहों के लोग कम ही जानते हैं। मिज़ोरम के बारे में हमें हिन्दी में कम ही सुनने और पढ़ने को मिलता है। इसके अलावा मिज़ोरम में हिन्दी भाषा में मौलिक साहित्य सृजन न के बराबर होता है। यही कारण है कि मिज़ोरम और मिज़ो संस्कृति से हिन्दी प्रदेश के लोग प्रायः अनजान हैं। मिज़ो भाषा की मौलिक कहानियों के हिन्दी अनुवाद से मिज़ो कहानियों के साथ मिज़ो समाज-संस्कृति, उसकी परंपराओं, विभिन्न धार्मिक-राजनीतिक मान्यताओं आदि का प्रसार भी सुनिश्चित होगा तथा उसकी पहुँच और व्यापक हो जाएगी।

अनुवाद वह प्रक्रिया है जिसमें किसी भाषा की साहित्यिक या गैर साहित्यिक सामग्री का किसी अन्य भाषा में भाषांतरण किया जाता है। जिस भाषा की सामग्री का अनुवाद किया जाता है, उसे स्रोत भाषा कहा जाता है और जिस भाषा में भाषांतरण किया जाता है, उसे लक्ष्य भाषा कहते हैं। डॉ. भोलानाथ तिवारी अनुवाद के विषय में लिखते हैं कि "एक भाषा की सामग्री का दूसरी भाषा में रूपांतरण ही अनुवाद है।"[1]

रीतारानी पालीवाल अनुवाद को परिभाषित करती हुई लिखतीं हैं कि "किसी एक भाषा की ज्ञान-विज्ञान संबंधी पाठ सामग्री का दूसरी भाषा में भाषांतरण या पुनःकथन अनुवाद है।"[2]

अनुवाद की इन परिभाषाओं को पढ़ने पर ऐसा प्रतीत हो सकता है कि अनुवाद एक सरल प्रक्रिया है। स्रोत भाषा की सामान्य सूचनाओं का लक्ष्य भाषा में अनुवाद करने की प्रक्रिया सरल हो सकती है, मगर साहित्यिक रचना के अनुवाद की प्रक्रिया सामान्यतः सरल नहीं होती है। कई विद्वान भी साहित्यिक रचनाओं के अनुवाद को एक कठिन प्रक्रिया मानते हैं। असल में इसके लिए केवल स्रोत एवं लक्ष्य भाषा का ज्ञान ही काफी नहीं होता। स्रोत एवं लक्ष्य भाषा पर अच्छी पकड़ होने के साथ ही एक अच्छे और सार्थक साहित्यिक अनुवाद के लिए दोनों भाषाओं की संस्कृति का ज्ञान होना भी एक महत्वपूर्ण और अनिवार्य शर्त है। प्रोफेसर राजकुमार 'Translation: Epistemology, Methodology and Technique' विषय पर अपने वक्तव्य में अनुवाद की प्रक्रिया और स्रोत भाषा एवं लक्ष्य भाषा की सांस्कृतिक भिन्नता के संदर्भ में बिलकुल ठीक कहते हैं कि कहते हैं कि यदि अनुवादक को स्रोत भाषा एवं लक्ष्य भाषा की संस्कृति का ज्ञान नहीं है तो अर्थ का अनर्थ हो सकता है।[3] अतः एक अच्छे अनुवाद के लिए दोनों भाषाओं के अच्छे ज्ञान के साथ-साथ उन दोनों समाजों के विभिन्न पक्षों का ज्ञान होना भी अनिवार्य है, जिस समाज का वह साहित्य है और जिस समाज की भाषा में उसका अनुवाद होना है।

विभिन्न साहित्यिक विधाओं के अनुवाद की जब बात की जाती है तब ऐसी स्थिति में अनुवाद करने का अर्थ यह नहीं होता कि स्रोत भाषा में व्यक्त की गई बातों का लक्ष्य भाषा में शाब्दिक अनुवाद मात्र कर दिया जाए। साहित्यिक अनुवाद के विषय में कृष्ण कुमार गोस्वामी लिखते हैं- "साहित्यिक अनुवाद असंभव नहीं तो कठिन और जटिल अवश्य होता है, क्योंकि यह मात्र अनुवाद न होकर एक समानांतर रचना ही होता है।"[4]

जब किसी साहित्यिक रचना, जैसे कि किसी कहानी के अनुवाद की बात आती है, तब शाब्दिक अनुवाद मात्र से सफल अनुवाद संभव नहीं होता। स्रोत भाषा में लिखी गई मूल कहानी को पढ़कर जैसा भाव उत्पन्न होता है, अगर वैसा ही भाव लक्ष्य भाषा में

अनूदित होने के बाद पाठकों के मन में उत्पन्न हो, तभी उस अनुवाद को सफल माना जा सकता है। अनुवाद की प्रक्रिया ऊपरी तौर पर जितनी सरल व सहज प्रतीत होती है, वास्तव में यह उतनी ही कठिन और श्रमसाध्य प्रक्रिया होती है। स्रोत एवं लक्ष्य भाषाओं के पर्याप्त ज्ञान के बावजूद अनुवादक को एक सफल अनुवाद के लिए विभिन्न प्रकार की समस्याओं से जूझना पड़ता है। इन समस्याओं के संबंध में दो अलग-अलग उप-अध्याओं के अंतर्गत विचार किया गया है।

3.1 सांस्कृतिक भिन्नता: रचना की संवेदना के अनुवाद की समस्याएँ

मिज़ो समाज प्राकृतिक संरचना, जन-जीवन, खानपान, रहन-सहन, वेशभूषा, जीव-जंतु एवं वनस्पतियों आदि की दृष्टि से हिन्दी भाषी प्रदेश से काफी भिन्न है। मिज़ोरम में पाए जाने वाले कई जानवर एवं पेड़-पौधे हिन्दी प्रदेश में नहीं पाए जाते। यहाँ का अपना इतिहास है और अपनी किंवदंतियाँ हैं। यहाँ सदियों से प्रचलित लोककथाएँ, मुहावरे, कहावतें एवं लोकोक्तियाँ हैं, स्पष्टतः जिनकी छाप हमें मिज़ो कहानियों में देखने को मिलती है। ऐसी स्थिति में अनुवाद की प्रक्रिया में हिन्दी में उनके समतुल्य शब्दों को खोजकर सार्थक अनुवाद करना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। किसी भी भाषा का संबंध उसकी सांस्कृतिक विरासत से, उसकी परंपराओं से होता है। अतः मिज़ो कहानियों का हिन्दी में अनुवाद करते समय मिज़ो सांस्कृतिक शब्दों अथवा प्रतीकों के लिए हिन्दी के सटीक समतुल्य शब्द ढूँढने में कठिनाइयाँ आती हैं। मिज़ो से हिन्दी में अनुवाद करते समय केवल मिज़ो संस्कृति का ही नहीं बल्कि हिन्दी प्रदेश की संस्कृति का ज्ञान होना भी अनिवार्य है। कहानियों के अनुवाद की प्रक्रिया में दोनों की संस्कृतियों को ध्यान में रखते हुए मिज़ो भाषा की संस्कृति से जुड़े हुए शब्दों का हिन्दी भाषा में समतुल्य खोजना होता है।

विद्वानों का मानना है कि किसी भाषा का जो अर्थ बोध है वह संस्कृति सापेक्ष होता है और उससे जुड़े व्यक्ति के सापेक्ष भी होता है। अतः इन मिज़ो सांस्कृतिक शब्दों के हिन्दी अनुवाद में काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है और अक्सर ऐसे सांस्कृतिक अर्थ वाले शब्दों के हिन्दी में समतुल्य मिल नहीं पाते। ऐसी स्थित में हमें उनके निकटतम पर्यायों का इस्तेमाल करके समझौता करना पड़ता है या फिर मूल मिज़ो शब्दों का इस्तेमाल करते हुए उसे कोष्ठक में या संदर्भ में व्याख्यायित करना पड़ता है। मगर ऐसा करने पर भी हम मिज़ो संस्कृति को उसके समग्र प्रभाव के साथ पाठकों के मन में उतार पाने में कई बार असफल हो जाते हैं। उदाहरण के लिए मिज़ो स्त्रियों के सांस्कृतिक

परिधान को ‘पुआन’ (Puan) कहा जाता है। ‘पुआन’ एक विशेष प्रकार का, तरह-तरह की डिज़ाइनों में बुना जाने वाला आयताकार कपड़ा होता है। पुआन को कुछ उसी तरह पहना जाता है जिस तरह भारत के अन्य इलाकों में लुंगी पहनी जाती है। मगर ‘पुआन’ के लिए हिन्दी में ‘लुंगी’ शब्द का प्रयोग करने से या उसे व्याख्यायित करने से भी यह संदिग्ध ही है कि ‘पुआन’ की असली छवि पाठकों के जहन में बन पाएगी या नहीं। इसलिए हमने ‘पुआन’ को ‘पुआन’ ही लिखते हुए अलग से उसका अर्थ बता दिया है, जिससे कि मिज़ो संस्कृति का तत्व कहानी में बना रहे और पाठक उसे महसूस कर सके।

पारंपरिक मिज़ो घरों के बिस्तरों पर ‘पोनपुई’ बिछाया जाता है। हिन्दी में ‘पोनपुई’ शब्द का कोई समतुल्य नहीं मिलता, मगर इसके लिए सबसे निकटतम पर्याय ‘चादर’ या अँग्रेजी का शब्द ‘बेडशीट’ हो सकता है। मगर ‘पोनपुई’ एक पारंपरिक चादर जैसी चीज़ है जो असल में आजकल बिस्तरों पर बिछाई जाने वाली चादरों से भिन्न है। पोनपुई के लिए ‘चादर’ या ‘बेडशीट’ जैसे शब्द का प्रयोग उस समय के अनुरूप भी नहीं है, जिस समय की पृष्ठभूमि के आधार पर यह शब्द प्रयुक्त हुआ है। अतः ‘पोनपुई’ को भी हिन्दी में ‘पोनपुई’ ही लिखा गया है और फिर उसका अर्थ और सांस्कृतिक संदर्भ स्पष्ट कर दिया गया है।

इसी प्रकार मिज़ो भाषा के ‘ज़ू’ शब्द का अर्थ कहानियों की पृष्ठभूमि के आधार पर बदलता रहता है। यदि ‘ज़ू’ शब्द पारंपरिक संदर्भ में प्रयुक्त होता है तो उसका अर्थ होता है परंपरागत मिज़ो शराब जिसे चावल से बनाया जाता है। मगर जब यह ‘ज़ू’ शब्द आधुनिक संदर्भ में प्रयुक्त होता है तो इसका अर्थ स्थानीय, देशी या विदेशी शराब से लगाया जा सकता है। इसलिए कहानियों का अनुवाद करते हुए ‘ज़ू’ शब्द के लिए महज ‘शराब’ शब्द

का प्रयोग प्रत्येक कहानी के हिसाब से सही नहीं बैठता। ऐसी स्थिति में कहानी के अनुरूप 'ज़ू' के लिए 'ज़ू' शब्द का ही प्रयोग कर कोष्ठक में अर्थ बता देने की आवश्यकता पड़ती है। इस तरह हिन्दी में मिज़ो भाषा के ऐसे पारंपरिक एवं सांस्कृतिक शब्दों के समतुल्य की खोज एक बड़ी समस्या है।

मिज़ो घरों में मुर्गे-मुर्गियों को रखने के लिए बाँस का छोटा-सा टोकरीनुमा घर बनाया जाता है जिसे मिज़ो में 'अर-बोम' (Ar bawm) कहा जाता है। 'अर-बोम' के लिए जो सबसे नजदीकी हिन्दी पर्याय हो सकता है वह है 'टोकरी'। मगर 'टोकरी' शब्द पूरी तरह से 'अर-बोम' शब्द के साथ न्याय नहीं कर पाता, क्योंकि हिन्दी प्रदेश में पाई जाने वाली टोकरियों और मिज़ो 'अर-बोम' की बनावट और उसके इस्तेमाल में काफी अंतर है। मिज़ो कहानियों के हिन्दी अनुवाद के दौरान ऐसे मिज़ो शब्दों का कई बार मात्र लिप्यंतरण करके कोष्ठक में व्याख्यायित कर देने की जरूरत पड़ती है, ताकि मिज़ो कहानी में मिज़ो समाज और संस्कृति का अहसास बचा रहे।

'लली' तथा कुछ दूसरी कहानियों में भी मिज़ो संस्कृति से जुड़ा हुआ एक शब्द आया है- 'नुला रीम'। यहाँ 'नुला' का अर्थ है 'युवती' और 'रीम' को 'मिलने अथवा भेंट करने' के अर्थ में लिया जा सकता है। मगर मिज़ो समाज में 'नुला रीम' का मतलब सामान्य रूप से युवतियों से मिलना नहीं है, बल्कि मिज़ो युवकों द्वारा अपनी पसंद की युवतियों के घर उनसे मिलने और बातचीत करने जाना 'नुला रीम' कहलाता है। अतः 'नुला रीम' का हिन्दी में अनुवाद करते हुए 'युवतियों से मिलना' कहने से इस परंपरा के पीछे के सांस्कृतिक पहलू के साथ न्याय नहीं हो पाता है। ऐसी स्थिति में मिज़ो संस्कृति से जुड़े ऐसे

शब्दों का 'लिप्यंतरण' और फिर उसे संदर्भ के साथ स्पष्ट कर देना ही बेहतर है। इससे अनूदित कहानी में स्थानीयता भी बनी रहती है।

इसी प्रकार कहानियों में कई ऐसे शब्द आए हैं, जिनका बिल्कुल सटीक अनुवाद कर पाना बहुत कठिन है। वैसी स्थिति में उनका लिप्यंतरण कर उनका अर्थ कोष्ठक में या संदर्भ में दे दिया गया है। ऐसे शब्दों के कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं:

सोन (Sawn), उरलोक ज़ान (Urlawk Zan), सुमह्मुन (Sumhmun), तुइऊम (Tui um), ज़ोरम (Zoram), लसी (lasi), सब्बथ (sabbath), टेस्टीमनी (testimony), कउश्रण उपा (Kohhran Upa), ओललेन (awllen), थ्लाम (thlam), पोलकूत (Pawlkut), जिप्सी (Gipsi), ज़ोङ्गा (Zawnga), ज़ोलबूक (zawlbuk), लल (Lal), सिआपसुआप (siapsuap), श्रिङ्खुआ (Hringkhua), सेकिबुःछुआक (Sekibuhchhuak), आदि।

अनुवाद के लिए चुनी गई कुछ मिज़ो कहानियों में मिज़ो लोककथाओं के पात्रों तथा उनसे संबंधित गाँवों के संदर्भ आए हैं। ऐसी कहानियों के अनुवाद की अपनी ही चुनौतियाँ हैं। चूँकि इन कहानियों में लोक प्रचलित पात्र हैं, इसलिए मिज़ो पाठक, जो इन कथाओं के जानकार हैं, वे उनसे जुड़ी हुई कथाओं से वाकिफ हैं, अतः उनके लिए कहानी को ग्रहण करना आसान होता है। मगर हिन्दी में अनुवाद करते हुए हिन्दी पाठकों को उसी तरह अर्थ एवं बिंब ग्रहण करवा पाना वाकई एक कठिन चुनौती है। उदाहरण के लिए अनुवाद के लिए चुनी गई मिज़ो कहानी 'राउथ्ललेङ' में मृतकों की ऐसी दुनिया का प्रसंग आया है, जहाँ मिज़ो लोककथाओं के अनेक पात्र रहते हैं- जैसे नाहइया, छूरा, कूती, हेहुआ, फूङ्पुईनु, त्लीङी और ङमा आदि। इन तमाम पात्रों से जुड़ी हुई लोककथाएँ मिज़ो समाज

में प्रचलित हैं। मिज़ो लोककथाओं के जानकार व्यक्ति के लिए इन पात्रों के जरिए इस कहानी को सार्थक रूप से ग्रहण करना आसान होगा और यह समझना आसान होगा कि कहानीकार असल में क्या कहना चाहता है। मगर उन लोककथाओं से अनजान लोगों को, अनुवाद के माध्यम से कहानी की पूरी संवेदना को ठीक-ठीक समझा पाना एक बहुत ही कठिन काम है। अतः ऐसे पात्रों का संक्षिप्त परिचय पाद टिप्पणी में रखा गया है।

चुनिंदा कहानियों में से एक कहानी 'आऊखोक लसी' है, जो 'लसी' की काल्पनिक कहानी पर आधारित है। 'आऊखोक' का अर्थ होता है पहाड़ का वह खास हिस्सा जहाँ आवाज गूँजती है। इसलिए हिन्दी में अनुवाद करते समय 'आऊखोक' के लिए 'गुंजनस्थल' शब्द का प्रयोग किया गया है। मगर 'लसी' शब्द के लिए हिन्दी में कोई एक शब्द ढूँढ पाना मुश्किल है। मिज़ो पूर्वजों का मानना था कि दुनिया में कुछ अच्छी और बुरी आत्माएँ होती हैं। उन्हीं अच्छी आत्माओं में लसियों को गिना जाता था और उनका मानना था कि ये जानवरों की देखभाल करने वाली होती हैं। यह स्त्री या पुरुष किसी की भी आत्मा हो सकती है। यह भी माना जाता है कि लसी युवतियाँ बेहद सुंदर होती हैं और ये जिन इंसानी युवकों पर प्रेमपूर्वक निरछावर होतीं है, उन युवकों को शिकार का कौशल प्राप्त हो जाता है। 'लसी' जैसे पारंपरिक लोक संदर्भों वाले मिज़ो शब्द के लिए हिन्दी में कोई पर्याय नहीं है। अतः अनुवाद करते हुए 'लसी' शब्द को इसी रूप में रख दिया गया है और फिर पाद टिप्पणी में उसे संदर्भ सहित व्याख्यायित करना पड़ा है।

सांस्कृतिक भिन्नता के कारण कहानियों में प्रयुक्त होने वाले मुहावरों एवं लोकोक्तियों के अनुवाद में भी कई तरह की समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ समाज के सापेक्ष होतीं है। कभी-कभी मिज़ो मुहावरों का पर्याय हिन्दी में भी मिल जाता है, मगर हमेशा यही स्थिति नहीं रहती है। उदाहरण के लिए 'लली' नामक

कहानी में मिज़ो के लोकप्रचलित कहावत का प्रयोग किया गया है, जो मिज़ोरम की स्त्रियों की निम्न स्थिति को दर्शाता है। मिज़ो में वह कहावत है-'Hmeichhia leh Palchhia chu thlak theih alawm' (ह्मेइछिआ लेह पलछिआ चु थ्लाक थेई अलोम)[5] जिसका हिन्दी अनुवाद इस प्रकार किया गया है- 'स्त्री और टूटी बाड़ को तो बदला जा सकता है।' इस कहावत में 'स्त्री' की तुलना 'बाड़' से की गई है। अब यहाँ ध्यान देने की ज़रूरत है कि मिज़ोरम में बाँस काफी ज्यादा मात्रा में पाई जाती है और यहाँ अपने खेतों या घरों की सीमा में बाँस के बने बाड़े को लगाने का काफी प्रचलन है। बाँस के बने बाड़े को समय-समय पर बदलना पड़ता है क्योंकि यह बारिश के पानी से कुछ समय बाद खराब हो जाता है। इस मिज़ो कहावत में एक लड़की या स्त्री की तुलना बाँस के बने बाड़े से करना इस समाज में स्त्रियों की निम्न स्थिति को तो दर्शाता है, मगर इसके पीछे यहाँ के भौगोलिक और सामाजिक संदर्भ भी मौजूद हैं। इसलिए इस कहावत के हिन्दी अनुवाद से इसके भावों की गहराई और विशेषकर इसके संदर्भ को पूरी तरह स्पष्ट कर पाना बहुत ही जरूरी मगर मुश्किल कार्य है।

इसी प्रकार 'पोलितिक जिप्सी' नामक कहानी में मिज़ो लोगों की एकता या समानता को दर्शाने के लिए एक लोक प्रचलित मिज़ो कहावत का इस्तेमाल किया गया है- Arpui mei ang deuhin kan inchen tlang a. (अरपुई मेइ अङ देउहइन कन इनचेन त्लाङ अ)[6] इसका हिन्दी अनुवाद है- 'मुर्गी की पूँछ के पंखों जैसी समान लंबाई वाले।' यह कहावत यहाँ की संस्कृति के अनुरूप गढ़ा गया है। मिज़ोरम में पशुपालन की परंपरा रही है। मिज़ो लोग मुर्गियों को बरसों से पालते आ रहे हैं। मुर्गियों की पूँछ में जीतने पंख होते हैं, उनकी लंबाई लगभग बराबर होती है। उनके इसी अनुभव से जन्मी है यह कहावत जहाँ एकता या समानता को स्पष्ट करने के लिए मुर्गी के पूँछ के पंखों का उदाहरण लिया गया

है। अनुवाद की प्रक्रिया में ऐसे मुहावरों एवं कहावतों के अनुवाद में प्रायः कठिनाई उत्पन्न होती है, जिसका संबंध मूलतः उस प्रदेश की संस्कृति से होता है। हिन्दी भाषा में ऐसी कहावतों का अनुवाद करने पर भी मूल भाषा जैसा असर पैदा कर पाना काफी कठिन होता है।

'आऊखोक लसी' नामक कहानी में एक मिज़ो शब्द आता है- 'त्लोम' (tlawm) जिसका संबंध 'त्लोमङईना' (tlawmngaihna) से है। 'त्लोमङईना' शब्द के लिए हिन्दी में सर्वाधिक निकटतम पर्याय 'परोपकारिता' या 'कर्तव्यनिष्ठता' हो सकता है। अनुवाद के दौरान हमने 'त्लोम' के लिए 'कर्तव्य की भावना' लिखा है। मगर 'परोपकारिता' हो या 'कर्तव्य की भावना', 'त्लोमङईना' के पीछे छिपे गहरे सांस्कृतिक अर्थ को स्पष्ट नहीं कर पाता। 'त्लोमङईना' मिज़ो संस्कृति का अहम हिस्सा है, जिसे यहाँ के पूर्वजों के जमाने से सराहा जाता रहा है और आज भी यह इस संस्कृति का एक अभिन्न अंग है। मिज़ो लोग अपनी 'त्लोमङईना' की संस्कृति पर बहुत गर्व महसूस करते हैं। यह मिज़ो संस्कृति से जुड़ी एक परंपरा है, जिसके अंतर्गत खुद की चिंता किए बिना दूसरों की मदद करना, निःस्वार्थ भाव से दूसरों की सेवा करना, दूसरों की मदद के लिए खुद को न्यौछावर कर देना, आदि आता है। 'त्लोमङईना' शब्द के पीछे छिपे संपूर्ण भाव को व्यक्त करने वाला शब्द हिन्दी में नहीं है, अतः उसके लिए हिन्दी में मौजूद निकटतम समतुल्य शब्द का प्रयोग करना पड़ा है।

इसी परोपकारिता के आदर्श को जीवित रखने के लिए मिज़ोरम में गैर-सरकारी संगठन 'यंग मिज़ो एसोशिएशन' (वाई.एम.ए) की स्थापना 15 जून, 1935 को आइज़ोल में की गई थी। वाई.एम.ए का प्रसंग हमें 'लेमचन्ना खोवेल' नामक कहानी में देखने को

मिलता है। मिज़ो से हिन्दी में अनुवाद करते समय 'वाई.एम.ए' (यंग मिज़ो एसोशिएशन) कह देने मात्र से हिन्दी पाठकों के समक्ष मिज़ो समाज में इस संगठन की महत्ता, कार्य-प्रणाली एवं प्रभाव का कोई भी स्पष्ट रूप प्रस्तुत नहीं हो सकता है। अतः संदर्भ में इसे भी स्पष्ट कर दिया गया है।

मिज़ो की मौलिक कहानियों का जब तक जन्म हुआ, तब तक मिज़ो समाज पर, यहाँ की संस्कृति पर ईसाइयत का काफी प्रभाव पड़ चुका था। ईसाइयत का प्रभाव यहाँ के दैनिक जीवन और भाषा पर भी पड़ा। यहाँ की आम बोलचाल की भाषा में ईसाइयत से जुड़े कई विदेशी शब्द ऐसे घुल गए हैं मानो वे यहाँ की ही भाषा के शब्द हों। अतः मिज़ो कहानियों में ईसाइयत से जुड़े कई विदेशी शब्दों का प्रयोग हमें देखने को मिलता है। ईसाइयत के संस्कार और उससे जुड़े धार्मिक आचरण से अनजान हिन्दी के पाठक के लिए ऐसे शब्दों को ठीक-ठीक ग्रहण कर पाना मुश्किल है। उदाहरण के लिए 'लेमचन्ना खोवेल' नामक कहानी में 'सब्बथ'(Sabbath) शब्द का प्रयोग हुआ है, जिसका अर्थ है विश्राम का समय अर्थात् सप्ताह का सातवाँ दिन, जिसे विश्राम का दिन और ईश्वर-प्रार्थना का दिन माना जाता है। कुछ ईसाइयों के लिए यह रविवार का दिन होता है और कुछ ईसाइयों या यहूदियों के लिए यह शनिवार का दिन होता है। 'सब्बथ' शब्द के लिए हमें हिन्दी के शब्दकोश में कोई समतुल्य शब्द नहीं मिलता है। इसलिए कहानी का अनुवाद करते हुए इसका लिप्यंतरण करके इसके अर्थ को पाद टिप्पणी में स्पष्ट कर दिया गया है। इसी प्रकार ईसाइयत से जुड़े हुए अन्य शब्द जैसे 'टेस्टीमनी' का प्रयोग भी 'लेमचन्ना खोवेल' नामक कहानी में हुआ है। इस शब्द का सबसे निकटतम पर्याय 'गवाही' है। मगर 'टेस्टीमनी' के लिए 'गवाही' शब्द के प्रयोग मात्र से उसका सम्पूर्ण अर्थ स्पष्ट नहीं हो पाता है। इसलिए 'टेस्टीमनी' को 'टेस्टीमनी' ही लिखते हुए उसके अर्थ को पाद-टिप्पणी में स्पष्ट कर दिया

गया है। ऐसे ही कुछ और उदाहरण हैं- 'संडे स्कूल', 'बपतिस्मा', 'कउश्रण', 'क्रिश्चियन ह्ल बू' आदि।

मिज़ोरम के गिरजाघरों में एक विशिष्ट पद के लिए 'कउश्रण उपा या उपा' (Kohhran Upa या Upa) शब्द का इस्तेमाल होता है, जिसका अँग्रेजी समतुल्य है 'चर्च एल्डर्स' (Church Elders)। ये चर्च एल्डर्स, गिरजाघर के सदस्यों में से, गिरजाघर के सदस्यों द्वारा विशेष रूप से चुने हुए व्यक्ति होते हैं, जो चुने जाने पर गिरजाघर की विशेष समिति के सदस्य बन जाते हैं। मिज़ोरम में हिन्दी भाषी गिरजाघरों में इस शब्द के हिन्दी पर्याय के रूप में 'प्राचीन' शब्द का प्रयोग किया जाता है। अतः कहानियों के अनुवाद में हमने मिज़ोरम में सामान्य रूप से प्रयुक्त होने वाले शब्द 'प्राचीन' का प्रयोग ही किया है। मगर यहाँ के गिरजाघरों की संस्कृति से अनजान पाठकों के मन में अर्थ का अनर्थ न हो जाए इसलिए पाद टिप्पणी में 'प्राचीन' शब्द के अर्थ को स्पष्ट कर दिया गया है। इसी प्रकार एक और शब्द है 'संडे सिकुल' (Sunday school), जिन्हें संडे स्कूल लिखते हुए पाद टिप्पणी में अर्थ बता दिया गया है कि मिज़ोरम के गिरजाघरों में रविवार के दिन बच्चों एवं बड़ों को बाइबिल संबंधी पाठ पढ़ाया जाता है, जिसे संडे स्कूल कहते हैं।

मिज़ोरम की औरतें बरसों से अपने सांस्कृतिक परिधानों एवं कपड़ों को बुनने का काम करती आ रहीं है। हालाँकि भारत के हिन्दी प्रदेश में भी बुनाई का काम किया जाता है, मगर उनके उपकरणों में और मिज़ोरम में प्रयोग किए जाने वाले उपकरण में अंतर है। मिज़ोरम में कपड़े बुनने के लिए जिस उपकरण का इस्तेमाल किया जाता है, उसके एक पुर्ज़े को मिज़ो में 'थेमत्लेङ' (Themtleng) कहा जाता है। 'थेमत्लेङ' शब्द के लिए हिन्दी

में कोई पर्याय नहीं है, इसलिए इस शब्द का लिप्यंतरण कर पाद टिप्पणी में उसका अर्थ बता दिया गया है कि यह करघे में धागों के बीच से होकर गुजरने वाली लकड़ी की पट्टी है।

मिज़ो कहानियों के अनुवाद के समय जो एक बड़ी समस्या उत्पन्न होती है, वह है प्रसंग और संदर्भों के अनुसार सटीक शब्दों का चयन करने की समस्या। उदाहरण के लिए 'खामोश है रात' नामक कहानी में 'Lal' (लल) शब्द प्रयुक्त हुआ है। यदि हम शब्दकोश में देखते हैं तो 'लल' का अर्थ 'राजा' और 'मुखिया' दिया गया है। मिज़ो में 'लल' शब्द राजा और मुखिया दोनों अर्थों में प्रयुक्त होता है। कहानियों में जहाँ 'मिज़ो लल' की बात आती है, वहाँ मिज़ो समाज की संरचना को समझते हुए, 'लल' शब्द के लिए सटीक हिन्दी पर्याय 'मुखिया' होता है। अतः मिज़ो शब्दों के लिए हिन्दी के सटीक शब्दों का चयन कर सकने के लिए स्रोत भाषा के सामाजिक एवं सांस्कृतिक संदर्भों की सही जानकारी रखना जरूरी है।

इसी प्रकार मिज़ो शब्द 'उपा' का भी कहानी की पृष्ठभूमि के अनुसार अर्थ बदलता रहता है। उदाहरण के लिए यदि 'उपा' शब्द आधुनिक पृष्ठभूमि और ईसाइयत के बाद के मिज़ो समाज पर केंद्रित कहानियों में प्रयुक्त होता है तो उसका अर्थ गिरजाघरों के 'प्राचीन' (चर्च एल्डर्स) के संदर्भ में लिया जाता है। मगर 'उपा' शब्द यदि प्राचीन मिज़ो समाज के संदर्भ में आता है तो वह मिज़ो गाँव के मुखिया के 'सलाहकार' के संदर्भ में आता है। इसी तरह यदि सामान्य बोलचाल में 'उपा' शब्द का प्रयोग होता है तो वहाँ उसका अर्थ 'बुजुर्ग' भी हो सकता है। अतः अनुवाद के दौरान शब्द चयन की गलतियों से बचने के लिए कहानी की पृष्ठभूमि एवं काल से अवगत होना जरूरी है। इसलिए 'लली' नामक कहानी में प्रयुक्त होने वाले 'उपा' शब्द और 'खामोश है रात' में प्रयुक्त होने वाले 'उपा' शब्द के अनुवाद में शब्द चयन में अंतर है।

मिज़ोरम में खेती से संबंधित कई तरह के त्योहार मनाए जाते हैं। हिन्दी में अनुवाद करते समय मिज़ो त्योहारों के नामों के अनुवाद की भी समस्या उत्पन्न होती है। जैसे 'खामोश है रात' नामक कहानी में 'पोलकूत' (Pawlkut) नामक मिज़ो त्योहार का प्रसंग आया है। ऐसी स्थिति में केवल हिन्दी में मिज़ो त्योहार का नाम लिख देने से काम नहीं चलता। इसलिए इस त्योहार का संक्षिप्त परिचय संदर्भ में दे दिया गया है कि पोलकूत दिसम्बर और जनवरी के बीच मनाया जाने वाला फसलों का त्योहार है। मिज़ो कहानियों में झूम खेती से संबंधित अन्य शब्द भी आए हैं, जैसे 'ओललेन' (Awllen) अर्थात् दो फसलों के बीच का खाली समय, 'छेक इन' (Chhek In) अर्थात् धान भंडार गृह, 'थ्लाम' (Thlam) अर्थात् झूम के बीच में खेत की रखवाली के लिए और किसानों के ठहरने के लिए बनी झोपड़ी, आदि। अनुवाद के दौरान इन मिज़ो शब्दों का लिप्यंतरण करते हुए इनका अर्थ या तो कोष्ठक में या फिर संदर्भ में दे दिया गया है।

मिज़ो भाषा में एक बहुत प्रचलित गाली है 'ज़ोङा', जिसका शाब्दिक अर्थ है 'बंदर'। हो सकता है मिज़ोरम के बाहर किसी को 'बंदर' कहकर गाली देने से उसे उतना बुरा न लगे, मगर किसी मिज़ो व्यक्ति को 'ज़ोङा' कह देने से उसे बहुत बुरा लगता है। मिज़ो समाज में इस गाली को बहुत खराब समझा जाता है। वैसे भी गालियों का अपना गहरा समाजशास्त्र होता है। अतः 'लेमचन्ना खोवेल' कहानी में जहाँ 'ज़ोङा' शब्द आया है, वहाँ इसे 'ज़ोङा' ही लिखते हुए कोष्ठक में इसका अर्थ दे दिया गया है, क्योंकि 'ज़ोङा' का हिन्दी अनुवाद कर सीधे 'बंदर' लिख देने से सामाजिक-सांस्कृतिक भिन्नता के कारण पूरा प्रसंग बदल सकता है तथा इस गाली का जो वास्तविक प्रभाव मूल कहानी में है, वह कुछ कम हो सकता है।

प्राचीन मिज़ो समाज में इंसानों के मरने के बाद आत्माओं की दुनिया के विषय में जो मान्यताएँ हुआ करती थीं उनका उल्लेख 'लेमचन्ना खोवेल' तथा 'राउथ्ललेङ' कहानियों में किया गया है। उदाहरण के लिए 'पोला के गुलेल' का उल्लेख हमें 'लेमचन्ना खोवेल' कहानी में मिलता है। मिज़ो प्राचीन मान्यताओं का जानकार ही समझ सकता है कि 'पोला के गुलेल' का क्या अर्थ है और इसका उल्लेख किस संदर्भ में किया गया है। परंतु मिज़ो समाज से अपरिचित व्यक्ति के लिए यह प्रसंग बिल्कुल नया और असमंजस में डालने वाला है। इस तरह के प्रसंगों के पीछे छिपी लोक मान्यताओं को हू-ब-हू अनुवाद के माध्यम से प्रस्तुत कर पाना एक बहुत बड़ी चुनौती है। ऐसी स्थिति में उन वाक्यांशों का लिप्यंतरण किया गया है और फिर संदर्भ में उनके अर्थ को स्पष्ट कर दिया गया है।

इसी प्रकार मिज़ो पारंपरिक मान्यताओं से जुड़े हुए शब्द हमें 'राउथ्ललेङ' कहानी में भी खूब देखने को मिलते हैं। उन शब्दों में से एक उदाहरण है- 'मित्थी खुआ', जिसका शाब्दिक अर्थ है 'मृतकों का गाँव'। ईसाइयत के प्रसार से पूर्व के पारंपरिक मिज़ो समाज में पूर्वजों की धारणा थी कि मृत्यु के बाद मनुष्य की आत्मा 'मित्थी खुआ' की ओर पलायन करती है। बिना इस प्राचीन मिज़ो लोक मान्यता को जाने-समझे कहानी में सिर्फ 'मित्थी खुआ' की जगह 'मृतकों का गाँव' लिख देने से बात नहीं बन पाती है। अतः मिज़ो संस्कृति से जुड़े हुए ऐसे शब्दों का लिप्यंतरण करके उनका अर्थ उसके सांस्कृतिक संदर्भ के साथ कहानी के अंत में टिप्पणी के रूप में दे दिया गया है ताकि मिज़ो संस्कृति की जो छाप हमें मिज़ो कहानियों में देखने को मिलती है, वह ज्यादा-से-ज्यादा हमें हिन्दी में अनूदित होने के बाद भी मिल सके। इसी तरह के अन्य शब्दों के उदाहरण हैं- 'लुङ्लउतुइ', 'थुआःरियातह्नुआई', 'सिआपसुआप', 'ज़ुफ़ाङ', 'फूङ्पुइनू', 'श्रिङ्लङ त्लांग', 'लुमलेर गुफा', आदि।

चुनिंदा मिज़ो कहानियों में से कुछेक कहानियों जैसे 'खामोश है रात', 'लली', 'आऊखोक लसी' और 'लेमचन्ना खोवेल' में कथानक के अनुरूप मिज़ो एवं अँग्रेजी गीतों व कविताओं की पंक्तियों को शामिल किया गया है। इन गीतों व कविताओं की पंक्तियों के अनुवाद की अपनी ही कठिनाइयाँ हैं। इनके अनुवाद के समय हमें मिज़ो शब्दों या अँग्रेजी के हिन्दी पर्याय को बड़ी ही सावधानी से चुनना पड़ा है, ताकि मूल गीत अथवा काव्य पंक्तियों में लय एवं तुक के कारण या विशेष शब्दों के प्रयोग के कारण जो काव्यात्मक चमत्कार उत्पन्न हो रहा है, कहीं वह हिन्दी में अनुवाद करने पर गुम न हो जाए। इसके साथ-साथ गीत के भीतर आने वाले सांस्कृतिक संदर्भों को भी ध्यान में रखना होता है। इस तरह के गीतों का अनुवाद निश्चित रूप से बहुत ही मुश्किल और चुनौती भरा काम है। बस एक उदाहरण द्रष्टव्य है-

"Chhawrthlapui thangvan zawlah, (छोरथ्लपुइ थङवान ज़ोलह)

A lo chhuak eng mawiin; (अ लउ छुआक एङ मोई इन)

Zal lai tho rawh Rautinchhing, (ज़ाल लाई थउ रोह राऊतिनछीङी)

Lung di dar ang i tawn nan, (लुङ दी दार अङ इ तोन नान)

Zingtian lenkawl en hma chu, (ज़ीङटियान लेनकोल ऐन ह्मा चु)

Nau ang nui hiau ang che!!"[7] (नाऊ अङ नुइ हिआऊ अङ चे)

उपर्युक्त गीत 'आऊखोक लसी' नामक कहानी में राउतिनछीङी के लिए उसके बड़े भाई ने गाया था, जिसका हिन्दी अनुवाद इस प्रकार किया गया है:

“फैले हुए आसमान में चाँद

अपनी सुंदर रोशनी के साथ निकल आया है

नींद से जागो, राऊतिनछीङी,

अपनी तमन्नाओं को गले लगाओ

इससे पहले कि भोर हो जाए

सारी खुशियों को तुम्हारा हो जाने दो।”

इस तरह हम देख सकते हैं कि मिज़ो समाज और हिन्दी प्रदेश की भिन्न सामाजिक-सांस्कृतिक परिस्थितियों के कारण मिज़ो कहानियों के हिन्दी अनुवाद में कई तरह की और कई स्तरों की कठिनाइयाँ आती हैं। लेकिन इसके बावजूद अनुवाद की तकनीकों की मदद से, मिज़ो शब्दों के लिए सर्वाधिक उपयुक्त व निकटतम हिन्दी पर्याय ढूँढते हुए और जहाँ कहीं भी ज़रूरी लगा, वहाँ मिज़ो शब्दों को संदर्भ के साथ व्याख्यायित करते हुए मिज़ो कहानियों का हिन्दी में सफल और सार्थक अनुवाद प्रस्तुत करने की पूरी कोशिश की गई है।

3.2 भाषागत भिन्नता: मिज़ो तथा हिन्दी भाषा की भिन्न प्रकृति

मिज़ो और हिन्दी भाषा एक दूसरे से प्राकृतिक दृष्टि से काफी भिन्न हैं। बोलने एवं लिखने में मिज़ो भाषा हिन्दी से कई अर्थों में भिन्न है। इन दो भाषाओं की इसी भाषिक प्राकृतिक भिन्नता के कारण मिज़ो से हिन्दी में अनुवाद करते समय कई समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। हिन्दी और मिज़ो दो भिन्न भाषा परिवार की भाषाएँ हैं और इनकी भाषिक संरचना एकदम भिन्न है। हिन्दी की वाक्य संरचना में कर्त्ता-कर्म-क्रिया का क्रम बना रहता है, मगर मिज़ो की वाक्य संरचना में यह क्रम बदलता रहता है। उदाहरण के लिए हम मिज़ो के एक सामान्य से वाक्य को देख सकते हैं- ‘chaw ka ei dawn’ (चो क एइ दोन) यहाँ ‘चो’ कर्म, ‘क’ कर्त्ता और ‘अइ दोन’ क्रिया है। अतः अगर हम इसका मिज़ो वाक्य संरचना के आधार पर अनुवाद करते हैं तो इसका अनुवाद कुछ ऐसा होगा- ‘खाना मैं खाऊँगी/खाऊँगा, जो हिन्दी भाषा की दृष्टि से सही वाक्य नहीं है। इसका सही अनुवाद होगा ‘मैं खाना खाऊँगी/खाऊँगा’। इसी प्रकार एक अन्य मिज़ो वाक्य है ‘muangchangin a kal a’ (मुआङ्चाङ्इन अ कल अ)। यहाँ ‘मुआङ्चाङ्इन’ क्रिया विशेषण, ‘अ’ कर्त्ता और ‘कल अ’ क्रिया है। यदि इस वाक्य का शब्दशः अनुवाद किया जाए तो यह होगा- ‘धीरे से वह गया/गई’, जो कि हिन्दी की प्रकृति के अनुरूप नहीं है। हिन्दी में इसे ‘वह धीरे से गया/गई’ लिखा जाएगा। इन छोटे-छोटे वाक्यों की तुलना में कहानियों में प्रयुक्त अपेक्षाकृत लंबे और जटिल वाक्यों के अनुवाद में मिज़ो और हिन्दी वाक्यों की व्याकरणिक संरचना की इस भिन्नता के कारण और अधिक कठिनाई होती है। अतः दोनों भाषाओं की वाक्य संरचना में भिन्नता के कारण अनुवाद करते हुए मूल भाव और अर्थ को संभाल पाने में कई बार समस्या उत्पन्न होती है।

मिज़ो एवं हिन्दी के वाक्य में एक अंतर यह भी है कि मिज़ो वाक्य के आधार पर लिंग भेद नहीं किया जा सकता है। अतः अनुवाद के दौरान जरा-सी भी असावधानी से चूक हो सकती है। अनुवाद के दौरान स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा की इन व्याकरणिक भिन्नताओं का ख्याल रखना पड़ता है, जो निश्चित तौर पर अनुवादक से विशेष सावधानी की माँग करता है।

मिज़ो भाषा में एक ही तरह से लिखे जाने वाले शब्दों के कई उच्चारण हैं और उनके उच्चारण की भिन्नता के आधार पर उनके अर्थ बदल जाते हैं। ऐसी स्थिति में अनुवाद के दौरान मूल कहानी को पढ़ते हुए थोड़ी-सी भी लापरवाही या चूक बहुत बड़ी गलती साबित हो सकती है। इसके अलावा कई बार यह जानना काफी मुश्किल हो जाता है कि कहानीकार के द्वारा प्रयोग किए गए शब्द का सही उच्चारण क्या है और वह वास्तव में किस अर्थ में प्रयुक्त किया गया है। मूल कहानी को पढ़ते समय सावधानी बरतने से हम इस समस्या से बच सकते हैं। उदाहरण के तौर पर 'लली' कहानी के इस वाक्य में प्रयुक्त 'hmui'(ह्मूई) शब्द को देखा जा सकता है:

"Lali pawh chuan a hmui chu a han hung na a, a kai hman ngang lo."[8]

उपर्युक्त वाक्य में प्रयुक्त 'hmui'(ह्मूई) शब्द के उच्चारण के अनुसार तीन अर्थ बनते हैं- होंठ, दिलकश गंध और चरखा। अतः एक ही शब्द के उच्चारण के अनुसार अर्थ में भिन्नता होने से अनुवादक को यह समझने में कठिनाई होती है कि कहानीकार ने इस शब्द का असल में किस अर्थ में प्रयोग किया है। अनुवाद के दौरान सावधानी न बरतने पर पूरे वाक्य का अर्थ बदल सकता है। अतः सही अनुवाद करने के लिए वाक्य को ध्यान से उसके संदर्भ के साथ पढ़ने की आवश्यकता होती है। उपर्युक्त मिज़ो वाक्य का सही अनुवाद होगा- 'लली सूत कातने के लिए चरखे पर बैठी, मगर कात न सकी।'

एक से अधिक अर्थ देने वाले कुछ और मिज़ो शब्दों के उदाहरण हैं-

Zo (जऊ)- समाप्त / ऊँचा/ क्षमता, Sum (सुम)- धन/ ओखली/ मापदंड/ संयम, Hnar (ह्नार)- नाक / स्रोत / खर्राटा, Vei (वेइ)- बायाँ / से ग्रस्त / किसी चीज के लिए घोर चिंता, In (इन)- घर / पीना, Hnu (ह्नू)- बाद / चिह्न, sawmna (सोमना)- खंड / नेवता, आदि।

चुनिंदा मिज़ो कहानियों में मिज़ो लोकोक्ति एवं मुहावरों का प्रयोग किया गया है। कई बार इन मिज़ो लोकोक्तियों एवं मुहावरों का हिन्दी में समतुल्य नहीं मिल पता। ऐसी स्थिति में लोकोक्तियों एवं मुहावरों के सार्थक व भावपूर्ण अनुवाद करने की समस्या उत्पन्न होती है। उदाहरण के लिए 'लली' नामक कहानी में स्त्रियों की दयनीय स्थिति को बताते हुए मिज़ो की प्रचलित लोकोक्ति 'Hmeichhia leh Palchhia chu thlak thei alawm' (ह्मेइछिआ लेह पलछिआ चु थ्लाक थेई अलोम) का प्रयोग किया गया है, जिसका हिन्दी में अनुवाद इस प्रकार किया गया है- 'स्त्री और टूटी बाड़ को तो बदला जा सकता है।' इस अनुवाद से लोकोक्ति में निहित मूल भाव को तो व्यक्त किया जा सका है, परंतु मूल मिज़ो लोकोक्ति में जो तुकबंदी 'ह्मेइछिआ' और 'पलछिआ' के कारण उत्पन्न होती है, उसे ज्यों-का-त्यों हिन्दी भाषा में लाने में अनुवाद असमर्थ रहता है। जब हम इसका हिन्दी में अनुवाद इस प्रकार करते है कि 'स्त्री और टूटी बाड़ को तो बदला जा सकता है', तब मूल मुहावरे की तुकबंदी हिन्दी में लुप्त हो जाती है। इस तुकबंदी के कारण जो गीतात्मकता मिज़ो लोकोक्ति में थी और जो मिज़ो भाषा की अपनी विशेषता है, वह अनुवाद की प्रक्रिया में लुप्त हो जाती है।

इसी प्रकार एक और मिज़ो लोकोक्ति है- 'Hmeichhia leh zawhte chu a chul nel peih peih' (ह्मेइछिआ लेह् जोहते चु अ चूल नेल पेइह् पेइह्') अर्थात् 'स्त्री और बिल्ली उन्हीं को ज़्यादा पसंद करती है, जो उन्हें ज़्यादा सहलाते हैं।' इस लोकोक्ति का भी जब हम हिन्दी में अनुवाद करते हैं तब मूल का-सा भाव और प्रवाह उत्पन्न करने में समस्या आती है।

मगर कुछ कहानियों में मिज़ो भाषा के ऐसे मुहावरों का प्रयोग किया गया है जिसके अर्थ हिन्दी के मुहावरों से मिलते-जुलते हैं। उदाहरण के लिए 'खामोश है रात' नामक कहानी में 'Tinther tiat pawh'[9] (तिनथेर तियात पोह) का प्रयोग किया गया है, जिसका शब्दशः अर्थ है 'नाखून की नोक भर' और जिसके लिए हिन्दी में अर्थ की दृष्टि से 'रत्ती भर' बिलकुल ठीक बैठता है। अतः अनुवाद में इसका प्रयोग किया गया है। इसी तरह 'सिल्वरथङी' नामक कहानी में एक मुहावरे का प्रयोग किया गया है, जो मिज़ो में इस प्रकार है- 'tui tla mangang chuan buhpawl pawh an pawm e'[10] (तुइ त्ला मङअङ चुआन बुहपोल पोह् अन पोम ए) इस मुहावरे का सीधा अर्थ है 'पानी में डूबता हुआ व्यक्ति धान की बालियों के सहारे को भी स्वीकार कर लेता है' और ठीक इसी भाव का मुहावरा हिन्दी में पहले से मौजूद है- 'डूबते को तिनके का सहारा'। अतः जिन स्थितियों में मिज़ो मुहावरों या लोकोक्तियों के पर्याय हिन्दी में मिल जाते हैं, उनमें अनुवाद करने में कोई कठिनाई नहीं होती है, मगर जिन मुहावरों के हिन्दी में निकटतम पर्याय नहीं मिलते उनके अनुवाद में समस्या उत्पन्न होती है।

अनुवाद के लिए चुनी गईं दस मिज़ो कहानियों में से कई ऐसी कहानियाँ है, जिनमें परिस्थिति के अनुरूप गीत और कविताएँ रखी गई हैं। हिन्दी भाषा में उन गीतों एवं

कविताओं का अनुवाद करते समय उनकी तुकबंदी व काव्यात्मकता या गीतात्मकता का अनुकरण कर पाना काफी कठिन और कभी-कभी बिल्कुल असंभव होता है।

कभी ऐसा भी होता है कि मूल मिज़ो कहानियों में कुछ ऐसे अस्पष्ट प्रसंग आते हैं, जो हमें अनुवाद के दौरान दुविधा में डाल देते हैं। ऐसे समय में हमें सावधानी से, सतर्क होकर अपने विवेक का इस्तेमाल करना पड़ता है। उदाहरण के लिए 'थिःना थङवल्ह' नामक कहानी में 'Home Minister'[11] (गृह मंत्री) का प्रसंग आया है। लेकिन कहानी में स्पष्ट रूप से यह नहीं बताया गया है कि जिस गृह मंत्री का प्रसंग आया है वह कहाँ के गृह मंत्री हैं। अतः इस प्रसंग के आने से दुविधा उत्पन्न हो गई थी, मगर कहानी को ध्यान से पढ़ते हुए यह जान पड़ता है कि जिस गृह मंत्री का प्रसंग आया है, वह संभवतः मिज़ो विद्रोह के वॉलेंटियरों का गृह मंत्री था। अन्य कहानी में भी कई ऐसे प्रसंग हैं जो दुविधा में डालते हैं और जिसके कारण अनुवाद में बाधा उत्पन्न होती है।

चयनित मिज़ो कहानियों में कहीं-कहीं वाक्य काफी लंबे-लंबे हैं। कहानियों के पात्रों के संवाद कहीं-कहीं बड़े लंबे हैं। ऐसे लंबे-लंबे वाक्यों के अनुवाद में मुश्किलें आती हैं। पूरे मिज़ो वाक्य का एक साथ हिन्दी में अनुवाद करने से कभी-कभी अर्थ भंग की स्थिति पैदा हो जाती है। अतः इस समस्या से बचने के लिए मिज़ो वाक्यों को तोड़कर हिन्दी में एक से अधिक वाक्यों में उसका अनुवाद कर दिया गया है। ऐसा करने से कथन की सार्थकता बनी रहती है।

उदाहरण के लिए 'पोलितिक जिप्सी' कहानी के इस वाक्य को देखा जा सकता है:

"Hetiang hi kan lo ni ta si a, i phu tawk awm hnate pawh kan dap ve a ni ang chu le, Han leng vel la, kei lah ka mawl si, Aizawl mi lian leh Ministerte pawh han be vel la, dik tak leh fel takin thil i ti zel ang a,

Pathian-in a tanpui ang che, tiin thu a rawn a."[12] (हेतियाङ ही कन लो नि त सी अ, इ फू तोक ओम ह्नाते पोह् दप वे अ नि अङ चु ले, हन लेङ वेल ल, केई लह् क मोल सी, आइज़ोल मि लियान लेह् मिनिस्टरते पोह् हन बे वेल ल, दिक तक लेह् फेल तकइन थिल इ ति ज़ेल अङ अ, पथियान-इन अ टनपुइ अङ चे, तिइन थू अ रोन अ)

उपर्युक्त मिज़ो के एक वाक्य का हिन्दी में अनुवाद इस प्रकार विभिन्न वाक्यों में किया गया है:

"उसके चाचा ने उसे सलाह दी कि हमारी स्थिति तो तुम समझते ही हो। अब तुम्हें अपने लायक नौकरी की तलाश करनी चाहिए। तुम ज़रा निकलकर छान-बीन करो, मैं तो ठहरा बेवकूफ। आइज़ोल के बड़े लोगों और नेताओं से ज़रा बात करो। सच्चाई और ईमानदारी के साथ सबकुछ करते रहना, भगवान तुम्हारी मदद ज़रूर करेंगे।"

मिज़ोरम में किसी वस्तु की चौड़ाई या लंबाई को मापने के लिए पारंपरिक रूप से 'ह्लम' (hlam) और सुम (sum) जैसे मापदण्डों का इस्तेमाल किया जाता रहा है। 'ह्लम' और 'सुम' जैसे शब्दों का प्रयोग 'राउथ्ललेङ' नामक कहानी में मिलता है। दोनों हाथों को सीधा फैलाने पर एक सिरे से दूसरे सिरे तक की पूरी लंबाई को एक ह्लम कहते हैं और एक सुम चार मुट्ठी की लंबाई के बराबर होती है। हिन्दी में ह्लम व सुम के लिए कोई समानार्थक शब्द या निकटतम पर्याय उपलब्ध नहीं है। अतः हिन्दी में ऐसे शब्दों का लिप्यंतरण करते हुए उनका अर्थ कोष्ठक में रख दिया गया है। जैसे- 1 सुम = 4 मुट्ठी की लंबाई और 1 ह्लम = दोनों हाथों को सीधा फैलाने पर एक सिरे से दूसरे सिरे तक की लंबाई।

सामान्यतः सभी कहानियों में अपने काल के अनुरूप आम बोलचाल की मिज़ो भाषा का प्रयोग किया गया है, मगर कुछ कहानियाँ ऐसी भी हैं जिनमें मिज़ो की

साहित्यिक परिष्कृत भाषा एवं काव्यात्मक भाषा का प्रयोग भी मिलता है। ऐसी स्थिति में अनुवाद के दौरान यह समस्या उत्पन्न होती है कि इस परिष्कृत साहित्यिक एवं काव्यात्मक मिज़ो भाषा को हिन्दी में कैसे प्रस्तुत किया जाए, जिससे भाषा बनावटी न लगे और सहज रूप से पूरी कहानी में भाषा का संतुलन बना रहे। उदाहरण के लिए आम बोलचाल की मिज़ो भाषा में चाँद को 'थ्ला' (thla) कहते हैं, मगर जब चाँद का प्रसंग गीतों में या कविता में आता है तब उसे सामान्य रूप में 'थ्ला' न कहकर 'छोरथ्लपुइ' (Chhawrthlapui) कहा जाता है। अतः अनुवाद के समय ऐसे काव्यात्मक शब्दों के अनुवाद में समस्या उत्पन्न होती है। अनुवाद के समय हमने 'छोरथ्लपुइ' के लिए भी 'चाँद' शब्द का ही प्रयोग किया है।

स्रोत भाषा से लक्ष्य भाषा में जब किसी रचना का अनुवाद किया जाता है तब कई बार अनुवाद की इस पूरी प्रक्रिया में मूल रचना से कुछ बातों का लोप हो जाता है और कभी-कभी अनूदित रचना में कुछ-कुछ जुड़ जाता है जो मूल में नहीं होता। कहानी या अन्य रचनात्मक साहित्य के अनुवाद में यह बहुत मुश्किल है कि मूल रचना का सब कुछ हू-ब-हू लक्ष्य भाषा में आ जाए। स्रोत भाषा एवं लक्ष्य भाषा की भाषागत और सांस्कृतिक भिन्नता के कारण यह संभव नहीं हो पाता है। अनुवाद की प्रक्रिया में इसे 'लॉस ऐंड गेन' का सिद्धांत कहा जाता है। मिज़ो कहानियों के हिन्दी अनुवाद के दौरान भी कई वाक्य लुप्त हो गए और कई वाक्य अनूदित कहानी में जुड़ गए है। ऐसा करना कई बार अनिवार्य हो जाता है। मिज़ो कहानी 'थिःना थङवल्ह' के अनुवाद 'मौत का महाजाल' में एक वाक्य का उदाहरण हम देख सकते हैं, जो अनुवाद के दौरान अतिरिक्त रूप से जोड़ा गया है- "उसने बेझिझक उनका स्वागत करते हुए कहा...।" मूल मिज़ो कहानी में यह वाक्य नहीं है, मगर कहानी के प्रसंग के अनुरूप यह वाक्य उपयुक्त है और इससे मूल भाव को स्पष्ट करने में मदद मिलती है। अतः इसे हिन्दी में जोड़ दिया गया है।

इसी तरह कई जगह मिज़ो के ऐसे शब्द आए हैं, जिनका पर्याय हमें हिन्दी में नहीं मिलता और हमें उन शब्दों का अर्थ कोष्ठक में देना पड़ा है। ऐसी स्थिति में भी अनूदित रचना में कुछ अतिरिक्त वाक्य जुड़ गए हैं। उदाहरण के लिए 'थिःना थङवल्ह' कहानी में मिज़ोरम में पाए जाने वाले एक कीड़े का नाम आया है-'थेरेङ'। हिन्दी में 'थेरेङ' शब्द का कोई पर्याय नहीं है। यह कीड़ा भी संभव है हिन्दी प्रदेशों में न पाया जाता हो। अतः कोष्ठक में उसका विवरण देते हुए उसे 'टीं-टीं की आवाज़ करने वाला एक कीड़ा' कहा गया है। इसी कहानी में 'इरलियाक' पक्षी का नाम भी आया है जिसके लिए हिन्दी में कोई पर्याय न मिलने के कारण कोष्ठक में 'बड़े आकार का कोयल जैसा पक्षी' लिखकर उसका विवरण दे दिया गया है। अतः अनुवाद के दौरान जहाँ-जहाँ हमें कोष्ठक या पाद-टिप्पणी या कहानी के अंत में संदर्भ के रूप में मिज़ो शब्दों को समझाना पड़ा है, वहाँ कहानी में कुछ अतिरिक्त वाक्य जुड़ गए हैं।

कभी-कभी अनुवाद के कारण स्रोत भाषा की मूल सामाग्री में कुछ लुप्त हो जाता है और वह लक्ष्य भाषा में अनूदित होकर नहीं आ पाता। अनुवाद की प्रक्रिया में इसे 'लॉस' कहा जाता है। यह भी अनुवाद की एक समस्या है। मिज़ो कहानियों का हिन्दी में अनुवाद करते समय भी इस समस्या का सामना करना पड़ा है। उदाहरण के लिए 'पोलितिक जिप्सी' का यह वाक्य देखा जा सकता है-

"A lungngai hle thin a. A Lung a chhe hle bawk thin."[13] (अ लुङ्ङाई ह्ले ठीन अ। अ लुङ अ छे ह्ले बोक ठीन।)

इस वाक्य का हिन्दी अनुवाद इस प्रकार किया गया है- "वह निराश और दुःखी होने लगा।" यहाँ देखा जा सकता है कि मिज़ो के दो स्वतंत्र वाक्यों को जोड़कर हिन्दी में

एक ही वाक्य में अनुवाद कर दिया गया है, क्योंकि हिन्दी की भाषागत प्रकृति के आधार पर ऐसा करना ज़्यादा सही बैठता है। ऐसी स्थिति में मूल रचना की तुलना में अनूदित रचना में एक वाक्य का लोप हो गया। 'लॉस' और 'गेन' की यह प्रक्रिया अनुवाद के दौरान बराबर चलती रहती है।

अतः उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि स्रोत भाषा से लक्ष्य भाषा में किसी भी कहानी का अनुवाद करना कोई सरल कार्य नहीं है। जब स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा सांस्कृतिक व भाषिक दृष्टि से एक दूसरे से काफी भिन्न हो तब अनुवाद की समस्या और बढ़ जाती है। इन समस्याओं से जूझते हुए और समाधान खोजते हुए ही एक अच्छा अनुवाद किया जा सकता है। इन तमाम समस्याओं के बावजूद दोनों भाषाओं की प्रकृति और संस्कृति के अच्छे ज्ञान से अच्छा और सफल अनुवाद किया जा सकता है।

संदर्भ

[1] डॉ. भोलानाथ तिवारी, अनुवाद विज्ञान, किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2011, पृ. 13

[2] रीतारानी पालीवाल, अनुवाद प्रक्रिया एवं परिदृश्य, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2018, पृ. 11

[3] https://youtu.be/hZpDvdssV6s वीडियो में 21 मिनट 31 सेकेंड से 21 मिनट 34 सेकेंड के बीच (26 मई, 2022 को देखा गया।)

[4] कृष्ण कुमार गोस्वामी, अनुवाद विज्ञान की भूमिका, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2016, पृ. 273

[5] डॉ. ललत्लुआङलिआना खिआङ्ते, बिआकलिआना रउबोम, एल.टी.एल. पब्लिकेशन्स, आइज़ोल, 2016, पृ. 172

[6] थनसेइया, पोलितिक जिप्सी (कहानी), पाङदाइलो (संचयिता), पार्तेई ऑफसेट प्रिंटर्स, आइज़ोल, 2001, पृ. 9

[7] डॉ. ललत्लुआङलिआना खिआङ्ते, थङ-जुइ, एल.टी.एल. पब्लिकेशन्स, आइज़ोल, 2016, पृ. 83

[8] डॉ. ललत्लुआङलिआना खिआङ्ते, बिआकलिआना रउबोम, पृ. 180

[9] सी. ललनुनचङा, वुतदुक कारा मेइसी, गिलज़ोम ऑफसेट , आइज़ोल, 2011, पृ. 125

[10] ज़ीकपुई पा, लूङरुआलना त्लाङ, एमसीएल पब्लिकेशन्स, आइज़ोल, 2016, पृ.116

[11] माफ़ा हाऊह्नार (एच. ललरिनफेला), वइह्ना वारटिआन, गिलज़ोम ऑफसेट, आइज़ोल, 2019, पृ. 122

[12] थनसेइया, पोलितिक जिप्सी (कहानी), पाङदाइलो (संचयिता), पृ. 8

[13] वही, पृ. 9

अध्याय- 4

अनूदित कहानियों का विश्लेषण: संवेदना पक्ष

4.1 मिज़ो समाज और संस्कृति की अभिव्यक्ति

4.2 मिज़ो समाज में ईसाइयत का प्रभाव

4.3 मिज़ो समाज का स्त्री पक्ष

4.4 अन्य विविध पक्ष

4. अनूदित कहानियों का विश्लेषण: संवेदना पक्ष

कोई भी साहित्यिक रचना अपने समाज से तथा उसके विभिन्न पक्षों जैसे धार्मिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, आदि पक्षों से पूरी तरह कट कर नहीं रची जा सकती है। किसी भी साहित्यिक रचना का संबंध उसके समाज के इन पक्षों से प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से अवश्य रहता है। प्रस्तुत शोध प्रबंध में अनूदित दस मिज़ो कहानियाँ सन् 1937 से लेकर 2011 के बीच की कहानियाँ हैं। इन कहानियों में मिज़ो समाज एवं मिज़ोरम की भूमि से जुड़े अनेक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक, सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक पक्षों की अभिव्यक्ति हुई है। इन दस कहानियों के माध्यम से हम इस समाज के विभिन्न पक्षों से अवगत होते हैं और उन्हें और गहराई से समझने में सक्षम हो पाते हैं। 1937 में लिखी गयी प्रथम मिज़ो कहानी से लेकर अब तक की पचासी वर्षों की कालावधि में लिखी गयीं मिज़ो कहानियों के कथानक में विविधता है और उनमें उत्तरोत्तर विकास दिखाई पड़ता है। आरंभिक कहानियों के मुक़ाबले बाद की कहानियाँ कहानी के तत्वों के आधार भी अपेक्षाकृत परिपक्व नजर आती हैं। मिज़ो कहानियों में आए ये बदलाव सकारात्मक हैं और मिज़ो कहानियों को परिपक्वता प्रदान करते हैं।

आरंभिक मिज़ो कहानियाँ हिन्दी की आरंभिक कहानियों की ही भाँति उपदेशात्मक, नीतिपरक एवं सुखांत हैं, जिनमें जीवन की कुछ कड़वी सच्चाईयों का चित्रण आदर्शवादी तरीके से हुआ है। आरंभिक मिज़ो कहानियों का केंद्र ईसाई जीवन मूल्यों का प्रचार करना भी रहा है क्योंकि मिज़ो कहानी लेखन की शुरुआत मिज़ो लोगों द्वारा ईसाइयत को अपनाने के कुछ ही दिनों बाद हुई थी। परंतु समय के साथ मिज़ो कहानियाँ सामाजिक यथार्थ को उसकी पूरी सच्चाई एवं संजीदगी के साथ प्रस्तुत करने का प्रयास कर रही हैं। कहानीकार समाज के उन मुद्दों को कहानी के लिए चुन रहे हैं, जिनके लिए साहस की ज़रूरत है। चुनिंदा दस मिज़ो कहानियाँ विभिन्न दशकों में नौ अलग-अलग कहानीकारों

द्वारा लिखी गयी कहानियाँ हैं। इन दस कहानियों में से कुछ कहानियाँ जैसे ‘लली’ (ललओमपुई), ‘सिल्वरथङी’, ‘पोलितिक जिप्सी’ और ‘थ्ललेर पङपार’ मिज़ो स्त्रियों की दयनीय स्थिति से संबंधित हैं, तो कुछ मनोरंजनपरक और रोमांच से परिपूर्ण ‘लसी’ एवं प्राचीन मिज़ो लोककथाओं के पात्रों पर आधारित कहानियाँ है। मिज़ोरम के इतिहास की महत्वपूर्ण घटनाओं, जैसे मिज़ोरम की धरती पर पहली बार ‘क्रिसमस केरोल’ का गाया जाना और सन् 1966 के ‘मिज़ो विद्रोह’ को भी कहानियों का विषय बनाया गया है। कुछेक कहानियों में शराब तथा ड्रग्स के दुष्परिणामों, एड्स तथा भ्रष्टाचार की समस्याओं को उजागर किया गया है। कहानीकारों की बारीक नज़र समाज के लगभग प्रत्येक पक्ष पर पड़ रही है तथा वे उन्हें कभी व्यंग्यात्मक ढंग से तो कभी मार्मिक ढंग से कहानी में अभिव्यक्त करने का प्रयास कर रहे हैं। इन दस कहानियों का विश्लेषण विभिन्न बिन्दुओं के आधार पर अलग-अलग उप-अध्यायों में करने का प्रयास किया जाएगा।

4.1 मिज़ो समाज और संस्कृति की अभिव्यक्ति

साहित्य और समाज का परस्पर गहरा संबंध होता है। कहानीकार समाज से प्राप्त अपने व दूसरों के अनुभवों को अपनी कल्पना शक्ति के सहारे कहानी के रूप में गढ़ता है और उस समाज का चित्र उकेरकर कहानी के रूप में प्रस्तुत करता है। कभी-कभी तो वह अपनी उस कल्पना शक्ति का विस्तार कर एक नयी और अद्भुत दुनिया की रचना भी करता है जिसका समाज से कोई सीधा संबंध न होते हुए भी, वह उससे पूरी तरह से कटी हुयी भी नहीं होती। पचासी वर्षों की अवधि में विभिन्न दशकों में लिखी गयीं इन चुनिंदा दस मिज़ो कहानियों के माध्यम से हम मिज़ो आदिवासी समाज के विभिन्न सामाजिक और सांस्कृतिक पक्षों से अवगत होते हैं। अन्य किसी भी समाज की ही तरह मिज़ो समाज व संस्कृति के भी सकारात्मक तथा नकारात्मक पक्ष हैं। इन पक्षों का निष्पक्ष अध्ययन करके ही हम वास्तविक मिज़ो समाज को और उसकी संस्कृति को समझ सकते हैं।

मिज़ो समाज और संस्कृति से अभिप्राय हैं मिज़ो लोगों का खानपान, रहन-सहन, नृत्य-संगीत, वेश-भूषा, उत्सव-त्योहार, धार्मिक-मान्यताएँ, परम्पराएँ, स्त्री-पुरुष संबंध आदि। मिज़ो समाज आदिवासी समाज है, मगर इस समाज में पश्चिमी सभ्यता का, ईसाइयत का, आधुनिकता का बहुत गहरा अच्छा और बुरा दोनों प्रभाव पड़ा है जिसके कारण यह समाज अपने कई मौलिक-पारंपरिक सामाजिक व सांस्कृतिक तत्वों को पीछे छोड़कर भुला चुका है और बहुत से नवीन एवं आधुनिक तत्वों को अपना चुका है। चुनिंदा दस कहानियों में भी हमें इस समाज और संस्कृति के कुछ पुराने एवं कुछ नवीन तत्व देखने को मिलते हैं। इन कहानियों में अभिव्यक्त इन्हीं सामाजिक एवं सांस्कृतिक तत्वों पर विभिन्न बिन्दुओं के अंतर्गत प्रकाश डालने का प्रयास इस उप-अध्याय में किया जाएगा।

4.1.1 पितृसत्तात्मक समाज

मिज़ो आदिवासी समाज पितृसत्तात्मक समाज है। इस समाज में पुरुषों का स्थान स्त्रियों से ऊँचा समझा जाता है। पुराने जमाने में हर मिज़ो गाँवों में गाँव का मुखिया या सरदार हुआ करता था, जिसे मिज़ो भाषा में 'लल' (Lal) कहा जाता है। इन मिज़ो गाँवों के मुखिया के रूप में पुरुषों को ही नियुक्त किया जाता था। मिज़ो इतिहासकार जेम्स दउखूमा अपनी किताब में बताते हैं कि वह पुरुष जो गाँव में सबसे बहादुर समझा जाता था और जो अपने लोगों की रक्षा करने में सक्षम समझा जाता था, उसे ही आरंभ में मिज़ो गाँवों में मुखिया चुना जाता था। विभिन्न मिज़ो जनजातियों में अपना-अपना मुखिया नियुक्त किया जाता था। उस मुखिया के बाद उसके उत्तराधिकारी के रूप में उसके सबसे छोटे पुत्र को मुखिया के रूप में स्वीकारा जाता था। यदि किसी मुखिया का अपना कोई पुत्र न हो तो ऐसी स्थिति में उसकी रखैल से पैदा हुए उसके सबसे बड़े बेटे को मुखिया बनने का अधिकार दिया जाता था।[1]

इस प्रकार प्राचीन काल से ही मिज़ो समाज में स्त्रियों की तुलना में पुरुषों का स्थान ऊँचा रहा है। मिज़ो घरों में भी पहले और आज भी परिवार का मुखिया पुरुषों को ही माना जाता है। परिवार के संबंध में सारे महत्त्वपूर्ण निर्णय भी घर के पुरुषों द्वारा ही लिया जाता है। केवल गाँव या परिवार के मुखिया के रूप में ही नहीं, बल्कि आधुनिक समाज की विभिन्न संस्थानों और राजनीतिक, धार्मिक एवं गैर सरकारी संगठनों जैसे यंग मिज़ो एसोसिएशन (वाई.एम.ए.), चर्च या विभिन्न राजनीतिक दलों में स्त्रियों की सदस्यता एवं भागीदारी तो रहती है, परंतु उच्च एवं महत्त्वपूर्ण पदों पर पुरुष ही नियुक्त किए या चुने जाते हैं, जिनके पास महत्त्वपूर्ण निर्णय लेने व नियम बनाने का अधिकार होता है। चर्च के विभिन्न कार्यक्रमों में स्त्रियों की भागीदारी विभिन्न रूपों में रहती है। उन्हें चर्च का अभिन्न अंग माना जाता है और वे बच्चों के तथा बड़ों के संडे स्कूलों में अध्यापन और संचालन भी

करती हैं, परंतु चर्च संबंधी महत्त्वपूर्ण निर्णय लेने का हक केवल चर्च के सदस्यों द्वारा चुने गए पुरुष प्राचीनों (चर्च एल्डर्स) एवं पास्टर को होता है। पुरुष ही चर्च संबंधी महत्त्वपूर्ण समिति के सदस्य बन सकते हैं। समान शैक्षिक योग्यता जैसे 'बैचलर ऑफ थियोलॉजी' या 'बैचलर ऑफ डॉकट्रीन' होने के बावजूद स्त्रियों को प्रेस्बेटेरियन चर्च में कभी पास्टर के पद पर नियुक्त नहीं किया जाता है।

विभिन्न सामाजिक व धार्मिक संस्थानों में भी स्त्री की अपेक्षा पुरुषों का अधिक महत्वपूर्ण स्थान रहता है। विभिन्न राजनीतिक दलों में भी स्त्रियों का स्थान पुरुषों से ऊपर नहीं रहता। आज तक मिज़ोरम में कोई भी महिला मुख्यमंत्री नहीं बनी और न ही किसी राजनीतिक दल की अध्यक्ष।

पितृसत्तात्मक व्यवस्था का व्यवहार समाज की छोटी इकाई अर्थात् परिवार से ही आरंभ होता है। किसी भी आम परिवार में इसके विभिन्न रूप देखने को मिलते हैं। मिज़ो परिवारों में परिवार की देखरेख की ज़िम्मेदारी और महत्वपूर्ण पारिवारिक निर्णयों का जिम्मा घर के पुरुषों के ऊपर ही रहता है। पिता की अनुपस्थिति में यह जिम्मा घर के बेटों पर या पुरुष रिश्तेदारों के ऊपर रहता है। परिवार में पिता द्वारा लिया गया निर्णय अंतिम निर्णय के रूप में स्वीकार किया जाता है, चाहे निर्णय लेने वाला पिता गैरजिम्मेदार और नकारा ही क्यों न हो। उदाहरण के लिए 'लली' नामक कहानी में लली के पिता शराब की लत में डूबे रहते हैं, बावजूद इसके वे अपनी बेटी की शादी धन-संपत्ति की लालच में अमीर घर के एक बिगड़े लड़के के साथ कराने का फैसला लेते हैं। यह फैसला लेते समय वे न तो अपनी पत्नी की सलाह लेते हैं और न ही अपनी बेटी की बात सुनते हैं। उनके इस फैसले का विरोध करने के बावजूद लली को मालूम था कि वही उनका अंतिम फैसला है और उसकी शादी होकर ही रहेगी। लली की माँ समझदार है और असल में घर की जिम्मेदारियों को उठाने वाली है, मगर फिर भी वह अपने शराबी पति के उत्पीड़न का शिकार होती है और

अपनी बेटी के लिए खुद निर्णय नहीं ले पाती है या कहें उसे निर्णय लेने का अधिकार ही नहीं दिया जाता। इसी प्रसंग में कहानीकार एल. बिआकलिआना आगे कहते हैं कि "लेकिन मन में जो भी हो, घर के फैसलों के मामले में स्त्रियों की तो कुछ चलती नहीं।"[2]

'लली' कहानी पर लिखते हुए अपने एक लेख में एफ. ललजुईथङा (सहायक आचार्य, सैंट ज़ेवियर कॉलेज, लेङपुइ) मिज़ो परिवार के विषय में लिखते हैं- "मिज़ो परिवार का मुखिया घर का पिता होता है, इसलिए घर के मसलों में पिता का निर्णय अंतिम निर्णय होता है, जिसका विरोध उसकी पत्नी और बच्चे नहीं कर सकते।"[3]

यह सन् 1937 की स्थिति थी, मगर आज भी परिवार में पुरुषों के विचार अधिक मान्य होते हैं। धन-संपत्ति एवं जमीन-जायदाद पर भी पहला हक घर के पुरुषों या लड़कों का माना जाता है। मिज़ो परिवार में माँ-बाप के मकान पर सबसे छोटे बेटे का हक होता है। यदि कोई इकलौता पुत्र है तो उस घर पर उसी का हक होता है। मगर आजकल शिक्षा के कारण आई जागरूकता के कारण और बदलती मानसिकता के कारण माता-पिता की संपत्ति और जमीन-जायदाद का बँटवारा होने पर किसी-किसी परिवार में घर की बेटियों को भी उनका हिस्सा दिया जाता है।

पितृसत्ता का सबसे नकारात्मक पक्ष घरेलू हिंसा है। जिस भी समाज व परिवार में पुरुष अपने को स्त्रियों से श्रेष्ठ, प्रधान और सबका मुखिया समझता है, उस समाज के पुरुषों का अहंकारी होना स्वाभाविक है। सामान्यतः ऐसे पुरुषों को स्त्रियों का अपने विचार व्यक्त करना, आवाज़ उठाना या उन्हें टोकना रास नहीं आता। स्त्रियों द्वारा उन्हें टोके जाने पर या उनकी बातों को चुपचाप न मानने पर पुरुष के अहंकार को बहुत ठेस पहुँचती है। उस पर यदि वह पुरुष नशे का आदी हो तो स्थिति और भी बिगड़ जाती है। इसी अहंकार के आवेग में कई पुरुष अपनी पत्नियों पर हाथ उठाते हैं। 'लली' कहानी में लली का पिता एक तो

शराबी है और ऊपर से अहंकारी भी। अपनी पत्नी के टोकने पर वह उस पर हाथ उठाता है। पितृसत्ता की नींव पर खड़े इस पारिवारिक ढाँचे में भाई-बहन के बीच भी मानसिक स्तर पर अंतर देखने को मिलता है। लली जहाँ घर की लगभग सारी जिम्मेदारियों को ढोकर भी अपनी आम जरूरतों से वंचित रहती है, वहीं उसका स्वार्थी बड़ा भाई ताइया केवल अपनी जरूरतों के बारे में ही सोचता है। 'लली' कहानी के एक प्रसंग में ताइया जब चावल बेचने शहर जाता है तो बिक्री से मिले पैसों से अपनी बहन द्वारा मँगवाया गया पुआन खरीदने की बजाय वह अपने लिए कैनवस का जूता खरीदता है क्योंकि उसके सभी दोस्तों के पास भी वैसा ही जूता था। ताइया के व्यवहार से जहाँ एक ओर उसके स्वार्थी व्यक्तित्व का पता चलता है वहीं उसके व्यक्तित्व पर पितृसत्ता का गहरा असर भी देखा जा सकता है। पितृसत्तात्मक समाज में पुरुष चाहे पिता हो, पति हो या भाई हो, वह खुद को अपने बच्चों, पत्नी या बहन से श्रेष्ठ समझता है और उसी के अनुरूप व्यवहार भी करता है।

'आऊखोक लसी' एक काल्पनिक दुनिया की लसी पर गढ़ी गयी कहानी है। मिज़ो लोककथाओं में माना जाता है कि वास्तविक दुनिया से परे एक अलग और अद्भुत दुनिया होती है जिसमें 'लसी' रहते हैं। लसी पुरुष भी हो सकते हैं और स्त्रियाँ भी। माना जाता है कि लसी युवतियाँ बहुत ही रूपवान होती हैं तथा अपनी इच्छा से किसी युवक के सामने प्रकट होकर उन्हें आकर्षित करती है। यह कहानी फैंटेसी पर आधारित है, जिसमें राऊतिनछीङी नाम की लसी और ठुआमा नामक वास्तविक दुनिया के एक युवक के प्रेम संबंध का सुंदर चित्रण किया गया है। इस काल्पनिक कथा में भी लसियों का सरदार/मुखिया पुरुष लसी को ही बताया गया है। राऊतिनछिङी (लसी) अपने प्रेमी ठुआमा (मनुष्य) को अपने बड़े भाई के बारे में बताते हुए कहती है कि वे उन लसियों का सरदार/मुखिया है।[4] काल्पनिक दुनिया पर आधारित इस मिज़ो कहानी में भी हम पितृसत्ता को साफ-साफ देख सकते हैं।

अनुवाद के लिए चयनित अन्य कहानियों में भी मिज़ो समाज और परिवार के अलग-अलग प्रसंगों में पितृसत्ता के विभिन्न रूप चित्रित हुए हैं, जिनसे मिज़ो समाज में पितृसत्ता के स्वरूप को समझा जा सकता है।

4.1.2 परोपकारिता

मिज़ो समाज आपस में मिलजुल कर रहने वाला समाज है। एक दूसरे के घरों में आना-जाना, दुःख-सुख में एक दूसरे का साथ देना, कठिनाई में पड़े अपने पड़ोसियों या किसी अपरिचित राहगीर की मदद करना मिज़ो समाज में श्रेष्ठतम आचरण समझा जाता है। परोपकारिता को मिज़ो भाषा में 'त्लोमङइना' (Tlawmngaihna) कहा जाता है, जिसका अर्थ 'हार न मानना'[5] कह सकते हैं। अपने निजी भय को परे रखकर, अपने कष्टों की चिंता किए बिना, बिना किसी की प्रशंसा की इच्छा किए किसी भी जरूरतमंद की मदद करना यहाँ मनुष्यता का श्रेष्ठ कर्तव्य समझा जाता है। मिज़ो लोग परोपकारिता को सबसे उच्च नैतिक मूल्य के रूप में स्वीकार करते हैं और अपने इसी परोपकारी प्रकृति के लिए जाने भी जाते हैं। मिज़ो लोग परोपकारी व्यक्ति का खूब आदर भी करते हैं। यहाँ सुख-दुःख के अवसरों पर एक दूसरे की मदद करना बहुत ही आम बात है। यहाँ के लोग निःस्वार्थ भाव से विपत्ति में पड़े लोगों की सहायता करना अपना कर्तव्य समझते हैं। परोपकारिता की यह धारणा बरसों से मिज़ो समाज में विशेष स्थान प्राप्त करती आ रही है। अभी भी यह मिज़ो संस्कृति का अहम हिस्सा है। बी. ललथङलिआना के अनुसार "त्लोमङइना मिज़ो जीवन शैली का सबसे सुंदर अंश है। प्रत्येक जाति का विपत्ति के समय में अपने जैसे अन्य मनुष्यों की मदद करने का अपना-अपना तरीका है। मगर मिज़ो लोगों ने इसको और आगे बढ़ाने के लिए, उसे विकसित करने के लिए 'ज़ोलबूक' की स्थापना की। त्लोमङइना जैसे नैतिक मूल्य को और बढ़ावा देने के लिए उनके मुखियों ने 'नउपुई' जैसे

पुरस्कार का भी प्रावधान किया।"[6] 'ज़ोलबूक' प्राचीन मिज़ो गाँवों में ऐसे बड़े हॉल को कहा जाता था जिसका निर्माण युवकों के श्रमदान द्वारा होता था और जहाँ मिज़ो युवक, नौजवान और बच्चे अपना समय बिताते और नैतिक मूल्यों की शिक्षा हासिल करते थे। पुराने जमाने में जब मिज़ो लल (मुखिया) हुआ करते थे, तब 'नउपुई' नामक यह पुरस्कार गाँव के सबसे परोपकारी युवक को दिया जाता था। बी. ललथङलिआना के अनुसार त्लोमङइना जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को स्पर्श करता है, जैसे खान-पान के क्षेत्र में, मेहनत करने में, काम के क्षेत्र में, घरों और जंगलों के विभिन्न कार्यों में।[7]

अतः मिज़ो समाज में विभिन्न परिस्थितियों में परोकार की भावना देखने को मिलती है। विपत्ति के समय विशेषकर जब आस-पड़ोस में कोई बीमार होता है तब पड़ोसी एवं सगे-संबंधियों का रोगी के घर आना-जाना लगा रहता है। वे रोगी एवं उनके परिजनों का इस कठिन समय में मनोबल बढ़ाते हैं तथा उनके लिए प्रार्थनाएँ करते हैं। साथ ही वे उनकी आर्थिक मदद भी किया करते हैं। इस तरह की मदद में मिलने वाले पैसे को 'दमलउ कन्ना' पैसा कहा जाता है। 'दमलउ' का अर्थ है रोगी या बीमार और 'कन्ना' को मिलना के अर्थ में ले सकते हैं। अर्थात् रोगी से मिलकर जो पैसा दिया जाता है वह है- 'दमलउ कन्ना' पैसा। ऐसी ही आर्थिक सहायता किसी के मरने पर भी की जाती है, जिसे 'रालना' कहते हैं। मृतक के परिजनों को लोग पैसे के रूप में 'रालना' देते हैं। अतः इस समाज में लोग एक दूसरे को विपत्ति की घड़ी में अकेला महसूस नहीं होने देते। कभी-कभी वे रोगियों के घरों में रात को ठहरकर रोगी की देखभाल करने में उनकी सहायता करते हैं। त्लोमङइना का यह आदर्श रूप हमें 'लली' कहानी में देखने को मिलता है। जब लली के छोटे भाई ज़ुआला की तबीयत बिगड़ जाती है तब लली की सहेली थनी और उसका मित्र मोया उनके घर पर ठहरकर उनकी मदद करते हैं। जब आस-पड़ोस के लोगों को पता चलता है कि ज़ुआला की

हालत खराब है तो वे भी उनके घर उसका हाल-चाल जानने आ जाते हैं। ज़ुआला की मृत्यु हो जाने पर उसके चर्च के उसके छोटे-छोटे दोस्त भी अपना शोक व्यक्त करने और उसे अंतिम विदाई देने उसके घर उपस्थित होते हैं।

मिज़ो लोगों की परोपकारिता की भावना को जगाए रखने के लिए यंग मिज़ो एसोसिएशन' (वाई.एम.ए.) की स्थापना सन् 1935 में की गयी। यह एक गैर लाभकारी, और गैर सरकारी संगठन है। चौदह वर्ष से ऊपर की आयु के सभी मिज़ो लड़के और लड़कियों को इस संगठन की सदस्यता प्राप्त है। यह संगठन निःस्वार्थ भाव से मुसीबत में पड़े लोगों की सेवा करता है और किसी की मृत्यु होने पर अंतिम विधि-विधान की तैयारी और मृतक के घर में लोगों के बैठने की व्यवस्था करने में यह संगठन उनकी मदद करता है। इसके अलावा मृतक के लिए ताबूत की व्यवस्था और कब्र खोदने की सारी ज़िम्मेदारी 'वाई.एम.ए.' निभाता है। 'लामखुआङ' कहानी की मुख्य पात्र नवनवी और 'लेमचन्ना खोवेल' कहानी के युवक की मृत्यु होने पर भी 'वाई.एम.ए.' के द्वारा उनके शव संस्कार की व्यवस्था में त्लोमङइना के आदर्श रूप को देखा जा सकता है।

4.1.3 विवाह

आधुनिक मिज़ो समाज में हमें मुख्यतः प्रेम-विवाह का ही चलन दिखता है, मगर प्राचीन मिज़ो समाज में प्रेम-विवाह के साथ-साथ केवल माता-पिता की पसंद से भी शादियाँ हुआ करती थीं। इसके उदाहरण हमें 'लली' और 'सिल्वरथङी' कहानी में देखने को मिलते हैं। लली के पिता तथा सिल्वरथङी के चाचा-चाची अपने-अपने निजी स्वार्थ के कारण इनकी शादी ऐसे पुरुष से करवाना चाहते हैं, जिन्हें ये पसंद नहीं करती हैं। मगर तमाम मुश्किलों और बाधाओं के बाद अंततः दोनों कहानियों में प्रेम-विवाह ही संपन्न होता है।

मिज़ो शादियों में 'पलाई' बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। पलाई को हम हिन्दी में मध्यस्थ कह सकते हैं। मिज़ो परंपरा में पलाई को दो परिवारों या समूहों के बीच विवाह और अन्य मुद्दों पर मध्यस्थता के लिए भेजा जाता है, जहाँ दो समूहों या दो परिवारों को किसी महत्वपूर्ण मामले में बातचीत करनी होती है। शादी के मामले में लड़के की तरफ से लड़की के घर पलाई भेजा जाता है, जिसके माध्यम से शादी पक्की की जाती है और शादी की सूचना तारीख एवं समय सहित चर्च के नोटिस बोर्ड पर शादी से पंद्रह दिन पहले चिपका दी जाती है। 'लली' कहानी में इस पूरी प्रक्रिया का उल्लेख है। इसके अलावा 'सिल्वरथङी' कहानी में भी शादी तय करने के लिए पलाई भेजने का प्रसंग मिलता है।

शादी के घरों में शादी के दिन तैयार किए गए भोजन को मिज़ो समाज और मिज़ो भाषा में 'लोई चो' कहा जाता है, जिसका प्रसंग 'सिल्वरथङी' कहानी में देखने को मिलता है। मिज़ो शादियाँ चर्च में लगभग ईसाई रीति से ही संपन्न होती हैं। लेकिन विवाह से पहले कुछ पारंपरिक मिज़ो रस्म भी होते हैं, जो मिज़ोरम में ईसाइयत के प्रसार के बाद भी थोड़े-बहुत रूप में बचे हुए हैं। मिज़ो शादी से संबंधित रीति-रिवाज असल में ईसाइयत से पहले की मिज़ो परंपरा तथा ईसाइयत के बाद की ईसाई परंपरा का मिश्रण हैं। चूँकि चयनित सभी कहानियाँ मिज़ोरम में ईसाइयत के प्रसार के बाद की पृष्ठभूमि पर लिखी गई कहानियाँ हैं, इसलिए हमें इनमें शुद्ध पारंपरिक मिज़ो शादी का चित्रण नहीं मिलता है।

4.1.4 मिज़ो जीवन पद्धति

मिज़ो आदिवासी जीवन बहुत ही सरल और सहज जीवन है। यहाँ के लोगों का जीवन यहाँ की प्रकृति से, यहाँ के जीव-जंतुओं से काफी नजदीकी से जुड़ा हुआ है। अपने आस-पास से, अपने जंगलों से उन्हें जो मिला, उन्हीं पर उनका जीवन निर्भर रहा। यहाँ के लोगों का जीवन खेती-बारी पर निर्भर रहा है। यहाँ की धरती पर्वतों-पहाड़ों से भरी है।

इन पर्वतों एवं पहाड़ों के जंगलों को जलाकर, उसकी राख़ से भरी जमीन पर झूम खेती करने का यहाँ प्रचलन है। यहाँ मुख्य रूप से खेतों में साग-सब्जियाँ उगाई जाती हैं और कुछ इलाकों में थोड़ी-बहुत धान की खेती होती है। 'राउथ्ललेङ' नामक कहानी में मिज़ो लोककथाओं के पात्र छूरा और नाहइया के झूम खेती करने का जिक्र हुआ है। खेती के कामों में परिवार के सभी सदस्यों भी भागीदारी होती है। स्त्रियाँ भी सक्रिय रूप से खेतों में पुरुषों की तरह ही काम करती हैं। 'लली' कहानी में लली तथा उसकी सहेली, 'सिल्वरथङी' कहानी में सिल्वरथङी और उसकी सहेली भी खेतों में काम करती हैं। खेतों में उपजी धान को धूप में सुखाकर लकड़ी की ओखली में कूटकर चावल को भूसे से अलग किया जाता है। ओखली में धान को कूटने का काम भी स्त्रियाँ करती हैं। 'लली' कहानी में यह प्रसंग आया है- "लली ने जल्दी-जल्दी खाना खाया। धान निकाल कर ओखली के पास रखा और जूठी थालियों को इकट्ठा करने में अपनी माँ की मदद की। फिर धान कूटने में लग गई।"[8] मिज़ो जीवन में ओखली का बहुत महत्वपूर्ण स्थान रहा है। पुराने मिज़ो घरों में घर के बाहरी बरामदे में जहाँ ओखली को रखा जाता था उसे 'सुमह्मुन' कहते हैं। 'लली' कहानी में इस सुमह्मुन का ज़िक्र एकाधिक बार हुआ है- "सुमह्मुन से ही उन्होंने मुड़कर देखा और ज़ोर से चिल्लाने लगे।"[9]

मिज़ोरम में झूम खेतों में बाँस और लकड़ियों की झोपड़ी बनाई जाती है, जिसमें खेतों पर काम करने वाले लोग आराम करते हैं, अपने लिए चाय व भोजन बनाते हैं और कभी-कभी रात को भी ठहरते हैं। इस झूम की झोपड़ी को मिज़ो में 'थ्लाम' कहा जाता है। इस 'थ्लाम' का उल्लेख 'खामोश है रात' और 'राउथ्ललेङ' कहानियों में हुआ है। 'राउथ्ललेङ' कहानी में खूमा जब मृतकों की दुनिया में जाता है तो वह उनके घरों की तुलना थ्लाम से करता है- "मगर वे सभी घर छोटे-छोटे, थ्लाम (झूम की झोपड़ी) से कुछ

ही बड़े और टूटे-फूटे थे।”[10] ‘खामोश है रात’ कहानी में अँग्रेज सैनिकों द्वारा मिज़ो खेतों के पास के ‘छेक-इन’ (खलिहान) तथा ‘थ्लाम’ को जलाए जाने का प्रसंग आया है- “उन्हें झूम खेतों के पास जितने भी छेक-इन (खलिहान) और थ्लाम (झूम खेत की झोपड़ी) दिखे उन्होंने उसे आग के हवाले कर दिया।”[11] ‘छेक-इन’ मिज़ो झूम खेतों में बनाया जाता है। यह एक झोपड़ी होती है जिसके अंदर बाँस के बने बड़े-से पात्र में धान को रखा जाता है। मिज़ोरम में बाँस प्रचुर मात्रा में मिलता है, इसलिए यहाँ के घरों, थ्लाम या छेक-इन के निर्माण में इसका खूब प्रयोग किया जाता है।

कुछेक कहानियों में मिज़ो झूम खेती से संबंधित ‘ओललेन’ के समय का प्रसंग आया है। जैसे ‘लली’ कहानी में लली अपनी सहेली थनी से कहती है कि “उसपर से ओललेन का समय तो हमारे लिए और भी ज्यादा व्यस्तता का समय होता है।”[12] मिज़ो झूम खेती में फसलों की कटाई के बाद का खाली समय जब खेत में ज्यादा काम नहीं होता, उसे ओललेन कहा जाता है। खेती से संबंधित त्योहार ‘पोलकूत’ का जिक्र भी हमें ‘खामोश है रात’ कहानी में देखने को मिलता है। यह धान की कटाई के बाद मनाया जाने वाला त्योहार है।

मिज़ोरम के लोग मुख्य रूप से मांसाहारी हैं। पुराने जमाने से यहाँ के पुरुषों को शिकार करने का बड़ा शौक है। यहाँ के पुरुषों द्वारा जंगलों में पाए जाने वाले जंगली सूअरों, हिरनों तथा अन्य जानवरों एवं पक्षियों का शिकार किया जाता है। ‘राउथ्ललेङ’ कहानी का खूमा भी अपने दो साथियों के साथ शिकार करने के लिए ही जंगल जाता है जहाँ वह किसी जंगली सूअर का शिकार करता हुआ भटक जाता है। शिकार का प्रसंग हमें ‘खामोश है रात’ नामक कहानी में भी देखने को मिलता है जहाँ कहा गया है कि “यदि शांति का माहौल होता तो वीर पुरुष व गाँव के युवक हाथी का शिकार करने निकलते या फिर दो-तीन रात जंगलों में घूम-घूम कर छोटे-मोटे शिकार की खोज करते...।”[13] यहाँ

शिकार के अलावा विभिन्न प्रकार के जानवरों को पाला जाता है, जिनमें से सबसे आम जानवर है- सूअर और मुर्गी। यहाँ मुर्गी को रखने के लिए बाँस से विशेष प्रकार की टोकरी बनाई जाती है, जिसे मिज़ो में 'अरबोम' कहा जाता है। इस 'अरबोम' का 'लामखुआङ' कहानी में कई बार उल्लेख हुआ है- "उन लकड़ियों के पीछे मुर्गी के घर के ऊपर जो भी खाली अर-बोम (मुर्गियों को रखने के लिए बनाई जाने वाली बाँस की टोकरी) मिलता, उसे गोल पोस्ट के दूसरे खम्भे के रूप में इस्तेमाल कर लिया जाता। गोल पोस्ट के खंभे के रूप में बच्चे जहाँ अर-बोम रखते, उसी के ठीक सामने एक घर का दरवाज़ा था। तो घर में घुसने के लिए अर-बोम को बार-बार हटा दिया जाता और बच्चे बिना कुछ कहे उन्हें फिर सही जगह रख देते।"[14]

यदि यह कहा जाए कि मिज़ोरम में सूअर के माँस को सबसे अधिक पसंद किया जाता है तो यह गलत नहीं होगा। यहाँ बहुत सारे घरों में सूअरों को पाला जाता है और इसका खूब व्यापार भी किया जाता है। 'लामखुआङ' कहानी का मुख्य पात्र दाईया भी इसी सूअर के व्यापार से जुड़ा काम करता है। पुराने जमाने में मिज़ो लोग सिआल अर्थात् मिथुन भी पालते थे, जिसका पता हमें 'राउथ्ललेङ' कहानी से भी चलता है। खूमा जब त्लीङी के गाँव में प्रवेश करता है तो उसे वहाँ मिथुन चरते हुए दिखते हैं और उसे यह देखकर बड़ा आश्चर्य भी होता है। वह अपना अनुभव इस प्रकार बयाँ करता है- "कुछ सिआल (मिथुन) वहाँ चर रहे थे। वे हमें देख रहे थे। हमारे और पड़ोस के गाँवों के पंचों ने मिथुन पालने पर रोक लगा रखी है, अतः हम अब मिथुन नहीं पालते। मगर हमारे गाँव से कुछ ही दूरी पर इतने सारे मिथुनों का इस तरह चरना मुझे बड़ा अजीब लगा।"[15] ज़ाहिर है कि पुराने जमाने में मिथुन मिज़ो लोगों के जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा थे।

मिज़ो लोग मांस के अलावा यहाँ पाई जाने वाली साग-सब्जियाँ भी खूब खाते हैं। यहाँ ज़्यादातर उबली हुई साग-सब्जियाँ खाना पसंद किया जाता है। यहाँ के मूल भोजन में

मसालों का प्रयोग न के बराबर किया जाता है। साग उबालने का प्रसंग हमें 'लली' कहानी में भी मिलता है। 'राउथ्लललेङ' में मिज़ोरम के एक खास व्यंजन का भी प्रसंग आया है, जिसे 'आईऊम' कहा जाता है। यह एक मिज़ो व्यंजन है जिसे तिल के साथ कच्चे केकड़े को पीसकर पत्ते में लपेटने के बाद चूल्हे के ऊपर आँच में तीन-चार दिनों के लिए रख कर और फिर तेल में तलकर बनाया जाता है। मिज़ोरम में शकरकंद भी उगाया और खाया जाता है जिसका जिक्र हमें इसी कहानी में मिलता है। अनूदित कहानियों में मिज़ो खान-पान के वर्णन-चित्रण के आधार पर कहा जा सकता है कि मिज़ो खान-पान बहुत ही सीधा-सादा और सामान्य-सा होता है और जिसमें चावल, उबली हुई सब्जियाँ और मांस सबसे प्रमुख हैं।

मिज़ोरम में स्त्रियों द्वारा पहने जाने वाले पारंपरिक परिधान को 'पुआन' कहा जाता है। इसे हिन्दी में सामान्यतः लुंगी कहा जा सकता है। आजकल पुआन चर्च में तथा विशेष अवसरों पर ही पहना जाता है। आधुनिक समय में मशीनों द्वारा बुने गए पुआन का ही अधिक प्रचालन है, मगर पुराने जमाने में मिज़ो घरों में औरतें और लड़कियाँ ही अपने लिए पुआन बुना करती थी। इसके अलावा बिस्तर पर बिछायी जाने वाली चादर जिसे मिज़ो में 'पोनपुई' कहा जाता है, को भी वे स्वयं अपने घरों में बुना करती थीं। 'लली' कहानी की शुरुआत ही इसी दृश्य से होती है जहाँ लली, लली की माँ और लली की सहेली थनी 'पोनपुई' बुन रही होती है। इसी कहानी के एक प्रसंग में चादर बुनते हुए 'थेमत्लेङ' के गलत जगह फँस जाने की बात हुई है। करघे में धागों के बीच से होकर गुजरने वाली लकड़ी की पट्टी को मिज़ो में 'थेमत्लेङ' कहा जाता है। ज़ाहिर है ऐसे प्रसंगों और वस्तुओं के नामों के उल्लेख से मिज़ो जीवन शैली के बहुत-सारे पक्ष हमारे सामने उद्घाटित होते हैं।

पारंपरिक मिज़ो घरों के चित्र भी हमें चयनित कहानियों के माध्यम से दिखाई पड़ते हैं। पुराने मिज़ो घरों में रसोई के लिए घर की एक दीवार से सटाकर लगभग 6-7

इंच ऊँचा मिट्टी का एक आयताकार चबूतरा जैसा बनाया जाता है, जिसमें बीच में आग जलाये जाती है। मिट्टी के इस चबूतरे के ऊपर, तकरीबन पाँच फीट की ऊँचाई पर बाँस का एक मचान बना होता है, जिसपर मांस, मकई, आदि सूखने के लिए रखी जाती है। मिट्टी के इसी चबूतरे के सामने या तीनों तरफ जमीन पर मेहमानों के लिए बैठक तैयार की जाती था जिसे 'दोहथ्लेङ' कहा जाता है। 'दोहथ्लेङ' को हम सीधे-सीधे मिज़ो घरों में रसोई के स्थान पर जल रही आग के सामने बैठने का स्थान भी कह सकते हैं। 'राउथ्ललेङ' कहानी में खूमा जब नाहइया के घर जाता है तो उसे 'दोहथ्लेङ' में 'छनत्लीङ' (पीढ़ा) पर बिठाया जाता है।

खूमा उस गाँव में यह भी देखता है कि बच्चियों ने पारंपरिक परिधान 'सिआपसुआप' पहन रखा है और वहाँ के पुरुषों ने केवल 'श्रेनपेरेङ' पहन रखा है। पुराने जमाने में मिज़ो स्त्रियाँ अपनी कमर और शरीर के ऊपरी हिस्से को ढँकने के लिए कपास की पतली रस्सियों से बने झालरनुमा कपड़े पहनती थीं। इन्हें ही 'सिआपसुआप' कहा जाता है और पुरुष अपने गुप्तांग को ढकने के लिए एक छोटा-सा कपड़ा धागे से अपनी कमर में बाँधते थे, जिसे 'श्रेनपेरेङ' कहा जाता है।

निश्चित रूप से मिज़ो की दस चयनित और अनूदित कहानियों में कहानीकारों ने मिज़ो समाज और जीवन के विविध पक्षों को प्रामाणिकता के साथ चित्रित किया है, जिनके अध्ययन-विश्लेषण से हमें पारंपरिक और आज की मिज़ो जीवन पद्धति के बहुत-से पक्षों की जानकारी मिलती है।

4.2 मिज़ो समाज पर ईसाइयत का प्रभाव

मिज़ो समाज पर ईसाइयत एवं पश्चिमी सभ्यता का बहुत गहरा प्रभाव रहा है, जिसकी छाप हमें यहाँ की कहानियों में देखने को मिलती है। मिज़ोरम की लगभग अट्ठानवे प्रतिशत स्थानीय आबादी ईसाइयत को स्वीकार कर चुकी है। ईसाइयत को अपनाने के बाद मिज़ो समाज बाइबिल की शिक्षा पर आधारित धार्मिक संस्थाओं के नियमों का पालन करने पर जोर देता रहा है। चूँकि मिज़ो कहानियाँ मिज़ो लोगों के ईसाइयत को स्वीकारने के बाद लिखी गई हैं, जिनके लेखक भी ईसाई हैं, इसलिए स्वाभाविक तौर पर इन कहानियों में ईसाई जीवन मूल्यों का अत्यधिक चित्रण हुआ है।

यीशु में विश्वास रखने वालों, गिरजाघरों से संबंधित कार्यक्रमों में भाग लेने वालों को अच्छे व्यक्तित्व वाला मनुष्य समझा जाता है। आम जीवन में भी लोगों के व्यक्तित्व को परखने का यही मापदंड माना जाता है। यहाँ के सामाजिक एवं राजनीतिक क्षेत्र में भी चर्च का महत्वपूर्ण स्थान है। कई मिज़ो कहानियाँ भी इन्हीं मान्यताओं एवं ईसाई जीवन मूल्यों को केंद्र में रखकर रची गयी हैं। अनूदित दस कहानियों में से लगभग सात कहानियों में ईसाइयत से जुड़ी बातें प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से कही गयी हैं। इसका एक कारण यह भी हो सकता है कि मिज़ो समाज में ईसाइयत पूरी तरह से घुल-मिल चुका है। कहानियों में सकारात्मक पात्रों को ईसाई जीवन मूल्यों में ढाला जाता है और नकारात्मक एवं खल पात्रों को उसके विपरीत रूप में। उदाहरणार्थ मिज़ो की पहली कहानी 'लली' के सभी सकारात्मक पात्र जैसे स्वयं लली, लली की माँ, मोया, आदि ईसाई हैं और वे बाइबल के वचनों एवं गिरजाघर के नियमों को महत्त्व देने वाले हैं। वहीं दूसरी ओर लली के पिता और उसकी बुआ का बेटा मना व उसके मित्र दुष्ट पात्र हैं, जो शराब पीते हैं और गिरजाघर के कार्यक्रमों में भाग भी नहीं लेते। यद्यपि 'लली' कहानी लली के जीवन की समस्याओं एवं

प्रतिकूल परिस्थितियों की कहानी है, मगर अपने समग्र प्रभाव में यह असल में ईसाई मूल्यों के प्रचार की ही कहानी ठहरती है।

मिज़ो समाज में 'मसीही-परिवार' अर्थात् यीशु मसीह की शिक्षा की नींव पर खड़े परिवार को 'आदर्श-परिवार' समझा जाता है। लली स्वयं एक आदर्श मसीही पात्र है, लेकिन उसका पिता शराबी है और यीशु के वचनों को नहीं मानता। लली हमेशा अपने पिता के लिए चिंतित रहती है। वह कहानी की शुरुआत से ही चाहती है कि उसके पिता का हृदय परिवर्तन हो और स्वाभाविक तौर पर इस कहानी का अंत लली के पिता के हृदय परिवर्तन के साथ होता है। यह ईसाई धर्म में सद्य: धर्मांतरित मिज़ो समाज का यथार्थ है।

इसी कहानी के एक प्रसंग में जब लली की माँ, लली और मोया को परमेश्वर के प्रेम के विषय में बातें करते सुनती है और गर्व महसूस करती है तब कहानीकार कहता है कि "...उसकी माँ का गर्व करना अस्वाभाविक न था।"[16] जाहिर है कि यहाँ के युवक-युवतियों का परमेश्वर के विषय में विचार करना, बातें करना माता-पिता के लिए प्रायः गर्व का विषय है। कहानीकार लली को केंद्र में रखकर यह बतलाने का प्रयास करता दिखता है कि तथाकथित अच्छी लड़की 'लली' जैसी होती है, जो परमेश्वर में आस्था रखती है और अच्छा युवक लली के साथी मोया जैसा होता है, जो यीशु के वचनों पर चलने वाला है।

बाइबल की शिक्षा के अनुसार विवाह से पूर्व शारीरिक संबंध रखना अनुचित और पाप समझा जाता है। इसी को दिखाने का प्रयास करते हुए लेखक ने लली और मोया के माध्यम से पवित्र प्रेम सबंध का चित्र प्रस्तुत किया है जिससे लोगों को भी ऐसा करने की प्रेरणा मिले। 'लली' नामक इस कहानी की कथावस्तु को साहित्येतिहासकार बी. ललथङलिआना ने 'ईसाई प्रेम कहानी' (Christian Love Story) के काफी करीब बताया है।[17]

बाइबल के अनुसार भ्रूण-हत्या को जगण्य अपराध माना जाता है और ऐसा करने वाले को किसी हत्यारे से कम नहीं समझा जाता। माना जाता है कि अजन्मे शिशु की भी रूह होती है, अतः उसकी हत्या करना पाप है। इसलिए मिज़ोरम में शादी से पूर्व शारीरिक संबंध से यदि कोई लड़की गर्भवती हो जाती है और किसी पारिवारिक या व्यक्तिगत कारणों से उनकी शादी नहीं हो पाती है तब भी लड़की उस अजन्मे बच्चे को गिराने से हिचकिचाती है। वह जीवन भर इस अपराध बोध के साथ जीने के बदले समाज के लोगों और परिजनों की अवहेलना, अपमान और बदनामी भी स्वीकार करती है। हत्या करने की जगह उन्हें कुछ समय की बदनामी भी स्वीकार्य है। यही ईसाई मूल्य हमें 'थ्ललेर पङपार' कहानी में पुई के जीवन में दिखाई पड़ता है। पुई शादी से पहले ही अपने अमीर प्रेमी मुआना के बच्चे से गर्भवती हो जाती है, मगर मुआना बदनामी के डर से उसे गर्भपात करने की सलाह देता है। बावजूद इसके पुई सारी बदनामी को स्वीकार करते हुए अपने बच्चे को जन्म देती है। उसे आश्चर्य होता है कि लोग कैसे अपने खून की हत्या कर देते हैं। उसे लगता है कि इन सब के पीछे परमेश्वर की कोई इच्छा छिपी है। वह सोचती थी कि लोग कैसे परमेश्वर की इच्छा को महत्व और इज़्ज़त नहीं दे पाते।

प्राचीन मिज़ो समाज में चावल से बनायी जाने वाली शराब को 'ज़ू' कहा जाता था और आज के संदर्भ में देशी या विदेशी शराब को भी 'ज़ू' कहा जाता है। पुराने जमाने में ज़ू चावल से, मक्के से या अन्य प्राकृतिक चीजों से बनाया जाता था और विभिन्न प्रकार के ज़ू हुआ करते थे जैसे ज़ूफाङ, ज़ूलोम, ज़ूपुइ, टीनज़ू, रकज़ू आदि तथा इसे पीने की अपनी ही परंपरा थी।[18] इसे विशेष अवसरों पर पिया जाता था जैसे शादी-ब्याह के अवसरों पर, विभिन्न मिज़ो त्योहारों (चपचार कूत, मीम कूत, पोलकूत) में, किसी मृतक के घर जाकर शोकव्यक्त करने के अवसरों पर, किसी बीमार को ठीक करने के लिए झाड़-फूँक करने के

दौरान, हेड हंटिंग के अवसरों पर, आदि। यहाँ तक की मेहमानों को भी ज़ू परोसा जाता था। इससे पता चलता है कि ज़ू (शराब) प्राचीन मिज़ो समाज में खान-पान एक अभिन्न अंग था। इसका सेवन करना पाप नहीं समझा जाता था। मगर आज के मिज़ो समाज में विदेशी शराब के बढ़ते दुरुपयोग एवं ईसाइयत के गहरे प्रभाव के कारण शराब का सेवन बुरा समझा जाने लगा है। अतः इसपर चर्च द्वारा और सरकार द्वारा प्रतिबंध भी लगाया जाता है।

मिज़ो कहानियों में ईसाइयत का प्रभाव प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से देखने को मिलता है। इसने मिज़ो खान-पान, वेशभूषा पर बहुत गहरा असर डाल रखा है। पश्चिमी सभ्यता के प्रति लगाव का कारण भी यही है। अपने सांस्कृतिक परिधानों को छोड़कर पश्चिमी परिधानों को अधिक पहना जाने लगा है। सेवेन्थ डे एडवेंटिस्ट्स चर्च सूअर का मांस खाने से माना करता है। अतः इस चर्च के सदस्य सूअर का मांस नहीं खाते।

ईसाई धर्म की विभिन्न शाखाओं के चलते अलग-अलग मान्यता रखने वाले गिरजाघरों की स्थापना हुई है, जिसके कारण लोगों में खुद की मान्यताओं को सही ठहराने की होड़ लगी रहती है। 'लेमचन्ना खोवेल' कहानी में इस स्थिति पर व्यंग्य किया गया है। इस कहानी का मुख्य पात्र (युवक) जब ड्रग्स के ओवरडोज़ से मर जाता है तब उसकी आत्मा दुविधा व्यक्त करती हुई कहती है- "यह भी अंदाज़ा नहीं कि मुझे मृत्यु लोक के रास्ते में मिलने वाले पोला के गुलेल से अधिक डरना चाहिए या महान सफ़ेद सिंहासन के सामने होने वाले 'अंतिम निर्णय' से। यह सोचकर मेरा दिमाग और चकराने लगा कि अब यहाँ सब्बथ का ज्यादा महत्त्व है या पानी में डूबकर लिए गए बपतिस्मा का।"[19] यहाँ बाइबल की अलग-अलग शिक्षाओं को मानकर अलग-अलग तरीके से चलने वाले गिरजाघरों पर व्यंग्य किया गया है। कुछ चर्च ऐसे हैं जो पानी में डूबकर बपतिस्मा लेने पर ज़ोर देते हैं और कुछ सब्बथ के दिन को महत्व देते हैं और रविवार के बदले शनिवार को सब्बथ का

दिन मानते हैं। ऐसा कहना गलत न होगा कि ईसाइयत ने मिज़ो लोगों को भी कुछ हद तक बाँट दिया है।

4.3 मिज़ो समाज का स्त्री पक्ष

अनूदित दस मिज़ो कहानियों में से तीन कहानियाँ- 'लली' (ललओमपुई), 'सिल्वरथङी' और 'थ्ललेर पङपार' स्त्री केंद्रित कहानियाँ हैं और प्रथम दो कहानियों के तो शीर्षक भी उनकी मुख्य स्त्री पात्रों के नामों पर आधारित हैं। 'लामखुआङ' नामक कहानी में भी मुख्य पात्र की प्रेमिका के रूप में नवनवी नाम की स्त्री के संघर्षों का चित्रण किया गया है। इनके अलावा बाकी कहानियों में भी यहाँ-वहाँ अन्य स्त्री पात्र शामिल हैं। इन सभी स्त्री पात्रों, विशेषकर लली, सिल्वरथङी, पुई ('थ्ललेर पङपार') और नवनवी के जीवन के माध्यम से हम मिज़ो समाज में स्त्रियों की समस्याओं को जानने और समझने का प्रयास कर सकते हैं।

प्रायः ऐसा समझा जाता है कि गैर आदिवासी स्त्री की तुलना में आदिवासी स्त्री, विशेषकर पूर्वोत्तर की आदिवासी स्त्री अपेक्षाकृत स्वतंत्र होती है। यह बात कुछ हद तक ठीक भी है। भारत के अन्य राज्यों से तुलना करें तो मिज़ो समाज में स्त्रियों की स्थिति बेहतर है। मिज़ो समाज कई मामलों में स्त्रियों के लिए सकारात्मक है। पढ़ाई-लिखाई, नौकरी व कारोबार के मामले में यहाँ की स्त्रियाँ काफी स्वतंत्र हैं। पढ़ाई-लिखाई के मामले में और शादी-ब्याह के मामले में उनपर कोई सामाजिक व पारिवारिक पूर्व निर्धारित समय सीमा नहीं थोंपी जाती और न ही नौकरी संबंधी कोई रोक-टोक रहती है। यहाँ की लड़कियों को, चाहे वह जवान हो, विवाहित हो, विधवा हो या फिर तलाकशुदा, घर से बाहर निकलकर नौकरी करने से नहीं रोका जाता है। बल्कि, उनके परिजन उन्हें काम करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। यहाँ के बाज़ारों, विभिन्न प्रकार की दुकानों, विभिन्न सरकारी विभागों के कार्यालयों में पुरुषों की तुलना में स्त्रियों की तादाद अधिक है। इससे पता चलता है कि मिज़ोरम की स्त्रियों को घर से निकलकर बाहर काम करने से नहीं रोका

जाता। ‘थ्ललेर पङ्पार’ कहानी की पात्र पुई जब अविवाहित थी तब भी वह किसी प्राइवेट फ़र्म में काम करती थी और बाद में एकल अभिभावक और नुथ्लोई (विधवा / तलाकशुदा युवती अथवा बिनब्याही माँ) होते हुए भी अपना और अपने बच्चे का भरण-पोषण करने के लिए अपने माता-पिता से दूर रहकर नौकरी करती है। उसे घर से निकलकर नौकरी करने से कभी नहीं रोका जाता है। यहाँ की स्त्रियाँ खेतों के कामों में भी अपने परिवार वालों का और अपने पति का हाथ बँटाती है। व्यापार के क्षेत्र में तो यहाँ मिज़ो पुरुषों की तुलना में स्त्रियों की भागीदारी अधिक है। कई परिवारों में तो कमाने वाली केवल स्त्री ही होती है।

जीवन साथी का चयन करने के मामले में भी उसे पहले की मिज़ो लड़कियों की तुलना में काफी हद तक स्वतंत्रता प्राप्त है। मिज़ो लेखक डॉ. के. सी. वानङ्हाका अपनी किताब में लिखते हैं- “लड़कियाँ अब अपनी पसंद के लड़के से शादी कर सकतीं हैं। पहले के मिज़ो समाज में पिता अपनी पसंद के लड़के के साथ अपनी बेटी को भेजते थे, शादी-ब्याह के मामलों में लड़के सर्वोच्च होते थे। मगर शुभ समाचार की रोशनी में लड़कियों को भी स्वतंत्रता प्राप्त हो गयी।”[20]

डॉ. के. सी. वानङ्हाका के इस कथन के अनुसार प्राचीन मिज़ो स्त्रियों की तुलना में आधुनिक मिज़ो स्त्री की शादी के मामले में स्थिति बेहतर हुई है। प्रथम मिज़ो कहानी ‘लली’ में मिज़ो समाज की स्त्रियों की दयनीय स्थिति और तत्कालीन मिज़ो समाज में विवाह संबंधी निर्णयों में बेटियों की परतंत्रता का चित्रण किया गया है। ‘लली’ कहानी से यह स्पष्ट होता है कि आज की मिज़ो स्त्रियों की तुलना में तत्कालीन मिज़ो स्त्री अपनी शादी के संबंध में फैसला लेने में कितनी परतंत्र थी। मगर इस स्थिति में समय के साथ काफी सुधार आया है। आज मिज़ोरम में लड़कियों की इच्छा के विरुद्ध जबरदस्ती उनकी शादी न के बराबर होती है। ज़्यादातर विवाह तो अब प्रेम विवाह ही होते हैं।

मिज़ो समाज स्त्रियों के मामले में थोड़ा अलग इस दृष्टि से भी है कि यहाँ विधवा पुनर्विवाह या तलाकशुदा औरतों का पुनर्विवाह बहुत आम बात है। पुनर्विवाह यहाँ कोई बड़ा मुद्दा नहीं है। 'सिल्वरथङी' कहानी की सिल्वरथङी और 'थ्ललेर पङपार' की पुई दोनों नुथ्लोई हैं। मिज़ो में 'नुथ्लोई' उन औरतों को कहा जाता है जो युवावस्था में ही विधवा हो गई हों या तलाकशुदा हों या फिर बिनब्याही माँ हों। सिल्वरथङी एक बच्ची की माँ है और पुई एक बच्चे की। सिल्वरथङी पति द्वारा छोड़ी गयी स्त्री है और पुई अपने प्रेमी द्वारा गर्भवती कर छोड़ी गयी स्त्री है। मगर दोनों अपने अतीत को पीछे छोड़कर फिर से नए सिरे से अपनी जिंदगी की शुरुआत करती हैं और दोनों दोबारा शादी भी करती हैं। परिवार की तरफ से या समाज की तरफ से उन्हें ऐसा करने से बिल्कुल नहीं रोका जाता। दोनों कहानियों में दोनों के परिवारवाले या फिर समाज उनके इस फैसले का बिल्कुल विरोध नहीं करते हैं। उत्तर भारत व भारत के अन्य राज्यों में जहाँ पुनर्विवाह की बात एक विवाद को जन्म दे देती है वहीं मिज़ोरम में इसे नितांत निजी फैसला मानकर खुले मन से इसे स्वीकार किया जाता है।

गिरजाघरों के विभिन्न कार्यक्रमों में भी लड़कियों एवं औरतों की महत्वपूर्ण भागीदारी रहती है। मिज़ोरम के गिरजाघर के विभिन्न कार्यक्रमों में एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम है 'संडे स्कूल' का कार्यक्रम, जिसमें बच्चों को उनकी उम्र के अनुसार विभिन्न वर्गों में बाँटकर उन्हें बाइबल की शिक्षाएँ दी जाती हैं। इस 'संडे स्कूल' में मिज़ो स्त्रियों की सक्रिय भागीदारी होती है। 'लली' कहानी की लली भी 'संडे स्कूल' में पढ़ाती है और वहाँ की बहुत सक्रिय शिक्षक है।

मगर इन सब के बावजूद पितृसत्तात्मक समाज में उसकी अपनी समस्याएँ व अपने संघर्ष भी हैं। उन्हें उपर्युक्त सुविधाएँ प्राप्त होने के कारण प्रायः यह भ्रम होता है कि यहाँ की स्त्रियाँ पूर्णतः आज़ाद है। मगर उनकी समस्याओं को समझने के लिए समाज तथा यहाँ के साहित्य को नजदीक से देखने-परखने की आवश्यकता है।

घर के काम करने के अलावा पानी लाने, लकड़ियाँ बटोरने, धान कूटने, चादर बुनने व खेतों के कामों में लगे रहने के बावजूद लली अपनी आम जरूरतों से वंचित रहती है। वह घर के कामों में इतनी व्यस्त रहती है कि उसके पास अपने लिए कोई खाली समय नहीं बचता। आज की मिज़ो स्त्री को यद्यपि अपना पति चुनने की स्वतंत्रता है, मगर आज भी कई स्त्रियाँ लली की माँ की तरह अपने शराबी पति के हाथों घरेलू हिंसा की शिकार होने को मजबूर हैं। मिज़ो में एक प्रसिद्ध कहावत है, जिसका उपयोग एल. बिआकलिआना ने अपनी कहानी 'लली' में भी किया है- 'Hmeichhia leh palchhia chu thlak theih alawm'[21] (ह्मेइछिआ लेह पलछिआ चु थ्लाक थेई अलोम) अर्थात् 'स्त्री और टूटी बाड़ को तो बदला जा सकता है।' इस कहावत में स्त्री की तुलना टूटी हुई बाड़ से की गयी है, साथ ही उसे आसानी से बदले जा सकने की बात भी की गयी है। इससे यहाँ की लड़कियों की वास्तविक स्थिति एवं उनके प्रति पुरुषों के नजरिए का पता चलता है।

के.सी. ललवुङा की कहानी 'सिल्वरथङी' अनाथ लड़की की मनोदशा और उसके संघर्ष को अभिव्यक्त करने वाली कहानी है। किसी भी समाज में अनाथ बच्चों की स्थिति दयनीय और असहाय-सी रहती है, विशेषकर जब उनकी ज़िम्मेदारी लेने वाले उनके रिश्तेदार लोभी और स्वार्थी हों। उन बच्चों के साथ सौतेला व्यवहार किया जाता है, जिसके कारण उनका जीवन बड़ी कठिनाई से गुजरता है और अक्सर प्यार की तलाश में वे गलत संगत में पड़ जाते हैं। 'सिल्वरथङी' कहानी इन्हीं अनचाही परिस्थितियों से जूझती, कष्टों एवं संघर्षों का सामना करती अनाथ लड़की सिल्वरथङी की कहानी है। वह अनाथ लड़की पहले अपने चाचा-चाची के अत्याचार का शिकार होती है और फिर झूठे प्यार का शिकार होती है।

ललरममोया डेन्ते की कहानी 'थ्ललेर पङ्पार' एक 'नुथ्लोई' (बिनब्याही माँ) की संघर्ष-कथा है। 'थ्ललेर पङ्पार' की मुख्य पात्र पुई बिनब्याही माँ है। समाज की कई अन्य लड़कियों की तरह पुई भी झूठे प्यार का शिकार बन गर्भवती हो जाती है और फिर अपने प्रेमी द्वारा ठुकराई जाती है। अपने प्रेमी से शादी की बात करने पर वह उसे गर्भपात करने की सलाह देता है। लेकिन वह अकेले ही अपने बच्चे को जन्म देने और पालने का मन बना लेती है। मिज़ोरम में बिनब्याही माँओं की संख्या भारत के अन्य राज्यों की तुलना में संभवतः अधिक हो सकती है। इसका मुख्य कारण गिरजाघरों में दी जाने वाली बाइबल पर आधारित शिक्षा है, जो गर्भपात या भ्रूण-हत्या को जघन्य अपराध मानती है। आम तौर पर भारतीय समाज, खासकर गैर आदिवासी भारतीय समाज का नजरिया बिनब्याही माँओं और ऐसे बिना पिता के बच्चों के प्रति अच्छा नहीं होता। ऐसी स्त्रियों और बच्चों को तरह-तरह के सामाजिक लांछनों को सहना पड़ता है। लेकिन ऐसा नहीं है कि मिज़ोरम में 'नुथ्लोई' की जिंदगी बहुत आसानी से बिना किसी सामाजिक अवहेलना के कट जाती है। माँ तथा बच्चे को अनेक तरह की सामाजिक अवहेलना का शिकार होना पड़ता है। स्वयं पुई भी इन सब से वाकिफ थी, अतः वह खुद से कहती है, "...वह उस बच्चे को जन्म देगी चाहे उसे 'सोन' ही क्यों न कहा जाए।"[22]

मिज़ो समाज में शादी के पवित्र बंधन से बाहर जिस बच्चे का जन्म होता है और जिसे बच्चे का पिता नहीं अपनाता है, उसे 'सोन' कहा जाता है। इस शब्द के साथ जो बदनामी जुड़ी होती है, उसे शायद ही कोई और महसूस कर सकता है। नुथ्लोई और उसके बच्चे को भले ही शारीरिक अत्याचार नहीं सहना पड़ता, मगर मानसिक उत्पीड़न को वे उम्र भर सहते हैं। वे सार्वजनिक स्थलों में लोगों की हँसी-ठिठोली का विषय बने रहते हैं तथा लोगों की चुभती हुई नज़र उनपर पड़ती रहती है। कुंठा से ग्रस्त वे सामान्य जीवन में

बड़ी मुश्किल से लौट पाते हैं। किसी 'नुथ्लोई' का सामान्य जीवन में लौटकर नए सिरे से जीवन यापन करना कोई नयी बात नहीं हैं, मगर जब उसका प्रेम संबंध किसी युवक से होता है या वह किसी जवान लड़के से शादी करना चाहती है तो लड़कों के परिवार की तरफ से 'नुथ्लोई' को आसानी से नहीं स्वीकारा जाता। पुई की कहानी के माध्यम से कहानीकार ने 'नुथ्लोई' के जीवन के इन्हीं पक्षों का चित्र प्रस्तुत किया है।

मिज़ो समाज में यह मुख्यतः देखा गया है कि शादी के टूट जाने के बाद या फिर अविवाहित लड़कियों के गर्भवती होने पर उनके बच्चों की ज़िम्मेदारी स्त्रियों के कंधों पर आती है और पुरुष बच्चों की उस ज़िम्मेदारी से किसी-न-किसी तरह मुक्त रह जाते हैं। 'सिल्वरथङी' कहानी की सिल्वरथङी, 'थ्ललेर पङपार' की पुई तथा 'लामखुआङ' कहानी की मुख्य पात्र नवनवी के माध्यम से मिज़ो समाज की इस कड़वी सच्चाई का पता चलता है। समाज में इनकी तरह कितनी ही स्त्रियाँ हैं, जो अकेले ही समाज में बदनामी सह कर, बच्चे की सारी जरूरतों को पूरा करने का प्रयास करती हैं। ऐसी स्थिति में कई पुरुष बच्चों की सारी जिम्मेदारियों से खुद को मुक्त कर फिर से नए सिरे से नौजवान की भाँति जीवन व्यतीत करने लगते हैं। स्त्रियाँ बदनामी के साथ-साथ बच्चों की सारी जिम्मेदारियों को अपने कंधों पर ढोकर चलती हैं। अपना और खुद का पेट पालने के लिए उसे घर से बाहर निकल कर पैसा कमाना पड़ता है, जिसके कारण कई लोगों को यह भ्रम होता है कि मिज़ोरम की स्त्रियाँ बहुत ही आजाद और आत्मनिर्भर हैं।

4.4 अन्य विविध पक्ष

अनूदित कहानियों के अध्ययन के आधार पर उपर्युक्त उप-अध्यायों में जिन पक्षों का विश्लेषण किया गया है, उनके अलावा मिज़ो समाज की कुछ और महत्वपूर्ण घटनाएँ, कुछ महत्वपूर्ण पक्ष और समस्याएँ हैं, जिनको इन कहानियों के माध्यम से प्रकाश में लाया गया है। इस उप-अध्याय में विभिन्न बिंदुओं के अंतर्गत उन पक्षों को और अनूदित मिज़ो कहानियों में उनकी अभिव्यक्ति के स्वरूप को विवेचित करने का प्रयास किया जाएगा।

4.4.1 1966 का मिज़ो विद्रोह

मिज़ोरम के इतिहास की सबसे महत्वपूर्ण घटना रही है सन् 1966 का मिज़ो विद्रोह। यह विद्रोह असम तथा केन्द्रीय सरकार के प्रति मिज़ो लोगों के असंतोष का परिणाम था। इस असंतोष का कारण मिज़ोरम में बाँस के फूलने से आए अकाल और भुखमरी की परिस्थिति के दौरान असम सरकार व केन्द्र सरकार की लापरवाही और उनका गैर जिम्मेदाराना व्यवहार था। मिज़ोरम में जनश्रुति है कि प्रत्येक पचास वर्ष के बाद बाँस में फूल लगते हैं, जिन्हें खाने से चूहों की प्रजनन क्षमता बढ़ जाती है। इस कारण चूहों की संख्या में अप्रत्याशित वृद्धि हो जाती है। चूहों की संख्या बढ़ने से फसलों को बड़ा नुकसान होता है, जिसके फलस्वरूप मिज़ोरम में अकाल की स्थिति आ जाती है। सन् 1959-60 ई. में बाँस के फूलने के कारण मिज़ोरम में अकाल आया था, जिससे जान-माल की बहुत क्षति हुई थी। उस समय मिज़ोरम असम राज्य का एक जिला था। अकाल के दौरान असम सरकार ने मिज़ोरम के लोगों का खास ध्यान नहीं रखा, जिसके फलस्वरूप अकाल की स्थिति को सुधारने के लिए स्थानीय मिज़ो समाज के प्रबुद्ध एवं जागरूक लोगों ने 'फेमाईन फ्रंट' की स्थापना की। सरकार के प्रति असंतोष को दर्शाने के लिए मिज़ोरम

विद्यार्थी संघ (मिज़ो जिरलाई पोल- एम.जेड.पी) ने भी जुलूस निकाला।[23] स्थिति में सुधार न होने पर 'फेमाईन फ्रंट' ने पु. ललदेङा के नेतृत्व में 'मिज़ो नेशनल फ्रंट' (एम.एन.एफ.) नामक हथियारबंद पार्टी का रूप ले लिया, जिसमें सभी मिज़ो लोगों को शामिल कर लिया गया। इस पार्टी ने 3 मार्च 1966 को भारत सरकार के खिलाफ विद्रोह की आवाज़ बुलंद की और मिज़ोरम की आजादी की लड़ाई आरंभ कर दी।

यह संघर्ष मूलतः भारतीय सरकार द्वारा भेजी गयी भारतीय सेना और मिज़ो बागियों अर्थात् मिज़ो नेशनल आर्मी (एम.एन.ए.) के वॉलंटियरों के बीच था, मगर इसका बहुत गहरा प्रभाव आम मिज़ो जनता पर पड़ा। एक ओर जहाँ उन्हें भारतीय सेना के अत्याचारों व आक्रमणों का सामना करना पड़ा वहीं दूसरी ओर वे मिज़ो बागियों के शक के घेरे में बने रहे। विद्रोह के दौरान आम मिज़ो जनता तथा मिज़ो नेशनल आर्मी के बीच तनाव एवं संदेह का जन्म भी हुआ। एम.एन.ए के वॉलंटियरों को जब भी कहीं से जानकारी मिलती कि कोई मिज़ो उनके खिलाफ़ भारतीय सेना के लिए खबरी का काम रहा है तो वे उन्हें मारने-पीटने, यहाँ तक कि उनकी हत्या करने से भी नहीं कतराते थे। वे उन्हें देशद्रोही (मिज़ोरम के संदर्भ में) मानते थे, जिसका परिणाम यह हुआ कि आम मिज़ो लोगों की हत्या एम.एन.ए. के वॉलंटियरों के द्वारा की जाने लगी।

मिज़ो विद्रोह और उसमें विद्रोहियों तथा आम मिज़ो जनता के बीच उत्पन्न हुए तनाव की पृष्ठभूमि पर ही आधारित कहानी है 'थिःना थङवल्ह', जिसकी रचना एच. ललरिनफेला उर्फ माफ़ा ने की है। इस कहानी के माध्यम से इन्होंने मिज़ो नेशनल आर्मी तथा सामान्य मिज़ो जनता के बीच उत्पन्न हुए तनाव एवं संदेह की स्थिति का मार्मिक चित्रण किया है। उस समय सामान्य जनता की स्थिति ऐसी थी मानो वे चक्की के दोनों पाटों के बीच पिस रहे हों। एक ओर भारतीय सेना का डर था तो दूसरी ओर एम.एन.ए. का। 'थिःना थङवल्ह' कहानी में एम.एन.ए. के वॉलंटियरों ने मिशन स्कूल के शिक्षक रह

चुके पु थङा पर आरोप लगाया कि "उन्होंने संकेत के माध्यम से उनके तीस से अधिक लोगों (मिज़ो वॉलंटियरों) को पकड़वाया और किसी चश्मदीद ने उनके घर से आती हुई चमचमाती रोशनी देखी थी।"[24] पु थङा ने स्कूली दिनों में ब्वायज़ स्काउट में 'मोर्स कोड' सीखा था और उन्हें टॉर्च के माध्यम से सूचनाओं का आदान-प्रदान करना आता था। इसी आधार पर उन्हें पकड़ा गया था। कहानी के एक प्रसंग में मिज़ो यूनियन पार्टी में उनकी सक्रियता को उनकी गिरफ्तारी का कारण माना गया। कहानीकार लिखते हैं कि "अपने पार्टी के सबसे उच्च पद 'काउंसलर' के लिए चुने जाने पर एम.एन.एफ. (मिज़ो नेशनल फ्रंट) के लिए उनपर पहला निशाना साधना स्वाभाविक हो गया था"[25]

उपर्युक्त कथन के माध्यम से कहानीकार ने एम.एन.ए. तथा मिज़ो यूनियन पार्टी के बीच की वैचारिक भिन्नता तथा मतभेदों की ओर संकेत किया है। विद्रोह की शुरुआत होने से पहले ही मिज़ो यूनियन के नेता तथा एम.एन.एफ. के बीच वैचारिक मतभेद उत्पन्न हो चुका था। तत्कालीन मिज़ोरम की विभिन्न राजनीतिक पार्टियाँ जैसे पु सापरोङा के नेतृत्व में मिज़ो यूनियन, पु ललमोया के नेतृत्व में ईस्टर्न इंडियन ट्राईबल यूनियन (EITU), आदि खूनखराबे को रोकने के लिए एकजुट होने को तैयार थीं, मगर आज़ाद मिज़ोरम का सपना देख रहे एम.एन.एफ. के नेता पु ललदेङा इसके लिए तैयार नहीं हुए। इन तीनों पार्टियों की यह संयुक्त बैठक पु चो. छूङा की अध्यक्षता में 15-16, मार्च, 1965 को हुई थी।[26] इस बैठक के लगभग एक साल बाद ही मिज़ो विद्रोह का आह्वान हो गया।

एम.एन.एफ. के नेता पु ललदेङा तथा मिज़ो यूनियन के नेता के बीच आरंभ से ही वैचारिक मतभेद था। उन्होंने एम.एन.एफ. पार्टी के हथियारबंद सेना एम.एन.ए. में तब्दील होने व हिंसा का रास्ता अपनाने का आरंभ से ही विरोध किया। वे बातचीत के द्वारा मसले का हल खोजना चाहते थे। इस तरह के वैचारिक मतभेदों के कारण ही 'थिःना थङवल्ह' कहानी में पु थङा को बंदी बनाकर मारने की साज़िश रची गयी। पु थङा के पकड़े

जाने के पीछे का कारण मिज़ो यूनियन पार्टी में उनकी सक्रियता भी थी। पु थङा को उनके घर से बंदूक की नोंक पर उठाया गया और उनपर लगाए गए आरोप कबूल करवाने के लिए उनपर काफी अत्याचार किये गये। उन्हें जान से मारने का प्रयास भी किया गया, मगर उनकी किस्मत अच्छी थी कि वे बच गए। लेकिन लोग गवाह हैं कि कितने ही लोगों ने देशद्रोही होने के आरोप में अमानवीय अत्याचार सहे, जिसके कारण कुछ अपंग हो गए और कुछ ने अपनी जानें गवाईं। यह कहानी मिज़ो विद्रोह के उस अनकहे पक्ष को सामने लाती है, जहाँ मिज़ो ही मिज़ो का दुश्मन नज़र आता है। इस कहानी को पढ़कर मिज़ोरम के शांतिपूर्ण वातावरण में आए परिवर्तन को और साथ ही मिज़ो विद्रोहियों और मिज़ो जनता के आपसी रिश्तों के तनाव को महसूस किया जा सकता है। इस कहानी में लेखक लिखते हैं कि "औरतें और बच्चे भयभीत हुए, लोग सतर्क हो गए, पूरे गाँव की जिंदगी आशंका और भय से भर गयी। पु थङा की बेटी भी मिज़ोरम की इस स्थिति से चिंतित थी और उसके लिए भी चैन से सोना असंभव था"।[27] सेवानिवृत्त आइ.ए.एस. अधिकारी एच. रालतोना ने 'Rambuai Lai Leh Kei' (रमबुआई लाई लेह केइ) नामक पुस्तक के अपने लेख 'Mizoram Buai Lai Hun (1966 - 1986 - ?)' में 1966 से 1986 के अंतिम दिनों के अपने आँखोंदेखे अनुभवों को साझा करते हुए आम मिज़ो जनता की मनःस्थिति को व्यक्त करते हुए लिखा है कि "उन्हें एम.एन.एफ. का डर था या फिर सिपाहियों का, वे अंतर नहीं कर पा रहे थे। डर और परेशानियों से भरी आम जनता, माँ-बच्चे डर के मारे यहाँ-वहाँ भटक रहे थे। यह जाने बिना कि उन्हें किसके पास जाना है, वे एक-दूसरे से लगातार टकरा रहे थे।"[28]

इस कहानी के माध्यम से माफ़ा ने बागियों के अमानवीय व्यवहार का मार्मिक चित्र प्रस्तुत किया है। पु थङा को शौचालयनुमा छोटे से कमरे में बंद किया जाना, कई बार

भोजन व पानी से वंचित रखा जाना और उनपर हाथ उठाना- यह सब उन अमानवीय व्यवहारों के सूचक हैं।

मिज़ो विद्रोह के कारण उत्पन्न खौफ़ का मर्मस्पर्शी प्रसंग हमें वान्नेइहत्लुआङ की कहानी ‘लामखुआङ’ में भी देखने को मिलता है। इस कहानी में नवनवी के दिवंगत पिता एल.एस. लुशाई की सारी निशानियों को नवनवी की माँ पि पारी इसलिए नष्ट कर देती है क्योंकि वे अपनी फ़ौज की नौकरी छोड़कर मिज़ो बागियों में शामिल हो जाते हैं। उनके बागियों में शामिल होने के कारण पि पारी को भारतीय सिपाहियों का डर बना रहता है। उन्हें डर था कि सेना न जाने कब उनके घर की तलाशी ले। हालाँकि घर के किसी सदस्य का भारतीय सिपाही होना उन दिनों सुरक्षित माना जाता था, मगर चूँकि उसका पति सेना से फरार होकर बागी बन गया था, इसलिए उसके लिए अपने पति का समान तक अपने घर में रखना खतरों से खाली न था। अतः वह अपने पति की सारी निशानियों को सन्दूक समेत दफ़ना देती है। जमीन के नीचे वे सारी निशानियाँ नष्ट हो जाती हैं और उसके पास अपने पति की एक तस्वीर भी नहीं बचती। दुःख की बात यह है कि उनका पति भी कभी लौटकर नहीं आता। पि पारी अफ़सोस जताते हुए कहती है कि “उनकी छोटी-से-छोटी तस्वीर भी हमने नष्ट कर डाली इस बात का मुझे बहुत पछतावा है।”[29]

इस कहानी का केंद्रीय कथानक मिज़ो विद्रोह नहीं है, मगर पि पारी एवं नवनवी के जीवन के आर्थिक संघर्षों का कारण कहीं-न-कहीं यह विद्रोह रहा है। यदि यह विद्रोह न हुआ होता तो शायद उनके जीवन का संघर्ष कुछ हद तक कम होता। मिज़ो विद्रोह के कारण न जाने कितनी औरतें विधवा हुयीं और कितने बच्चे अनाथ। इस कहानी के माध्यम से मिज़ो विद्रोह के उस पक्ष पर हल्का-सा प्रकाश डाला गया है, जिसपर बहुत कम लोगों की नज़र पहुँचती है।

4.4.2 मिज़ो समाज में शराब व ड्रग्स की समस्याएँ

मिज़ोरम में शराब और ड्रग्स की समस्या एक गंभीर समस्या है, जो मिज़ो नौजवानों, परिवारों और बहुत सारे लोगों को बर्बाद और खोखला कर रही है। शराब एवं ड्रग्स की समस्या से कई मिज़ो परिवार आज जूझ रहे हैं। इस समस्या के समाधान के लिए कई गैर-सरकारी सुधार केन्द्रों का भी निर्माण किया गया है, जिनमें लगभग हमेशा बड़ी तादाद में विभिन्न उम्र के स्त्री-पुरुष भर्ती हुए मिलते हैं। चर्च द्वारा भी लगभग प्रतिवर्ष 'गोसपेल कैम्पिंग' का आयोजन किया जाता है ताकि विभिन्न तरह की बुराइयों से जूझ रहे लोगों का हृदय परिवर्तन हो सके और उन्हें उनके पापों से मुक्ति मिल सके। इन सभी प्रयासों के बावजूद ड्रग्स ओवरडोज़ से न जाने कितने युवाओं को असमय अपनी जान से हाथ धोना पड़ा है। शराब और नशे के कारण हुई सड़क दुर्घटनाओं में जान गँवाने वालों की गिनती भी कम नहीं हैं। शराब ने घर के कमाने वाले पुरुषों को अपने वश में कर निकम्मा बना दिया है। इसका प्रभाव पुरुषों पर ही नहीं, बल्कि स्त्रियों पर भी पड़ा है। सरकार, चर्च से जुड़ी हुई संस्थाओं एवं विभिन्न गैर सरकारी संगठनों के प्रयासों के बावजूद शराब एवं ड्रग्स संबंधी समस्या दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है। इसके अलावा शराब एवं ड्रग्स से तलाक, अनाथ बच्चों की संख्या में वृद्धि, वेश्यावृत्ति, सड़क-दुर्घटनाएँ, एच.आई.वी एड्स संक्रमण में वृद्धि, आदि जैसी कई अन्य समस्याएँ भी उत्पन्न हो रही हैं।

ड्रग्स के दुरुपयोग को रोकने के लिए सरकार की तरफ से भी कड़े-से-कड़े कानून लागू किए गए हैं, मगर इनका सकारात्मक प्रभाव बहुत कम समय तक देखने को मिलता हैं। कानून जितने कड़े होते हैं, शराब व ड्रग्स की माँग उतनी ही बढ़ जाती है और उतनी ही कालाबाज़ारी भी बढ़ जाती है। शराबबंदी से खराब शराब की बिक्री भी बढ़ जाती है, जिसके दुष्परिणाम शराब पीने वालों में बहुत कम समय में ही दिखाई पड़ने लगते हैं।

शराबबंदी के लिए सरकार द्वारा बनाए गए सरकारी नियमों में भी काफी कमियाँ हैं तथा प्रशासन भी पक्षपाती ढंग से इनका पालन करता है। 'थ्ललेर पङपार' कहानी के एक प्रसंग में जब पुई और ह्मीङा शराबियों के हमले का शिकार होते हैं तब ह्मीङा क्रोधित होकर कहता है- "...शराब पर रोक लगी है, मगर शराब बंद हुई ही नहीं। हम कहते तो हैं कि सार्वजनिक जगहों पर अब कोई शराबी नहीं दिखता, मगर सब कुछ वैसे-का-वैसा है। शराब पर रोक लगाने का भी कोई फायदा नहीं है...।[30] इसी संदर्भ में वह आगे शराब पर रोक लगने के बावजूद पीने वालों को आसानी से शराब उपलब्ध होने, पुलिस द्वारा पक्षपातपूर्ण तरीके से किसी को पकड़ने और किसी को बिना सज़ा के छोड़ देने, शराब बेचने वालों में पैसे और रसूख वालों को न पकड़कर लाचारी में आजीविका के लिए शराब बेचने वाली बेरोजगार और गरीब विधवाओं को पकड़कर जेल में बंद किए जाने जैसी बातें करता है।[31] मिज़ोरम में कई गरीब परिवार ऐसे हैं जो अपना पेट पालने के लिए शराब बेचने को मजबूर हैं। कई विधवा औरतें अपने बच्चों को पालने के लिए न चाहकर भी शराब बेचती हैं। 'लामखुआङ' कहानी की पि पारी भी अपना तथा अपनी बेटी नवनवी का पेट पालने के लिए शराब बेचने का काम करती है। मिज़ोरम में पि पारी जैसी कई औरतें हैं, जिनके प्रति सरकार एवं गैर सरकारी संगठनों का रुख बड़ा रूखा होता है। गरीब एवं अमीर लोगों पर सरकारी कार्रवाई में होने वाले अंतर की सच्चाई 'थ्ललेर पङपार' कहानी के ह्मीङा के उपर्युक्त कथन से मालूम पड़ती है।

अनूदित दस कहानियों में 'लली', 'लामखुआङ' और 'लेमचन्ना खोवेल' कहानियों में शराब और नशे की यह समस्या दिखाई पड़ती है। 'लली' कहानी में लली के पिता शराबी हैं और उसका फुफेरा भाई भी अपने दोस्तों के साथ शराब पीता है। लली अपने फुफेरे भाई और उसके दोस्तों को समझाते हुए कहती है- "...कुछ ही रात पहले कुछ लोगों को गिरजा

से निकाला गया था..."[32] लली के इस कथन से यह पता चलता है कि मिज़ोरम की धार्मिक संस्थाएँ शराब पीने को पाप मानती हैं और उसका विरोध करती हैं।

शराब के कारण होने वाली घरेलू हिंसा का चित्रण भी इस कहानी में किया गया है। शराब के नशे में लली के पिता अपनी पत्नी और बच्चों पर हाथ उठाते हैं, जिससे उनकी पत्नी घर छोड़कर जाने के लिए मजबूर हो जाती है। लली को हमेशा यह बात खलती है कि उसका परिवार आम परिवार जैसा नहीं है। इस कहानी में शराब तथा शराब से जुड़ी जिन समस्याओं को उजागर किया गया है वह मिज़ो समाज का यथार्थ है। शराब के कारण बच्चों पर पड़ने वाले मानसिक प्रभावों का भी इस कहानी में बड़ा मार्मिक चित्रण किया गया है। पिता के शराब पीने और घर में होने वाले झगड़ों के कारण लली को चर्च के कार्यक्रमों में भाग लेने में भी संकोच होता है।

शराब का बुरा असर सबसे ज़्यादा किशोर लड़कों पर पद रहा है। 'लली' कहानी में लली की बुआ का लड़का 'मना' तथा उसके कुछ साथी उसके उदाहरण हैं। वे गिरजाघर के रविवार की क्लास में शामिल न होकर छिप-छिपकर शराब पीते हैं। कच्ची उम्र से ही वे शराब की ओर आकृष्ट होते हैं। वहीं 'लामखुआङ' कहानी का ललदाइलोवा उर्फ दाईया कम उम्र से ही शराब की चपेट में पड़ जाता है। शराब किस तरह किसी व्यक्ति तथा उसके पूरे परिवार को बर्बाद कर सकती है इसका उदाहरण है दाईया की जिंदगी। एक अच्छे-खासे व्यापारी परिवार से ताल्लुक रखने के बावजूद शराब की लत उससे सबकुछ छीन लेती है। दाईया अपने बारे में बताते हुए कहता है कि "मेरे पिता आइज़ोल बाजार के प्रसिद्ध व्यापारी थे।... हम तीन भाई थे और हम तीनों ने व्यापार के बदले शराब को चुना। पिताजी के गुजर जाने के बाद हमने दुकान बेच दी और यूँहीं भटकते रहे। मेरे दोनों बड़े भाई शराब के कारण गुजर चुके हैं। अब बच गया बस मैं।"[33] कहानी में दाईया स्वयं कबूल करता है कि महज बीस वर्ष से थोड़ी अधिक की आयु में ही वह बूढ़ा दिखने लगा था।

शराब और ड्रग्स ने मिज़ो युवकों में अपनी जड़ें बहुत गहरी जमा ली हैं और विडंबना है कि यह बहुत आम बात हो गयी है। 'लामखुआङ' कहानी का दाईया और 'लेमचन्ना खोवेल' कहानी का ड्रग्स की लत में पड़ा युवक- दोनों स्वीकार करते हैं कि उन्होंने शराब व ड्रग्स मेलजोल बढ़ाने या दोस्ती बढ़ाने के लिए पीना या लेना शुरू किया। दाईया कहता है कि "शुरू में मैं दोस्तों के साथ घुलने-मिलने के लिए ही पीता था।"[34] 'लेमचन्ना खोवेल' का युवक कहता है कि "ड्रग्स लेना दोस्ती बढ़ाने के लिए तो था ही...।"[35]

उपर्युक्त दोनों युवकों के कथनों से पता चलता है कि साथियों के दबाव के कारण कई युवक नशे की ओर आकृष्ट होते हैं। बच्चों पर दोस्तों का दबाव बनना आम बात है। मगर कई बार इसका गलत असर देखने को मिलता है। माता-पिता का अपने बच्चों पर कम ध्यान देना, पैसे कमाने में अधिक रुचि रखना, चर्च के कार्यक्रमों और सार्वजनिक कार्यक्रमों में बढ़-चढ़ कर भागीदारी करना, आदि कारणों से भी बच्चे कई बार गलत संगति में पड़कर गलत कदम उठा लेते हैं। 'लेमचन्ना खोवेल' कहानी का युवक अपने माता-पिता के गैर-जिम्मेदाराना व्यवहार पर कटाक्ष करता हुआ कहता है कि "...जब पिताजी मुझे भूलकर मंचों से उपदेश करते हुए 'रमथिम' (ऐसा स्थान जहाँ ईसाइयत नहीं पहुँची है) के भटके हुए लोगों की मुक्ति के प्रति अपनी चिंता जाहिर कर रहे थे"[36] और "...तब मेरी एकमात्र माँ, परमेश्वर से प्राप्त अपने पुत्र की देखभाल के बदले सोने के गहने एकत्र करने में व्यस्त थी।"[37] ज़ाहिर है कि माता-पिता की ओर से बच्चे की परवरिश में कमियाँ थीं और युवकों पर दूसरे युवक-युवतियों से दोस्ती बढ़ाने का दबाव था, जिसके कारण वे नशे की जाल में फँसते चले गए। ये दोनों कहानियाँ हमारे समाज में नशे की लत की कड़वी सच्चाई को पूरी वास्तविकता के साथ प्रस्तुत करती हैं।

4.4.3 मिज़ो कहानियों में 'लसी' की परिकल्पना

मिज़ो कहानियों में एक ओर जहाँ समाज की वास्तविकता को उद्घाटित करने वाली गंभीर और मार्मिक कहानियाँ लिखी गई हैं, वहीं दूसरी ओर कुछ ऐसी कहानियाँ भी लिखी गई हैं, जिनका वास्तविक दुनिया से कोई लेना-देना नहीं है। ऐसी कहानियाँ केवल मनोरंजन के लिए लिखीं गई हैं और उनमें लेखक ने अपनी कल्पना शक्ति को असीम विस्तार दिया है। ललजुईथङ ने 'आऊखोक लसी' कहानी की रचना की है, जो इसी कोटि की मनोरंजनपरक रोमांचक कहानी है। यह कल्पना से परिपूर्ण रोमांच उत्पन्न करने वाली कहानी है।

'आऊखोक लसी' एक प्रेम कहानी होते हुए भी सामान्य प्रेम कहानी नहीं है। यह पूर्ण रूप से फैंटेसी पर आधारित एक युवक तथा लसी (कल्पनालोक की सुंदरी/ परी) की अनोखी प्रेम कहानी है। लसी मिज़ो लोककथाओं की एक मिथकीय चरित्र (अच्छी आत्मा) है, जिसके बारे में माना जाता रहा है कि वह अलबेली सुंदरी है जिसका रूप सौन्दर्य किसी भी पुरुष को मोह लेता है। उसे एक अच्छी आत्मा माना जाता है। वैसे लसी स्त्री और पुरुष दोनों होते हैं। उनके मुखिया या सरदार पुरुष लसी ही होते हैं। 'आऊखोक लसी' कहानी में लसी राऊतिनछीङी का बड़ा भाई उन सभी लसियों का सरदार है। मिज़ो लोककथाओं में माना जाता है कि वास्तविक दुनिया से परे एक अलग और अद्भुत दुनिया होती है, जो अपनी असीम सुंदरता से परिपूर्ण होती है और जिसमें लसी रहती हैं। लसी स्वयं प्रकट न होकर भी इस दुनिया के लोगों को देख सकती हैं और चाहे तो अपनी इच्छा से किसी भी युवक के सामने प्रकट भी हो सकती हैं। वे इतनी रूपवान होतीं हैं कि कोई भी युवक उन्हें देखकर उनपर मुग्ध हुए बिना नहीं रह सकता।

'आऊखोक लसी' कहानी में भी जब ठुआमा पहली बार राऊतिनछीङी को देखता है तो उसे लगता है कि उसने किसी प्रेत को देख लिया है और फिर जब उसे वह ध्यान से देखता है तो उसे वह हॉलीवुड की अभिनेत्रियों से कम नहीं लगती। पहली ही मुलाक़ात में ठुआमा उसकी सुंदरता पर मुग्ध हो जाता है। 'आऊखोक लसी' कहानी हमारी कल्पना का विस्तार कर हमें दूसरी ही दुनिया में ले जाती है। यह कहानी लसी 'राऊतिनछीङी' और ठुआमा के अद्भुत प्रेम प्रसंग पर आधारित कहानी है।

ऐसा माना जाता है कि विभिन्न प्रकार के जंगली जानवरों पर लसियों का अधिकार रहता है। वे चाहें तो अपनी शक्ति से किसी पुरुष को शिकार करने का कौशल प्रदान कर सकते हैं। रेवरेंड ज़ाईरेमा के अनुसार लसी पहाड़ों के लल (मुखिया) होते हैं। उनका मुख्य ठिकाना 'टान त्लाङ' और 'लूरह त्लाङ' है। उनके अनुसार लसी इंसानों के दुश्मन नहीं हैं और वे बुरे भी नहीं होते।[38] इस कहानी में भी जब ठुआमा राऊतिनछीङी के बुलाने पर भी उसके पास न जाकर आगे बढ़ने लगता है तब राऊतिनछीङी उसे रोकने के लिए उसके रास्ते में एक शेर को भेजती है। विभिन्न प्रकार की शक्तियाँ होने के बावजूद वह ठुआमा के साथ कुछ बुरा नहीं करती। वह ठुआमा पर मुग्ध होती है, उसके सामने प्रकट होकर उसे अपने घर ले जाती है, उसके साथ समय गुजारती है, अपने प्यार का इज़हार करती है मगर वह उसे किसी तरह का कोई नुकसान नहीं पहुँचाती।

लसियों की अपनी दिव्य शक्तियाँ होती हैं, जिनके द्वारा वे अपनी दुनिया में रहकर भी इस लोक के लोगों को देख पाती हैं और उनके बारे में जान पाती हैं। ठुआमा राऊतिनछीङी को पहले से नहीं पहचानता था, मगर राऊतिनछीङी पहले से उसे अच्छी तरह से पहचानती थी। पहली ही मुलाकात में वह ठुआमा को उसके नाम से पुकारती है।

पहली बार मिलने पर वह अपना परिचय देते हुए कहती है, "...तुम वाकई मुझे नहीं पहचानते, मगर मैं तुम्हें बरसों से जानती हूँ...।"[39]

ज़ाहिर है कि लसी इंसानों जैसे नहीं होते हैं। उनकी अपनी दुनिया बहुत सुंदर है और उनके घर भी आम घरों से भव्य, उज्ज्वल एवं रोशन होते हैं। ठुआमा उसके घर की भव्यता देखकर उसकी तुलना अंग्रेजों के विशाल भवनों से करता है और उसकी रोशनी की तुलना दिन के उजाले से। मगर लसी के घरों को कोई भी व्यक्ति अपनी इच्छा से न देख सकता है न उसमें प्रवेश कर सकता है। उनकी दुनिया में या तो लसी की इच्छा से या फिर एक विशेष प्रकार के तरल पदार्थ 'ज़ू' को पीकर ही कोई प्रवेश कर सकता है या उन्हें देख सकता है। यह ज़ू भी कोई सामान्य शराब नहीं, बल्कि लसियों द्वारा बनायी गयी शराब होती है। लसी की न तो उम्र बढ़ती है और न ही उनकी मृत्यु होती है। वे तो चिरंजीवी होती हैं। उन्हें चाहकर भी दिन के उजाले में नहीं देखा जा सकता। वे रात के अंधेरे में ही लोगों को दिख सकती हैं। वह जंगलों में या फिर उन जगहों पर रहती हैं जहाँ लोगों का बसेरा नहीं होता है। 'आऊखोक लसी' कहानी की लसी सुनसान ङाईज़ेल के ङाई पेड़ों (चीड़ के पेड़) के जंगल में रहती है। यह कहानी उस समय की कहानी है जब आइज़ोल एक छोटा-सा शहर था और ङाईज़ेल एक सुनसान जंगल ही था, जहाँ से लोग कम ही गुजरते थे। राऊतिनछीङी उनके मिलन की अंतिम रात ठुआमा को बताती है- "आज की रात हमारे मिलन की आखिरी रात है। कुछ समय बाद आइज़ोल बहुत बड़ा शहर हो जाएगा। यह स्थान भी दिन-रात लोगों से भरा रहेगा, उस समय हम यहाँ रह नहीं पाएँगे।"[40]

4.4.4 मिज़ो लोककथाओं की पुनर्व्याख्या

मिज़ो साहित्य में लोककथाओं का महत्वपूर्ण स्थान है। इनकी महत्ता को ध्यान में रखते हुए मिज़ो साहित्येतिहासकारों व आलोचकों ने लोककथाओं को मिज़ो साहित्येतिहास में स्थान दिया है। 1870 के बाद से लोककथाओं को लिपिबद्ध कर संग्रहीत करने का प्रयास किया गया है और इस दिशा में अच्छी सफलता प्राप्त हुई है। लोककथाओं के माध्यम से हम उस मिज़ो समाज से परिचित होते हैं जो ईसाइयत के प्रभाव से मुक्त और बाइबल की शिक्षाओं से अछूता था। उन कथाओं के द्वारा हम मूल मिज़ो आस्था एवं मान्यताओं को जान सकते हैं। उस समय के पारंपरिक मिज़ो आदिवासी समाज और आज के आधुनिक मिज़ो समाज में काफी अंतर आ चुका है। ईसाइयत एवं आधुनिकता के प्रभाव से मिज़ो समाज में काफी बदलाव आ चुका है। इसी अंतर को दर्शाने तथा लोककथा के कुछ प्रसंगों की पुनर्रचना करने का रचनात्मक प्रयास कहानीकार आर. ज़ुआला ने अपनी कहानी 'राउथ्ललेङ' में की है। यह कहानी रोमांच से भरी कहानी है, जो हमें मिज़ो लोककथाओं के पात्रों की दुनिया में ले जाती है। यह अन्य कहानियों से भिन्न है क्योंकि इसमें कई लोकप्रचलिक कथाओं के पात्र शामिल हैं। इस कहानी में लोककथाओं के कई पात्र फिर से जीवित हो उठते हैं और लोककथाओं में जाने-सुने उनके रूप से अलग ही रूप इस कहानी में दिखाई पड़ते हैं। इस कहानी को पढ़कर ऐसा आभास होता है कि हमने इन पात्रों के बारे में जो सुन रखा है उसमें कितनी कम सच्चाई है और लोककथा के इन चरित्रों से जुड़े विभिन्न प्रसंगों की वास्तविकता हमारी जानी-सुनी बातों से कितनी अलग है।

'राउथ्ललेङ' कहानी का मुख्य पात्र 'खूमा' शिकार करते हुए विचित्र तरीके से त्लीङी (एक मिज़ो लोककथा की पात्र) से मिलता है जिसे उसने कभी अपने सपने में देखा था और वह उसे अपने गाँव 'थुआःरियातह्नुआई' ले जाती है। 'थुआःरियातह्नुआई' का शाब्दिक अर्थ है 'आठ सतहों के नीचे' अर्थात् जमीन के नीचे। पुराने जमाने से ही मिज़ो समाज में मृत शरीर को दफ़नाने की परंपरा रही है और आज भी यह परंपरा चली आ रही

है। इस दृष्टि से यह गाँव कब्र के नीचे का गाँव या मृतकों का गाँव है। इस गाँव के सभी लोग मृत हैं। त्लीङी के अनुसार खूमा 'श्रिङखुआ' का निवासी है। त्लीङी खुद को ङमा की पत्नी बताती है। खुमा को उनका नाम जानकर आश्चर्य होता है क्योंकि त्लीङी और ङमा के विषय में उसने लोककथाओं में सुना था। इसके अलावा उनके गाँव का नाम भी उसे आश्चर्य में डाल देता है क्योंकि मिज़ो पूर्वजों का मानना है कि मृत्यु के पश्चात आत्माएँ 'मित्थी खुआ' (Mitthi Khua) अर्थात् मृतकों के गाँव में चली जाती हैं। मिज़ो इतिहासकार जेम्स दउखूमा लिखते हैं कि "मिज़ो अपने पूर्वजों के समय से ही आत्मा की उपस्थिति में विश्वास रखते हैं।...उनका मानना था कि मृतकों की आत्मा 'मित्थी खुआ' या 'पिआलराल' की ओर बढ़ती हैं।"[41]

इस कहानी में खूमा मरे बिना ही उस गाँव पर पहुँचने के लिए उस प्रक्रिया से गुजरता है जो मिज़ो पूर्वजों के अनुसार 'मित्थी खुआ' की ओर जाने के दौरान किया जाता है। जैसे खूमा त्लीङी के साथ 'श्रिङलङ त्लाङ' जाता है और त्लीङी उसे 'लुङलउतुइ' पिलाती है। मिज़ो पूर्वजों के अनुसार यह तरल पदार्थ मृतकों की आत्माओं को अपने जीवनकाल की स्मृतियों को भुलाने के लिए पिलाया जाता है। जेम्स दउखूमा लिखते हैं- "...मृतक की आत्मा पहले रिहदील जाती है। वहाँ से वह 'मित्थी खुआ' की ओर बढ़ते हुए 'श्रिङलङ त्लाङ' पहुँचती है। वे श्रिङलङ त्लाङ से उस दुनिया को देखते हैं जहाँ उन्होंने अपने पूरे परिवार के साथ खुशी के पल बिताए थे।"[42]

'राउथ्ललेङ' कहानी में त्लीङी के उस गाँव में खूमा की मुलाक़ात छूरा और नाहइया से होती है। त्लीङी, ङमा, छूरा, नाहइया ये सभी लोककथाओं के पात्र हैं। इनके अलावा दूसरी कई लोककथाओं के पात्र भी इस कहानी में आते हैं, जिनकी कथाएँ मिज़ो

लोगों में खूब प्रचलित हैं और जो उनके गाँव अर्थात् 'थुआःरियातह्नुआई' में और आसपास के गाँवों में रहते हैं।

इस कहानी की विशेषता यह है कि इसमें इस लोक और परलोक का, पुराने जमाने और आज के समय का बड़ा मनोरम सामंजस्य दिखाया गया है। इस कहानी में लेखक मिज़ो लोककथाओं को नए सिरे से गढ़ने का प्रयास कर रहा है। हमने जो बातें बरसों से उन कथाओं में सुनी और सुनायी हैं, उन्हें नए परिप्रेक्ष्य में तार्किक ढंग से प्रस्तुत करने की कोशिश कहानीकार अपनी इस कहानी में करता है।

छ्वरा और नाहइया मिज़ो के प्रसिद्ध लोककथा के पात्र हैं। इन दोनों से जुड़े कई हास्यजनक प्रसंग मिज़ो लोगों को जुबानी याद हैं। उन प्रसंगों को नए ढंग से 'राउथ्ललेङ' कहानी में प्रस्तुत किया गया है। यह कहानी पाठकों को मिज़ो लोककथाओं के हवाले से मिज़ो रीति-रिवाजों और विभिन्न प्रकार की पारंपरिक मान्यताओं से अवगत कराती है। पुराने ज़माने और आज के ज़माने में मिज़ो संस्कारों में आए परिवर्तन का भी यहाँ आभास मिलता है। उदाहरणार्थ खूमा जब नाहइया को 'क पु' कहकर संबोधित करता है तो नाहइया अपनी उम्र का अहसास दिलाते हुए उसे कहता है कि "अरे, अरे! पु कहकर पुकारने लायक मेरी उम्र नहीं हुई है।"[43] उसके इस कथन से पता चलता है कि पुराने जमाने में अपने दादा या नाना की उम्र के वृद्ध लोगों को ही 'क पु' कहकर संबोधित करने की परंपरा थी, जबकि खुमा ने उन्हें उनकी उम्र को ध्यान में रखते हुए नहीं बल्कि उन्हें आदर देने के लिए 'क पु' कहा था। वर्तमान समय में अपने से अधिक उम्र के या ऊँचे पदों पर काम करने वाले पुरुष को भी मिज़ो लोग 'क पु' कहकर संबोधित करते हैं। पुराने समय में घर पर आए मेहमानों को ज़ु (चावल से बनी शराब) पिलाया जाता था, जबकि आज ज़ु सेवन को अच्छा नहीं समझा जाता है। खुमा जब नाहइया के घर जाता है तो नाहइया कि पत्नी 'ज़ुफ़ाङ' से

भरा बर्तन उनके आगे परोस देती है ताकि वह उसे पीकर अपनी प्यास बुझा सके। कहानी के इन प्रसंगों से प्राचीन मिज़ो समाज की तुलना में आज के मिज़ो समाज में आए परिवर्तन का चित्र हमारे सामने प्रस्तुत होता है।

इस कहानी में खुमा दुविधा में भी पड़ता दिखता है क्योंकि 'मित्थी खुआ', 'थ्रिङलङ त्लाङ', 'लुङलउतुइ' आदि ये सारी पारंपरिक मिज़ो मान्यताएँ हैं जो कि उसके अपने वर्तमान मिज़ो समाज की ईसाई मान्यताओं से पूरी तरह भिन्न होते हुए भी उसे वास्तविक रूप में दिखाई पड़ती हैं।

इस कहानी के माध्यम से लेखक ने मिज़ो लोककथाओं का वह रूप प्रस्तुत किया है जो बरसों से कही जाने वाली कथाओं से बिल्कुल भिन्न है। इस कहानी को पढ़कर ऐसा लगता है कि मिज़ो लोककथाओं के पात्र वास्तविक ऐतिहासिक पात्र हैं जिनके बारे में बहुत सारी गलत अफवाहें और आधी-अधूरी बातें फैली हुई हैं।

4.4.5 राजनीतिक एवं सरकारी भ्रष्टाचार की समस्या

राजनीतिक भ्रष्टाचार तथा सरकारी नौकरियों में भाई-भतीजावाद का बोलबाला मिज़ोरम में भी खूब है। यहाँ के लोगों का मुख्य व्यवसाय खेती करना, कारोबार करना, तरह-तरह की मजदूरी करना तथा छोटा-मोटा व्यापार करना है। मिज़ोरम में किसी तरह का उद्योग या कल-कारखाने नहीं हैं। अतः यहाँ सरकारी नौकरी सबसे अच्छी मानी जाती है। बेरोजगारी की समस्या भी यहाँ दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है, जिसके कारण योग्यता होने पर भी सरकारी नौकरी मिलना बहुत कठिन हो गया है। इसे पाने के लिए लोग अपनी पूरी ताकत लगा देते हैं और तरह-तरह के रास्ते अपनाते हैं। सरकारी नौकरी की इस होड़ में भाई-भतीजावाद और राजनीतिक नेताओं से जान-पहचान का अपना अलग ही मायने और महत्व है। इसके बगैर तो जैसे सरकारी नौकरी मिलनी असंभव-सी बात हो गयी है।

सरकारी नौकरियों के छोटे-से-छोटे पदों के लिए भी योग्यता होने के बावजूद सिफारिश जरूरी हो गयी है। इसका परिणाम यह हो रहा है कि जरूरतमंद तथा योग्य-से-योग्य युवाओं को सिफारिश के अभाव में नौकरी नहीं मिलती और वहीं दूसरी ओर बड़े-बड़े घरों के या राजनीतिक नेताओं से संबंध रखने वाले अयोग्य या कम योग्यता वाले उम्मीदवारों को नौकरियाँ मिल जाती हैं। इस समस्या का दुष्परिणाम यह है कि योग्य युवक बेरोजगारी के कारण निराशा और हताशा का शिकार हो रहा है। समाज की इसी सच्चाई को मिज़ो कहानीकार थनसेइया ने अपनी कहानी 'पोलितिक जिप्सी' में दिखाया है। इसी तरह की सरकारी नौकरी संबंधी समस्या की कुछ सच्चाई हमें के.सी. ललवुङा की कहानी 'सिल्वरथङी' में तथा भ्रष्टाचार के अन्य तमाम रूपों की सच्चाई हमें माफ़ा की कहानी 'लेमचन्ना खोवेल' में देखने को मिलती है।

'पोलितिक जिप्सी' कहानी एक गरीब मगर पढ़े-लिखे, अच्छे स्वभाव एवं आचरण वाले मेहनती और योग्य युवक के भ्रष्टाचार के कारण निराश होकर 'जिप्सी' (बंजारा) जैसा जीवन निर्वाह करने की कहानी है। यह कहानी आज से लगभग दो दशक पहले सन् 1983 में लिखी गयी, मगर इसकी कथावस्तु आज भी प्रासंगिक है। इस कहानी में भ्रष्टाचार के साथ-साथ मिज़ो समाज में आर्थिक विषमता के कारण उत्पन्न विभिन्न वर्गों एवं उनके बीच की बढ़ती दूरी के प्रति चिंता भी व्यक्त की गयी है। अपने-अपने राजनीतिक दलों के प्रति लोगों के पागलपन पर भी कटाक्ष किया गया है। इस कहानी का मुख्य पात्र, वह युवक मिज़ोरम के उन सभी युवकों का प्रतिनिधित्व करता प्रतीत होता है जो बेरोजगार हैं और जिन्हें जान-पहचान की कमी के कारण, सिफ़ारिशों के अभाव में नौकरी नहीं मिल रही है। इस कहानी का मुख्य पात्र जिसे इसके कहानीकार ने 'मिज़ो पोलितिक जिप्सी' की संज्ञा दी है, गुवाहाटी के कॉटन कॉलेज से आई.एससी. पढ़कर आया है। होनहार और योग्य होने पर

भी उसे आइज़ोल में कहीं नौकरी नहीं मिलती। नौकरी संबंधी परीक्षों में अच्छा करने पर भी उसे नौकरी नहीं मिल पाती। परिस्थिति को ध्यान में रखते हुए उसके चाचाजी उसे राजनीतिक दलों के नेताओं से मिलने की सलाह देते हैं, मगर हर तरह का प्रयास करने पर भी उसे सफलता हासिल नहीं होती। उसका मानना है कि मिज़ो लोग राजनीति में पागल हो गए हैं और इसके जहर ने हमें खराब कर दिया है। हम (मिज़ो लोग) बहुत बीमार हैं, यह हम नहीं जानते।[44] इस युवक को बड़ी मुश्किल से एक गाँव के नए प्राइवेट स्कूल में हेडमास्टर की नौकरी मिलती है मगर वह यह नौकरी छोड़कर 'जिप्सी' का जीवन बिताने लगता है, क्योंकि उसे यह आभास हो जाता है कि एक विशेष पार्टी के नेता का सत्कार न करने के कारण उसके खिलाफ गंदी राजनीति खेली जा रही है और उसकी नौकरी किसी नेता के बेटे को दी जाने की तैयारी है। यह युवक सिस्टम से निराश है, भ्रष्टाचार व गंदी राजनीति से हताश है। इन सबका उसके मस्तिष्क पर इतना गहरा असर पड़ता है कि वह सबकुछ छोड़-छाड़कर 'जिप्सी' जैसा जीवन व्यतीत करने लगता है। यह कहानी भ्रष्ट व्यवस्था के शिकार एक युवा की मनोदशा को अभिव्यक्त करने की कोशिश करती है।

भ्रष्टाचार की यह समस्या केवल नौकरी पाने के मामले में ही दिखाई नहीं पड़ती, बल्कि जीवन के हर क्षेत्र में भ्रष्टाचार भर गया है। कम आय वाले परिवार से संबंध रखने वाले विद्यार्थियों को सरकार द्वारा दी जाने वाली छात्रवृत्ति को पाने के लिए सरकारी अफसरों, सरकारी कर्मचारियों एवं सम्पन्न परिवार के बच्चों द्वारा भी आवेदन किया जाता है। इस समस्या के प्रसंग में 'लेमचन्ना खोवेल' का युवक व्यंग्यात्मक ढंग से कहता है कि "छात्रों का भी यही हाल है। जैसे ही छात्रवृत्ति के लिए आवेदन करने का समय आता है तब देखिए कैसे एक-एक करके सभी अफसरों के बच्चे चपरासी या किसान के बच्चे हो जाते हैं। कुछ बच्चे जो झूठ बोलने में थोड़ा हिचकते हैं, वे अपने पिता की नौकरी के लिए बस

'सरकारी कर्मचारी' लिख देते हैं।"[45] मिज़ोरम में लोगों को रोजगार के लिए दी जाने वाली विभिन्न प्रकार की सरकारी मदद का भी खूब दुरुपयोग किया जाता है। जैसे सूअर पालन, मुर्गी पालन, आदि के लिए सरकार की तरफ से आर्थिक सहायता दी जाती है, मगर कई लोग इन पैसों का इस्तेमाल अपने शौक-मौज की वस्तुएँ खरीदने में कर लेते हैं। 'लेमचन्ना खोवेल' का युवक अपने चर्च प्राचीन (चर्च एल्डर) के सूट के बारे में व्यंग करता है- "यह सूट उन्होंने सूअर पालने के लिए सरकारी मदद के रूप में मिले पैसे से खरीदा था।"[46]

'लेमचन्ना खोवेल' कहानी के मुख्य पात्र के माध्यम से कहानीकार माफ़ा ने मिज़ो समाज में व्याप्त विभिन्न कुरीतियों पर जबरदस्त व्यंग्य किया है। इस कहानी के एक प्रसंग में युवक अपने पिता के भ्रष्टाचार के बारे में व्यंग्यात्मक ढंग से कहता है- "पिताजी जो ढेर सारा पैसा सरकार से लूटते, वे पैसे मैं उनसे लूटता।"[47]

सरकारी नौकरी के प्रति लालच और भ्रष्टाचार 'सिल्वरथङी' कहानी में भी दिखाई पड़ता है। इस कहानी में सरकारी नौकरी की लालच के कारण रिश्तों में आई कड़वाहट को भी प्रकाश में लाया गया है। इस कहानी में सिल्वरथङी के चाचा-चाची आला अफसरों को शराब और मीट से बहला-फुसलाकर उसके पिता की पी.डब्ल्यू.डी. बंगला के चौकीदार की नौकरी छीन लेते हैं। हालाँकि सिल्वरथङी के पिता वह नौकरी अस्थायी रूप से उसके दादा के बदले कर रहे थे और उसके दादा के मरने के बाद वे ही उस नौकरी के असली हकदार भी थे, मगर भ्रष्ट अफसर को खुश करके उसके चाचा ने खुद वह नौकरी हड़प ली। इस कहानी में हमें सरकारी नौकरी के प्रति लोगों की लालच के साथ-साथ सरकारी महकमे में व्याप्त भ्रष्टाचार की भी स्पष्ट झलक देखने को मिलती है।

उपर्युक्त तमाम उप-अध्यायों में मिज़ो कहानियों की संवेदना के विवेचन-विश्लेषण के आधार पर यह बात विश्वासपूर्वक कही जा सकती है कि मिज़ो कहानियों ने पचासी वर्ष

की छोटी-सी अवधि में जितना फासला तय किया है, वह काफी सराहनीय और उत्साहवर्धक है। कलात्मकता और संरचना के लिहाज से निश्चित रूप से मिज़ो कहानी को अभी और परिपक्व होने की जरूरत है। मगर जिस तरह से धीरे-धीरे मिज़ो साहित्य में कहानी एक स्पष्ट और विशेष विधा का रूप ले रही है, उसके लिए मिज़ो कहानीकारों का योगदान प्रशंसनीय है। आशा है कि समय के साथ लेखक खुद को और अधिक स्वतंत्र महसूस करते हुए अधिक ईमानदारी और साहस के साथ अपनी बातों को कहानी के माध्यम से प्रस्तुत करने का प्रयास करेंगे। निश्चित तौर पर मिज़ो कहानियाँ मिज़ो समाज को समझने और जानने का सुंदर अवसर उपलब्ध कराती हैं।

संदर्भ

---

[1] जेम्स दउखूमा, ह्मानलाई मिज़ो कलफुङ, गिलज़ोम ऑफसेट, आइज़ोल, 2021, पृ. 188 (मूल संदर्भ मिज़ो में, हिन्दी में अनुवाद मेरा)

[2] डॉ. ललत्लुआङलिआना खिआङ्ते, बिआकलिआना रउबोम, एल.टी.एल. पब्लिकेशन्स, आइज़ोल, 2011, पृ. 174

[3] डॉ. ललत्लुआङलिआना खिआङ्ते (संपादक), ज़चम पार-छुआङ, एल.टी.एल. पब्लिकेशन्स, आइज़ोल, 2018, पृ. 175 (मूल संदर्भ मिज़ो में, हिन्दी में अनुवाद मेरा)

[4] डॉ. ललत्लुआङलिआना खिआङ्ते, थङ-ज़ुई, एल.टी.एल. पब्लिकेशन्स, आइज़ोल, 2016, पृ. 85

[5] बी. ललथङलिआना, मिज़ो कल्चर, गिलज़ोम ऑफसेट, आइज़ोल, 2013, पृ. 200

[6] वही, पृ. 266

[7] वही, पृ. 266

[8] डॉ. ललत्लुआङलिआना खिआङ्ते, बिआकलिआना रउबोम, पृ. 163 (हिन्दी अनुवाद मेरा)

[9] वही, पृ. 161 (हिन्दी अनुवाद मेरा)

[10] ज़-थुम, एल. टी. एल. पब्लिकेशन्स एंड डिपार्टमेंट ऑफ मिज़ो, मिज़ोरम यूनिवर्सिटी, आइज़ोल, 2017, पृ. 172 (हिन्दी अनुवाद मेरा)

[11] सी. ललनुनचङा, वुतदुक कारा मेइसी, गिलज़ोम ऑफसेट, आइज़ोल, 2011, पृ. 127 (हिन्दी अनुवाद मेरा)

[12] डॉ. ललत्लुआङलिआना खिआङ्ते, बिआकलिआना रउबोम, पृ. 162 (हिन्दी अनुवाद मेरा)

[13] सी. ललनुनचङा, वुतदुक कारा मेइसी, पृ. 123 (हिन्दी अनुवाद मेरा)

[14] वान्नेइहत्लुआङा, केइमाह लेह केइमाह, एल. वी. आर्ट, आइज़ोल, 2008, पृ. 133 (हिन्दी अनुवाद मेरा)

[15] ज़-थुम, एल. टी. एल. पब्लिकेशन्स, पृ. 172 (हिन्दी अनुवाद मेरा)

[16] डॉ. ललत्लुआङलिआना खिआङ्ते, बिआकलिआना रउबोम, पृ. 167 (हिन्दी अनुवाद मेरा)

[17] बी. ललथङलिआना, हिस्ट्री ऑफ मिज़ो लिटरेचर (मिज़ो थू लेह ह्ला), गिलज़ोम ऑफसेट, आइज़ोल, 2019, पृ. 284

[18] बी. ललथङलिआना, मिज़ो कल्चर, पृ. 173

[19] एच. ललरिनफ़ेला, चोल्ह्ना तुइकम, गिलज़ोम ऑफसेट, आइज़ोल, 2019, पृ. 88 (हिन्दी में अनुवाद मेरा)

[20] डॉ. के. सी. वानङ्हाका, लिटरेचर ज़ुङ्ज़ाम, लुईस बेट प्रिंट एंड पब्लिकेशन, आइज़ोल, 2014, पृ. 55 (मूल संदर्भ मिज़ो में, हिन्दी में अनुवाद मेरा)

[21] डॉ. ललत्लुआङलिआना खिआङ्ते, बिआकलिआना रउबोम, पृ. 172

[22] ललरममोया ङेन्ते, थ्रिङनुन ह्लिमथ्ला, ज़उरिन कम्प्युग्राफिक्स, आइज़ोल, 2002, पृ. 28 (अनुवाद मेरा)

[23] रमबुआई लाई लेह् केइ, मिज़ोरम उपा पोल जनरल हैडक्वाटर्स, जे. पी. ऑफसेट प्रिंटर्स, 2010, पृ. 1

[24] एच. ललरिनफ़ेला, वइह्ना वारटिआन, गिलज़ोम ऑफसेट, आइज़ोल, 2019, पृ. 118 (अनुवाद मेरा)

[25] वही, पृ. 115 (अनुवाद मेरा)

[26] रमबुआई लाई लेह् केइ, पृ. 41

[27] एच. ललरिनफ़ेला, वइह्ना वारटिआन, पृ. 114

[28] रमबुआई लाई लेह् केइ, पृ. 2

[29] वान्नेइहत्लुआङा, केइमाह् लेह् केइमाह्, पृ. 134 (अनुवाद मेरा)

[30] ललरममोया ङेन्ते, थ्रिङनुन ह्लिमथ्ला, पृ. 24 (अनुवाद मेरा)

[31] वही (अनुवाद मेरा)

[32] डॉ. ललत्लुआङलिआना खिआङ्ते, बिआकलिआना रउबोम, पृ. 169 (अनुवाद मेरा)

[33] वान्नेइहत्लुआङा, केइमाह् लेह् केइमाह्, पृ. 134 (अनुवाद मेरा)

[34] वही, पृ. 135 (अनुवाद मेरा)

[35] एच. ललरिनफ़ेला, चोल्ह्ना तुइकम, पृ. 88 (अनुवाद मेरा)

[36] वही, पृ. 88 (अनुवाद मेरा)

[37] वही, पृ. 89 (अनुवाद मेरा)

[38] रेव. ज़ाईरेमा, पी पूते बिआक ही, ज़उनुन पब्लिकेशन, 2020, पृ. 75

[39] डॉ. ललत्लुआङलिआना खिआङ्ते, थङ-ज़ुई, पृ. 80 (अनुवाद मेरा)

[40] वही, पृ. 84 (अनुवाद मेरा)

[41] जेम्स दउखूमा, ह्मानलाई मिज़ो कलफुङ, पृ. 77

[42] वही, पृ. 78

[43] ज़-थुम, एल.टी.एल. पब्लिकेशन्स, पृ. 174 (हिन्दी अनुवाद मेरा)

[44] थनसेइया, पाङदाईलउ, पारतेई ऑफसेट प्रिंटर्स, आइज़ोल, 2001, पृ. 9 (अनुवाद मेरा)

[45] एच. ललरिनफ़ेला, चोल्हना तुईकम, पृ. 92

[46] वही, पृ. 92

[47] वही, पृ. 88

अध्याय-5

अनूदित कहानियों का विश्लेषण: कला पक्ष

5.1 कथा-शिल्प

5.2 भाषा

5. अनूदित कहानियों का विश्लेषण: कला पक्ष

5.1 कथा-शिल्प

कथा-शिल्प से तात्पर्य है- कथा लिखने का कलात्मक पक्ष। प्रत्येक कहानीकार अपनी कहानी को रोचक एवं दिलचस्प बनाने के लिए विभिन्न प्रकार की शैलियों का प्रयोग करता है। प्रायः वह अपनी रचना में अलग-अलग कई शैलियों का प्रयोग करता नजर आता है। चुनिंदा दस मिज़ो कहानियों के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि इन कहानियों के लेखन में भी वर्णनात्मक शैली, आत्मकथा शैली, चित्रात्मक शैली, व्यंग्यात्मक शैली, पूर्वदीप्ति शैली, आदि अनेक शैलियों का प्रयोग किया गया है, जिसे विभिन्न बिन्दुओं के अंतर्गत स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है।

वर्णनात्मक शैली

इस शैली में कहानीकार कथा को अन्य पुरुष शैली में प्रस्तुत करता है। वर्णनात्मक शैली में लिखी गई कहानियों में लेखक की उपस्थिति आरंभ से लेकर अंत तक महसूस की जा सकती है। इसे ही कथा को प्रस्तुत करने की परिदृश्यात्मक प्रविधि कहते हैं। इसमें कहानीकार अपनी तरफ से कथा को नैरेट करता चलता है। कहानीकार इस शैली का प्रयोग किसी घटना या दृश्य का वर्णन करने, चरित्र-चित्रण करने या प्रकृति-चित्रण के लिए भी करता है। चुनिंदा दस मिज़ो कहानियों में इस शैली का प्रयोग हमें प्रायः सभी कहानियों में देखने को मिलता है।

'लली' कहानी में कहानीकार लली के गाँव और उसके परिवार के बारे में अपनी ओर से बताते हुए लिखता है- "वे जहाँ रहते थे वह एक ईसाई गाँव था। मगर लली के पिता बड़े जिद्दी थे। कुछ अन्य बुजुर्गों समेत वे भी यीशु में विश्वास नहीं करते थे। ऊपर से उन्हें

शराब की लत लगी थी। शराब के नशे में वे जब घर लौटते तो परिवार वालों के लिए यह समय तनाव भरा होता। उस दिन भी सुबह के निकले अभी घर लौटे थे। रात का भोजन तैयार करने का समय होने वाला था।"[1]

अनूदित दस कहानियों में ज़्यादातर कहानियाँ ऐसी हैं जो लगभग पूरी तरह वर्णनात्मक शैली में ही लिखी गई हैं। कहानीकार शुरू से आखिर तक कहानी सुनाता है। 'सिल्वरथङी', 'पोलितिक जिप्सी', 'थ्ललेर पङपार', 'आऊखोक लसी', आदि ऐसी ही कहानियाँ हैं। 'सिल्वरथङी' कहानी में कहानीकार सिल्वरथङी के बारे में लिखता है- "इस तरह की कठिनाइयों और लाचारी के बीच थङी परमेश्वर की कृपा से अच्छे स्वास्थ्य और विवेक के साथ बड़ी होने लगी। सभी उसकी खूबसूरती के कायल थे। लोगों को उसकी खूबसूरती उस छोटे-से गाँव में व्यर्थ ज़ाया होती हुई मालूम पड़ती थी। उसकी चाची को उससे जलन होने लगी थी। थङी सुंदरता के मामले में लगातार खिलती जा रही थी।"[2]

'थ्ललेर पङपार' कहानी के एक प्रसंग को कहानीकार ललरममोया ङेन्ते नैरेट करते हैं- "अंधेरे रास्ते के किनारे खड़े पेड़ों की छाया सड़क पर पड़ रही थी। कुछ घरों से हल्की-हल्की रोशनी आ रही थी कि करेंट चली गई। स्ट्रीट लाइट भी बंद पड़े थे, जिसके कारण सड़क पर काफी अंधेरा था।"[3]

'पोलितिक जिप्सी' कहानी के मुख्य किरदार उस विक्षिप्त युवक के बारे में कहानीकार थनसेइया लिखते हैं- "एक बार साइतुआल और केईफाङ के पास लकड़ियाँ बटोरने निकली कुछ बच्चियों को वह गाँव के बाहर मिला। वह चुपचाप चल रहा था। रास्ते के किनारे खड़े होकर उसने उन बच्चियों को नाऊबान (ऑर्किड) के फूल दिए। उसके चेहरे से वह भयानक व डरावना प्रतीत नहीं हो रहा था, बल्कि वह तो एक दोस्त की तरह और

दयालु दिख रहा था। लम्बे बाल, घनी-दाढ़ी तथा फटे कपड़ों के कारण वह और भी दयनीय लग रहा था।"[4]

आत्मकथात्मक शैली

आत्मकथात्मक शैली में कहानीकार स्वयं को कहानी के एक पात्र के रूप में ढाल लेता है जो शुरू से अंत तक पूरी कहानी को आत्मकथात्मक अंदाज़ में प्रस्तुत करता है। वह पूरी कहानी का वर्णन अपनी आपबीती के रूप में करता है। चुनिंदा दस मिज़ो कहानियों में से इस शैली का प्रयोग चार कहानियों में किया गया है। वे चार कहानियाँ हैं- 'आऊखोक लसी', 'राउथ्ललेङ', 'लेमचन्ना खोवेल' और 'लामखुआङ'। इन चारों कहानियों से एक-एक उदाहरण देखे जा सकते हैं।

'आऊखोक लसी' कहानी में कहानीकार कथा को प्रस्तुत करते हुए लिखता है-

"एक रात मैं अपने साथी के साथ जरूरी संदेश देने केल्सिह गाँव से आइज़ोल की ओर जा रहा था। हम ज़्यादा दूर नहीं चले थे कि मेरे साथी के पाँव में मोच आ गई और वह आगे चल न सका। वह धीरे-धीरे वापस लौट गया। कर्त्तव्य की भावना से प्रेरित होकर मैं चाकू और भाला लिए अपनी मंजिल की ओर बढ़ चला।"[5]

'लामखुआङ' कहानी का एक प्रसंग-

"मैं उस घर के दरवाज़े से उतनी ही बार अंदर-बाहर हुआ हूँ, जितनी बार संभवतः उस घर का मालिक हुआ होगा। मैं वहाँ कई बार आता-जाता था। मैं वहाँ इसलिए नहीं जाता था कि उनका घर मुझे बहुत अच्छा लगता था या उस घर की मालकिन और उसकी जवान बेटी की अच्छाई के कारण मुझे वहाँ अपनापन महसूस होता था, बल्कि इसलिए कि

मैं उन चंद लोगों में से एक था जिसे यह मालूम था कि उनके कमरे के अंदर चारपाई के नीचे एक काला बक्सा है...।"[6]

'लेमचन्ना खोवेल' कहानी में कहानी के सूत्रधार के रूप में लेखक लिखता है-

"मेरी साँसों की डोर मुझे 'मृत्यु-प्रमाणपत्र' देने के लिए पूरी तरह तैयार थी। मेरा दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़कने लगा, मेरी नब्ज़ तेज़ चलने लगी, मानो इन्हें मालूम हो कि अब इनका अंत करीब है। यह संसार मुझसे कह रहा है- "निकल जा" और कब्र का अंधकार लगातार मुझे बुला रहा है- "घर लौट आ।" मृत्यु के विषय में मेरा पहले का कोई भी अनुभव नहीं है। यह शायद मेरा पहला और आखिरी अनुभव होगा।"[7]

इसी तरह 'राउथ्ललेङ' कहानी में कहानीकार लिखता है-

"भोजन का वक्त पार हो चला था, सो हमने भोजन किया और योजना बनाने लगे। मैंने फैसला किया कि वे दोनों ह्लीरा के शिकार को लेकर गाँव लौट जाएँ, खाने के लिए भोजन भी काफी बचा हुआ था तो मैं उस घायल सूअर को और खोजूँगा, अगर जरूरत हुई तो मैं रात को वहीं ठहर जाऊँगा।"[8]

व्यंग्यात्मक शैली

चुनिंदा मिज़ो कहानियों में व्यंग्यात्मक शैली का सबसे अधिक प्रयोग एच. ललरिनफेला की कहानी 'लेमचन्ना खोवेल' में देखने को मिलता है। इस शैली के माध्यम से कहानीकार ने मिज़ो समाज में व्याप्त कुरीतियों और लोगों के चरित्र के दोहरेपन को व्यंग्यात्मक ढंग से प्रस्तुत किया है। वे लोगों के चेहरों पर लगे मुखौटे को उतारने का सफल प्रयास करते हैं। मिज़ोरम में ईसाइयत के ज़बरदस्त प्रभाव के बावजूद चर्च और ईसाई धर्म

की विभिन्न शाखाओं के आपसी मतभेद पर भी एच. ललरिनफेला बहुत बारीक व्यंग्य करते हैं। पारंपरिक मिज़ो मान्यताओं और ईसाई मान्यताओं की आपसे टकराहट को भी वे अपने व्यंग्य के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं। वे लिखते हैं-

“मुझे यह भी अंदाज़ा नहीं है कि मुझे मृत्यु लोक के रास्ते में मिलने वाले पोला के गुलेल से अधिक डरना चाहिए या महान सफ़ेद सिंहासन के सामने होने वाले ‘अंतिम निर्णय’ से। यह सोचकर मेरा दिमाग और चकराने लगा कि अब सब्बथ का ज़्यादा महत्त्व है या पानी में डूबकर लिए गए बपतिस्मा का।”[9]

यह कहानी ड्रग्स के ओवेरडोज़ से मर चुके एक युवक की ओर से कही जा रही है। इस कहानी का मुख्य पात्र वह युवक अपने माता-पिता से अपने संबंध पर बहुत चुभने वाला मगर मार्मिक व्यंग्य करता है-

“मेरे जीते-जी जिन्होंने प्रेम से आँसू का एक बूंद भी मेरे लिए नहीं बहाया था, उन्हीं माता-पिता ने मुझे वेदना के आँसू से नहला दिया।”[10]

संवाद शैली

संवाद शैली की पहचान यह है कि इसमें दो या दो से अधिक पात्रों के बीच के संवाद को दिखाया जाता है। इस शैली से कहानी में वर्णित घटनाएँ एवं पात्र सजीव लगने लगते हैं। कहानीकार इस शैली से पाठक के सामने एक दृश्य उपस्थित करता है और स्वयं सामने से हट जाता है। संवाद के माध्यम से ही कथा आगे बढ़ती है। इसे ही दृश्यात्मक प्रविधि भी कहते हैं। संवाद शैली अथवा दृश्यात्मक प्रविधि का प्रयोग कई मिज़ो कहानियों में दिखाई पड़ता है। ‘खामोश है रात’ कहानी में कई लंबे-लंबे प्रसंग केवल संवाद के माध्यम से आगे बढ़ते हैं। एक उदाहरण द्रष्टव्य है-

"हमारी संख्या पचास से कुछ अधिक ही हैं और इतना हमारे काम को पूरा करने के लिए काफी है। बल्कि अगर हमारी संख्या अधिक रही, तो फिज़ूल में अव्यवस्था बढ़ जाएगी। वैसे भी हम लड़ने या गोली चलाने तो जा नहीं रहे, केवल सैनिकों को परेशान करना और थकाना ही तो हैं।" थङकूङ्ग ने कहा।

"वे वहाँ ऊपर क्या कर रहे हैं?" खुआङसाइया ने ज़साङ्ग से पूछा।

"हमारे मुखिया की बूढ़ी माँ वाइयों (बाहरी लोग) पर गोली चलाने के लिए मना कर रही हैं। वे उपा (सलाहकार) लोगों से सलाह-मशवरा कर रही हैं।"- ऐसा कहकर वह (ज़साङ्ग) कुछ देर चुप रहा और फिर उसने कहा, "यह बड़े दुर्भाग्य की बात है कि हमारे मुखिया की मृत्यु इतनी जल्दी हो गई।"

"वाइयों पर आक्रमण कर उन्हें जवाब देने के बजाय 'साही की तरह फल के जमीन पर गिरने का इंतज़ार करते हुए' टक-टकी लगा कर बैठे रहना हो सकता है अक्लमंदी की बात हो"- खुआङसाइया ने कहा- "मगर परसों ही उन्होंने हमारे गाँव के पास की कुछ झोपड़ियाँ जलायीं और इसके अलावा कल रातभर और आज सुबह तक हम एक-दूसरे पर गोलियाँ चलाते रहे हैं। अब इसके बाद हम उनसे और क्या उम्मीद कर सकते हैं।"[11]

इसी तरह 'लामखुआङ' कहानी का बिल्कुल आखिरी हिस्सा दृश्यात्मक प्रविधि का अच्छा उदाहरण है-

"कितना मधुर है यह संगीत! कौन हैं ये लोग?"

"स्थानीय गीत मंडली। ये लोग रियाज़ कर रहे हैं।"

मैं उनकी तरफ बढ़ा। "काश! सामूहिक भोज भी होता..." मैं धीमे-से बुदबुदाया।

वे मुझपर हँसे। मुझे सुनाई दिया, पर फर्क नहीं पड़ा।

गिरजाघर के अंदर किसी ने मेरी बाहें थामकर मुझे रोका। उसने बड़े आश्चर्य से मुझे देखा।

“तुम्हें क्या चाहिए?”

“आपलोग कितना मधुर गा रहे हैं! गाने ने मेरा दिल जीत लिया।”

सभी चुप होकर मुझे देखते रहे। “बेचारा! तुम अपने पापों का प्रायश्चित करना चाहते हो न?”

“हाँ चाहता हूँ... मगर मुमकिन नहीं है।”

“किसने कहा मुमकिन नहीं है?”

“कटहल के पेड़ ने...”[12]

पूर्वदीप्ति शैली

इस शैली को अँग्रेजी में ‘फ्लैश बैक’ शैली कहते हैं। जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है इस शैली में अतीत की घटनाओं को वर्तमान की घटनाओं के साथ जोड़ा जाता है। इस शैली के माध्यम से कहानीकार किसी पात्र के जरिए अतीत की घटनाओं को स्मृति के रूप में कथा में प्रस्तुत करता है। चुनिंदा मिज़ो कहानियों में हमें इस शैली का बढ़िया प्रयोग वान्नेइहत्लुआङा द्वारा रचित कहानी ‘लामखुआङ’ में देखने को मिलता है। यह पूरी कहानी ही पूर्वदीप्ति शैली में लिखी गई है। कहानी का आरंभ एक स्त्री की मृत्यु की घटना से होती

है और फिर कहानी का सूत्रधार उस स्त्री के जीवन और उससे अपने संबंध की कहानी सुनाता है, ज़ाहिर है स्मृति के माध्यम से। वह कहता है-

"और, ताबूत के अंदर जो इंसान है, भले ही आप उसे न पहचानें मैं आपको सबकुछ बताऊँगा। आपको जानने की इच्छा न हो, तब भी मैं आपको बताऊँगा जरूर। वह मेरी प्रेमिका है, जिसे मैं बीस साल बाद भी नहीं भूला पाया। वह मेरी प्रेयसी है। अब मैं आपको बताऊँगा और आप निश्चित रूप से आश्चर्य में पड़ जाएँगे।"[13]

कहानी का सूत्रधार बीस साल पुरानी बात याद करता है-

"बीस साल पहले इस कटहल के पेड़ के पास एक खाली समतल मैदान हुआ करता था। इस पेड़ के अलावा इसके आसपास कोई और पेड़ नहीं था। बच्चे कटहल के इस पेड़ को गोल पोस्ट के एक खंभे के रूप में इस्तेमाल कर वहाँ फुटबॉल खेला करते थे। इसके ठीक सामने लगभग बीस हाथ की दूरी पर जलावन की लकड़ियों का एक ढेर था, जो दूसरी टीम के लिए गोल पोस्ट एक खंभे का काम करता था।"[14]

गीत एवं कविताओं का प्रयोग

कहानियों में गीत अथवा कविता का प्रयोग कथा-शिल्प की एक विशेषता है। इसके माध्यम से कहानीकार कम शब्दों में काव्यात्मक तरीके से कई बार अपनी बात रख पाने में सफल हो पाता है। इससे कहानी में व्यक्त समाज को उसके पूरे यथार्थ के साथ प्रस्तुत करने में भी कहानीकार को सहूलियत होती है। गीत एवं कविताएँ मिज़ो समाज का एक अभिन्न अंग हैं। मिज़ोरम में विभिन्न अवसरों पर गीत गाए जाते हैं। विवाह का अवसर हो या कोई उत्सव हो, झूम खेती और फसलों की कटाई का अवसर हो या फिर किसी की मृत्यु का ही अवसर पर हो- इन तमाम अवसरों पर गीत गाया जाना मिज़ो संस्कृति का अभिन्न हिस्सा

है। ज़ाहिर है मिज़ो कहानियों में भी जगह-जगह गीत और कविताएँ दिखाई पड़ती हैं। इन गीतों के प्रयोग से मिज़ो समाज और जीवंत रूप में हमारे सामने प्रस्तुत हो पाया है।

'लली' कहानी में लली के छोटे भाई की मृत्यु हो जाती है। उसे दफनाए जाने के अगले दिन रविवार को उसके संडे स्कूल के सहपाठी उसके घर आकर उसे श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए ईसाई प्रार्थना गीत गाते हैं-

"बच्चों के लिए है एक अच्छा साथी उस उज्ज्वल स्वर्ग में,

न बदलती है उसकी अच्छाई और न कम होता है कभी उसका प्यार,

समय की तरह बदलते हैं मगर इस संसार के यार,

इस सच्चे मित्र का नाम है महान,

उस सुंदर स्वर्ग में बच्चों के विश्राम के लिए भी है स्थान,

हे पिता! हे पिता! पुकार रहे परमेश्वर के प्रेमी,

अपनी चिताओं व कष्टों से मुक्त होने के लिए,

मुक्ति-प्राप्त अनंतकाल तक करेंगे वहाँ विश्राम।"[15]

'आऊखोक लसी' कहानी में भी हमें एक गीत मिलता है जिसे राऊतिनछीङी के लिए उसका भाई गाता है-

"फैले हुए आसमान में चाँद

अपनी सुंदर रोशनी के साथ निकाल आया है

नींद से जागो, राऊतिनछीङी,

अपनी तमन्नाओं को गले लगाओ

इससे पहले कि भोर हो जाए

सारी खुशियों को तुम्हारा हो जाने दो।"[16]

'लामखुआङ' कहानी के अंत में भी गिरजाघर में स्थानीय गीत मंडली द्वारा गीत गाया जाता है-

"एक सुनहरी दुनिया है,

मुक्त लोगों का अद्भुत संसार

जो बेहद सुंदर और प्यारा है

काले-घने बादलों के उस पार "[17]

'खामोश है रात' नामक कहानी में भी अँग्रेज सैनिक एवं उनके लोग मिज़ोरम की धरती पर प्रथम क्रिसमस कैरोल गाते हुए दिखाए गए हैं-

"स्थिर है रात! पवित्र है रात!

मौन सितारे ज्योति बिखेरें

जहाँ पर रखती अचल निगाहें

कुँवारी माँ अपने सोते शिशु पर:

यीशु महान और पवित्र!"[18]

चित्रात्मक कथन

चयनित मिज़ो कहानियों में चित्रात्मक कथन शैली का भी बहुत ही सुंदर प्रयोग देखने को मिलता है। इस शैली के माध्यम से मिज़ो कहानीकार मिज़ोरम की प्रकृति तथा कहानी के अन्य विभिन्न प्रसंगों को पाठक की आँखों के सामने बिल्कुल जीवंत तरीके से उपस्थित कर पाने में सफल हुआ है। ऐसे चित्रात्मक कथनों से ही वास्तव में बिंब ग्रहण हो पाता है। उदाहरण के तौर पर 'लामखुआङ' कहानी के बिल्कुल आरंभिक प्रसंग को देख सकते हैं-

"उस कटहल के पेड़ की जिंदगी क्षीण हो चुके पेड़ से भी व्यर्थ थी। वह पेड़ वाई (बाहरी) मजदूरों व उनके सहायकों तथा प्रवासी युवकों की यातनाओं का शिकार था। उनकी यातनाओं के निशान उस कटहल के पेड़ पर भरे पड़े थे। उसकी शाखाओं के नीचे उसपर कुल्हाड़ी से वार किये गये थे। उसकी विशाल शाखाओं के बीच बेतरतीव ढंग से सीमेंट की थैली, इकलौता चप्पल, टूटा-फूटा कुदाल तथा पुरानी लुंगी लटकी पड़ी थी।"[19]

इसी तरह 'खामोश है रात' कहानी का यह प्रकृति-चित्रण कितना चित्रात्मक है-

"प्रवेश द्वार से पश्चिम की ओर जंगली चेरी का एक पेड़ फूलों से लदा था। कुछ पंछी चेरी के फूलों का रस पीते हुए अभी भी चहचहा रहे थे। डूबते सूर्य की किरणें अब उस पेड़ पर पड़ रही थीं और वातावरण में एक खामोश-सी तनहाई परसने लगी थी।"[20]

एच. ललरिनफेला अपनी कहानी 'थिःना थङवल्ह' में मिज़ोरम की संस्कृति और प्रकृति का सुंदर चित्र शब्दों के माध्यम से प्रस्तुत कर देते हैं-

"ग्रीष्म ऋतु का शुरुआती दौर था और खेती के लिए झूम खेतों को जलाने का आखिरी दौर, अतः चारों ओर काली-सफेद राख़ दिखाई पड़ रही थी। बाकी बचे जंगलों के पेड़ों और बाँसों से मुलायम अंकुर फूट रहे थे। फ़रटुआ (पारिजात) और वाऊबे (कचनार)

के रंग-बिरंगे फूलों के अलावा नाऊबान (ऑर्किड) तथा अन्य फूल भी कहीं-कहीं दिखाई पड़ रहे थे जो अंजन के लाल-लाल कोमल पत्तों के साथ मिलकर एक-दूसरे की शोभा बढ़ा रहे थे।"[21]

चयनित मिज़ो कहानियों के शिल्प पक्ष के उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर यह कहा जा सकता है कि मिज़ो कहानीकारों ने अपनी कहानियों को प्रभावशाली और रोचक बनाने के लिए तथा मिज़ो समाज के यथार्थ को जीवंत ढंग से प्रस्तुत करने के लिए अपनी कहानियों में कथा-शिल्प की विभिन्न शैलियों और प्रविधियों का सफल प्रयोग किया है।

5.2 भाषा

वह माध्यम जिससे मनुष्य अपने विचारों की अभिव्यक्ति करता है तथा एक-दूसरे के विचारों को समझता और समझाता है, उसे भाषा की संज्ञा दी गई है। मनुष्य अपने विचारों के विनिमय के लिए जिस माध्यम की सहायता लेता है, उसे भाषा कहा गया है। विभिन्न विद्वानों ने भाषा की परिभाषा देते हुए, उसे स्पष्ट करने का प्रयास किया है। स्वीट के अनुसार "ध्वन्यात्मक शब्दों द्वारा विचारों का प्रकटीकरण ही भाषा है।"[22] गुणे "ध्वन्यात्मक शब्दों द्वारा हृद्गत भावों तथा विचारों के प्रकटीकरण"[23] को भाषा कहते है।

समस्त संसार में लगभग तीन हज़ार भाषाएँ बोली जाती हैं।[24] उन तीन हज़ार भाषाओं में से एक है- मिज़ो भाषा। पूर्वोत्तर भारत के एक छोटे-से राज्य मिज़ोरम में बोली जाने वाली भाषा को मिज़ो कहा जाता है। हालाँकि इस प्रदेश में कई जनजातियाँ रहती हैं जिनकी अपनी-अपनी बोलियाँ हैं, जैसे ह्मार, पाइते, मरा आदि। मगर वर्तमान मिज़ो समाज में जनसंपर्क की भाषा मिज़ो है। मिज़ो यहाँ की साहित्यिक भाषा भी है। मिज़ो भाषा में पर्याप्त उपन्यास, कहानियाँ, कविताएँ और गीत रचे गए हैं और मिज़ो भाषा में स्थानीय समाचार पत्र भी निकलते हैं।

मिज़ो भाषा मौखिक रूप में कब से बोली जा रही है यह कहना शायद मुश्किल हो, मगर यह साफ तौर पर कहा जा सकता है कि मिज़ो वर्णमाला का विकास 1894 के बाद हुआ, जिसकी लिपि रोमन है। प्रस्तुत शोध-प्रबंध के पंचम अध्याय के इस उप-अध्याय में हम चुनिंदा मिज़ो कहानियों की भाषा का अध्ययन करेंगे।

मिज़ो कहानियों की भाषा की विशेषताओं का अध्ययन विभिन्न बिन्दुओं के आधार पर किया जा सकता है।

भाषा की सहजता एवं सरलता

चुनिंदा दस मिज़ो कहानियों की भाषा के विषय में यह कहा जा सकता है कि संप्रेषणीयता की दृष्टि से उनकी भाषा सहज एवं सरल है। प्रायः सभी कहानियों में आम बोलचाल की मिज़ो भाषा का प्रयोग मिलता है। कुछेक कहानियों में कठिन साहित्यिक भाषा या काव्यात्मक भाषा का प्रयोग भी मिलता है, मगर उनकी मात्रा कम है।

'लली' (ललओमपुई) मिज़ो की पहली कहानी है। इस कहानी में सन् 1937 के आसपास की मिज़ो स्त्रियों की दयनीय दशा को दर्शाया गया है। इस कहानी की भाषा उस समय एवं पात्रों के अनुरूप है। पात्रों के बीच होने वाले संवाद की भाषा सहज एवं सरल है, उनमें बनावटीपन या कृत्रिमता नहीं है। इस कहानी में अँग्रेजी शब्दों का प्रयोग बहुत कम मिलता है जो कि उस समय के मिज़ो समाज के हिसाब से उचित ही है। चूँकि यह ईसाइयत को केंद्र में रखकर लिखी गई कहानी है, अतः इसमें ईसाइयत से जुड़े हुए कुछेक अँग्रेजी शब्द जैसे कि Sande Sikul (Sunday School), Kristian (Christian) का प्रयोग हुआ है। इस कहानी में आरंभ से अंत तक सरल, सहज एवं बोधगम्य भाषा का ही प्रयोग किया गया है। एक उदाहरण से यह बात स्पष्ट हो सकती है-

"An chan hreawmzia leh awl lai an neih loh zia leh hmeichhiate reng reng chan hreawmzia ngaihtuah zawm ta zel ni awm tak hian, ngawi rengin an kal ta a."[25] ("अपने दुर्भाग्य, जीवन की व्यस्तता और लड़कियों के जीवन की कठिनाइयों के बारे में सोचती हुई दोनों चुपचाप चलती गईं।")

इसी प्रकार लगभग सभी कहानियों की भाषा सामान्य बोलचाल की भाषा की तरह hi सरल एवं सहज है। एक और उदाहरण के तौर पर 'आऊखोक लसी' नामक कहानी की भाषा को देखा सकता है-

"Kawl a eng ta, min hmu thei ta lo. Mahse, ka zu no kha keng la, i kalna tur lam chu pan lagin, naktuk zanah lo kal leh ang che."[26] ("भोर हो गई है, इसलिए तुम मुझे देख नहीं पाओगे। मेरा हाथीदाँत का प्याला लेकर तुम अपनी मंजिल की ओर चले जाओ। कल रात तुम फिर आना।")

अँग्रेजी तथा हिन्दी भाषा के शब्दों का प्रयोग

चुनिंदा दस मिज़ो कहानियों में मिज़ो की सामान्य बोलचाल की भाषा में घुल-मिल चुके हिन्दी एवं अँग्रेजी के शब्दों का प्रयोग भी देखने को मिलता है। ऐसे शब्द सहजता से मिज़ो भाषा में मिल चुके हैं। ऐसे शब्दों के उच्चारण आम तौर पर मूल जैसे ही हैं पर कहीं-कहीं शब्दों के उच्चारण बदल भी गए हैं, जिनके पीछे ठोस ऐतिहासिक और भाषासमाजशास्त्रीय कारण हैं।

अँग्रेजी के शब्द

मिज़ो समाज में अंग्रेज़ो का तथा उनकी संस्कृति का बहुत गहरा प्रभाव है। इसका मुख्य कारण उनके द्वारा मिज़ोरम में किया गया ईसाइयत का प्रचार-प्रसार है। अँग्रेजी के कई शब्द ऐसे हैं, जो मिज़ो भाषा में घुल-मिल गए हैं और बिल्कुल सहज रूप से आम बोलचाल में प्रयुक्त होते हैं। विभिन्न कहानियों में प्रयुक्त ऐसे अँग्रेजी शब्दों की सूची प्रस्तुत कि जा सकती है-

‘लली’ नामक कहानी में प्रयुक्त अँग्रेजी शब्द:

Minit (Minute), Sande Sikul (Sunday School), Primary, Fit (Feet), Inchi (Inch), Kristian (Christian), Junior, Inter

‘आऊखोक लसी’ नामक कहानी में प्रयुक्त अँग्रेजी शब्द:

Hollywood Film Director, Film-Star

‘सिल्वरथङी’ नामक कहानी में प्रयुक्त अँग्रेजी शब्द:

Silvar Jubilee, Powder, Committee, Overseer, Petromax, Battle Dress, Casual Leave, Motor, Police Constable, Uniform, Regiment, Store Keeper, Unit, Court Martial, April

‘लामखुआङ’ में प्रयुक्त अँग्रेजी शब्द:

Goal, India, Jean, Reconditioned Jeep, Electric, Police Station, Truck Trip

‘थिःना थङवल्ह’ नामक कहानी में प्रयुक्त अँग्रेजी शब्द:

Jet Fighter, Volunteer, 32 Beretta Pistol, Mission, Political Party, Union Party Working Committee Member, Carbine, Rifles, Battalion Commander, April, Boys Scout, Councillor, Morse Code, Signal, Flashlight

‘लेमचन्ना खोवेल’ में प्रयुक्त अँग्रेजी शब्द:

Experience, Issue, Death Certificate, Testimony, Bro, Loan, Collection, Blackboard, President, Over Dose, Centenary, Contract, Vote, Scholarship, Peon, Govt. Servant, Officer

‘थ्ललेर पङपार’ में प्रयुक्त अँग्रेजी शब्द:

Engineer, Office, Car, Street Light, Jail, Typist, Bank, Coffee

‘राउथ्ललेङ’ में प्रयुक्त अँग्रेजी शब्द:

Fit (Feet), Village Council

‘पोलितिक जिप्सी’ में प्रयुक्त अँग्रेजी शब्द:

Cotton College, Exam, Gypsy, Europe, Regiment, Minister, Temporary, Panel, Contract, Communist, Socialist, Middle School, Private, Headmaster, Candidate, Christmas, Motor, Politik (Politics)

‘खामोश है रात’ में प्रयुक्त अँग्रेजी शब्द:

Brigadier General, Tenor, Carol, Kristmas (Christmas), Red Indian, England, America, December

अँग्रेजी के कुछ शब्दों के अलावा 'Silent Night' नामक अँग्रेजी गीत की कुछ पंक्तियों को भी इस कहानी में रखा गया है, जो कि इस प्रकार है:

"Silent night! Hallowed night!
Land and deep silent sleep;
Softly glitters bright Bethlehem's star.
Beckoning Israel's eye from afar
Where the Saviour is born."[27]

"Stilly Night, Holy Night!
Silent stars shed their light
Where the virgin mother keeps
Steadfast watch where her little one sleeps:
Jesus high and holy!"[28]

"Silent is the night, Holy is the night,
Everything is quiet everything is at peace
Around the mother and Child,
Adore the Holy Child,
Jesus at your birth."[29]

उपर्युक्त विवरण से इस बात को बहुत अच्छी तरह समझा जा सकता है कि इन चयनित मिज़ो कहानियों में अँग्रेजी के शब्दों का अच्छा-खासा प्रयोग मिलता है।

हिन्दी के शब्द

चयनित मिज़ो कहानियों में अँग्रेजी की तुलना में हिन्दी के शब्दों का प्रयोग कम हुआ है। यह स्वाभाविक भी है। अँग्रेजी की तुलना में हिन्दी भाषा का एक्सपोजर भी इस समाज को कम मिला है। फिर भी हिन्दी के कई शब्द ऐसे हैं जो मिज़ो भाषा में घुलमिल चुके हैं और जिनका उच्चारण भी हिन्दी के उच्चारण से थोड़ा भिन्न हो गया है। ये शब्द मिज़ो भाषा में इतने सामान्य रूप से इस्तेमाल होने लगे हैं कि ये अब मिज़ो के ही अपने शब्द प्रतीत होने लगे हैं। कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं-

बाबू, बांगला (बंगला), चोकीदार (चौकीदार), सिपई (सिपाही), बज़ार (बाज़ार), मिस्तिरी (मिस्त्री), सोरकार (सरकार), कुली, आदि।

'खामोश है रात' नामक कहानी का तो शीर्षक ही हिन्दी में रखा गया है। साथ ही इस कहानी में एक गीत भी हिन्दी में रखा गया है जो कि इस प्रकार है:

"खामोश है रात, पवित्र है रात,

हर चीज़ है चुप, हर चीज़ है शांत

माँ और शिशु के आसपास,

पवित्र शिशु का करते सत्कार

यीशु तेरे जन्म पर।"[30]

मिज़ो मुहावरे एवं लोकोक्तियों का प्रयोग:

मिज़ो कहानीकारों ने कथानक के अनुरूप कई मिज़ो लोकोक्तियों एवं मुहावरों का सुंदर प्रयोग किया है। इन मिज़ो लोकोक्तियों एवं मुहावरों में कुछेक ऐसे हैं जिनका पर्याय हमें हिन्दी में भी मिल जाता है। कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं:

- Hmeichhia leh palchhia chu thlak theih alawm.[31] ('लली' कहानी से)

  (ह्मेइछिआ लेह पलछिया चु थ्लाक थेई अलोम)

  अर्थात् 'स्त्री और टूटी बाड़ को तो बदला जा सकता है।'

- Relthang zawng a kiang leh mai thin.[32] ('सिल्वरथङी' कहानी से)

  (रेलथङ ज़ोङ अ कियाङ लेह मई ठीन)

  अर्थात् 'बदनामी के बादल तो एक-न-एक दिन छँट ही जाते हैं।'

- Bara khawn lo.[33] ('सिल्वरथङी' कहानी से)

  (बरा खोन लोउ)

  अर्थात् 'भाव न देना' या 'कुछ न मानना।'

- Tui tla mangang chuan buhpawl pawh an pawm e.[34] ('सिल्वरथङी' कहानी से)

  (तुइ त्ला मङअङ चुआन बुहपोल पोह अन पोम ए)

  अर्थात् 'पानी में डूबता हुआ व्यक्ति धान की बालियों के सहारे को भी स्वीकार कर लेता है।'

  'डूबते को तिनके का सहारा' का समानार्थी।

- Tuikhuah sah ang hawk.[35] (‘सिल्वरथङी’ कहानी से)

  (तुइखुआह् सह् अङ होक)

  अर्थात् ‘मानो अचानक तालाब के पानी को बहा दिया गया हो।’

  अथवा ‘मानो आंसुओं का बांध टूट गया हो।’

- Ril pawh thlak ang.[36] (‘राउथ्ललेङ’ कहानी से)

  (रील पोह् थ्लाक अङ)

  अर्थात् ‘मानो आंत को खींच निकाला हो।’ (दर्द से कराहना)

- Khual thuthang leh ar pan chuk.[37] (‘राउथ्ललेङ’ कहानी से)

  (खुआल थुथङ लेह् आर पान चुक)

  अर्थात् ‘अफवाह और मुर्गी द्वारा चुगा गया घाव तेजी से फैलता है।’

- Arpui mei ang deuhin kan inchen tlang a.[38] (‘पोलितिक जिप्सी’ कहानी से)

  (अरपुई मेइ अङ देउहइन कन इनचेन त्लाङ अ)

  अर्थात् ‘मुर्गियों की पूँछ के पंखों की तरह एक समान लंबाई वाले।’

- Ama mum mumin a mum tawp.[39] (‘थ्ललेर पङपार’ कहानी से)

  (अमा मूम अ मूम तोप)

  अर्थात् ‘अपने में ही रहना।’

- Khaw hmu tawhlo.[40] (‘थ्ललेर पङपार’ कहानी से)

  (खो ह्मु तोहलउ)

  अर्थात् ‘कुछ नज़र न आना।’

  ‘आपा खो बैठना’ का समानार्थी।

- Hmeichhia leh zawhte chu a chul nel peih peih.[41] ('थ्ललेर पङपार' कहानी से)

  (ह्मेइछिआ लेह् जोहते चु अ चूल नेल पेइह पेइह)

  अर्थात् 'स्त्री और बिल्ली उन्हीं को ज्यादा पसंद करती हैं, जो उन्हें ज़्यादा सहलाते हैं।'

- Dawl zawra zawr.[42] ('थ्ललेर पङपार' कहानी से)

  (दोल ज़ोरा ज़ोर)

  अर्थात् 'हार मानना'।

  'घुटने टेक देना' का समानार्थी।

- A leh a ling.[43] ('थ्ललेर पङपार' कहानी से)

  (अ लेह् अ लिङ)

  अर्थात् 'सही को गलत बताना' या 'दोष लगाना।'

- Sezawl chhuah leh ta tawp.[44] ('थिःना थङवल्ह्' कहानी से)

  (सेज़ोल छुआह लेह् त तोप)

  अर्थात् 'बिना कुछ दिए खाली हाथ जाने देना।'

- Bi chhek.[45] ('खामोश है रात' कहानी से)

  (बि छेक)

  अर्थात् 'बहुत कम।'

- Sakuh ser nghah.[46] ('खामोश है रात' कहानी से)

  (सकुह सेर ङआह)

  अर्थात् 'साही की तरह टक-टकी लगाकर बैठे रहना।'

- Chepa ti tawhna laileng.[47] ('खामोश है रात' कहानी से)

  (चेपा ति तोह्ना लाईलेङ)

  अर्थात् 'यदि किसी ने कुछ शुरू किया है तो उसे उसके अंत तक पहुँचाना ही चाहिए।'

- Tinther tiat pawh.[48] ('खामोश है रात' कहानी से)

  (तिनथेर तियात पोह)

  अर्थात् 'नाखून की नोक भर।'

  'रत्ती भर' का समानार्थी।

- An thu leh ui bengah engmah hlin tur a awmlo.[49] ('खामोश है रात' कहानी से)

  (अन थू लेह उई बेङआह एङमाह ह्लीन तूर अ ओमलउ)

  अर्थात् 'उनकी बातों का कोई भी मतलब नहीं है, ठीक वैसे ही जैसे कुत्ते के कानों में फंदा डालने का कोई मतलब नहीं होता।'

- A dik a dawk thluk theih a ni tawhlo.[50] ('खामोश है रात' कहानी से)

  (अ दिक अ दोक थ्लूक थेइह अ नि तोह्लउ)

  अर्थात् 'सही या गलत के बारे में सोचा नहीं जा सकता है।'

- Uipui tui lian thlir[51] ('खामोश है रात' कहानी से)

  (उईपुई तुइ लियान थ्लीर)

  अर्थात् 'बाढ़ के समय असहाय कुत्ते की भाँति' (उन्हें चुपचाप यूँहीं गुज़रते हुए देखना।)

  'हाथ-पर-हाथ धरे बैठना' का समानार्थी।

आलंकारिक भाषा का प्रयोग

अलंकार किसी रचना और उसकी भाषा की शोभा बढ़ाने का काम करता है, इसलिए उन्हें साहित्य का आभूषण माना गया है। अलंकार साहित्यिक कृति में चार-चाँद लगाने का काम करता है। चयनित मिज़ो कहानियों की भाषा में उपमा, उत्प्रेक्षा और मानवीकरण अलंकार का बड़ा ही सुंदर प्रयोग मिलता है।

उपमा अलंकार

जहाँ रूप, रंग, या गुण की समानता के कारण उपमेय की उपमान से तुलना की जाए, वहाँ उपमा अलंकार होता है। मिज़ो कहानियों में हमें उपमा अलंकार का प्रयोग देखने को मिलता है। कुछ उदाहरण देखे जा सकते हैं-

- "...मैं अक्सर इसी घर में पड़ा रहता हूँ, लगभग **एक आवारा कुत्ते की तरह**।"[52]
  ('लामखुआङ' कहानी से)
- "ऊपर से वे (अंग्रेज़) चट्टानों पर पड़े **चील के मल की तरह सफ़ेद** है।"[53]
  ('खामोश है रात' कहानी से)
- "...उन्होंने पल भर में **प्रेत-आत्माओं की भाँति** बिना आवाज किए सिपाहियों के कैंप को पहाड़ की चोटी और झूम की सीमा की तरफ से घेर लिया।"[54]
  ('खामोश है रात' कहानी से)
- "...गोली चलकर **पत्तों के जलने की-सी आवाज़** निकालेंगे।"[55]
  ('खामोश है रात' कहानी से)
- "...ग्यारह वाई बंदियों और एक मिज़ो बंदी के साथ पु थङा को **जानवरों की तरह** बंद कर दिया गया।"[56] ('थिःना थङवल्ह' कहानी से)

- "उनका घर मुझे **दिन की रोशनी-सा रोशन** प्रतीत हुआ। ...मुझे वह घर **अंग्रेजों के विशाल घरों जैसा** प्रतीत हुआ।"[57] ('आऊखोक लसी' कहानी से)
- "जहाँ हम बैठे थे वह एक चट्टान था, मगर वह मुझे **सूती कपड़े-सा कोमल** प्रतीत हुआ।"[58] ('आऊखोक लसी' कहानी से)
- "...हमारी स्थिति भी **मुर्गी की पूँछ जैसी** है, जिसके पंख समान लंबाई वाले हैं।"[59] ('पोलितिक जिप्सी' कहानी से)
- "उसने (ड्रग्स) मुझे **ऐसे दबोच लिया था जैसे भालू अपने शिकार को दबोच लेता है**।"[60] ('लेमचन्ना खोवेल' कहानी से)

उत्प्रेक्षा अलंकार

जहाँ उपमेय में उपमान की संभावना पाई जाए वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होता है। चयनित कहानियों में से उत्प्रेक्षा अलंकार के उदाहरण निम्नलिखित हैं:

- "ऐसा लग रहा था मानो बहती शीतल हवा भी उन गायकों के साथ ऊँची आवाज़ में गा रही हो।"[61] ('खामोश है रात' कहानी से)
- "रात की चाँदनी के तले ऐसा प्रतीत हुआ मानो समस्त प्राणियों ने बंधुत्व का नया पाठ पढ़ लिया हो।"[62] ('खामोश है रात' कहानी से)
- "मैं ऐसा महसूस करने लगा मानो वह मेरा ही घर हो...।"[63] ('आऊखोक लसी' कहानी से)
- "बड़े उत्साह के साथ वे हमारे घर को तैयार करने लगे मानो वे किसी त्योहार की तैयारी कर रहे हों।"[64] ('लेमचन्ना खोवेल' कहानी से)

मानवीकरण अलंकार

मानवीकरण अलंकार में जड़ प्रकृति पर मानवीय भावनाओं तथा क्रियाओं का आरोप होता है। कुछेक कहानियों में मानवीकरण अलंकार का सुंदर प्रयोग देखने को मिलता है। जैसे-

- "किसने कहा मुमकिन नहीं है?"

  "कटहल के पेड़ ने"[65] ('लामखुआङ' कहानी में)

- "...मानो बहती शीतल हवा भी उन गायकों के साथ ऊँची आवाज़ में गा रही हो।"[66] ('खामोश है रात' कहानी से)

- "यह संसार मुझसे कह रहा है 'निकल जा' और कब्र का अंधकार लगातार मुझे बुला रहा है- 'घर लौट आ'।"[67] ('लेमचन्ना खोवेल' कहानी से)

निष्कर्षतः उपर्युक्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि चयनित मिज़ो कहानियों की भाषा सरल एवं सहज है तथा प्रसंग के अनुरूप उनमें मिज़ो मुहावरों एवं लोकोक्तियों का बड़ा सुंदर प्रयोग किया गया है। लेखकों ने कहानियों को रोचक एवं मनोरंजक बनाने के लिए विभिन्न शैलियों का प्रयोग किया है। कहानियों की भाषा में अलंकारों का भी सुंदर प्रयोग हुआ है।

संदर्भ

---

[1] डॉ. ललत्लुआङलिआना खिआङते, बिआकलिआना रउबोम, एल. टी. एल. पब्लिकेशंस, आइज़ोल, 2011, पृ. 161 (अनुवाद मेरा)

[2] ज़ीकपुई पा, लुङरुआलना त्लाङ, एम सी एल पब्लिकेशंस, आइज़ोल, 2016, पृ. 98 (अनुवाद मेरा)

[3] ललरममोया ङेन्ते, श्रिङनुन ह्लिमथ्ला, ज़उरिन कम्प्युग्राफिक्स, आइज़ोल, 2002, पृ. 23 (अनुवाद मेरा)

[4] थनसेइया, पाङदाईलउ, पारतेई ऑफसेट प्रिंटर्स, आइज़ोल, 2001, पृ. 8 (अनुवाद मेरा)

[5] डॉ. ललत्लुआङलिआना खिआङते, थङ-ज़ुई, एल. टी. एल. पब्लिकेशंस, आइज़ोल, 2016, पृ. 78 (अनुवाद मेरा)

[6] वान्नेइहत्लुआङा, केइमाह लेह केइमाह, एल. वी. आर्ट, आइज़ोल, 2008, पृ. 133 (अनुवाद मेरा)

[7] एच. ललरिनफ़ेला, चोलह्ना तुईकम, गिलज़ोम ऑफसेट, आइज़ोल, 2019, पृ. 87 (अनुवाद मेरा)

[8] ज़-थुम, एल. टी. एल. पब्लिकेशंस एंड डिपार्टमेंट ऑफ मिज़ो, मिज़ोरम यूनिवर्सिटी, आइज़ोल, 2017, पृ. 166

[9] एच. ललरिनफ़ेला, चोलह्ना तुईकम, पृ. 88 (अनुवाद मेरा)

[10] वही, पृ. 89

[11] सी. ललनुनचङा, वुतदुक कारा मेइसी, गिलज़ोम ऑफसेट, आइज़ोल, 2011, पृ. 124

[12] वान्नेइहत्लुआङा, केइमाह लेह केइमाह, एल. वी. आर्ट, आइज़ोल, 2008, पृ. 143

[13] वही, पृ. 133

[14] वही, पृ. 133

[15] डॉ. ललत्लुआङलिआना खिआङते, बिआकलिआना रउबोम, एल. टी. एल. पब्लिकेशंस, आइज़ोल, 2011, पृ. 184

[16] डॉ. ललत्लुआङलिआना खिआङते, थङ-ज़ुई, एल. टी. एल. पब्लिकेशंस, आइज़ोल, 2016, पृ. 83

[17] वान्नेइहत्लुआङा, केइमाह लेह केइमाह, एल. वी. आर्ट, आइज़ोल, 2008, पृ. 143

[18] सी. ललनुनचङा, वुतदुक कारा मेइसी, गिलज़ोम ऑफसेट, आइज़ोल, 2011, पृ. 132

[19] वान्नेइहत्लुआङा, केइमाह् लेह् केइमाह्, एल. वी. आर्ट, आइज़ोल, 2008, पृ. 132 (अनुवाद मेरा)

[20] सी. ललनुनचङा, वुतदुक कारा मेइसी, गिलज़ोम ऑफसेट, आइज़ोल, 2011, पृ. 123

[21] एच. ललरिनफ़ेला, वइहना वारटिआन, गिलज़ोम ऑफसेट, आइज़ोल, 2019, पृ. 116

[22]मुकेश अग्रवाल, भाषा-विज्ञान एवं हिन्दी भाषा, स्वराज प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2015, पृ. 9 पर उद्धृत

[23] वहीं, पृ. 9 पर उद्धृत

[24] हिन्दी भाषा, डॉ. भोलानाथ तिवारी, किताब महल, इलाहाबाद, 2012, पृ. 3

[25] डॉ. ललत्लुआङलिआना खिआङते, बिआकलिआना रउबोम, एल. टी. एल. पब्लिकेशंस, आइज़ोल, 2011, पृ. 162

[26] डॉ. ललत्लुआङलिआना खिआङते, थङ-ज़ुई, एल. टी. एल. पब्लिकेशंस, आइज़ोल, 2016, पृ. 81

[27] सी. ललनुनचङा, वुतदुक कारा मेइसी, गिलज़ोम ऑफसेट, आइज़ोल, 2011, पृ. 131

[28] वही, पृ. 132

[29] वही, पृ. 133

[30] वही, पृ. 133

[31] डॉ. ललत्लुआङलिआना खिआङते, बिआकलिआना रउबोम, एल. टी. एल. पब्लिकेशंस, आइज़ोल, 2011, पृ. 172

[32] ज़ीकपुई पा, लुङरुआलना त्लाङ, एम एल सी पब्लिकेशंस, आइज़ोल, 2016, पृ. 109

[33] वही, पृ. 111

[34] वही, पृ. 116

[35] वही, पृ. 120

[36] ज़-थुम, एल. टी. एल. पब्लिकेशंस एंड डिपार्टमेंट ऑफ मिज़ो, मिज़ोरम यूनिवर्सिटी, आइज़ोल, 2017, पृ. 176

[37] वही, पृ. 178

[38] थनसेइया, पाङदाईलउ, पारतेई ऑफसेट प्रिंटर्स, आइज़ोल, 2001, पृ. 9

[39] ललरममोया ङेन्ते, शृङनुन ह्लिमथ्ला, ज़उरिन कम्प्युग्राफिक्स, आइज़ोल, 2002, पृ. 19

[40] वही, पृ. 23

[41] वही, पृ. 25

[42] वही, पृ. 26

[43] वही, पृ. 33

[44] एच. ललरिनफ़ेला, वइहना वारटिआन, गिलज़ोम ऑफसेट, आइज़ोल, 2019, पृ. 122

[45] सी. ललनुनचङा, वुतदुक कारा मेइसी, गिलज़ोम ऑफसेट, आइज़ोल, 2011, पृ. 124

[46] वही, पृ. 124

[47] वही, पृ. 125

[48] वही, पृ. 125

[49] वही, पृ. 125

[50] वही, पृ. 125

[51] वही, पृ. 128

[52] वान्नेइहत्लुआङा, केइमाह् लेह् केइमाह्, एल. वी. आर्ट, आइज़ोल, 2008, पृ. 135 (अनुवाद मेरा)

[53] सी. ललनुनचङा, वुतदुक कारा मेइसी, गिलज़ोम ऑफसेट, आइज़ोल, 2011, पृ. 125 (अनुवाद मेरा)

[54] वही, पृ. 129

[55] वही, पृ. 129

[56] एच. ललरिनफ़ेला, वइहना वारटिआन, गिलज़ोम ऑफसेट, आइज़ोल, 2019, पृ. 117 (अनुवाद मेरा)

[57] डॉ. ललत्लुआङलिआना खिआङ्ते, थङ-ज़ुई, एल. टी. एल. पब्लिकेशंस, आइज़ोल, 2016, पृ. 80 (अनुवाद मेरा)

[58] वही, पृ. 85

[59] थनसेइया, पाङदाईलउ, पारतेई ऑफसेट प्रिंटर्स, आइज़ोल, 2001, पृ. 9 (अनुवाद मेरा)

[60] एच. ललरिनफ़ेला, चोलह्ना तुईकम, गिलज़ोम ऑफसेट, आइज़ोल, 2019, पृ. 89 (अनुवाद मेरा)

[61] सी. ललनुनचङा, वुतदुक कारा मेइसी, गिलज़ोम ऑफसेट, आइज़ोल, 2011, पृ. 131 (अनुवाद मेरा)

[62] वही, पृ. 131 (अनुवाद मेरा)

[63] डॉ. ललत्लुआङलिआना खिआङ्ते, थङ-ज़ुई, एल. टी. एल. पब्लिकेशंस, आइज़ोल, 2016, पृ. 81 (अनुवाद मेरा)

[64] एच. ललरिनफ़ेला, चोलह्ना तुईकम, गिलज़ोम ऑफसेट, आइज़ोल, 2019, पृ. 89 (अनुवाद मेरा)

[65] वान्नेइहत्लुआङ, केइमाह् लेह् केइमाह्, एल. वी. आर्ट, आइज़ोल, 2008, पृ. 143 (अनुवाद मेरा)

[66] सी. ललनुनचङा, वुतदुक कारा मेइसी, गिलज़ोम ऑफसेट, आइज़ोल, 2011, पृ. 131 (अनुवाद मेरा)

[67] एच. ललरिनफ़ेला, चोलह्ना तुईकम, गिलज़ोम ऑफसेट, आइज़ोल, 2019, पृ. 87 (अनुवाद मेरा)

उपसंहार

उपसंहार

इस शोध-प्रबंध का विषय है ‘चुनिंदा मिज़ो कहानियों का हिन्दी अनुवाद और विश्लेषण’। हिन्दी में अनुवाद एवं विश्लेषण के लिए मिज़ो के नौ लेखकों की दस कहानियों को चुना गया है। ये दस मिज़ो कहानियाँ 1937 से 2011 के बीच लिखी गई कहानियाँ हैं। ये दस कहानियाँ अपने-अपने दशक की प्रतिनिधि कहानियाँ मानी जा सकती हैं।

मिज़ो भाषा की वर्तमान लिपि का स्वरूप 1894 ई. में प्रस्तुत हुआ, जिसके पीछे दो अँग्रेज ईसाई मिशनरियों जे.एच. लॉरेन और एफ.डब्ल्यू. सैविज का बहुत ही महत्वपूर्ण योगदान रहा। मिज़ो भाषा की लिपि के आने के बाद भी मौलिक कहानियों को अस्तित्व में आने में लगभग 64 वर्ष लग गए। मगर इससे पहले भी मिज़ोरम में मौखिक रूप से लोककथाएँ सुनी-सुनाई जाती रही हैं। आगे चलकर लगभग सभी लोककथाओं को भी लिपिबद्ध किया गया है। मिज़ो में उपन्यास एवं कहानी की विधा को लेकर कोई स्पष्ट अंतर नहीं दिखता क्योंकि अक्सर उपन्यास और कहानी के लिए मिज़ो भाषा में ‘थोंथु’ (कहानी) शब्द का ही प्रयोग किया जाता है और कहीं-कहीं कहानी की विधा को स्पष्ट करने के लिए उसे ‘थोंथु-तोई’ (लघु कहानी) की संज्ञा दी जाती है।

मिज़ो साहित्येतिहास की कालावधि अभी बहुत ही कम है। मिज़ो साहित्य का इतिहास लगभग 150 वर्षों का है जिसमें मौखिक एवं लिखित दोनों ही तरह के साहित्य को शामिल किया गया है। मिज़ो साहित्य के इतिहास को अध्ययन की सुविधा के लिए चार काल-खंडों में बाँटा गया है। मिज़ो विद्वानों ने मौखिक साहित्य को भी मिज़ो साहित्य का अभिन्न एवं महत्वपूर्ण अंग माना है, अतः उन्होंने इसे साहित्येतिहास के प्रथम दो काल-खंडों शामिल किया है। मौलिक मिज़ो कहानी लेखन की शुरुआत मिज़ो साहित्येतिहास के तृतीय काल-खंड अर्थात् ‘मध्यकाल: निकटवर्ती पिछली पीढ़ी का समय (1920 से 1970)’

के दूसरे दशक में 1937 ई. में एल. बिआकलिआना की कहानी ‘लली (ललओमपुई)’ से होती है। यह कहानी मिज़ोरम में आयोजित की गई पहली कहानी प्रतियोगिता के लिए लिखी गई थी और उस प्रतियोगिता में इसे प्रथम पुरस्कार से नवाजा गया था। अतः मिज़ो मौलिक कहानी लेखन का आरंभ सन् 1937 से हुआ और तब से लेकर आज तक कई मौलिक कहानियाँ लिखी गईं और लिखी जा रही हैं। 1937 से अब तक तकरीबन पचासी वर्षों की अवधि में मिज़ो कहानी कथानक और शिल्प दोनों ही दृष्टियों से काफी विकसित हुई है।

इस दौर में कई कहानीकार उभरकर सामने आए, जिन्होंने विभिन्न विषयों पर कहानियों की रचना की। उन कहानीकारों में एल. बिआकलिआना (1918-1941), कापह्लैया (1910-1940), ललजुईथङा (1916-1950), के. सी ललवुङा उर्फ ‘ज़ीकपुई पा’ (1929-1994), आर. ज़ुआला (1917-1990), खोलकूङी (1927-2015) आदि के नाम प्रमुख हैं। मगर एक बात स्पष्ट रूप से कही जा सकती है कि पुरुष कहानीकारों की तुलना में महिला कहानीकारों की संख्या काफी कम है। आरंभिक मिज़ो कहानियों में ईसाइयत का गहरा प्रभाव देखने को मिलता है। आज की भी कई कहानियों में यह प्रभाव प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से दिखाई पड़ता है। इसका मुख्य कारण यह हो सकता है कि मिज़ोरम में ईसाइयत के आगमन के साथ-साथ मिज़ो भाषा की लिपि अस्तित्व में आई और ईसाइयत के प्रचार-प्रसार के बाद ही मौलिक लेखन कार्य की शुरुआत हुई।

चयनित दस मिज़ो कहानियों का पाठ लगभग 180 पृष्ठों का था जिसका हिन्दी में अनुवाद लगभग 225 पृष्ठों में हो पाया है। इन दस कहानियों के मिज़ो में अनुवाद करने की प्रक्रिया में कई तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ा है। मिज़ो तथा हिन्दी की अपनी-अपनी तथा एक-दूसरे से बिल्कुल अलग संस्कृति है, जिसके कारण कहानियों की संवेदना का अनुवाद करना चुनौतियों से भरा था। मिज़ो समाज प्राकृतिक संरचना, जन-जीवन,

खानपान, रहन-सहन, वेषभूषा, जीव-जंतु एवं वनस्पतियों आदि की दृष्टि से हिन्दी भाषी प्रदेशों से काफी भिन्न है। यहाँ पाए जाने वाले कई जानवर एवं पेड़-पौधे हिन्दी प्रदेशों में नहीं पाए जाते। यहाँ का अपना इतिहास है और अपनी किंवदंतियाँ हैं। यहाँ सदियों से प्रचलित लोककथाएँ, मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ हैं, स्पष्ट रूप से जिनकी छाप हमें मिज़ो कहानियों में देखने को मिलती है। ऐसी स्थिति में उनके समतुल्य शब्दों को खोजकर सार्थक अनुवाद करना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। हर भाषा का संबंध उसकी सांस्कृतिक विरासत से, उसकी परंपराओं से होता है, अतः मिज़ो कहानियों का हिन्दी में अनुवाद करते समय सांस्कृतिक समतुल्यों के अनुवाद में कठिनाईयाँ होती हैं। मिज़ो से हिन्दी में अनुवाद करते समय मिज़ो के साथ-साथ हिन्दी प्रदेश की संस्कृति का भी ज्ञान होना अनिवार्य है। अनुवाद के दौरान ऐसे कई मिज़ो शब्द जिनके लिए हिन्दी में कोई समतुल्य नहीं मिला, उनका हिन्दी में लिप्यंतरण करते हुए उनका अर्थ कोष्ठक में या पाद-टिप्पणी में थोड़ा विस्तार से बता दिया गया है।

सांस्कृतिक भिन्नता के कारण कहानियों में प्रयुक्त होने वाले मुहावरे एवं लोकोक्तियों के अनुवाद में भी कई समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। मुहावरे और लोकोक्तियाँ समाज-सापेक्ष होती हैं। कभी-कभी मिज़ो मुहावरों का पर्याय हिन्दी में भी मिल जाता है, मगर हमेशा यही स्थिति नहीं रहती। जिन मिज़ो मुहावरों का निकटतम पर्याय हिन्दी में उपलब्ध नहीं हो सका, उनका यथासंभव सटीक अनुवाद करने का प्रयास किया गया है, जिससे उनमें निहित भाव यथासंभव अपने समग्र प्रभाव के साथ संप्रेषित हो सकें।

मिज़ो तथा हिन्दी की भाषागत भिन्नता के कारण भी अनुवाद में कई समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। मिज़ो और हिन्दी भाषा की प्रकृति एक दूसरे से काफी भिन्न है। बोलने एवं लिखने में मिज़ो भाषा हिन्दी से कई अर्थों में भिन्न है। हिन्दी की वाक्य संरचना में कर्ता-कर्म-क्रिया का क्रम बना रहता है, मगर मिज़ो की वाक्य संरचना में यह क्रम बदलता रहता

है। इसके अलावा मिज़ो वाक्य के आधार पर लिंग भेद नहीं किया जा सकता है। अतः अनुवाद के दौरान स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा की इन व्याकरणिक भिन्नताओं का खयाल रखना पड़ता है, जो निश्चित तौर पर अनुवादक से विशेष सावधानी की माँग करता है। मिज़ो भाषा में एक ही तरह से लिखे जाने वाले शब्दों के एक से अधिक उच्चारण होते हैं और उनके उच्चारण की भिन्नता के आधार पर उनके अर्थ बदल जाते हैं। ऐसी स्थिति में अनुवाद के दौरान मूल कहानी को पढ़ते हुए थोड़ी-सी भी लापरवाही या चूक बहुत बड़ी गलती साबित हो सकती है। इसके अलावा कई बार यह जानना काफी मुश्किल हो जाता है कि कहानीकार के द्वारा प्रयोग किए गए शब्द का सही उच्चारण क्या है और वह किस अर्थ में प्रयुक्त किया गया है। मूल कहानी को पढ़ते समय सावधानी बरतने से इस समस्या से बचा जा सकता हैं। चयनित मिज़ो कहानियों में यह भी देखा गया है कि कहीं-कहीं वाक्य और पात्रों के संवाद बहुत लंबे-लंबे हैं। ऐसे लंबे-लंबे वाक्यों और संवादों के अनुवाद में कई बार काफी कठिनाई होती है। पूरे मिज़ो वाक्य का एक साथ हिन्दी में अनुवाद करने से कभी-कभी अर्थ का अनर्थ होने कि स्थिति पैदा हो जाती है। अतः इस समस्या से बचने के लिए मिज़ो के लंबे वाक्य को तोड़कर हिन्दी में एक से अधिक वाक्यों में उसका अनुवाद कर दिया गया है। ऐसा करने से मूल कथन की सार्थकता बनी रहती है।

अनूदित कहानियों के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि मिज़ो समाज ऐसा आदिवासी समाज है जिसपर पश्चिमी सभ्यता, ईसाइयत और आधुनिकता के कई अच्छे एवं बुरे प्रभाव पड़े हैं, जिसके कारण यह समाज अपने कई पारंपरिक सामाजिक व सांस्कृतिक तत्वों को भुला चुका है और बहुत से नवीन एवं आधुनिक तत्वों को अपना रहा है। चुनिंदा दस कहानियों में भी हमें इस समाज के कुछ पारंपरिक एवं कुछ नवीन तत्व देखने को मिलते हैं। इन कहानियों के विश्लेषण के माध्यम से मिज़ो समाज के पारंपरिक एवं नवीन सामाजिक एवं सांस्कृतिक तत्वों को रेखांकित किया गया है।

आरंभिक मिज़ो कहानियाँ हिन्दी की आरंभिक कहानियों की भांति ही उपदेशात्मक, नीतिपरक एवं सुखांत रहीं, परंतु समय के साथ ये सामाजिक यथार्थ को संजीदगी के साथ प्रस्तुत करने का प्रयास कर रही हैं। अनुवाद के लिए चयनित कहानियों में से कुछ कहानियाँ मिज़ो स्त्रियों की दयनीय स्थिति से संबंधित हैं- जैसे 'लली (ललओमपुई)', 'सिल्वरथङी', 'थ्ललेर पङपार' और 'लामखुआङ', तो कुछ मनोरंजनपरक और रोमांच से परिपूर्ण 'लसी' की काल्पनिक कथा पर आधारित कहानियाँ है। मिज़ोरम के इतिहास की महत्वपूर्ण घटनाओं, जैसे सन् 1871 में मिज़ोरम की धरती पर पहली बार क्रिसमस केरोल के गाए जाने और सन् 1966 के 'मिज़ो विद्रोह' को भी कहानियों का विषय बनाया गया है। कहानीकारों की बारीक नज़र समाज के लगभग प्रत्येक पक्ष पर पड़ रही है तथा उन्हें कभी व्यंग्यात्मक ढंग से तो कभी मार्मिक ढंग से कहानी के रूप में अभिव्यक्त करने का प्रयास कहानीकार कर रहे हैं।

मिज़ो समाज पर ईसाइयत एवं पश्चिमी सभ्यता का बहुत गहरा प्रभाव रहा है, जिसकी छाप हमें यहाँ की कहानियों में देखने को मिलती है। मिज़ोरम में ईसाइयत से जुड़ी विभिन्न ऐतिहासिक घटनाएँ घटी हैं, जिनमें से एक मिज़ोरम की जमीन पर प्रथम 'क्रिसमस केरोल' का गाया जाना है। इसी ऐतिहासिक घटना पर आधारित है कहानीकार सी. ललनुनचङा की कहानी 'खामोश है रात'। कई मिज़ो कहानियाँ ईसाई मान्यताओं एवं ईसाई जीवन मूल्यों को केंद्र में रखकर रची गई हैं। 'लली (ललओमपुई)' नामक कहानी में भी ईसाई जीवन शैली एवं ईसाई मान्यताओं का प्रत्यक्ष रूप से प्रचार-प्रसार किया गया है। इस कहानी में 'मसीही परिवार' की स्थापना पर जोर दिया गया है। अन्य कहानियों में भी ईसाइयत का प्रभाव हमें अप्रत्यक्ष रूप से देखने को मिलता है। इन कहानियों के माध्यम से

पता चलता है कि ईसाइयत मिज़ो संस्कृति में घुलमिल गई है। वर्तमान मिज़ो विवाहों में भी मिज़ो परंपराओं एवं ईसाइयत का मिश्रण देखने को मिलता है।

मिज़ो समाज पुराने जमाने से ही पितृसत्तात्मक समाज रहा है। इस समाज में पुरुषों का स्थान हमेशा से ही स्त्रियों से ऊँचा समझा जाता है। पुराने जमाने में प्रत्येक मिज़ो गाँव में गाँव का मुखिया या सरदार हुआ करता था, जिसे मिज़ो भाषा में 'लल' कहा जाता है। पितृसत्तात्मक व्यवस्था अभी भी मिज़ो समाज में कायम है और जिनका चित्रण हमें 'लली (ललओमपुई)', 'थ्ललेर पङपार', 'लामखुआङ' और 'आऊखोक लसी' जैसी कहानियों में देखने को मिलता है। इन कहानियों के माध्यम से मिज़ो समाज में मिज़ो स्त्रियों की वास्तविक स्थिति का पता चलता है। प्रायः ऐसा समझा जाता है कि गैर आदिवासी स्त्री की तुलना में आदिवासी स्त्री, विशेषकर पूर्वोत्तर की स्त्रियाँ अधिक स्वतंत्र और आत्मनिर्भर हैं। मगर इन कहानियों के विश्लेषण से पता चलता है कि मिज़ो समाज की स्त्रियों की स्थिति बहुत ज्यादा बेहतर नहीं है। इन कहानियों में बिनब्याही माँ या पति द्वारा छोड़ दी गई स्त्री, जिसे मिज़ो समाज में 'नुथ्लोई' कहा जाता है, की वास्तविक स्थिति का चित्रण करने का प्रयास किया गया है।

राजनीतिक भ्रष्टाचार तथा सरकारी नौकरियों में भाई-भतीजावाद का बोलबाला मिज़ोरम में खूब है। इसके अलावा मिज़ोरम ड्रग्स और शराब जैसी समस्याओं से भी जूझता रहा है। ड्रग्स और शराब ने मिज़ो युवाओं और बहुत सारे परिवारों को बर्बाद और खोखला कर दिया है। मिज़ोरम के इस पक्ष का वास्तविक चित्रण हमें 'सिल्वरथङी', 'पोलितिक जिप्सी', 'लामखुआङ', 'थ्ललेर पङपार' आदि कहानियों में देखने को मिलता है। लली के पिता की शराब पीने की आदत के कारण ही उनका पारिवारिक माहौल खराब और तनावपूर्ण रहता है। 'लामखुआङ' नामक कहानी का मुख्य पात्र ललदाईलउवा भी एक शराबी है और 'लेमचन्ना खोवेल' कहानी का मुख्य पात्र ड्रग्स का आदि। 'लेमचन्ना खोवेल'

कहानी में लेखक ने व्यंग्यात्मक ढंग से मिज़ो परिवार, चर्च, समाज एवं लोगों के वास्तविक चरित्र को उद्घाटित किया है।

मिज़ोरम के इतिहास की सबसे महत्वपूर्ण राजनैतिक ऐतिहासिक घटना रही है सन् 1966 का मिज़ो विद्रोह। यह विद्रोह असम तथा केन्द्रीय सरकार के प्रति मिज़ो लोगों के असंतोष का परिणाम था। इस विद्रोह के दौरान आम मिज़ो जनता तथा मिज़ो नेशनल आर्मी के बीच भी तनाव एवं संदेह का जन्म हुआ। इस तनाव एवं संदेह की स्थिति को 'थिःना थङवल्ह' नामक कहानी में दिखाया गया है। ऐसी कहानियाँ मिज़ोरम के इतिहास को, उसकी संस्कृति को, यहाँ के लोगों की समस्याओं को तथा उनके विचारों एवं मान्यताओं को जानने समझने का बहुत अच्छा माध्यम है।

चयनित मिज़ो कहानियों में कहानीकारों ने अपनी कहानियों को रोचक और दिलचस्प बनाने के लिए विभिन्न शैलियों का प्रयोग किया है। जैसे: वर्णनात्मक शैली, आत्मकथा शैली, पूर्वदीप्ति शैली, व्यंग्यात्मक शैली, आदि। इन कहानियों के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि शिल्प पक्ष की तमाम सीमाओं के बावजूद उपर्युक्त शैलियों एवं प्रविधियों का प्रयोग मिज़ो कहानीकारों ने किया है। चुनिंदा दस मिज़ो कहानियों की भाषा के विषय में यह कहा जा सकता है कि संप्रेषणीयता की दृष्टि से उनकी भाषा सहज एवं सरल है। प्रायः सभी कहानियों में देशकालानुसार आम बोलचाल की भाषा का प्रयोग मिलता है। कुछेक कहानियों में कठिन साहित्यिक भाषा या काव्यात्मक भाषा का प्रयोग दिखाई पड़ता है, मगर उनकी मात्रा काफी कम है। चुनिंदा दस मिज़ो कहानियों में आम बोलचाल की मिज़ो भाषा में घुल-मिल चुके हिन्दी एवं अँग्रेजी के शब्दों का प्रयोग भी देखने को मिलता है। ऐसे शब्द सहजता से मिज़ो भाषा में मिल गए हैं। ऐसे शब्दों के उच्चारण कहीं-कहीं तो मूल जैसे ही हैं और कहीं-कहीं शब्दों के उच्चारण में भिन्नता भी देखने को मिलती है। मिज़ो

कहानीकारों ने कथानक के अनुरूप कई मिज़ो कहावतों एवं मुहावरों का भी सुंदर प्रयोग किया है।

मिज़ो कहानियों ने चौरासी वर्ष की इस छोटी-सी अवधि में जितना फासला तय किया है, वह काफी सराहनीय और उत्साहवर्धक है। कलात्मकता और संरचना के लिहाज से निश्चित रूप से मिज़ो कहानी को अभी और परिपक्व होने की जरूरत है। मगर जिस तरह से धीरे-धीरे मिज़ो साहित्य में कहानी एक स्पष्ट और विशेष विधा का रूप ले रही है, उसके लिए मिज़ो कहानीकारों का योगदान प्रशंसनीय है। आशा है कि समय के साथ लेखक खुद को और अधिक स्वतंत्र महसूस करते हुए अधिक ईमानदारी और साहस के साथ अपनी बातों को कहानी के माध्यम से प्रस्तुत करने का प्रयास करेंगे। निश्चित तौर पर मिज़ो कहानियाँ मिज़ो समाज को समझने और जानने का सुंदर अवसर उपलब्ध कराती हैं।

शोध-प्रबंध के महत्वपूर्ण निष्कर्ष

1) मिज़ो में कहानी लेखन की शुरुआत सन् 1937 से हुई है। मिज़ो की पहली कहानी 'लली (ललओमपुई)' है, जिसके लेखक एल. बिआकलिआना हैं। आरंभ में मिज़ो भाषा में सभी प्रकार की कथाओं को चाहे, वह लोककथा हो या कहानी हो या फिर उपन्यास, उसे 'थोंथु' ही कहा जाता था। मगर के. सी. वानङ्हाका ने कहानी को 'थोंथु' और उपन्यास को 'थोंथु फुअःथर' की संज्ञा दी है। आरंभिक मिज़ो कहानियाँ प्रायः लंबी और विभिन्न खंडों में विभक्त होती थीं, मगर बाद की कहानियों की लंबाई अपेक्षाकृत कम है।

2) चयनित दस कहानियाँ मिज़ो की महत्वपूर्ण कहानियाँ मानी गई है, इसलिए इन्हें विद्यालयों, कॉलेजों एवं विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में भी शामिल किया गया है। इन दस कहानियों में से नौ कहानियों का अँग्रेजी में भी अनुवाद किया जा चुका है। कुछेक कहानियों को मिज़ो विषय के पाठ्यक्रम में ही नहीं अँग्रेजी विषय के पाठ्यक्रम में भी शामिल किया गया है।

3) हिन्दी एवं मिज़ो की सांस्कृतिक एवं भाषागत भिन्नता के कारण अनुवाद के दौरान कई तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ा है। मिज़ो एवं हिन्दी वाक्यों की संरचना की प्रकृति में भी अंतर है जिसके कारण अनुवाद में समस्या उत्पन्न होती है।

4) मिज़ो में कई शब्द ऐसे हैं जो समान रूप से लिखे जाते हैं मगर उच्चारण की भिन्नता के आधार पर उनके अर्थ बदलते रहते हैं, ऐसे शब्दों का सही-सही अनुवाद करना एक चुनौती बनकर खड़ा होता है।

5) मिज़ो भाषा के कई शब्द ऐसे हैं जिनके पर्याय या निकटतम पर्याय हिन्दी भाषा में अनुपलब्ध हैं, जैसे पुआन, ज़ोलबूक, पोलकूत, पोनपुई आदि जैसे शब्दों का पर्याय हिन्दी में उपलब्ध नहीं है। ऐसे प्रत्येक शब्दों का लिप्यंतरण कर उनका अर्थ बताते हुए कोष्ठक या पाद-टिप्पणी में उन्हें व्याख्यायित करना पड़ा है।

6) कुछ मिज़ो कहानियाँ मनोरंजनपरक हैं तो कुछ आदर्शवादी एवं यथार्थवादी। लगभग सभी मिज़ो कहानियों में ईसाइयत का गहरा प्रभाव देखने को मिलता है। कहानियों में प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से ईसाई धर्म की मान्यताओं का उद्घाटन एवं प्रचार हुआ है। ऐसी कहानियों में यीशु में विश्वास न रखने वाले पात्रों को प्रायः नकारात्मक पात्र के रूप में चित्रित किया गया है और उन्हें शराबी व बदमाश दिखाया गया है।

7) मिज़ो समाज में स्त्रियों की दयनीय स्थिति को 'लली', 'सिल्वरथङी', 'थ्ललेर पङपार' और 'लामखुआङ' जैसी कहानियों के माध्यम से दिखाने का प्रयास किया गया है। मगर ये कहानियाँ भी स्त्री की वास्तविक परिस्थितियों को पूरी गहराई से नहीं दिखा पातीं।

8) मिज़ो कहानीकारों में मुखरता की कमी दिखाई पड़ती है। समाज की वास्तविकता को बेखौफ प्रस्तुत करने में वे कुछ हिचकिचाते-से नजर आते हैं।

9) मिज़ो कहानियों में सामाजिक आलोचना का अभाव है। कुछेक कहानीकारों ने समाज में व्याप्त बुराइयों को अपनी रचना के माध्यम से दिखाने की कोशिश की है, मगर ज़्यादातर कहानियों में इसका अभाव दिखाई पड़ता है।

10) एच. ललरिनफेला (माफ़ा) की कहानी 'लेमचन्ना खोवेल' में सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक बुराइयों की कटु आलोचना की गई है। इसी तरह लेखक थनसेइया भी 'पोलितिक जिप्सी' नामक कहानी के माध्यम से सरकारी तंत्र एवं राजनीतिक पार्टियों की भ्रष्टता की कटु आलोचना करते हैं।

11) 'थिःना थङ्वल्ह्' कहानी में माफ़ा ने मिज़ो विद्रोह के अनकहे पक्ष को प्रकाश में लाने का काम किया है और 'खामोश है रात' नामक कहानी में सी. ललनुनचङा ने ईसाइयत से जुड़ी मिज़ोरम की एक ऐतिहासिक घटना को अपनी कहानी का केंद्र बनाया है। यह ऐतिहासिक घटना थी मिज़ोरम की जमीन पर पहली बार 'क्रिसमस करोल' का गया जाना।

12) चयनित कहानियों के विश्लेषण से यह पता चलता है कि इन मिज़ो कहानियों में अभी कलात्मक ऊँचाई का अभाव है। ये कहानियाँ मुख्यतः वर्णनात्मक एवं आत्मकथात्मक शैली में ही लिखी गई हैं और कहीं-कहीं तो ये कहानियाँ निबंधात्मकता की भी शिकार हो गई हैं।

13) चयनित मिज़ो कहानियों की भाषा सरल है। कहीं-कहीं यह बहुत सपाट भी हो गई है। भाषा प्रायः पात्रों एवं काल के अनुरूप है। कथानक के अनुकूल कुछ हिन्दी व अँग्रेजी के शब्दों का भी प्रयोग किया गया है। स्वाभाविक तौर पर हिन्दी की तुलना में अँग्रेजी के शब्दों का प्रयोग अपेक्षाकृत ज़्यादा मिलता है।

14) कहानियों में परिस्थितियों के अनुरूप मिज़ो मुहावरों एवं लोकोक्तियों का भी खूब प्रयोग किया गया है। कुछ मुहावरे तो ऐसे भी हैं, जो हिन्दी के मुहावरों से मिलते-जुलते हैं।

15) मिज़ो कहानीकारों ने अपनी कहानियों में विभिन्न कथा-प्रविधियों का प्रयोग किया है, मगर शिल्प की दृष्टि से इन मिज़ो कहानियों में अभी-भी परिपक्वता का अभाव दिखाई पड़ता है।

परिशिष्ट

श्री ललरममोया डेन्ते का साक्षात्कार

श्री सी. ललनुनचङा का साक्षात्कार

श्री ललरममोया ङेन्ते का साक्षात्कार

(यह साक्षात्कार लिखित प्रश्नावली के आधार पर लिया गया है। लेखक श्री ललरममोया ङेन्ते ने लिखित रूप में अपने जवाब मिज़ो में दिए हैं, जिनका हिन्दी में अनुवाद शोधार्थी के द्वारा किया गया है।)

सवाल 1. आपकी कितनी रचनाएँ प्रकाशित हो चुकी हैं और वे कौन-कौन सी हैं?

जवाब: सन् 1994 से मेरी कृतियाँ प्रकाशित होनी शुरू हुयीं। मैंने कई लेख (article) लिखे हैं। मैं गद्य और पद्य (साहित्य) की पत्रिका 'सबेरेका खुआङकइह' का संपादक भी रह चुका हूँ।

मेरी प्रकाशित पुस्तकें:

1) खोवेल ङ्होरङ्हीङ्तू टेलिविजन
   [Khawvel Nghawrnghingtu Television,1994]
2) बियाकजिन्ना-1 [Biakzinna-1,1997]
3) बियाकजिन्ना-2 [Biakzinna-2, 1998]
4) मि रउपुईते थ्रिङ्नुन [Mi ropuite Hringnun, 1998]
5) रउह्लू (लेख) [Rohlu, 1998]
6) क्रिसता पसलठाते नुपा नुन ङईह्नोम [Krista Pasalthate Nupa nun Ngaihnawm,1999]
7) थिम लल कउश्रण [Thim Lal Kohhran, 2000]

8) थ्रिङ्नुन ह्लिमथ्ला 1 (कहानियाँ) [Hringnun Hlimthla 1, 2005]

9) इनह्निनयालना रउपुई [Inhnialna Ropui, 2002]

10) थ्रिङ्नुन ह्लिमथ्ला 2 (कहानियाँ) [Hringnun Hlimthla 2, 2005]

11) दम लाई थ्लान थिम (उपन्यास) [Dam Lai Thlan Thim, 2003]

12) ह्मङ्ईना पार (उपन्यास) [Hmangaihna Par, 2005]

13) थ्ललेर पङ्पार (उपन्यास) [Thlaler Pangpar, 2006]

14) दन रुआल लोह ह्मङ्ईह्ना (उपन्यास) [Dan rual loh hmangaihna, 2008]

15) रिनतेइ जूनलेङ (उपन्यास) [Rintei Zunleng, 2009]

16) एम एस एस यू पथियाननी चोह्नु नउपङ इनखोम कइश्रुआईना [MSSU Pathianni Chawhnu Naupang Inkhawm Kaihhruaina, 2009)

17) थिल बुल थोंथू (Creation Myth) [Thil bul Thawnthu, 2010)

18) तूकतिन पार [Tuktin Par, 2010]

19) त्लेईरोलते रउबोम [Tleirawlte Robawm, 2010]

20) केईमाह मिज़ो (लेख) [Keimah Mizo, 2015]

21) रूपर्ट ऑफ हेंज़ा (अनुवाद) [Rupert of Hentzau, 2018)

22) तुइलेत थोंथू (Flood Myth) [Tuilet Thawnthu, 2018]

23) पुइथिआम ललबेर बोई मलका (अनुवाद) [Puithiam Lalber Bawih Malka, 2018]

24) पथियान अ ओम (अनुवाद) [Pathian A Awm, 2019]

25) सलेम लल मेलकीज़ेदेक (अनुवाद) [Salem Lal Melkisedeke, 2020]

26) दारबू (बी. ए. की पाठ्यपुस्तक) [Darbu, 2020]

27) तुमपङ (बी. ए. की पाठ्यपुस्तक) [Tumpang, 2021]

अभी दो पुस्तकें 'मामी टाना' (उपन्यास) और 'ज़िआकफुङ चोईतूते' प्रकाशन के लिए तैयार है। मैं अभी कुछ और भी लिख रहा हूँ। मेरी चार कहानियाँ अँग्रेजी में अनूदित हो चुकी हैं। मैंने बीस से अधिक पुस्तकों का संपादन भी किया है।

सवाल 2. आपने कब से लिखना आरंभ किया और आपको साहित्यिक रचना की प्रेरणा कहाँ से मिली?

जवाब: मैंने लिखना जल्दी आरंभ नहीं किया, मगर मैं पढ़ता खूब था। सन् 1994 में मेरी पहली पुस्तक के प्रकाशन से पहले भी मैं कुछ-न-कुछ लिखा करता था। असल में मेरी सबसे पहली रचना नाटक थी, मगर पुस्तक के रूप में मैंने उसका प्रकाशन नहीं किया। मेरी सबसे पहली पुस्तक 1994 में आई थी। इससे पहले मैंने अनुवाद किया, जो कि 'रूपर्ट ऑफ हेंज़ा' का अनुवाद था, जो 2017 में प्रकाशित हुई।

मेरी कहानियाँ मुख्यतः सामाजिक जीवन पर आधारित हैं। जब मैं अपने लोगों (जाति) के जीवन को, पारिवारिक जीवन और व्यक्तिगत जीवन को देखता और समझता हूँ, तो मुझे उनसे कई तरह के विचार (आइडिया) मिलते हैं। किसी व्यक्ति की बातों को सुनकर, समाचार पत्रों में छपी बातों को पढ़कर, फिल्मों को देखकर मेरे मन में कई विचार बनते हैं, जिसे मैं फिर कहानियों में गढ़ता हूँ।

सवाल 3. आपने किन-किन विषयों को लेकर रचना की है तथा उन विषयों के चुनाव के क्या कारण थे?

जवाब: मैंने कई विषयों पर लिखा है। मुख्यतः मैंने हमारे सामाजिक जीवन तथा प्रदेश एवं जाति के प्रति महत्वाकांक्षी होकर अधिक लिखा है। अपने उपन्यासों में सामाजिक जीवन को प्रकट करने के पीछे का कारण यह है कि यह हमारे करीब है और इसे हम आसानी से समझ सकते हैं, क्योंकि जिसे हम अपनी आँखों से देख और कानों से सुन सकते हैं वह बहुत स्पष्ट होता है। इसलिए मैंने अपने समाज को अपने विषय के रूप में चुना है। मेरे लिए सबसे बड़ी बात 'समाज सुधार' है।

सवाल 4. क्या आपने मिज़ो विद्रोह के विषय को लेकर कोई रचना की है? मिज़ो विद्रोह को लेकर आपकी क्या धारणा है?

जवाब: मैंने अभी तक मिज़ो विद्रोह के विषय में नहीं लिखा है, मगर इस विषय में उपन्यास लिखने की मेरी योजना तो है। मैं मानता हूँ कि यह विद्रोह मिज़ो इतिहास की असाधारण घटना है। इसका सफल होना या न होना दूसरी बात है, मगर मुझे लगता है कि इस विद्रोह ने मिज़ो लोगों में अपनी जाति के प्रति प्रेम को बड़े व्यापक रूप में जाग्रत किया और मैं इसे एक महत्वपूर्ण नेशनल मूवमेंट मानता हूँ। मगर इसके अच्छे और बुरे पक्ष तो हो ही सकते हैं।

सवाल 5. ऐसा लगता है कि मिज़ो लेखकों ने मिज़ोरम में स्त्रियों की परिस्थिति को दर्शाते हुए कम कहानियों की रचना की है। आपके विचार से इसके क्या कारण हो सकते हैं? स्त्रियों के विषय में 'थ्ललेर पङ्पार' के अलावा आपने क्या कोई और रचना की है?

जवाब: हो सकता है इस विषय में कम कहानियाँ लिखीं गई हों, मगर मुझे लगता है कि इस विषय पर कई उपन्यास हैं। मेरे विचार में इसका कारण यह हो सकता है कि पहले के रचनाकार प्रायः पुरुष ही हुआ करते थे और हो सकता है हमें स्त्रियों की परिस्थितियों की ज्यादा जानकारी नहीं थी। स्त्री रचनाकारों की बढ़ती संख्या से इस विषय की रचनाओं में वृद्धि हुई है।

थ्ललेर पङ्पार' के अलावा मैंने 'इननेइह थिलपेक', 'लेमदेरथिआमी', 'अरकाई देन ज़ान' (श्रिङ्नुन ह्लिमथ्ला 1) और अन्य कहानियों एवं उपन्यासों में स्त्रियों के विषय में लिखा है।

सवाल 6. क्या आपको लगता है कि मिज़ो कहानी लेखन की दिशा में प्रगति हुई है? मिज़ो कहानी लेखन में आपको क्या कमी नजर आती है और किन-किन बातों में हमें आगे बढ़ने की जरूरत है?

जवाब: मेरे विचार से पहले की तुलना में बहुत प्रगति हुई है। विभिन्न विधाओं में रचनाएँ होने लगी हैं, अन्य जातियों के साहित्य में मिलने वाले सुपरनैचुरल, माइथोलोजिकल, मनोवैज्ञानिक, आदि उपन्यास भी हमारे बीच आने लगे हैं और यही अपने साथ विकास भी ला रहे हैं। मगर इन सब के बावजूद हमारे धार्मिक बंधनों के कारण बहुत सामान्य-सी कहानियाँ देखने को मिलती हैं। इन बंधनों के कारण इसका पूरी तरह विकास नहीं हो पा रहा है। किसी भी विषय पर जब कोई पूरी तरह स्वतंत्र होकर लिखता है, तब मुझे वह रचना रोचक लगती है। तथ्य से युक्त काल्पनिक रचनाओं को गढ़ने के लिए रिसर्च करने के मामले में मुझे अभी भी अभाव दिखता है।

सवाल 7. क्या आपकी रचनाओं का हिन्दी में अनुवाद किया गया है? मिज़ो रचनाओं के हिन्दी में अनुवाद को लेकर आपके क्या विचार हैं?

जवाब: अभी तक मेरी कोई भी रचना हिन्दी में अनूदित नहीं है। हमारे साहित्य को आगे बढ़ाने के लिए इनका हिन्दी में अनुवाद करना मैं बहुत जरूरी समझता हूँ। हम भारत में रहते हैं, इसलिए राष्ट्र की एकता व एक-दूसरे को जानने के लिए हिन्दी में इनके अनुवाद का मैं समर्थन करता हूँ और यह एक अच्छा प्रयास है।

सवाल 8. क्या आप अन्य भाषाओं में भी लिखते हैं?

जवाब: अभी तक तो नहीं।

सवाल 9. आपकी कहानियों एवं उपन्यासों में आपकी सबसे पसंदीदा रचना कौन-सी है? यदि कोई आपकी किसी रचना का हिन्दी में अनुवाद करना चाहे तो आप कौन-सी रचना का सुझाव देंगे?

जवाब: पसंद की अगर बात करें तो सभी मेरे लिए प्रिय हैं। सबसे पसंदीदा कहना मेरे लिए मुश्किल है। मेरे उपन्यासों में से 'ह्माङईना पार' अन्य जातियों पर आधारित है। मेरे खयाल से इसका अनुवाद करना शायद अच्छा रहे।

सवाल 10. मिज़ो समाज में ईसाइयत के प्रभाव को आप कैसे देखते हैं? आपके विचार से ईसाइयत ने पारंपरिक मिज़ो समाज को कितना बदला है?

जवाब: ईसाइयत का मिज़ो समाज पर बहुत गहरा प्रभाव रहा है। वास्तव में मुझे लगता है कि इसने हमारे समाज को पूरी तरह से बदल दिया है। इसने हमारे दृष्टिकोण को, सोच और निर्णय लेने तक को प्रभावित किया है। इसने हमारे धर्म को बदला,

हमारी जाति की भिन्न जीवन शैली, बहुत सारी अच्छी चीजों को साथ लेते हुए और अन्य अच्छी चीज़े भी हमें सिखाई हैं। मगर इसने हमारी जाति की संरक्षित रखने योग्य विशिष्टता को तुच्छ मानने वाली जो सोच हमारे समाज को दी, वह मुझे सही नहीं लगती। मुझे विश्वास है कि ईसाई समाज से बेहतर कोई और समाज नहीं हो सकता है, मगर जरूरत है कि हमारी ईसाइयत पक्की हो। उसकी शिक्षाओं का हम पालन कर सकें तो इससे बेहतर कुछ और नहीं है। इसने हमारे आध्यात्मिक जीवन को बदला, हमारे रहन-सहन को भी बदल दिया। मगर सच्चे अर्थों में इसने हमें प्रगति के विभिन्न रास्ते दिए हैं।

सवाल 11. क्या आपने पारंपरिक मिज़ो समाज पर कोई रचना की है?

जवाब: नहीं।

सवाल 12. कहानी, उपन्यास या लेख आदि को लिखते हुए आप उनकी विधागत संरचना को लेकर कितने सतर्क होते हैं?

जवाब: मैं बिना किसी विशेष अध्ययन के यूँहीं लिख दिया करता हूँ। मगर मेरे मन में विधाओं को लेकर खयाल तो आते हैं। चूँकि उपन्यास की कोई निर्धारित सीमा नहीं होती इसलिए मुझे उपन्यास लिखना अच्छा लगता है। मेरे मन में जो भी आता है, उसी के अनुसार में लिखता चला जाता हूँ।

सवाल 13. क्या आपकी कहानी 'थ्ललेर पङपार' पर कोई आलोचनात्मक लेख लिखा गया है? यदि हाँ, तो क्या आप हमें उन पत्र-पत्रिकाओं या पुस्तक के नाम बता सकते हैं?

जवाब: शायद नहीं है। मैंने अभी तक नहीं देखा।

श्री सी. ललनुनचङा का साक्षात्कार

(यह साक्षात्कार लिखित प्रश्नावली के आधार पर लिया गया है। लेखक श्री सी. ललनुनचङा ने लिखित रूप में अपने जवाब मिज़ो में दिए हैं, जिनका हिन्दी में अनुवाद शोधार्थी के द्वारा किया गया है।)

सवाल 1. आपकी कितनी रचनाएँ प्रकाशित हो चुकी हैं और वे कौन-कौन सी हैं?

जवाब: साहित्य के क्षेत्र में मेरे कार्य:

उपन्यास: 07

निबंध और लेख: 100

इतिहास: 01

लघु नाटक: 08

गीत और कविता: 10

लघु कहानी: 24

प्रकाशित पुस्तकें:

1) पारतई, आर. डी. प्रिंट टेक, आइज़ोल, 1999 (ईसाई उपन्यास)
2) ह्मङईना लेह हुआतना, आर. डी. प्रिंट टेक, आइज़ोल, 2004 (रोमांस उपन्यास)

3) क मि हुआइसेन लेह् क पसलठा, गिलज़ोम ऑफसेट, आइज़ोल, 2005 (ऐतिहासिक उपन्यास)
4) पसलठाते नि ह्नुह्नुङ, गिलज़ोम ऑफसेट, आइज़ोल, 2006 (ऐतिहासिक उपन्यास)
5) रुआम राई थुरूक, गिलज़ोम ऑफसेट, आइज़ोल, 2007 (रहस्यमय रोमांस उपन्यास)
6) लुङलेन्ना थोवेङ, गिलज़ोम ऑफसेट, आइज़ोल, 2008 (निबंधों और लेखों का संग्रह)
7) इनदउना लेह ह्मङईना, गिलज़ोम ऑफसेट, आइज़ोल, 2010 (धार्मिक उपन्यास)
8) देह् लोह सकेई हुआई, गिलज़ोम ऑफसेट, आइज़ोल, 2011 (कुछ प्रमुख मिज़ो व्यक्तियों के रोमांचक कारनामों का संग्रह)
9) वुतदुक कारा मईसी, गिलज़ोम ऑफसेट, आइज़ोल, 2011 (कहानी संग्रह)
10) क पी थोंथु मिन श्रिल्ह चु, गिलज़ोम ऑफसेट, आइज़ोल, 2012 (परियों की कहानी)
11) ज़उरम मि श्राङते अन वाङलाई, गिलज़ोम ऑफसेट, आइज़ोल, 2013 (ऐतिहासिक रोमांच)
12) अन तिआ लोम, Vol- I – Vol- V, गिलज़ोम ऑफसेट, आइज़ोल, 2006, 2007, 2007, 2008, 2010 (चुटकुलों की किताब)
13) कोलकिल पिआह् लमत्लुआङ, गिलज़ोम ऑफसेट, आइज़ोल, 2015 (फैंटेसी परक उपन्यास)

सवाल 2. आपने कब से लिखना आरंभ किया और आपको साहित्यिक रचना की प्रेरणा कहाँ से मिली?

जवाब: मुझे बचपन से ही कहानी और कॉमिक्स पढ़ने की आदत थी। मगर, लिखने की उतनी इच्छा नहीं थी। सन् 1988 में मैंने आइज़ोल की एक साप्ताहिक पत्रिका में छपी एक लघु कहानी (धारावाहिक) पढ़ी तो मुझे वह बहुत ही सामान्य ढंग से लिखी हुई मालूम पड़ी। इसलिए मुझे विश्वास हुआ कि मैं भी लिख सकता हूँ। मैंने दो कहानियाँ लिख डालीं, मगर दोनों को पूरा नहीं किया। सन् 1992 में मैंने 'पारतेई' और 'ज़ुआली (ह्मङ्ईना लेह् हुआतना)' की रचना की और इसी साल हमारे क्षेत्र (तुइथियाङ वेङ) में आयोजित निबंध व गीत लेखन प्रतियोगिता में भी मुझे द्वितीय स्थान प्राप्त हुआ।

सन् 1994 में हमने मिज़ोरम गोस्पेल सेंटेनरी मनायी, जिसमें कई अंग्रेज़ और अन्य जातियों के लोग मिज़ोरम आए थे। हमने उन्हें नाटक के रूप में हमारे पूर्वजों का इतिहास दिखाया। हमें मिस्टर विंचेस्टर की हत्या के बाद हमारे ईसाई होने की प्रक्रिया के बारे में बताना भी बहुत अच्छा लगता है। हमें टेलीविजन पर और सम्मेलनों में अक्सर ऐसे मिज़ो पुरुष दिखते हैं जिनकी पीठ झुकी हुई होती है, जो साफ-साफ बोल नहीं पाते और जो कुछ पागल से लगते हैं। अपने पूर्वजों को हम ऐसा दिखाते हैं मानो वे पिछड़ी जाति के थे, जिनके पास अपने समाज को चलाने के लिए कोई व्यवस्थित नियम नहीं था और जो बंदरों से कुछ ही बेहतर, जंगलों में यूँहीं विचरण करने वाले थे। हम जिस प्रकार खुद को प्रस्तुत करते हैं, उसका आने वाली पीढ़ी और अन्य जातियों के लोगों के हमारे प्रति नजरिए पर बहुत गहरा असर पड़ता है। इसलिए आने वाली पीढ़ी के लिए मैं यह लिखकर रखना जरूरी

समझता हूँ कि भले ही हमारे पूर्वजों का रहन-सहन अत्यंत साधारण था, पर वे पिछड़े और डरपोक नहीं थे। इसके लिए मैंने अपनी पूरी क्षमता से उनके (पूर्वजों) इतिहास को खोजा भी। सन् 1994 में मैंने 'क मि हुआइसेन लेह् क पसलठा' (ऐतिहासिक उपन्यास) और 'पसलठाते नि ह्नुह्नुङ' (ऐतिहासिक उपन्यास) का ढाँचा तैयार किया था, जिसे मैंने 1997 में लिखना आरंभ किया और 2002 में उन्हें पूरा कर पाया। 'रुआम राई थुरूक' (रहस्यमय रोमांस उपन्यास) को मैंने 1996-98 में लिखा।

मुझे लगता है कि मिज़ो जाति के प्रति मेरी चिंताएँ, मिज़ो जाति के लिए कुछ करने की मेरी इच्छा, मेरे अपने विचार और मेरी कल्पनाएँ ही मुझे किताबें लिखने के लिए प्रेरणा और चुनौती देती हैं।

सवाल 3. आपने किन-किन विषयों को लेकर रचना की है तथा उन विषयों के चुनाव के क्या कारण थे?

जवाब: मुझे लगता है कि ऊपर के पहले और दूसरे सवालों के जवाब में इसका जवाब शामिल है। 'कोलकिल पिआह लमत्लुआङ' (फैंटेसी परक उपन्यास) को मैंने पहले तो दृष्टांतकथा (allegory) के रूप में लिखने की कोशिश की, मगर मैंने जब उसका प्लॉट तैयार किया तो वह मुझे मेरे विचारों की दुनिया की ओर ले गया, तो मैंने उसी दिशा में उसे लिखा। इसके अलावा अन्य जातियों की अपनी कई महान किंवदंतियों और फैंटेसी पर आधारित कहानियाँ हैं, जिससे मेरे मन में यह इच्छा जगी कि मिज़ो में भी ऐसे उपन्यास हों।

'क मि हुआइसेन लेह् क पसलठा' और 'पसलठाते नि ह्नुह्नुङ' मिज़ो लोगों की महानता को प्रस्तुत करने की इच्छा पर लिखी गई है। मेरी पहली दो कहानियाँ 'पारतई' और 'ज़ुआली (ह्मङ्ईना लेह् हुआतना)' ऐसी कहानियाँ हैं कि जो मन में आया और मैंने लिख दिया। इसके अलावा मेरी कहानियाँ भी किसी उद्देश्य से लिखी गई नहीं है। 'इनदउना लेह् ह्मङ्ईना' (धार्मिक उपन्यास) और 'कोलकिल पिआह् लमत्लुआङ' लिखने की तैयारी में मैंने ग्रीक कहानियों से खूब सामग्री एकत्र की और उसी से मैंने इन्हें ग्रीक कहानियों के आधार पर लिखा। 'क पी थोंथु मिन थ्रिल्ह् चु' में मैंने मिज़ो की ऐसी कहानियों को रखा है जिसे मिज़ो लोग नहीं जानते और जिसे लिपिबद्ध नहीं किया गया है और मैं जिन्हें संभाल कर रखना चाहता हूँ। मगर चूँकि किताब के रूप में इन्हें प्रकाशित करने के लिए इनकी संख्या कम थी तो मैंने इसमें अन्य जातियों की कहानियों को भी शामिल किया। जब मैं 'ज़उलाइफ' (Zolife) नामक मासिक पत्रिका का संपादक था, तब मैं महान मिज़ो पुरुषों से अपनी बातचीत को छापा करता था। आगे चलकर मैंने लोगों के साक्षात्कार को संग्रहित कर 'मिज़ोपा तीति (देह् लोह् सकई हुआई)' नामक किताब निकाली। इन प्रौढ़ लोगों की बातचीत से मुझे 1917 में मिज़ो युवकों के समूह के फ्रांस जाने के विषय में और मिज़ो वीर-युवकों के विषय में और अधिक जानकारी मिली। इस तरह मैंने फिर 'मिज़ो लेह् वाई चनचिनबु' और मुझे प्राप्त पुरानी किताबों के साथ 'ज़उरम मि श्राङते अन वाङलाई' नामक किताब को पूरा किया। मुझे विश्वास है कि 'मिज़ोपा तीति' और 'ज़उरम मि श्राङते अन वाङलाई' नामक ये किताबें मिज़ो लोगों के लिए बहुत उपयोगी होंगी।

'रुआम राई थुरूक' (रहस्यमय रोमांस उपन्यास) को मैंने मात्र मनोरंजन के लिए लिखा है। मगर इसे लिखने की एक वजह यह भी है कि सन् 1995 के दौर में मिज़ो नौजवानों के बीच शैतान की पूजा करने का प्रचलन था। यह सब खुद को अलग साबित करने और शक्ति प्राप्त करने के लिए था। इस रचना के माध्यम से मैं यह दिखाना चाहता था कि शैतान उन्हें वह शक्तियाँ नहीं दे सकता जिनकी उन्हें उम्मीद है।

'अन तिआ लोम' चुटकुलों की किताब है। इसको लिखने के पीछे कोई विशेष कारण नहीं था। इसमें मैंने लोगों की हास्यास्पद बातचीत का संग्रह किया है।

सवाल 4. क्या आपने मिज़ो विद्रोह के विषय को लेकर कोई रचना की है? मिज़ो विद्रोह को लेकर आपकी क्या धारणा है?

जवाब: 'रुआम राई थुरूक' (रहस्यमय रोमांस उपन्यास) में मिज़ो विद्रोह थोड़ा दिखता है। 'खुआवाङ लोहलेङ' नामक लघु कहानी एम.एन.एफ. के लोगों की बातचीत से प्राप्त उनके पूर्वी पाकिस्तान (बांग्लादेश) में रहने के अनुभवों पर आधारित है। 'कोलकिल पिआह लमत्लुआङ' की कथा मिज़ो विद्रोह से शुरू होती है, मगर इसमें आगे मिज़ो विद्रोह नहीं दिखता। मतलब मैंने उसका बस नामात्र का प्रयोग किया है।

मिज़ो विद्रोह के विषय में मेरे विचार: मिज़ो जमीन की आज़ादी की चाह रखने वाले इस जमीन से प्रेम करने वाले सामने आए, उनका खून बहा, अपनी जमीन और जाति के लिए कई लोगों ने पूरी वीरता के साथ दुश्मनों का मुक़ाबला किया। इसलिए मैं उन वीरों का अत्यधिक सम्मान करता हूँ और उनके बलिदान को

मैं महान मानता हूँ। मगर ऐसा लगता है कि उनके उच्च अधिकारियों की तरफ से इसे राजनीति खेलने का ज़रिया ही समझा गया।

सवाल 5. ऐसा लगता है कि मिज़ो लेखकों ने मिज़ोरम में स्त्रियों की परिस्थिति को दर्शाते हुए कम कहानियों की रचना की है। आपके विचार से इसके क्या कारण हो सकते हैं? स्त्रियों के विषय में आपने क्या कोई रचना की है?

जवाब: मुझे लगता है कि स्त्रियों की परिस्थितियों को दर्शाने वाली रचना मिज़ो लोगों के पास बहुत कम है। एल. बिआकलिआना ने 'ललि' की रचना की और पु ललथङफाला ने 'साङी इनलेङ' नाटक की। अब से कुछ साल पहले एच. ललरेमरुआती ने सन् 2014 में 'ह्लिमथ्ला' की रचना की। मेरी जानकारी में ये ही कुछ रचनाएँ हैं, जिनमें स्त्रियों की स्थिति का चित्रण हुआ है। इसके अलावा, प्रो. ललत्लुआङलिआना खिआङ्ते द्वारा रचित नाटक 'रउपुईलिआनी', पि खोलकूङी रचित 'जोलपला थ्लान त्लाङ', साङ्ज़ुआला पचुआउ के नाटक 'दुहमङा और दारदिनी' आदि हैं, जिनमें स्त्रियों की स्थिति को दर्शाया गया है। मेरी कोई ऐसी रचना नहीं है, जिनमें स्त्रियों की स्थिति को प्रस्तुत किया गया हो।

जब हम यह कहते हैं कि स्त्रियों की परिस्थिति को दर्शाने वाली रचना कम है तो यह भी है कि मिज़ो लोगों के पास उपन्यास और कहानियाँ भी अभी ज्यादा नहीं हैं। मेरा मानना है कि अगर अधिक मात्रा में रचनाएँ होगी तो स्त्रियों की स्थितियों को दर्शाने वाली रचनाओं की संख्या भी बढ़ जाएगी।

सवाल 6. क्या आपको लगता है कि मिज़ो कहानी लेखन की दिशा में प्रगति हुई है? मिज़ो कहानी लेखन में आपको क्या कमी नजर आती है और किन-किन बातों में हमें आगे बढ़ने की जरूरत है?

जवाब: प्रगति तो हुई है, मगर सोचता हूँ कि सोशल मीडिया ने इसकी प्रगति में रोक तो नहीं लगा दी? कहानी लेखन के मामले में हमारी कमियों को मैं फिलहाल कह नहीं सकता, मगर हमारी कमियाँ तो जरूर होंगी। कहानी लिखने के लिए बहुत जरूरी है ज्यादा पढ़ना और ज्यादा चीजों को अनुभव करना।

सवाल 7. क्या आपकी रचनाओं का हिन्दी में अनुवाद किया गया है? मिज़ो रचनाओं के हिन्दी में अनुवाद को लेकर आपके क्या विचार हैं?

जवाब: मेरी कहानियों एवं लेख का हिन्दी में अनुवाद हुआ हो, ऐसी मुझे कोई जानकारी नहीं है। अनुवाद के विषय में मैं चाहता हूँ केवल हिन्दी में ही नहीं, हमारी रचनाओं का अन्य भाषाओं में भी ज्यादा-से-ज्यादा अनुवाद हो।

सवाल 8. क्या आप अन्य भाषाओं में भी लिखते हैं?

जवाब: नहीं लिखा है।

सवाल 9. आपकी कहानी 'खामोश है रात' के शीर्षक को हिन्दी में रखने के पीछे क्या कारण है?

जवाब: इस कहानी को मैंने सत्य घटना को आधार बनाकर लिखा है। दिसम्बर, सन् 1871 में प्रथम वाई लिआन (बाहरी लोगों का समूह) ने मिज़ोरम में प्रवेश किया।

सिपाहियों के एक समूह ने क्रिसमस के समय वानबोङ की झूम खेतों (जिसकी फसल कट चुकी थी) में अपना कैंप बनाया। मिज़ो वीर युवक उनपर आक्रमण करने गए तो वीर युवकों ने क्रिसमस की रात को सिपाहियों को कैंप में गाते हुए सुना। वे सिपाही वाई (बाहरी लोग) थे और उनके अंग्रेज़ उच्च अधिकारी भी संभवतः उनके बीच शामिल थे। हम जानते हैं कि उन्होंने गाना गाया था, मगर हम यह नहीं जानते कि उन्होंने कौन-सा गीत गाया था। अपनी कल्पना से मैंने उन्हें क्रिसमस का प्रसिद्ध गीत 'साईलेंट नाइट' (Silent Night) गवाया। इस गीत का दुनिया की विभिन्न भाषाओं में अनुवाद किया गया है। यह गीत मिज़ो और हिन्दी में भी अनूदित है। मिज़ो भाषा में इसे 'ज़ान थिआङ रेह' (Zan Thiang Reh) कहा गया है। मैंने जब हिन्दी जानने वाले अपने दोस्तों से पूछा तो उन्होंने मुझे बताया कि हिन्दी में यह 'खामोश है रात' है। मैंने इंटरनेट से इस गीत को निकाला और इस तरह मैंने अपनी कहानी के शीर्षक को 'खामोश है रात' रख दिया। इसके अलावा हिन्दी में शीर्षक रखना मुझे कुछ अलग लगा।

सवाल 10. आपकी कहानियों एवं उपन्यासों में आपकी सबसे पसंदीदा रचना कौन-सी है? यदि कोई आपकी किसी रचना का हिन्दी में अनुवाद करना चाहे तो आप कौन-सी रचना का सुझाव देंगे?

जवाब: मेरी कहानियों और उपन्यासों में मेरा कोई एक सबसे पसंदीदा नहीं है। सभी को मैं पसंद करता हूँ। यदि कोई मेरी रचनाओं का हिन्दी में अनुवाद करना चाहता है तो यह मैं अनुवादक की इच्छा पर छोड़ता हूँ।

सवाल 11. मिज़ो समाज में ईसाइयत के प्रभाव को आप कैसे देखते हैं? आपके विचार से ईसाइयत ने पारंपरिक मिज़ो समाज को कितना बदला है?

जवाब: हम अक्सर ईसाइयत को शांति का जीवन कहते हैं, मगर ऐसा नहीं है, यह युद्ध का जीवन है। यह किसी अन्य प्रकार के नियम के साथ समझौता नहीं कर सकता, बल्कि इसका मकसद केवल जीतना है। 'उनके (मिज़ो लोगों के) पुराने तौर-तरीकों के हिसाब से, उनकी जाति के अनुकूल' भी इसे नहीं कहा जा सकता। सभी पुराने विचार और मान्यताएँ यदि सुसमाचार नहीं हैं तो उन्हें बस फेंक देना है।

सिआमकिमा ने कहा था कि रिह दील (झील) को जॉर्डन नदी ने डूबा दिया। हम अक्सर यह मानते हैं कि अंग्रेज मिशनरियों ने हमारी सुंदर मिज़ो जीवन-शैली को मिटा कर, अंग्रेजी जीवन शैली और संस्कृति जबरदस्ती हम पर थोंप दी। मगर मुझे लगता है कि यह बात पूरी तरह सही नहीं है। नए पत्ते को निकलने के लिए पुराने पत्ते को झड़ना होता है। पुराने पत्तों के झड़े बिना पुराने पत्तों पर नए पत्ते निकाल नहीं सकते। अतः अंग्रेजों ने हमारे गीतों और नृत्य को सांसारिक चीज़े कहकर दरकिनार कर दिया। खुआङ (मिज़ो ढोल) को भी शराब बेचने की जगह पर बजाया जाता था, इसलिए अंग्रेजों ने अपने गीतों को गाने के लिए इसका इस्तेमाल नहीं किया। उन्होंने हमारे सामने ऐसे अनूदित गीत परोसे जिसकी बोली मरोड़ी हुई थी और जिसे गीत के मापदंड से मापा जाए तो उसमें गीत के कोई भी लक्षण न थे, जैसे 'यीशु आसमान में है, दुनिया में जाकर आ जा।' मुझे विश्वास है कि आरंभिक मिज़ो ईसाइयों को इन्हें पचाने में कठिनाई अवश्य हुई होगी। मगर ईसाइयों के जीवन में इस गीत ने बहुत गहरा काम किया।

ऐसी विचित्र घटनाएँ घटी जिससे मिज़ो लोग पहले से परिचित नहीं थे। अंग्रेज मिशनरियाँ अपने साथ ऐसे अद्‌भुत गीत लायीं जो मिज़ो पुरुष के मन को छू

न सके। उस समय को हम नए पत्तों के लिए पुराने पत्तों के झड़ने (पतझड़) का समय मान लें। अतः उन गीतों के माध्यम से वे मुग्ध नहीं हो पाए। फिर मिज़ो पुरुषों के दिलों से मेल खाने वाले मिज़ो लेङ्खोम गीत (सामूहिक गीत जिसे मिज़ो पारंपरिक ढोल के साथ गाया जाता है, जो भजन हो भी सकते हैं और नहीं भी) का जन्म हुआ। पातेआ, कामलला, सी. जेड. हुआला और अन्य लोगों ने धड़ाधड़ ऐसे गीतों की रचना की। ये गीत खुआङ के अनुकूल भी थे। इस तरह खुआङ मिज़ो चर्च का एक अभिन्न अंग बन गया।

पुरानी मिज़ो जीवन शैली बचाए रखने की उम्मीद में पेरी साहब (Perry Sahab) ने ज़ोलबूक को फिर से स्थापित किया, मगर वह दुनिया के विकास और नयी संस्कृति के बिल्कुल अनुकूल न रह गया। पुराना समय और मिज़ो संस्कृति धीरे-धीरे बहती चली गयी। नयी मिज़ो ईसाई संस्कृति का जन्म हुआ। यदि मिशनरी 'उनकी जाति के अनुकूल' कहकर हमें सुसमाचार सुनाते तो मुझे नहीं लगता कि इस संस्कृति का जन्म हो पाता।

मगर, यदि हम पुरानी बातों को याद रखने और पूर्वजों की चीजों को संरक्षित रखने की जरूरत नहीं समझेंगे तो हमारा भविष्य ज्यादा उज्ज्वल नहीं होगा। अपनी जन्मभूमि को भूलकर उसपर हँसने वाली जाति समृद्ध नहीं होती। चर्च का हद से ज्यादा कट्टर होना भी खतरा है। कुछ समय पहले कुछ ऐसे लोग भी थे जो छेइ नृत्य (मिज़ो सांस्कृतिक नृत्य) को भी शैतान के रूप में देखते थे। वैसे लोग पारंपरिक मिज़ो विरासत और पुरानी जीवन शैली को याद रखना जरूरी नहीं समझते और उसे दफना तक देना चाहते हैं। वे कहते हैं कि "ईसाइयत ही हमारी संस्कृति है।" उन्हें अक्सर 'रीति-रिवाज' का मतलब भी पता नहीं होता। मिज़ो लोगों की सुंदर जीवन शैली के कई पक्षों को हम ईसाइयत के अंदर शामिल कर सकते हैं।

सवाल 12. क्या आपने पारंपरिक मिज़ो समाज पर कोई रचना की है?

जवाब: उपन्यासों में 'क मि हुआइसेन लेह् क पसलठा' और 'पसलठाते नि ह्नुह्नुङ' तथा कहानियों में 'खामोश है रात' और 'थनश्राङ्ग और छीङ्कूङी'।

सवाल 13. कहानी, उपन्यास या लेख आदि को लिखते हुए आप उनकी विधागत संरचना को लेकर कितने सतर्क होते हैं?

जवाब: 'उस तरह का, उस प्रवृत्ति का हो'- यह मैं शुरुआत से नहीं सोचता। मेरे मन में जो आता है, मैं वही लिख देता हूँ। मैं पूर्व सीमा निर्धारण को महत्व नहीं देता।

सवाल 14.क्या आपकी कहानी 'खामोश है रात' पर कोई आलोचनात्मक लेख लिखा गया है? यदि हाँ, तो क्या आप हमें उन पत्र-पत्रिकाओं या पुस्तक के नाम बता सकते हैं?

जवाब: मुझे इस बारे में कोई जानकारी नहीं है।

संदर्भ-ग्रंथ सूची

आधार ग्रंथ:

1. C. Lalnunchanga, Vutduk Kara Meisi, Gilzom Offset, Aizawl, 2011
2. Dr. Laltluangliana Khiangte, Biakliana Robawm, L.T.L. Publications, Aizawl, 2011
3. Dr. Laltluangliana Khiangte, Thang-Zui, L.T.L. Publications, Aizawl, 2016
4. H. Lalrinfela, Chawlhna Tuikam, Gilzom Offset, Aizawl, 2019
5. H. Lalrinfela, Vaihna Vartian, Gilzom Offset, Aizawl, 2019
6. Lalrammawia Ngengte, Hringnun Hlimthla, Mawi-Mawi Computer, Aizawl, 2002
7. Thanseia, Pangdailo, Parteii Offset Printers, Aizawl, 2001
8. Vanneihtluanga, Keimah Ieh Keimah, L.V Art, Aizawl, 2008
9. Za-Thum, Department of Mizo, Mizoram University, L.T.L. Publications, Aizawl, 2017
10. Zikpuii Pa, Lungrualna Tlang, MLC Publications, Aizawl, 2016

सहायक ग्रंथ:

हिन्दी ग्रंथ:

1. कृष्ण कुमार गोस्वामी, अनुवाद विज्ञान की भूमिका, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2016
2. गोपाल राय, उपन्यास की संरचना, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2012
3. गोपाल राय, हिन्दी कहानी का इतिहास (खंड-1), राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2021
4. गोपाल राय, हिन्दी कहानी का इतिहास (खंड-2), राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2016
5. गोपाल राय, हिन्दी कहानी का इतिहास (खंड-3), राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2016
6. डॉ. आरसु, साहित्यानुवाद: संवाद और संवेदना, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, 1995
7. डॉ. एन. ई. विश्वनाथ अय्यर, अनुवाद: भाषाएँ-समस्याएँ, ज्ञान गंगा, दिल्ली, 2018

8. डॉ. भोलानाथ तिवारी, हिन्दी भाषा, किताब महल, इलाहाबाद, 2012
9. डॉ. भ. ह. राजुरकर एवं डॉ. राजमल बोरा, अनुवाद क्या है, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2004
10. डॉ. ललत्लुआङलिआना खिआंगते, मिज़ौ नाटक, श्रीमत रमथङा (अनु.), लुईस बेट, आइज़ोल, 2019
11. प्रो. परमलाल अहिरवाल (संपा.), मिज़ोउ लोक साहित्य, केंद्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा, 2009
12. प्रो. संजय कुमार (संपा.), मिज़ोरम की लोककथाएँ, प्रभात पेपरबैक्स, नयी दिल्ली, 2022
13. भवदेव पांडेय, हिन्दी कहानी का पहला दशक, रेमाधव पब्लिकेशंस, दिल्ली, 2006
14. भोलानाथ तिवारी, अनुवाद विज्ञान, किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2011
15. मधुरेश, हिन्दी कहानी का विकास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2014
16. मुकेश अग्रवाल, भाषा-विज्ञान एवं हिन्दी भाषा, स्वराज प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2015
17. रमणिका गुप्ता, पूर्वोत्तर आदिवासी सृजन मिथक एवं लोककथाएं, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नयी दिल्ली, 2010
18. रीतारानी पालीवाल, अनुवाद प्रक्रिया एवं परिदृश्य, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2018
19. संतोष एलेक्स, अनुवाद प्रक्रिया एवं व्यावहारिकता, ओथर्स प्रैस, नयी दिल्ली, 2016
20. सूरजभान सिंह, अँग्रेजी-हिन्दी अनुवाद व्याकरण, प्रभात प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2018

मिज़ो ग्रंथ:

1. B. Lalthangliana, Mizo Culture, Gilzom Offset, Aizawl, 2013
2. B. Lalthangliana, History of Mizo Literature (Mizo Thu leh Hla), Gilzom Offset, Aizawl, 2019
3. C. Lalawmpuia Vanchiau, Rambuai Literature, Lengchhawn Press, Gilzom Offset, Aizawl, 2014
4. Dr. K.C. Vannghaka, Literature Zungzam, Lois Bet Print & Publication, Aizawl, 2014

5. Dr. Laltluangliana Khiangte, Thli Fim: Thangthar Nun (Hlahril/Poems), L.T.L. Publications, Aizawl, 2001
6. Dr. Laltluangliana Khiangte, Zacham Par-Chhuang, L.T.L. Publications, Aizawl, 2018
7. Fungki (B.A. Mizo Zirlai, MIL- I & II), College Text Book (Mizo) Editorial Board Publication, Gilzom Offset, Aizawl, 2007
8. History of Mizo Literature (Bu Thar), Department of Mizo, Mizoram University, Aizawl, 2017
9. James Dokhuma, Hmanlai Mizo Kalphung, Gilzom Offset, Aizawl, 2021
10. James Dokhuma, Tawng Un Hrilhfiahna, Gilzom Offset, Aizawl, 2018
11. Mizo Department, Mizo Lekhabu Zempui (A Compendium of Mizo Bibliography), Mizoram University, Aizawl, 2005
12. R. Chaldailova, Mizo Pi Pute Khawvel, Gilzom Offset Press, Aizawl, 2011
13. Rambuai Lai Leh Kei, Mizoram Upa Pawl General Headquaters, J.P. Offset Printers, Aizawl, 2010
14. Rev. Z.T. Sangkhuma, Mizo Tawng Grammer, Swapna Printing Works (P) Ltd., Kolkata, 2009
15. Rev. Zairema, Pi Pute Biak Hi, Zorun Publication, Aizawl, 2020
16. Thuhlaril (Litetary Trends & Mizo Literature), College Text Book (Mizo) Editorial Board Publications, Felfim Computer, Aizawl, 2006

अँग्रेजी ग्रंथ:

1. B. Lalthangliana, A Brief History And Culture Of Mizo, Gilzom Offset Press, Aizawl, 2014
2. Jeremy Munday, Introducing Translation Studies: Theories and Applications, Routledge, Abingdon, Endland, 2012

3. Margaret Ch. Zama (Editor), Contemporary Short Stories from Mizoram, Sahitya Akademi, New Delhi, 2018
4. Margaret L. Pachuau, Hand-picked Tales from Mizoram, P. Lal, Calcutta, 2008
5. Mona Baker, In Other Words: A Coursebook on Translation, Routledge, Abingdon, English, 2011

पत्रिकाएँ:

1. Mizo Studies, Prof. R. L. Thanmawia (Editor), Vol.- I, No.- 1, Department of Mizo, Mizoram University, Aizawl, July-September, 2012
2. Mizo Studies, Prof. Laltluangliana Khiangte (Editor-in-Chief), Vol.- VI, No.- 3, Department of Mizo, Mizoram University, Aizawl, July-September, 2017

कोश:

1. बृहत् हिन्दी कोश, कालिका प्रसाद (संपा.), ज्ञानमंडल लिमिटेड, वाराणसी, संवत् 2020
2. Dr. J.T. Vanlalngheta, The Britam Mizo-English Dictionary, Hlawndo Publishing House, Aizawl, 2020
3. English-Mizo Dictionary, Synod Literature & Publication Board, Synod Press, Aizawl, 2019
4. K. Thangchhunga, Dictionary Hindi-English-Mizo, Mualchin Publication & Paper Works, Aizawl, 2013
5. Remkunga, Mizo Tawng Dictionary, Remkunga & Sons, Aizawl, 2020

बायोडाटा

1. **नाम** : रोबी लललोमकिमी
2. **पिता का नाम** : श्री ललथनपुया
3. **माता का नाम** : श्रीमती ह्मिङ्थनज़ाउवी
4. **पता** : ठुआमपुई, आइज़ोल, मिज़ोरम- 796001
5. **जन्मतिथि** : 15.02.1987
6. **शैक्षणिक योग्यता** : क) दसवीं (2003) – प्रथम श्रेणी
   ख) बारहवीं (2005) – द्वितीय श्रेणी
   ग) स्नातक (2012) – प्रथम श्रेणी
   घ) स्नातकोत्तर- हिन्दी (2014) – प्रथम श्रेणी
7. **मोबाइल** : 9862382721
8. **ईमेल** : robylallawmkimi77@gmail.com
9. **भाषा ज्ञान** : हिन्दी, अँग्रेजी, मिज़ो, नेपाली

10. प्रकाशित शोध पत्र :

i. रोबी लललोमकिमी एवं डॉ. अमिष वर्मा, *मिज़ो कहानी का इतिहास: परिचय एवं समस्याएँ*, आलोचन दृष्टि (यूजीसी केयर लिस्टेड), अंक- 23, वर्ष- 06, जुलाई-सितंबर, 2021, ISSN:2455-4219, पृ. 78 - 81

ii. रोबी लललोमकिमी एवं डॉ. अमिष वर्मा, *मिज़ो कहानी का परिदृश्य और उसकी सामाजिकता*, सत्राची (पीयर रिव्यूड), अंक- 30, वर्ष- 09, ISSN: 2348-8425, पृ. 63 - 69

11. संगोष्ठियों में पत्र वाचन:

क्रम सं.	शीर्षक	आयोजक	तिथि
1	'मिज़ो कहानियों की संवेदना'	राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा अभियान (RUSA), मिज़ोरम हिन्दी प्रशिक्षण महाविद्यालय, आइज़ोल और हिन्दी विभाग, मिज़ोरम विश्वविद्यालय, आइज़ोल	29 नवम्बर, 2019
2	मिज़ो साहित्येतिहास लेखन की समस्याएँ	हिन्दी विभाग, मिज़ोरम विश्वविद्यालय, आइज़ोल	12 जून, 2020

(रोबी लललोमकिमी)

अनुसंधित्सु का विवरण

नाम	:	रोबी ललल‍ोमकिमी
उपाधि	:	पीएच.डी.
विभाग	:	हिन्दी
शोध-प्रबंध का शीर्षक	:	**चुनिंदा मिज़ो कहानियों का हिन्दी अनुवाद और विश्लेषण**
प्रवेश तिथि	:	25.07.2019
शोध प्रस्ताव की संस्तुति		
1) विभागीय शोध समिति की तिथि	:	27.04.2020
2) बी.ओ.एस. की तिथि	:	19.05.2020
3) स्कूल बोर्ड की तिथि	:	29.05.2020
मिज़ोरम विश्वविद्यालय पंजीयन संख्या	:	217 of 2005-06
पीएच.डी. पंजीयन संख्या	:	MZU/Ph.D./1421 of 25.07.2019
अवधि विस्तार (एक्सटेंशन)	:	-

(प्रो. सुशील कुमार शर्मा)
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
मिज़ोरम विश्वविद्यालय, आइज़ोल

चुनिंदा मिज़ो कहानियों का हिन्दी अनुवाद और विश्लेषण

CHUNINDA MIZO KAHANIYON KA HINDI ANUVAD AUR VISHLESHAN

[मिज़ोरम विश्वविद्यालय, आइज़ोल के हिन्दी विषय में डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी (पीएच.डी.)

की उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध-प्रबंध]

A THESIS SUBMITTED IN PARTIAL FULFILLMENT OF THE REQUIREMENTS FOR THE DEGREE OF DOCTOR OF PHILOSOPHY

रोबी ललल़ोमकिमी

ROBY LALLAWMKIMI

MZU Regd. No. 217 of 2005-06

Ph.D. Regd. No. MZU/Ph.D./1421 of 25.07.2019

हिन्दी विभाग

शिक्षा एवं मानविकी संकाय

DEPARTMENT OF HINDI

SCHOOL OF EDUCATION AND HUMANITIES

अगस्त, 2022

AUGUST, 2022

चुनिंदा मिज़ो कहानियों का हिन्दी अनुवाद और विश्लेषण

CHUNINDA MIZO KAHANIYON KA HINDI ANUVAD AUR VISHLESHAN

प्रस्तुतकर्ता

रोबी लललोमकिमी

हिन्दी विभाग

ROBY LALLAWMKIMI

Department of Hindi

शोध-निर्देशक

डॉ. अमिष वर्मा

हिन्दी विभाग

Dr. Amish Verma

Department of Hindi

मिज़ोरम विश्वविद्यालय, आइज़ोल के शिक्षा एवं मानविकी संकाय के अंतर्गत
हिन्दी विषय में डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी (पीएच.डी.) की उपाधि के
लिए अपेक्षित आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु प्रस्तुत शोध-प्रबंध का सारांश

Submitted in partial fulfilment of the requirement of the degree of Doctor of Philosophy in Hindi of Mizoram University, Aizawl.

विषयानुक्रमणिका

भूमिका

अध्याय 1: मिज़ो कहानियों का उद्भव-विकास एवं चयनित कहानीकारों का परिचय

1.1 मिज़ो कहानियों का उद्भव और विकास

1.2 चयनित कहानीकारों का परिचय

अध्याय 2: मिज़ो कहानियों का हिन्दी में अनुवाद

2.1 लली (ललओमपुई) [लली (ललओमपुई)]

2.2 आऊखोक लसी (गुंजनस्थल की लसी)

2.3 सिल्वरथङी (सिल्वरथङी)

2.4 राउथ्ललेङ (भटकती रूह)

2.5 पोलितिक जिप्सी (पोलिटिक जिप्सी)

2.6 लेमचन्ना खोवेल (दुनिया एक रंगमंच है)

2.7 लामखुआङ (कटहल का पेड़)

2.8 थ्ललेर पङपार (रेगिस्तान का फूल)

2.9 थिःना थङवल्ह (मौत का महाजाल)

2.10 खामोश है रात (खामोश है रात)

अध्याय 3: मिज़ो से हिन्दी अनुवाद की समस्याएँ

3.1 सांस्कृतिक भिन्नता: रचना की संवेदना के अनुवाद की समस्या

3.2 भाषिक भिन्नता: मिज़ो तथा हिन्दी भाषा की भिन्न प्रकृति

अध्याय 4: अनूदित कहानियों का विश्लेषण: संवेदना पक्ष

4.1 मिज़ो समाज और संस्कृति की अभिव्यक्ति

4.2 मिज़ो समाज पर ईसाइयत का प्रभाव

4.3 मिज़ो समाज का स्त्री पक्ष

4.4 अन्य विविध पक्ष

अध्याय 5: अनूदित कहानियों का विश्लेषण: कला पक्ष

5.1 कथा-शिल्प

5.2 भाषा

उपसंहार

परिशिष्ट

ललरममोया ङेन्ते का साक्षात्कार

सी. ललनुनचङा का साक्षात्कार

संदर्भ ग्रंथ सूची

शोध-प्रबंध सार

चुनिंदा मिज़ो कहानियों का हिन्दी अनुवाद और विश्लेषण

विश्व की विभिन्न भाषाओं की ही तरह मिज़ो भाषा में भी विभिन्न विधाओं में लेखन होता रहा है। ऐतिहासिक दृष्टि से देखा जाए तो मिज़ो भाषा के लिखित साहित्य की आयु अभी बहुत ही कम है। लेकिन मिज़ो समाज में अपने विचारों, संवेदनाओं की अभिव्यक्ति के लिए साहित्य का सहारा तब से लिया जा रहा है, जब इनके पास अपनी लिपि भी न थी। सन् 1870 के बाद वर्तमान मिज़ो वर्णमाला, जिसकी लिपि रोमन है, अस्तित्व में आने लगी। इस वर्णमाला और लिपि को तैयार करने में अँग्रेजी प्रशासक टी. एच. लेविन (1939-1916) की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। डॉ. ललत्लुआङलिआना खिआङते मिज़ो साहित्य के इतिहास संबंधी पुस्तक में मिज़ो साहित्येतिहास के काल विभाजन पर चर्चा करते हुए टी. एच. लेविन के प्रयासों का महत्व बताते हुए लिखते हैं कि "हमें पता चला है कि सन् 1874 में छपी टी. एच. लेविन (जिन्हें मिज़ोरम के लोग 'थङलिआना' कहकर पुकारते हैं) की पुस्तक में मिज़ो भाषा के शब्द तथा अच्छे-अच्छे वाक्य एवं लघु कहानियाँ काफी मात्रा में छपी थीं। उस पुस्तक की आसानी से उपलब्धता के कारण थङलिआना के योगदान को नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता।"[1] यद्यपि इनके द्वारा प्रस्तावित लिपि का इस्तेमाल आगे नहीं किया गया, फिर भी इस पुस्तक का उपयोग बाद के ईसाई मिशनरियों ने मिज़ो सीखने के लिए किया।[2] 11 जनवरी 1894 को दो महत्त्वपूर्ण अँग्रेज़ ईसाई मिशनरी जे.एच.लॉरेन और एफ. डब्ल्यू. सैविज मिज़ोरम पहुँचे।[3] इन दोनों ईसाई मिशनरियों के योगदान से 1894 ई. में वर्तमान मिज़ो लिपि का स्वरूप प्रस्तुत हुआ तथा उसके अध्ययन-अध्यापन की प्रक्रिया आरंभ हुई।

मिज़ो भाषा की लिपि के आने के बाद भी मौलिक कहानियों को अस्तित्व में आने में लगभग 64 वर्ष लग गए। मिज़ो में सभी प्रकार की कथाओं को, चाहे वह लोककथा हो या कहानी हो या फिर उपन्यास, 'थोंथु' ही कहा जाता रहा है। प्रारंभिक मिज़ो कहानियों और उपन्यासों के बीच भी कोई स्पष्ट अंतर नहीं दिखाई पड़ता। इधर कुछेक मिज़ो साहित्यकारों और आलोचकों द्वारा विभिन्न कथा-विधाओं को अलग-अलग नाम देने का प्रयास किया गया है। डॉ. के. सी. वानङ्हाका (Dr. K.C. Vannghaka) ने अपने एक लेख में कहानी को 'थोंथु' और उपन्यास को 'थोंथु फूअःथर' कहा है।[4] आज भी कहानी और उपन्यास के लिए इन दो भिन्न-भिन्न संज्ञाओं का कम ही प्रयोग होता है। मगर विधा के स्तर पर अब इन दोनों में अंतर किया जाने लगा है।

इस शोध-प्रबंध में अनुवाद एवं विश्लेषण के लिए मिज़ो के नौ लेखकों की दस कहानियों को चुना गया है। इनमें प्रथम मिज़ो कहानी के साथ-साथ नौ ऐसी कहानियाँ हैं, जो अपने दशक की प्रतिनिधि कहानियाँ मानी जा सकती हैं और जिनके कथाकार मिज़ो साहित्य के प्रसिद्ध लेखक हैं। इनमें से कई कहानियों को उनकी लोकप्रियता एवं महत्ता के कारण मिज़ोरम के कॉलेजों एवं मिज़ोरम विश्वविद्यालय के मिज़ो विभाग के पाठ्यक्रम में भी शामिल किया गया है। इनमें से नौ कहानियों का अँग्रेजी में भी अनुवाद किया जा चुका है। चयनित दस कहानियाँ इस प्रकार हैं-

क्रम सं.	कहानी का मूल शीर्षक	अनूदित शीर्षक	कहानीकार	प्रकाशन वर्ष
1.	लली (ललओमपुई) Lali (Lalawmpuii)	लली (ललओमपुई)	एल. बिआकलिआना (1918 - 1941)	1937
2.	आऊखोक लसी Aukhawk Lasi	गुंजनस्थल की लसी	ललजुईथङा (1916 - 1950)	1950 से पूर्व

3.	सिल्वरथङी Silvarthangi	सिल्वरथङी	के. सी. ललवुङा (ज़ीकपुई पा) (1929 - 1994)	1958
4.	राउथ्ललेङ Rauthlaleng	भटकती रूह	आर. ज़ुआला (1917- 1990)	1974
5.	पोलितिक जिप्सी Politik Gipsi	पोलिटिक जिप्सी	थनसेइया (1929 - 2018)	1983
6.	लेमचन्ना खोवेल Lemchanna Khawvel	दुनिया एक रंगमंच है	एच. ललरिनफेला (माफ़ा) (1975 - 2018)	1997
7.	लामखुआङ Lamkhuang	कटहल का पेड़	वान्नेइहल्लुआङा (1957)	2002
8.	थ्ललेर पङपार Thlaler Pangpar	रेगिस्तान का फूल	ललरममोया ङेन्ते (1968)	2002
9.	थिःना थङवल्ह Thihna Thangvalh	मौत का महाजाल	एच. ललरिनफेला (माफ़ा) (1975- 2018)	2002
10.	खामोश है रात Khamosh hai Raat	खामोश है रात	सी. ललनुनचङा (1970)	2011

अध्ययन की सुविधा के लिए प्रस्तुत शोध-प्रबंध को पाँच अध्यायों में बाँटा गया है। प्रथम अध्याय **'मिज़ो कहानियों का उद्भव-विकास एवं चयनित कहानीकारों का परिचय'** है। इस अध्याय को दो उप-अध्यायों में बाँटा गया है। इस अध्याय का प्रथम उप-अध्याय **'मिज़ो कहानियों का उद्भव और विकास'** है। इसके अंतर्गत मिज़ो कहानियों के उद्भव एवं विकास का विवेचन किया गया है। मिज़ो आदिवासी समाज में कहानियों को गढ़ने तथा सुनने-सुनाने की मौखिक परंपरा बरसों से चली आ रही है। मिज़ो साहित्य का इतिहास लगभग 150 वर्षों का है जिसमें मौखिक एवं लिखित दोनों ही तरह के साहित्य को शामिल किया गया है और जिसे मिज़ो साहित्यकारों ने अध्ययन की सुविधा के लिए चार काल-

खंडों में बाँटा है। इस काल-विभाजन को मिज़ोरम विश्वविद्यालय द्वारा तैयार की गई पुस्तक 'History of Mizo Literature (Bu Thar)' में प्रस्तुत किया गया है। मिज़ो साहित्येतिहास का काल-विभाजन और उसका नामकरण इस प्रकार किया गया है:-

1) आदि काल: पूर्वजों का समय (1870 से पूर्व)

   [Hun Hmatawng: Pi Pute Hun Lai (1870 hma lam)]

2) प्रारंभिक काल: अंग्रेजों का समय (1870 से 1920)

   [Hun Hmasa: Sapho Hun Lai (1870-1920)]

3) मध्यकाल: निकटवर्ती पिछली पीढ़ी का समय (1920 से 1970)

   [Hun Laihawl: Hranghluite Hun (1920 से 1970)]

4) वर्तमान काल: नई पीढ़ी का समय (1970 से अब तक)

   [Hun Kal Mek: Thangtharte Hun (1970 hnu lam zawng)][5]

उपर्युक्त प्रथम काल-खंड के अंतर्गत मौखिक साहित्य (लोककथा, लोकगीत व किंवदंतियाँ) को स्थान दिया गया है। द्वितीय काल-खंड में इन लोककथाओं व किंवदंतियों के लिप्यंतरित रूप को शामिल किया गया है जिन्हें सन् 1870 के बाद अंग्रेजों द्वारा मिज़ो लिपि के निर्माण के बाद लिपिबद्ध किया गया। इस प्रक्रिया में अंग्रेज़ सरकारी अधिकारियों, ईसाई-मिशनरियों अथवा मिज़ो बुद्धिजीवियों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है।

मौलिक मिज़ो कहानी लेखन की शुरुआत मिज़ो साहित्येतिहास के तृतीय काल-खंड अर्थात् **'मध्यकाल: निकटवर्ती पिछली पीढ़ी का समय (1920 से 1970)'** के दूसरे दशक में एल. बिआकलिआना द्वारा रचित कहानी 'लली' (ललओमपुई) (1937) नामक कहानी से होती है। यह कहानी मिज़ोरम में आयोजित की गई कहानी लेखन प्रतियोगिता के लिए लिखी गई थी और उस प्रतियोगिता में इसे प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ था। यह कहानी

तत्कालीन मिज़ो स्त्रियों की वास्तविक स्थिति को दर्शाती है। अतः मिज़ो मौलिक कहानी लेखन का आरंभ सन् 1937 से हुआ और तब से अब तक तकरीबन चौरासी वर्षों की अवधि में मिज़ो कहानी कथानक और शिल्प दोनों ही दृष्टियों से काफी विकसित हुई है।

प्रथम अध्याय का दूसरा उप-अध्याय **'चयनित कहानीकारों का परिचय'** है। इस उप-अध्याय में दस कहानियों के नौ कहानीकारों का संक्षिप्त परिचय दिया गया है।

शोध-प्रबंध का दूसरा अध्याय **'मिज़ो कहानियों का हिन्दी में अनुवाद'** है। इस अध्याय के अंतर्गत चुनिंदा दस मिज़ो कहानियों का हिन्दी में अनुवाद किया गया है। मूल सामग्री कुल 182 पृष्ठों की है, जिसका अनुवाद लगभग 225 पृष्ठों में हो पाया है।

शोध-प्रबंध का तीसरा अध्याय **'मिज़ो से हिन्दी अनुवाद की समस्याएँ'** है। इस अध्याय को दो उप-अध्यायों में विभाजित किया गया है। इस अध्याय का पहला उप-अध्याय **'सांस्कृतिक भिन्नता: रचना की संवेदना के अनुवाद की समस्या'** है। इसके अंतर्गत हिन्दी प्रदेश तथा मिज़ो समाज की सांस्कृतिक भिन्नता के कारण अनुवाद के दौरान उत्पन्न हुई समस्याओं पर प्रकाश डाला गया है। मिज़ो समाज प्राकृतिक संरचना, जन-जीवन, खानपान, रहन-सहन, वेशभूषा, जीव-जंतु एवं वनस्पतियों आदि की दृष्टि से हिन्दी भाषी प्रदेशों से काफी भिन्न है। यहाँ पाए जाने वाले कई जानवर एवं पेड़-पौधे हिन्दी प्रदेश में नहीं पाए जाते। यहाँ का अपना इतिहास है और अपनी किंवदंतियाँ हैं। यहाँ सदियों से प्रचलित लोककथाएँ, मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ हैं, स्पष्टतः जिनकी छाप हमें मिज़ो कहानियों में देखने को मिलती है। ऐसी स्थिति में हिन्दी में उनके समतुल्य शब्दों को खोजकर सार्थक अनुवाद करना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। किसी भी भाषा का संबंध उसकी सांस्कृतिक विरासत से, उसकी परम्पराओं से होता है, अतः मिज़ो कहानियों का हिन्दी में अनुवाद करते समय सांस्कृतिक समतुल्यों के अनुवाद में कठिनाइयाँ होती हैं। मिज़ो से

हिन्दी में अनुवाद करते समय केवल मिज़ो की संस्कृति का ही नहीं बल्कि हिन्दी प्रदेश की संस्कृति का ज्ञान होना भी अनिवार्य है। कहानियों के अनुवाद में दोनों भाषाओं की संस्कृति को ध्यान में रखते हुए मिज़ो भाषा की संस्कृति से जुड़े हुए शब्दों का हिन्दी भाषा में समतुल्य खोजना होता है। मिज़ो के कई शब्द हैं जिनका समतुल्य हिन्दी में उपलब्ध नहीं है, अतः ऐसे शब्दों का हिन्दी में लिप्यंतरण कर कोष्ठक या पाद-टिप्पणी में थोड़ा विस्तार से अर्थ बता दिया गया है।

मिज़ो स्त्रियों के सांस्कृतिक परिधान को 'पुआन' (Puan) कहा जाता है। 'पुआन' एक विशेष प्रकार से, तरह-तरह की डिज़ाइनों में बुना जाने वाला आयताकार कपड़ा होता है। पुआन को कुछ उसी प्रकार पहना जाता है जिस प्रकार भारत के अन्य इलाकों में लुंगी को पहना जाता है। मगर 'पुआन' का अनुवाद करते हुए उसके लिए 'लुंगी' शब्द का प्रयोग करने से यह संदिग्ध है कि 'पुआन' की असली छवि पाठकों के जहन में बन पाएगी। इससे 'पुआन' का अर्थ अपने वास्तविक रूप में पाठक तक संप्रेषित नहीं हो पाएगा। इसी तरह पारंपरिक मिज़ो घरों के बिस्तरों पर 'पोनपुई' बिछाया जाता है। हिन्दी में 'पोनपुई' शब्द का कोई समतुल्य नहीं मिलता मगर इसके लिए सबसे निकटतम पर्याय 'चादर' या अँग्रेजी का शब्द 'बेडशीट' हो सकता है। मगर 'पोनपुई' एक पारंपरिक चादर जैसी चीज़ है जो असल में आजकल बिस्तरों पर बिछाई जाने वाली चादरों से भिन्न है। पोनपुई के लिए 'चादर' या 'बेडशीट' जैसे शब्द का प्रयोग उस समय के अनुरूप भी नहीं है, जिस समय की पृष्ठभूमि के आधार पर यह शब्द प्रयुक्त हुआ है। इसी प्रकार मिज़ो भाषा के 'ज़ू' शब्द का अर्थ कहानियों की पृष्ठभूमि के आधार पर बदलता रहता है। यदि 'ज़ू' शब्द पारंपरिक संदर्भ में प्रयुक्त होता है तो उसका अर्थ होता है परंपरागत मिज़ो शराब जिसे चावल से बनाया जाता है। मगर जब यह 'ज़ू' शब्द आधुनिक संदर्भ में प्रयुक्त होता है तो इसका अर्थ स्थानीय,

देशी या विदेशी शराब से लगाया जा सकता है। इसलिए कहानियों का अनुवाद करते हुए 'ज़ू' शब्द के लिए महज 'शराब' शब्द का प्रयोग प्रत्येक कहानी के हिसाब से सही नहीं बैठता। ऐसी स्थिति में कहानी के अनुरूप 'ज़ू' के लिए 'ज़ू' शब्द का ही प्रयोग कर कोष्ठक में अर्थ बता देने की आवश्यकता पड़ती है। इस तरह हिन्दी में मिज़ो भाषा के ऐसे पारंपरिक एवं सांस्कृतिक शब्दों के समतुल्य की खोज एक बड़ी समस्या है।

सांस्कृतिक भिन्नता के कारण कहानियों में प्रयुक्त होने वाले मुहावरे एवं लोकोक्तियों के अनुवाद में भी कई समस्या उत्पन्न होती है। मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ समाज के सापेक्ष होती हैं। कभी-कभी मिज़ो मुहावरों का पर्याय हिन्दी में भी मिल जाता है, मगर हमेशा यही स्थिति नहीं रहती है। उदाहरण के लिए 'लली' नामक कहानी में मिज़ो की एक लोकप्रचलित कहावत का प्रयोग किया गया है, जो मिज़ोरम की स्त्रियों की निम्न स्थिति को दर्शाती है। मिज़ो में वह कहावत है-'Hmeichhia leh Palchhia chu thlak theih alawm' (ह्मेइछिआ लेह पलछिआ चु थ्लाक थेई अलोम) जिसका हिन्दी अनुवाद इस प्रकार किया गया है- 'स्त्री और टूटे बाड़ को तो बदला जा सकता है'। इस मुहावरे में 'स्त्री' की तुलना 'बाड़' से की गई है। मिज़ोरम में बाँस काफी ज्यादा मात्रा में पाया जाता है और यहाँ अपने खेतों या घरों की सीमा में बाँस के बने बाड़े को लगाने का काफी प्रचलन है। बाँस के बने बाड़े को समय-समय पर बदला भी जाता है क्योंकि वह बारिश के पानी से कुछ समय बाद खराब हो जाता है। अतः मिज़ो मुहावरे में एक लड़की या स्त्री की तुलना बाँस के बने बाड़े से करना उस समाज में स्त्रियों की निम्न स्थिति को तो दर्शाता ही है, मिज़ो समाज की अन्य व्यावहारिक गतिविधियों का संकेत भी इसमें मौजूद है। मगर इसके हिन्दी अनुवाद से इस कहावत के भाव की गहराई को स्पष्ट कर पाना बहुत ही मुश्किल मगर जरूरी कार्य है। फिर भी मिज़ो मुहावरों-कहावतों का यथासंभव सटीक अनुवाद करने का प्रयास किया गया है।

इसी प्रकार कहानियों में कई ऐसे शब्द हैं, जिनका बिल्कुल सटीक अनुवाद कर पाना बहुत कठिन है। वैसी स्थिति में उनका लिप्यंतरण कर उनका अर्थ कोष्ठक में या संदर्भ में दे दिया गया है।

ऐसे शब्दों के कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं: 'अर बोम' (Ar bawm), नुला रीम (Nula Rim), लसी (Lasi), सब्बथ (Sabbath), टेस्टीमोनी (Testimony), कउश्रण उपा (Kohhran Upa), संडे स्कूल (Sande Sikul), थेमत्लेङ (Themtleng), ओललेन (Awllen), थ्लाम (Thlam) आदि।

तीसरे अध्याय का दूसरा उप-अध्याय **'भाषिक भिन्नता: मिज़ो तथा हिन्दी भाषा की भिन्न प्रकृति'** है। इस उप-अध्याय के अंतर्गत मिज़ो तथा हिन्दी की भाषागत भिन्नता के कारण अनुवाद में आने होने वाली समस्याओं का विवेचन किया गया है। मिज़ो और हिन्दी भाषा की प्रकृति एक दूसरे से काफी भिन्न है। बोलने एवं लिखने में मिज़ो भाषा हिन्दी से कई अर्थों में भिन्न है। इसी भाषिक भिन्नता के कारण मिज़ो से हिन्दी में अनुवाद करते समय कई समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। हिन्दी की वाक्य संरचना में कर्ता-कर्म-क्रिया का क्रम बना रहता है मगर मिज़ो की वाक्य संरचना में यह क्रम बदलता रहता है। उदाहरण के लिए हम मिज़ो के एक सामान्य से वाक्य को देख सकते हैं-

'chaw ka ei dawn' (चौ क अइ दोन) यहाँ 'चौ' कर्म, 'क' कर्ता और 'अइ दोन' क्रिया है। अतः अगर हम इसका मिज़ो वाक्य संरचना के आधार पर अनुवाद करते है तो इसका अनुवाद कुछ ऐसा होगा- 'खाना मैं खाऊँगी/खाऊँगा', जो हिन्दी भाषा की दृष्टि से सही वाक्य नहीं है। इसका सही अनुवाद होगा 'मैं खाना खाऊँगी/खाऊँगा'। इसी प्रकार एक अन्य मिज़ो वाक्य है 'muangchangin a kal a' (मुआङ्चाङ्इन अ कल अ)। यहाँ

'मुआङ्चाङ्इन' क्रिया विशेषण, 'अ' कर्ता और 'कल अ' क्रिया है। यदि इस वाक्य का शब्दशः अनुवाद किया जाए तो यह होगा- 'धीरे से वह गया / गई', जो कि हिन्दी की प्रकृति के अनुरूप नहीं है। हिन्दी में इसे 'वह धीरे से गया/गई' लिखा जाएगा। इसके अलावा मिज़ो एवं हिन्दी के वाक्य में एक अंतर यह भी है कि मिज़ो वाक्य के आधार पर लिंग भेद नहीं किया जा सकता है। अतः अनुवाद के दौरान ज़रा-सी भी असावधानी से चूक हो सकती है। अनुवाद के दौरान स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा की इन व्याकरणिक भिन्नताओं का ख्याल रखना पड़ता है, जो निश्चित तौर पर अनुवादक से विशेष सावधानी की माँग करता है।

मिज़ो भाषा में एक ही तरह से लिखे जाने वाले शब्दों के एक से अधिक उच्चारण होते हैं और उनके उच्चारण की भिन्नता के आधार पर उनके अर्थ भी बदल जाते हैं। ऐसी स्थिति में अनुवाद के दौरान मूल कहानी को पढ़ते हुए थोड़ी-सी भी लापरवाही या चूक बहुत बड़ी गलती साबित हो सकती है। इसके अलावा कई बार यह जानना काफी मुश्किल हो जाता है कि कहानीकार के द्वारा प्रयोग किए गए शब्द का सही उच्चारण क्या है और वह किस अर्थ में प्रयुक्त किया गया है। मूल कहानी को पढ़ते समय सावधानी बरतने से हम इस समस्या से बच सकते हैं। एक उदाहरण से इस बात को बेहतर ढंग से समझा जा सकता है:

"Lali pawh chuan a hmui chu a han hung na a, a kai hman ngang lo."[6]

उपर्युक्त वाक्य में प्रयुक्त 'hmui' (ह्मूई) शब्द के भिन्न-भिन्न उच्चारण के अनुसार तीन अर्थ बनते हैं- होंठ, दिलकश गंध और चरखा। एक ही शब्द के उच्चारण के अनुसार अर्थ में भिन्नता होने से यह समझने में कठिनाई होती है कि कहानीकार ने इस शब्द को वास्तव में किस अर्थ में प्रयोग किया है। उपर्युक्त मिज़ो वाक्य का सही अनुवाद होगा- 'लली सूत कातने के लिए चरखे पर बैठी, मगर कात न सकी'। लेकिन अनुवाद के दौरान सावधानी न

बरतने पर पूरे वाक्य का अर्थ बदल सकता है। अतः सही अनुवाद करने के लिए मिज़ो वाक्य में प्रयुक्त प्रत्येक शब्द को सही संदर्भ में ध्यान से पढ़ने की ज़रूरत है।

एक से अधिक अर्थ देने वाले कुछ और मिज़ो शब्दों को देखा जा सकता है: Zo (समाप्त/ऊँचा/क्षमता), Sum (धन/ओखली/मापदंड/संयम), Hnar (नाक/श्रोत/खर्राटा), Vei (बायाँ/से ग्रस्त/ किसी चीज के लिए घोर चिंता), In (घर/पीना) आदि।

चुनी गई मिज़ो कहानियों में कहीं-कहीं वाक्य काफी लंबे-लंबे हैं। कहानियों के पात्रों के संवाद कहीं-कहीं बड़े लंबे हैं। ऐसे लंबे-लंबे वाक्यों और संवादों के अनुवाद में कई बार काफी कठिनाई होती है। पूरे मिज़ो वाक्य का एक साथ हिन्दी में अनुवाद करने से कभी-कभी अर्थ का अनर्थ होने की स्थिति पैदा हो जाती है। अतः इस समस्या से बचने के लिए मिज़ो के एक वाक्य को तोड़कर हिन्दी में एक से अधिक वाक्यों में उसका अनुवाद कर दिया गया है। ऐसा करने से कथन की सार्थकता बनी रहती है। इसी तरह कभी-कभी एक से अधिक मिज़ो वाक्यों को मिलाकर हिन्दी में एक वाक्य में ही उसका अनुवाद प्रस्तुत कर दिया गया है। एक उदाहरण देखा जा सकता है: “Hetiang hi kan lo ni ta si a, i phu tawk awm hnate pawh kan dap ve a ni ang chu le, Han leng vel la, kei lah ka mawl si, Aizawl mi lian leh Ministerte pawh han be vel la, dik tak leh fel takin thil i ti zel ang a, Pathian-in a tanpui ang che, tiin thu a rawn a.”[7] (हेतियाङ ही कन लो नि त सी अ, इ फू तोक ओम ह्नाते पोह् दप वे अ नि अङ चु ले, हन लेङ वेल ल, केई लह क मोल सी, आइज़ोल मि लियान लेह मिनिस्टरते पोह् हन बे वेल ल, दिक तक लेह फेल तकइन थिल इ ति ज़ेल अङ अ, पथियान-इन अ टनपुइ अङ चे, तिइन थू अ रोन अ)

मिज़ो के उपर्युक्त एक वाक्य का हिन्दी में अनुवाद इस प्रकार एक से अधिक वाक्यों में किया गया है: 'उसके चाचा ने उसे सलाह दी कि हमारी स्थिति तो तुम समझते ही हो। अब तुम्हें अपने लायक नौकरी की तलाश करनी चाहिए। तुम ज़रा निकलकर छान-बीन करो, मैं तो ठहरा बेवकूफ। आइज़ोल के बड़े लोगों और नेताओं से ज़रा बात करो। सच्चाई और ईमानदारी के साथ सब कुछ करते रहना, भगवान तुम्हारी मदद ज़रूर करेंगे।'

शोध-प्रबंध का चौथा अध्याय **'अनूदित कहानियों का विश्लेषण: संवेदना पक्ष'** है। इस अध्याय को चार उप-अध्यायों में विभाजित किया गया है। इस अध्याय का पहला उप-अध्याय **'मिज़ो समाज और संस्कृति की अभिव्यक्ति'** है। इसमें कहानियों में अभिव्यक्त मिज़ो समाज एवं संस्कृति का विश्लेषण किया गया है। मिज़ो समाज और संस्कृति से अभिप्राय है मिज़ो लोगों का खानपान, रहन-सहन, विवाह, नृत्य-संगीत, उत्सव-त्योहार, धार्मिक-मान्यताएँ, परम्पराएँ, स्त्री-पुरुष-संबंध आदि। मिज़ो समाज आदिवासी समाज है, मगर इस समाज में पश्चिमी सभ्यता का, ईसाइयत का, आधुनिकता का बहुत गहरा अच्छा और बुरा दोनों प्रभाव पड़ा है, जिसके कारण यह समाज अपने कई पारंपरिक सामाजिक व सांस्कृतिक तत्वों को भुला चुका है और बहुत से नवीन एवं आधुनिक तत्वों को अपना रहा है। चुनिंदा दस कहानियों में भी हमें इस समाज के कुछ पुराने एवं कुछ नवीन तत्व देखने को मिलते हैं। इन कहानियों के माध्यम से कुछ पारंपरिक एवं कुछ नवीन सामाजिक एवं सांस्कृतिक तत्वों को रेखांकित करने का प्रयास किया गया है। इसके अंतर्गत मिज़ो समाज में व्याप्त पितृसत्तात्मकता, परोपकारिता, विवाह एवं त्योहारों, आदि का विश्लेषण किया गया है।

मिज़ो आदिवासी समाज पितृसत्तात्मक समाज है। इस समाज में पुरुषों का स्थान स्त्रियों से ऊँचा समझा जाता है। पुराने जमाने में प्रत्येक मिज़ो गाँव में गाँव का मुखिया या

सरदार हुआ करता था, जिसे मिज़ो भाषा में 'लल' (Lal) कहा जाता है। इन मिज़ो गाँवों के मुखिया के रूप में पुरुषों को ही नियुक्त किया जाता था। मिज़ो इतिहासकार जेम्स दउखूमा के अनुसार वह पुरुष जो गाँव में सबसे बहादुर समझा जाता था और जो अपने लोगों की रक्षा करने में सक्षम समझा जाता था, उसे ही आरंभ में मिज़ो गाँवों में मुखिया चुना जाता था। विभिन्न मिज़ो जनजातीय कबीलों में अपना-अपना मुखिया नियुक्त किया जाता था। उस मुखिया के बाद उसके उत्तराधिकारी के रूप में उसके सबसे छोटे पुत्र को मुखिया के रूप में स्वीकार किया जाता था। यदि किसी मुखिया का अपना कोई पुत्र न हो तो ऐसी स्थिति में उसकी रखैल से पैदा हुए उसके सबसे ज्येष्ठ पुत्र को मुखिया बनने का अधिकार दिया जाता था।[8] पितृसत्तात्मक व्यवस्था का व्यवहार समाज की छोटी ईकाई अर्थात् परिवार से ही आरंभ होता है। किसी भी आम परिवार में इसके विभिन्न रूप देखने को मिलते हैं। मिज़ो परिवारों में परिवार की देखरेख की ज़िम्मेदारी और महत्वपूर्ण पारिवारिक निर्णयों का जिम्मा घर के पुरुषों के ऊपर ही रहता है। पिता की अनुपस्थिति में यह जिम्मा घर के बेटों पर या पुरुष रिश्तेदारों के ऊपर रहता है। परिवार में पिता द्वारा लिया गया निर्णय अंतिम निर्णय के रूप में स्वीकारा जाता है। चाहे निर्णय लेने वाला पिता गैरजिम्मेदार और नकारा ही क्यों न हो। उदाहरण के लिए 'लली' नामक कहानी में लली के पिता शराब की लत में डूबे रहते हैं, बावजूद इसके वे अपनी बेटी की शादी धन-संपत्ति की लालच में अमीर घर के एक बिगड़े लड़के के साथ कराने का फैसला लेते हैं। यह फैसला लेते समय वे न तो अपनी पत्नी की सलाह लेते हैं और न ही अपनी बेटी की बात सुनते हैं। उनके इस फैसले का विरोध करने के बावजूद लली को मालूम था कि वही उनका अंतिम फैसला है और उसकी शादी होकर ही रहेगी। लली की माँ समझदार है और असल में घर की जिम्मेदारियों को उठाने वाली है, मगर फिर भी वह अपने शराबी पति के उत्पीड़न का शिकार होती है और अपनी बेटी के लिए खुद निर्णय नहीं ले पाती है या कहें उसे निर्णय लेने का अधिकार ही नहीं दिया जाता। 'लली' कहानी पर लिखते हुए अपने एक लेख में

एफ. ललजुईथङा (सहायक आचार्य, सैंट ज़ेवियर कॉलेज, लेङपुइ) मिज़ो परिवार के विषय में लिखते हैं- “Mizo in chhung chu ‘pa lalna in’ a nih avangin, in chhung khurah pa thu chu thu tawp a ni a, a nupui fanaute tan hnial theih a ni lo.”[9] अर्थात् ‘मिज़ो परिवार का मुखिया घर का पिता होता है, इसलिए घर के मसलों में पिता का निर्णय अंतिम निर्णय होता है, जिसका विरोध उसकी पत्नी और बच्चे नहीं कर सकते।’ केवल ‘लली’ ही नहीं बल्कि अन्य कहानियों में भी हमें यह व्यवस्था देखने को मिलती है। ‘आऊखोक लसी’ कहानी में भी लसियों का सरदार/मुखिया पुरुष लसी को ही बताया गया है। अतः इन कहानियों से भी यह पता चलता है कि मिज़ो समाज पितृसत्तात्मक समाज है।

मिज़ो समाज आपस में मिलजुल कर रहने वाला समाज है। एक दूसरे के घरों में आना-जाना, दुःख-सुःख में एक दूसरे का साथ देना, कठिनाई में पड़े अपने पड़ोसियों या किसी अपरिचित राहगीर की मदद करना मिज़ो समाज में आदर्श और श्रेष्ठ आचरण समझा जाता है। परोपकारिता को मिज़ो भाषा में ‘Tlawmngaihna’ (त्लोमङइना) कहा जाता है, जिसका अर्थ ‘हार न मानना’[10] कह सकते हैं। अपने निजी भय और स्वार्थ को परे रखकर, अपने कष्टों की चिंता किए बिना, बिना किसी की प्रशंसा की इच्छा किए किसी भी जरूरतमंद की मदद करना यहाँ मनुष्यता का श्रेष्ठ कर्तव्य समझा जाता है। मिज़ो लोग परोपकारिता को सर्वोच्च नैतिक मूल्य के रूप में स्वीकार करते हैं। मिज़ो लोग परोपकारी व्यक्ति का खूब आदर भी करते हैं। यहाँ सुख-दुख के अवसरों पर एक-दूसरे की मदद करना बहुत ही आम बात है। यहाँ के लोग निःस्वार्थ भाव से विपत्ति में पड़े लोगों की सहायता करना अपना कर्तव्य समझते हैं। परोपकारिता की यह धारणा बरसों से मिज़ो समाज में विशेष स्थान प्राप्त करती आ रही है। अभी भी यह मिज़ो संस्कृति का अहम हिस्सा है। बी.

ललथङलिआना के अनुसार “परोपकारिता मिज़ो जीवन शैली का सबसे सुंदर अंश है। प्रत्येक जाति का विपत्ति के समय में अपने जैसे अन्य मनुष्यों की मदद करने का अपना-अपना तरीका है। मगर मिज़ो लोगों ने इसको और आगे बढ़ाने के लिए, उसे विकसित करने के लिए ‘ज़ोलबूक’ की स्थापना की। परोपकारिता जैसे नैतिक मूल्यों को और बढ़ावा देने के लिए उनके मुखियों ने ‘नौपुई’ जैसे पुरस्कार का भी प्रावधान किया।”[11] अतः इस समाज में लोग एक दूसरे को विपत्ति की घड़ी में अकेला महसूस नहीं होने देते। कभी-कभी वे रोगियों के घरों में रात को ठहरकर रोगी की देखभाल करने में उनकी सहायता करते हैं। परोपकारिता का यह रूप हमें ‘लली’ नामक कहानी में देखने को मिलता है। जब लली के छोटे भाई ज़ुआला की तबीयत बिगड़ जाती है, तब लली की सहेली थनी और उसका मित्र मोया उनके घर ठहरकर उनकी मदद करते हैं। जब आस-पड़ोस के लोगों को पता चलता है कि ज़ुआला की हालत खराब है तो वे भी उनके घर उसका हाल-चाल जानने आ जाते हैं। ज़ुआला की मृत्यु हो जाने पर उसके चर्च के उसके छोटे-छोटे दोस्त भी अपना शोक व्यक्त करने और उसे अंतिम विदाई देने उसके घर उपस्थित होते हैं। ‘लामखुआङ’ की नवनवी और ‘लेमचन्ना खोवेल’ के युवक की मृत्यु पर भी हमें मिज़ो लोगों की परोपकारिता की भावना साफ दिखाई पड़ती है।

‘लली’ एवं ‘सिल्वरथङी’ नामक कहानियों में हमें यह देखने को मिलता है कि आज के मिज़ोरम में होने वाले विवाह में परंपरा, आधुनिकता एवं ईसाइयत का मिश्रण है। ‘लली’ चूँकि आरंभिक कहानी है, वहाँ हमें यह देखने को मिलता है कि शादी-ब्याह के मामले में घर के बड़ों की ही बात चलती थी। अपने पसंद के लड़के को चुनने की आज़ादी लड़की को नहीं थी। के. ज़ोला अपने लेख ‘मिज़ो शादी के तरीके’ में प्राचीन मिज़ो समाज की शादी के विषय में लिखते हैं कि “उनका मानना था कि माता-पिता की रजामंदी से की

गई शादी अधिक सफल होती है।”[12] लली के पिता भी लली की शादी अपनी मर्ज़ी से ही कराने की कोशिश करते हैं मगर बेटे की मृत्यु के कारण जब उनका हृदय परिवर्तन हो जाता है और वे सच्चे ईसाई बन जाते हैं, तब वे लली की शादी उसके पसंद के मसीही युवक बिआकमोया से गिरजाघर में करा देते हैं। शादी के लिए पलाई (मध्यस्थ) भेजने की प्रक्रिया मिज़ो प्राचीन परंपरा का अंग है, मगर गिरजाघर में शादी करने की प्रथा ईसाइयत के प्रभाव से अपनायी गयी है। 'सिल्वरथङी' कहानी में सिल्वरथङी की दूसरी शादी भी ईसाई नियम के अनुसार गिरजाघर में ही होती है। शादी के विषय में प्राचीन मिज़ो मान्यता की झलक हमें 'खामोश है रात' कहानी के एक प्रसंग में मिलता है जिसमें यह बताया गया है कि मिज़ो समाज में दो बार शादी को स्थगित या रद्द करने को अशुभ माना जाता है। अतः इन कहानियों के माध्यम से हम मिज़ो संस्कृति को कुछ बेहतर ढंग से जान सकते हैं।

चौथे अध्याय का दूसरा उप-अध्याय **'मिज़ो समाज पर ईसाइयत का प्रभाव'** है। मिज़ो समाज पर ईसाइयत एवं पश्चिमी सभ्यता का बहुत गहरा प्रभाव रहा है, जिसकी छाप हमें यहाँ की कहानियों में देखने को मिलती है। मिज़ोरम की लगभग अट्ठानवे प्रतिशत आबादी ईसाइयत को स्वीकार कर चुकी है। ईसाइयत को अपनाने के बाद मिजो समाज बाइबिल की शिक्षा पर आधारित धार्मिक संस्थाओं के नियमों का पालन करने पर जोर देता रहा है। चूँकि ये कहानियाँ मिज़ो लोगों के ईसाइयत को स्वीकारने के बाद लिखी गई कहानियाँ हैं, जिनके सभी लेखक भी ईसाई हैं, इसलिए स्वाभाविक तौर पर इन कहानियों में ईसाई जीवन मूल्यों का अत्यधिक चित्रण हुआ है। यीशु में विश्वास रखने वालों, गिरजाघरों से संबंधित कार्यक्रमों में भाग लेने वालों को अच्छे व्यक्तित्व वाला मनुष्य समझा जाता है। कई मिज़ो कहानियाँ भी इन्हीं मान्यताओं एवं ईसाई जीवन मूल्यों को केंद्र में रखकर रची गई हैं। पहली मिज़ो कहानी 'लली' के सभी सकारात्मक पात्र जैसे स्वयं लली, लली की माँ, मोया, आदि ईसाई हैं और वे बाइबिल के वचनों एवं गिरजाघरों के

नियमों को महत्व देने वाले हैं। वहीं दूसरी ओर लली के पिता और उसकी बुआ का बेटा मना व उसके मित्र दुष्ट पात्र हैं, जो शराब पीते हैं और गिरजाघरों के कार्यक्रमों में भाग भी नहीं लेते। मिज़ो समाज में 'मसीही-परिवार' अर्थात् यीशु मसीह की शिक्षा की नींव पर खड़े परिवार को 'आदर्श-परिवार' समझा जाता है। इसीलिए लली हमेशा अपने पिता के लिए चिंतित रहती है। वह कहानी की शुरुआत से ही चाहती है कि उसके पिता का हृदय परिवर्तन हो और स्वाभाविक तौर पर इस कहानी का अंत लली के पिता के हृदय परिवर्तन के साथ होता है। 'लली' कहानी में एक प्रसंग में जब लली की माँ लली और मोया को परमेश्वर के प्रेम के विषय में बातें करते सुनती है और गर्व महसूस करती है तब कहानीकार कहता है कि "...उसकी माँ का गर्व करना अस्वाभाविक न था।"[13] जाहिर है कि यहाँ के युवक-युवतियों का परमेश्वर के विषय में विचार करना, बातें करना माता-पिता के लिए प्रायः गर्व का विषय है।

चौथे अध्याय का तीसरा उप-अध्याय **'मिज़ो समाज का स्त्री पक्ष'** है। प्रायः ऐसा समझा जाता है कि गैर आदिवासी स्त्री की तुलना में आदिवासी स्त्री, विशेषकर पूर्वोत्तर की आदिवासी स्त्री अपेक्षाकृत स्वतंत्र होती है। यह बात कुछ हद तक ठीक भी है। भारत के अन्य राज्यों से तुलना करें तो मिज़ो समाज में स्त्रियों की स्थिति बेहतर है। पढ़ाई-लिखाई, नौकरी व कारोबार के मामले में यहाँ की स्त्रियाँ काफी स्वतंत्र हैं। पढ़ाई-लिखाई के मामले में और शादी-ब्याह के मामले में उनपर कोई सामाजिक व पारिवारिक पूर्व निर्धारित समय सीमा नहीं थोपी जाती और न ही नौकरी संबंधी कोई रोक-टोक रहती है। यहाँ की लड़कियों को, चाहे वह जवान हो, विवाहित हो, विधवा हो या फिर तलाकशुदा, घर से बाहर निकलकर नौकरी करने से नहीं रोका जाता है। बल्कि, उनके परिजन उन्हें काम करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। यहाँ के बाज़ारों, विभिन्न प्रकार की दुकानों, विभिन्न

सरकारी विभागों के कार्यालयों में पुरुषों की तुलना में स्त्रियों की तादाद अधिक है। यहाँ की स्त्रियाँ खेतों के कामों में भी अपने परिवार वालों का और अपने पति का हाथ बँटाती है। व्यापार के क्षेत्र में तो मिज़ो पुरुषों की तुलना में यहाँ की स्त्रियों की भागीदारी अधिक है। कई परिवारों में तो कमाने वाली स्त्री ही होती है। मगर इन सब के बावजूद पितृसत्तात्मक समाज में उसकी अपनी समस्याएँ व अपने संघर्ष भी हैं। उन्हें उपर्युक्त सुविधाएँ प्राप्त होने के कारण प्रायः यह भ्रम बना रहता है कि यहाँ की स्त्रियाँ पूर्णतः आज़ाद हैं। मगर उनकी समस्याओं को समझने के लिए मिज़ो समाज तथा यहाँ के साहित्य को नजदीक से देखने-परखने की आवश्यकता है। 'लली' कहानी में मिज़ो समाज की स्त्रियों की दयनीय स्थिति और तत्कालीन मिज़ो समाज में विवाह संबंधी निर्णयों में बेटियों की परतंत्रता का चित्रण किया गया है। आज की मिज़ो स्त्री को यद्यपि अपना पति चुनने की स्वतंत्रता है, मगर आज भी कई स्त्रियाँ लली की माँ की तरह अपने शराबी पति के हाथों घरेलू हिंसा की शिकार होने को मजबूर हैं। मिज़ो में एक प्रसिद्ध कहावत है जिसका उपयोग एल. बिआकलिआना ने अपनी कहानी 'लली' में भी किया है- 'Hmeichhia leh palchhia chu thlak theih alawm'[14] (ह्मेइछिआ लेह पलछिआ चु थ्लाक थेई अलोम) अर्थात् 'स्त्री और टूटे बाड़े को तो बदला जा सकता है।' इस कहावत में स्त्री की तुलना टूटे हुए बाड़ से की गई है, साथ ही उसे आसानी से बदले जा सकने की बात भी काही गई है। इससे यहाँ की लड़कियों की वास्तविक स्थिति एवं उनके प्रति पुरुषों के नजरिए का पता चलता है।

अनूदित दस मिज़ो कहानियों में से तीन कहानियाँ 'लली' (ललओमपूई), 'सिल्वरथङी' और 'थ्ललेर पङपार' (मुख्य पात्र पुई) स्त्री केंद्रित कहानियाँ हैं और प्रथम दो कहानियों के शीर्षक भी उनकी मुख्य स्त्री पात्र के नाम पर आधारित हैं। 'लामखुआंङ' नामक कहानी में भी मुख्य पात्र की प्रेमिका के रूप में नवनवी नामक स्त्री पात्र का चित्रण किया गया है। इनके अलावा इन कहानियों में कई अन्य स्त्री पात्र शामिल हैं। इन सभी स्त्री

पात्रों, विशेषकर लली, सिल्वरथङी, पुई और नवनवी के जीवन के माध्यम से मिज़ो समाज की स्त्रियों की समस्याओं को जानने और समझने का प्रयास किया गया है। मिज़ोरम में बिन ब्याही माँ या पति से अलग हुई औरत को 'नुथ्लोई' कहा जाता है। 'थ्ललेर पङपार' की मुख्य पात्र पुई बिनब्याही माँ है। समाज की कई अन्य लड़कियों की तरह पुई भी झूठे प्यार का शिकार बन गर्भवती हो जाती है और फिर अपने प्रेमी के द्वारा ठुकराई जाती है। ऐसा ही हाल 'लामखुआङ' की नवनवी का भी है जिसे ललदाईलउवा गर्भवती बना कर छोड़ देता है। 'सिल्वरथङी' कहानी की सिल्वरथङी भी अपने बच्चे को लेकर अपने पति से अलग हो जाती है। इन तीनों कहानियों की स्त्रियों में समानता यह है कि तीनों अपने बच्चे की ज़िम्मेदारी स्वयं उठाती है और बच्चों की देखभाल में बच्चों के पिता का कोई योगदान नहीं होता। मिज़ो समाज में लली, सिल्वरथङी, नवनवी और पुई जैसी औरतों की संख्या काफी अधिक है। अतः ये कहानियाँ मिज़ो स्त्री की समस्या के एक विशेष पक्ष को उद्घाटित करती हैं।

चौथे अध्याय का चौथा उप-अध्याय **'अन्य विविध पक्ष'** है। इसके अंतर्गत अनूदित मिज़ो कहानियों में अभिव्यक्त अन्य विभिन्न मुद्दों का विवेचन किया गया है, जैसे मिज़ो समाज में शराब व ड्रग्स की समस्या, मिज़ो विद्रोह, मिज़ो समाज में 'लसी' की परिकल्पना, राजनीतिक भ्रष्टाचार, आदि। इस उप-अध्याय में उन तमाम पक्षों का विश्लेषण किया गया है, जिनका चित्रण हमें अनूदित कहानियों में मिलता है। इस उप-अध्याय में चयनित मिज़ो कहानियों में अभिव्यक्त मुद्दों के आधार पर मिज़ो समाज के स्वरूप और उसकी समस्याओं को स्पष्ट करने की कोशिश की गई है।

राजनीतिक भ्रष्टाचार तथा सरकारी नौकरियों में भाई-भतीजावाद का बोलबाला मिज़ोरम में भी खूब है। सरकारी नौकरी की इस होड़ में भाई-भतीजावाद और जान-

पहचान का अपना अलग ही मायने और महत्व है। समाज की इसी सच्चाई को मिज़ो कहानीकार थनसेइया ने अपनी कहानी 'पोलितिक जिप्सी' में दिखाया है, जहाँ एक गरीब मगर मेहनती योग्य लड़के से उसकी शिक्षक की नौकरी छीन ली जाती है और इस व्यवस्था से, सरकारी पार्टियों से निराश होकर वह 'जिप्सी' जैसा जीवन व्यतीत करने लगता है। सरकारी नौकरी के प्रति लोभ और उसमें व्याप्त भ्रष्टाचार 'सिल्वरथङी' कहानी में भी दिखाई पड़ती है, जहाँ सिल्वरथङी के ताऊजी आला अफसरों को शराब और मीट से बहलाकर उसके पिता की पी. डब्ल्यू. डी. बंगला के चौकीदार की नौकरी छीन लेते हैं।

मिज़ोरम में शराब तथा ड्रग्स की समस्या एक गंभीर समस्या है, जो युवाओं और बहुत सारे परिवारों को बर्बाद और खोखला कर रही है। इन्हीं समस्याओं को उजागर करने वाली कहानियाँ हैं- 'लेमचन्ना खोवेल', 'लामखुआङ', 'लली' और 'थ्ललेर पङपार'। लली के पिता की शराब पीने की आदत के कारण ही उनका पारिवारिक माहौल खराब और तनावपूर्ण रहता है। 'लामखुआङ' कहानी का मुख्य पात्र ललदाईलउवा भी शराबी है। वह अपने बारे में बताते हुए कहता है कि "मेरे पिता आइज़ोल बाजार के प्रसिद्ध व्यापारी थे।...हम तीन भाई थे और हम तीनों ने व्यापार के बदले शराब को चुना। पिताजी के गुजर जाने के बाद हमने दुकान बेच दी और यूँहीं भटकते रहे। मेरे दोनों बड़े भाई शराब के कारण गुजर चुके हैं। अब बच गया बस मैं।"[15] 'लेमचन्ना खोवेल' कहानी का मुख्य पात्र भी ड्रग्स के ओवर डोज़ से मर जाता है। इन कहानियों के माध्यम से मिज़ो कहानीकारों ने मिज़ो समाज में व्याप्त नशे की समस्या को उजागर किया है, जो हमारे समाज को अंदर से खोखला कर रही है।

मिज़ोरम की सबसे महत्वपूर्ण राजनैतिक ऐतिहासिक घटना रही है सन् 1966 का मिज़ो विद्रोह। यह विद्रोह असम तथा केन्द्रीय सरकार के प्रति मिज़ो लोगों के असंतोष का परिणाम था। इस विद्रोह के दौरान आम मिज़ो जनता तथा मिज़ो नेशनल आर्मी के बीच

भी तनाव एवं संदेह का जन्म हुआ, जिसका परिणाम यह हुआ कि आम मिज़ो लोगों की हत्या मिज़ो नेशनल आर्मी (एम.एन.ए.) के वॉलंटियरों के द्वारा की जाने लगी। इसी पृष्ठभूमि पर आधारित कहानी है 'थिःना थङवल्ह'। इस कहानी के माध्यम से मिज़ो नेशनल आर्मी तथा सामान्य मिज़ो जनता के बीच उत्पन्न तनाव एवं संदेह की स्थिति का मार्मिक चित्रण एच. ललरिनफेला ने किया है। उस समय सामान्य जनता की स्थिति ऐसी थी मानो वे चक्की के दोनों पाटों के बीच पिस रहे हों। इस कहानी को पढ़कर मिज़ोरम के शांतिपूर्ण वातावरण में आए परिवर्तनों को और साथ ही मिज़ो विद्रोहियों और मिज़ो जनता के आपसी रिश्तों के तनाव को महसूस किया जा सकता है।

मिज़ो समाज में ईसाइयत एवं पश्चिमी सभ्यता का बहुत गहरा प्रभाव रहा है, जिसकी छाप हमें यहाँ की कहानियों में देखने को मिलती है। मिज़ो समाज में ईसाइयत से जुड़ी विभिन्न ऐतिहासिक घटनाएँ हैं, जिनमें से एक मिज़ोरम की जमीन पर प्रथम 'क्रिसमस केरोल' का गाया जाना भी है। इसी ऐतिहासिक घटना पर आधारित है कहानीकार सी. ललनुनचंङा की कहानी 'खामोश है रात'।

शोध-प्रबंध का पंचम अध्याय **'अनूदित कहानियों का विश्लेषण: कला पक्ष'** है। इस अध्याय को दो उप-अध्यायों में बाँटा गया है। पहला उप-अध्याय **'कथा-शिल्प'** है। कथा-शिल्प से तात्पर्य है- कथा लिखने का कलात्मक पक्ष। प्रत्येक कहानीकार अपनी कहानी को रोचक एवं दिलचस्प बनाने के लिए विभिन्न प्रकार की शैली का वहन करता है। कभी-कभी वह एक ही रचना में एक से अधिक शैलियों का भी प्रयोग करता नजर आता है। कहानी लेखन में कई शैलियों का प्रयोग किया जाता है जैसे: वर्णनात्मक शैली, आत्मकथा शैली, भावात्मक शैली, व्यंग्यात्मक शैली, संवाद शैली, काव्यात्मक शैली आदि। इसके अलावा कहानीकार विभिन्न कथा-प्रविधियों- जैसे पूर्वदीप्ति, दृश्यात्मक-परिदृश्यात्मक प्रविधि,

आत्मकथात्मक शैली, आदि का भी प्रयोग करता है। चुनिंदा दस मिज़ो कहानियों के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि इन कहानियों में शिल्प पक्ष की तमाम सीमाओं के बावजूद उपर्युक्त शैलियों एवं प्रविधियों का प्रयोग मिज़ो कहानीकारों ने किया है।

पंचम अध्याय का दूसरा उप-अध्याय **'भाषा'** है। इसके अंतर्गत चुनिंदा मिज़ो कहानियों की भाषा का विवेचन किया गया है। मिज़ो की चुनिंदा दस कहानियों की भाषा के विषय में यह कहा जा सकता है कि संप्रेषणीयता की दृष्टि से उनकी भाषा सहज एवं सरल है। प्रायः सभी कहानियों में देशकालानुसार आम बोलचाल की भाषा का प्रयोग मिलता है। कुछेक कहानियों में कठिन साहित्यिक भाषा या काव्यात्मक भाषा का प्रयोग दिखाई पड़ता है, मगर उनकी मात्रा काफी कम है। चुनिंदा दस मिज़ो कहानियों में मिज़ो की आम बोलचाल की भाषा में घुल-मिल चुके हिन्दी एवं अँग्रेजी शब्दों का प्रयोग देखने को मिलता है। ऐसे शब्द सहजता से मिज़ो भाषा में मिल गए हैं। ऐसे शब्दों का उच्चारण कहीं-कहीं तो मूल जैसा ही है और कहीं-कहीं शब्दों के उच्चारण में भिन्नता भी देखने को मिलती है। उदाहरण के तौर पर कुछ हिन्दी और अँग्रेजी के शब्दों को देखा जा सकता है, जो मिज़ो कहानियों में प्रयुक्त हुए हैं:

हिन्दी के शब्द: बाबू, बंगला, चौकीदार, सिपाही (सिपई), बाज़ार (बजार), मिस्त्री (मिस्तिरी), सरकार (सोरकार), आदि।

अँग्रेजी के शब्द: जूनियर, संडे स्कूल, टेस्टीमोनी, मिनिट, इलैक्ट्रिक, प्राइमारी, हॉलीवुड आदि।

मिज़ो कहानीकारों ने कथानक के अनुरूप कई मिज़ो कहावतों एवं मुहावरों का सुंदर प्रयोग किया है। कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं:

- ‘Hmeichhia leh zawhte chu a chul nel peih peih’. (ह्मेइछिआ लेह् जोह्ते चु अ चूल नेल पेइह पेइह)
  अर्थात् ‘स्त्री और बिल्ली उन्हीं को ज्यादा पसंद करती हैं, जो उन्हें ज़्यादा सहलाते हैं।’
- ‘‘Tinther tiat pawh’ (तिनथेर तियात पोह)
  अर्थात् ‘नाखून की नोक भर’ (‘रत्ती भर’ का समानार्थी।)
- ‘tui tla mangang chuan buhpawl pawh an pawm e’ (तुइ त्ला मङअङ चुआन बुह्पोल पोह अन पोम ए)
  अर्थात् ‘पानी में डूबता हुआ व्यक्ति धान की बालियों के सहारे को भी स्वीकार कर लेता है।’ (‘डूबते को तिनके का सहारा’ का समानार्थी)

इनके अलावा और भी दर्जनों मुहावरों-लोकोक्तियों का प्रयोग चयनित मिज़ो कहानियों में मिलता है।

‘उपसंहार’ के अंतर्गत शोध के निष्कर्षों को प्रस्तुत किया गया है। यह कहा जा सकता है कि मिज़ो कहानीकारों ने अपनी इन कहानियों के माध्यम से मिज़ो समाज की सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक मान्यताओं व विचारों को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। हालाँकि हिन्दी कहानियों की तुलना में ये मिज़ो कहानियाँ अभी थोड़ी अपरिपक्व नजर आती हैं, तब भी मिज़ो कहानीकारों का यह प्रयास सराहनीय है और हमारा यह विश्वास है कि समय के साथ कलात्मक एवं कथात्मक दोनों दृष्टियों से इसमें गहराई और गंभीरता का संचार होगा। मिज़ो कहानियों की भाषा सरल व सहज है और यह अपनी संस्कृति का उद्घाटन करने में सफल हुई है।

इसके बाद परिशिष्ट के रूप में दो मिज़ो कहानीकारों के साक्षात्कार रखे गए हैं। यह साक्षात्कार लिखित प्रश्नावली के आधार पर लिया गया है। दोनों लेखकों ने लिखित रूप में अपने जवाब मिज़ो में दिए हैं, जिनका हिन्दी में अनुवाद शोधार्थी के द्वारा किया गया है।

संदर्भ

---

[1] हिस्ट्री ऑफ मिज़ो लिटरेचर (बु थर), डिपार्टमेंट ऑफ मिज़ो, मिज़ोरम यूनिवर्सिटी, आइज़ोल, 2017, पृ. सं. 9 (मूल संदर्भ मिज़ो में; अनुवाद मेरा)

[2] बी. ललथङलिआना, हिस्ट्री ऑफ मिज़ो लिटरेचर (मिज़ो थू लेह ह्ला), गिलज़ोम ऑफसेट, आइज़ोल, 2019, पृ. सं. 78 (मूल संदर्भ मिज़ो में; अनुवाद मेरा)

[3] वही, पृ. 83

[4] हिस्ट्री ऑफ मिज़ो लिटरेचर (बु थर), डिपार्टमेंट ऑफ मिज़ो, मिज़ोरम यूनिवर्सिटी, आइज़ोल, 2017, पृ. 206

[5] वही, पृ. 11-24 (यह किताब मिज़ो में हैं; संदर्भ का अनुवाद मेरा)

[6] डॉ. ललत्लुआङलिआना खिआङते, बिआकलिआना रउबोम, एल. टी. एल. पब्लिकेशन्स, आइज़ोल, 2011, पृ. 180

[7] थनसेइया, पाङदाईलउ, पारतेई ऑफसेट प्रिंटर्स, आइज़ोल, 2001, पृ. 8

[8] जेम्स दउखूमा, ह्मानलाई मिज़ो कलफुङ, गिलज़ोम ऑफसेट, आइज़ोल, 2021, पृ. 188 (मूल संदर्भ मिज़ो में; अनुवाद मेरा)

[9] डॉ. ललत्लुआङलिआना खिआङते, ज़चम पार-छुआङ, एल. टी. एल. पब्लिकेशन, आइज़ोल, 2018, पृ. 175

[10] बी. ललथङलिआना, मिज़ो कल्चर, गिलज़ोम ऑफसेट, आइज़ोल, 2013, पृ. 200

[11] वही, पृ. 266 (मूल संदर्भ मिज़ो में; अनुवाद मेरा)

[12] फुङकी, कॉलेज टेक्स्ट बुक (मिज़ो) एडिटोरियल बोर्ड पब्लिकेशन, गिलज़ोम ऑफसेट, आइज़ोल, 2007, पृ. 151 (मूल संदर्भ मिज़ो में; अनुवाद मेरा)

[13] डॉ. ललत्लुआङलिआना खिआङते, बिआकलिआना रउबोम, एल. टी. एल. पब्लिकेशन्स, आइज़ोल, 2011, पृ. 167

[14] वही, पृ. 172

[15] वान्नेइहत्लुआङा, केइमाह लेह केइमाह, एल. बी. आर्ट, आइज़ोल, 2008, पृ. 134

शोध-प्रबंध के महत्वपूर्ण निष्कर्ष

1) मिज़ो में कहानी लेखन की शुरुआत सन् 1937 से हुई है। मिज़ो की पहली कहानी 'लली (ललओमपुई)' है, जिसके लेखक एल. बिआकलिआना हैं। आरंभ में मिज़ो भाषा में सभी प्रकार की कथाओं को चाहे, वह लोककथा हो या कहानी हो या फिर उपन्यास, उसे 'थोंथु' ही कहा जाता था। मगर के. सी. वानङ्हाका ने कहानी को 'थोंथु' और उपन्यास को 'थोंथु फुअःथर' की संज्ञा दी है। आरंभिक मिज़ो कहानियाँ प्रायः लंबी और विभिन्न खंडों में विभक्त होती थीं, मगर बाद की कहानियों की लंबाई अपेक्षाकृत कम है।

2) चयनित दस कहानियाँ मिज़ो की महत्वपूर्ण कहानियाँ मानी गई है, इसलिए इन्हें विद्यालयों, कॉलेजों एवं विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में भी शामिल किया गया है। इन दस कहानियों में से नौ कहानियों का अँग्रेजी में भी अनुवाद किया जा चुका है। कुछेक कहानियों को मिज़ो विषय के पाठ्यक्रम में ही नहीं अँग्रेजी विषय के पाठ्यक्रम में भी शामिल किया गया है।

3) हिन्दी एवं मिज़ो की सांस्कृतिक एवं भाषागत भिन्नता के कारण अनुवाद के दौरान कई तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ा है। मिज़ो एवं हिन्दी वाक्यों की संरचना की प्रकृति में भी अंतर है जिसके कारण अनुवाद में समस्या उत्पन्न होती है।

4) मिज़ो में कई शब्द ऐसे हैं जो समान रूप से लिखे जाते हैं मगर उच्चारण की भिन्नता के आधार पर उनके अर्थ बदलते रहते हैं, ऐसे शब्दों का सही-सही अनुवाद करना एक चुनौती बनकर खड़ा होता है।

5) मिज़ो भाषा के कई शब्द ऐसे हैं जिनके पर्याय या निकटतम पर्याय हिन्दी भाषा में अनुपलब्ध हैं, जैसे पुआन, ज़ोलबूक, पोलकूत, पोनपुई आदि जैसे शब्दों का पर्याय हिन्दी में उपलब्ध नहीं है। ऐसे प्रत्येक शब्दों का लिप्यंतरण कर उनका अर्थ बताते हुए कोष्ठक या पाद-टिप्पणी में उन्हें व्याख्यायित करना पड़ा है।

6) कुछ मिज़ो कहानियाँ मनोरंजनपरक हैं तो कुछ आदर्शवादी एवं यथार्थवादी। लगभग सभी मिज़ो कहानियों में ईसाइयत का गहरा प्रभाव देखने को मिलता है। कहानियों में प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से ईसाई धर्म की मान्यताओं का उद्घाटन एवं प्रचार हुआ है। ऐसी कहानियों में यीशु में विश्वास न रखने वाले पात्रों को प्रायः नकारात्मक पात्र के रूप में चित्रित किया गया है और उन्हें शराबी व बदमाश दिखाया गया है।

7) मिज़ो समाज में स्त्रियों की दयनीय स्थिति को 'लली', 'सिल्वरथङी', 'थ्ललेर पङपार' और 'लामखुआङ' जैसी कहानियों के माध्यम से दिखाने का प्रयास किया गया है। मगर ये कहानियाँ भी स्त्री की वास्तविक परिस्थितियों को पूरी गहराई से नहीं दिखा पातीं।

8) मिज़ो कहानीकारों में मुखरता की कमी दिखाई पड़ती है। समाज की वास्तविकता को बेखौफ प्रस्तुत करने में वे कुछ हिचकिचाते-से नजर आते हैं।

9) मिज़ो कहानियों में सामाजिक आलोचना का अभाव है। कुछेक कहानीकारों ने समाज में व्याप्त बुराइयों को अपनी रचना के माध्यम से दिखाने की कोशिश की है, मगर ज़्यादातर कहानियों में इसका अभाव दिखाई पड़ता है।

10) एच. ललरिनफेला (माफ़ा) की कहानी 'लेमचन्ना खोवेल' में सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक बुराइयों की कटु आलोचना की गई है। इसी तरह लेखक थनसेइया भी 'पोलितिक जिप्सी' नामक कहानी के माध्यम से सरकारी तंत्र एवं राजनीतिक पार्टियों की भ्रष्टता की कटु आलोचना करते हैं।

11) 'थिःना थङवल्ह' कहानी में माफ़ा ने मिज़ो विद्रोह के अनकहे पक्ष को प्रकाश में लाने का काम किया है और 'खामोश है रात' नामक कहानी में सी. ललनुनचङा ने ईसाइयत से जुड़ी मिज़ोरम की एक ऐतिहासिक घटना को अपनी कहानी का केंद्र बनाया है। यह ऐतिहासिक घटना थी मिज़ोरम की जमीन पर पहली बार 'क्रिसमस करोल' का गया जाना।

12) चयनित कहानियों के विश्लेषण से यह पता चलता है कि इन मिज़ो कहानियों में अभी कलात्मक ऊँचाई का अभाव है। ये कहानियाँ मुख्यतः वर्णनात्मक एवं आत्मकथात्मक शैली में ही लिखी गई हैं और कहीं-कहीं तो ये कहानियाँ निबंधात्मकता की भी शिकार हो गई हैं।

13) चयनित मिज़ो कहानियों की भाषा सरल है। कहीं-कहीं यह बहुत सपाट भी हो गई है। भाषा प्रायः पात्रों एवं काल के अनुरूप है। कथानक के अनुकूल कुछ हिन्दी व अँग्रेजी के शब्दों का भी प्रयोग किया गया है। स्वाभाविक तौर पर हिन्दी की तुलना में अँग्रेजी के शब्दों का प्रयोग अपेक्षाकृत ज़्यादा मिलता है।

14) कहानियों में परिस्थितियों के अनुरूप मिज़ो मुहावरों एवं लोकोक्तियों का भी खूब प्रयोग किया गया है। कुछ मुहावरे तो ऐसे भी हैं, जो हिन्दी के मुहावरों से मिलते-जुलते हैं।

15) मिज़ो कहानीकारों ने अपनी कहानियों में विभिन्न कथा-प्रविधियों का प्रयोग किया है, मगर शिल्प की दृष्टि से इन मिज़ो कहानियों में अभी-भी परिपक्वता का अभाव दिखाई पड़ता है।

संदर्भ-ग्रंथ सूची

आधार ग्रंथ:

1. C. Lalnunchanga, Vutduk Kara Meisi, Gilzom Offset, Aizawl, 2011
2. Dr. Laltluangliana Khiangte, Biakliana Robawm, L.T.L. Publications, Aizawl, 2011
3. Dr. Laltluangliana Khiangte, Thang-Zui, L.T.L. Publications, Aizawl, 2016
4. H. Lalrinfela, Chawlhna Tuikam, Gilzom Offset, Aizawl, 2019
5. H. Lalrinfela, Vaihna Vartian, Gilzom Offset, Aizawl, 2019
6. Lalrammawia Ngengte, Hringnun Hlimthla, Mawi-Mawi Computer, Aizawl, 2002
7. Thanseia, Pangdailo, Parteii Offset Printers, Aizawl, 2001
8. Vanneihtluanga, Keimah leh Keimah, L.V Art, Aizawl, 2008
9. Za-Thum, Department of Mizo, Mizoram University, L.T.L. Publications, Aizawl, 2017
10. Zikpuii Pa, Lungrualna Tlang, MLC Publications, Aizawl, 2016

सहायक ग्रंथ:

हिन्दी ग्रंथ:

1. कृष्ण कुमार गोस्वामी, अनुवाद विज्ञान की भूमिका, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2016
2. गोपाल राय, उपन्यास की संरचना, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2012
3. गोपाल राय, हिन्दी कहानी का इतिहास (खंड-1), राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2021
4. गोपाल राय, हिन्दी कहानी का इतिहास (खंड-2), राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2016
5. गोपाल राय, हिन्दी कहानी का इतिहास (खंड-3), राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2016
6. डॉ. आरसु, साहित्यानुवाद: संवाद और संवेदना, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, 1995

7. डॉ. एन. ई. विश्वनाथ अय्यर, अनुवाद: भाषाएँ-समस्याएँ, ज्ञान गंगा, दिल्ली, 2018
8. डॉ. भोलानाथ तिवारी, हिन्दी भाषा, किताब महल, इलाहाबाद, 2012
9. डॉ. भ. ह. राजुरकर एवं डॉ. राजमल बोरा, अनुवाद क्या है, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2004
10. डॉ. ललत्लुआङलिआना खिआंगते, मिज़ौ नाटक, श्रीमत रमथङा (अनु.), लुईस बेट, आइज़ोल, 2019
11. प्रो. परमलाल अहिरवाल (संपा.), मिज़ोउ लोक साहित्य, केंद्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा, 2009
12. प्रो. संजय कुमार (संपा.), मिजोरम की लोककथाएँ, प्रभात पेपरबैक्स, नयी दिल्ली, 2022
13. भवदेव पांडेय, हिन्दी कहानी का पहला दशक, रेमाधव पब्लिकेशंस, दिल्ली, 2006
14. भोलानाथ तिवारी, अनुवाद विज्ञान, किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2011
15. मधुरेश, हिन्दी कहानी का विकास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2014
16. मुकेश अग्रवाल, भाषा-विज्ञान एवं हिन्दी भाषा, स्वराज प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2015
17. रमणिका गुप्ता, पूर्वोत्तर आदिवासी सृजन मिथक एवं लोककथाएं, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नयी दिल्ली, 2010
18. रीतारानी पालीवाल, अनुवाद प्रक्रिया एवं परिदृश्य, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2018
19. संतोष एलेक्स, अनुवाद प्रक्रिया एवं व्यावहारिकता, ओथर्स प्रैस, नयी दिल्ली, 2016
20. सूरजभान सिंह, अँग्रेजी-हिन्दी अनुवाद व्याकरण, प्रभात प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2018

मिज़ो ग्रंथ:

1. B. Lalthangliana, Mizo Culture, Gilzom Offset, Aizawl, 2013
2. B. Lalthangliana, History of Mizo Literature (Mizo Thu leh Hla), Gilzom Offset, Aizawl, 2019
3. C. Lalawmpuia Vanchiau, Rambuai Literature, Lengchhawn Press, Gilzom Offset, Aizawl, 2014

4. Dr. K.C. Vannghaka, Literature Zungzam, Lois Bet Print & Publication, Aizawl, 2014
5. Dr. Laltluangliana Khiangte, Thli Fim: Thangthar Nun (Hlahril/Poems), L.T.L. Publications, Aizawl, 2001
6. Dr. Laltluangliana Khiangte, Zacham Par-Chhuang, L.T.L. Publications, Aizawl, 2018
7. Fungki (B.A. Mizo Zirlai, MIL- I & II), College Text Book (Mizo) Editorial Board Publication, Gilzom Offset, Aizawl, 2007
8. History of Mizo Literature (Bu Thar), Department of Mizo, Mizoram University, Aizawl, 2017
9. James Dokhuma, Hmanlai Mizo Kalphung, Gilzom Offset, Aizawl, 2021
10. James Dokhuma, Tawng Un Hrilhfiahna, Gilzom Offset, Aizawl, 2018
11. Mizo Department, Mizo Lekhabu Zempui (A Compendium of Mizo Bibliography), Mizoram University, Aizawl, 2005
12. R. Chaldailova, Mizo Pi Pute Khawvel, Gilzom Offset Press, Aizawl, 2011
13. Rambuai Lai Leh Kei, Mizoram Upa Pawl General Headquaters, J.P. Offset Printers, Aizawl, 2010
14. Rev. Z.T. Sangkhuma, Mizo Tawng Grammer, Swapna Printing Works (P) Ltd., Kolkata, 2009
15. Rev. Zairema, Pi Pute Biak Hi, Zorun Publication, Aizawl, 2020
16. Thuhlaril (Litetary Trends & Mizo Literature), College Text Book (Mizo) Editorial Board Publications, Felfim Computer, Aizawl, 2006

अँग्रेजी ग्रंथ:

1. B. Lalthangliana, A Brief History And Culture Of Mizo, Gilzom Offset Press, Aizawl, 2014

2. Jeremy Munday, Introducing Translation Studies: Theories and Applications, Routledge, Abingdon, Endland, 2012
3. Margaret Ch. Zama (Editor), Contemporary Short Stories from Mizoram, Sahitya Akademi, New Delhi, 2018
4. Margaret L. Pachuau, Hand-picked Tales from Mizoram, P. Lal, Calcutta, 2008
5. Mona Baker, In Other Words: A Coursebook on Translation, Routledge, Abingdon, English, 2011

पत्रिकाएँ:

1. Mizo Studies, Prof. R. L. Thanmawia (Editor), Vol.- I, No.- 1, Department of Mizo, Mizoram University, Aizawl, July-September, 2012
2. Mizo Studies, Prof. Laltluangliana Khiangte (Editor-in-Chief), Vol.- VI, No.- 3, Department of Mizo, Mizoram University, Aizawl, July-September, 2017

कोश:

1. बृहत् हिन्दी कोश, कालिका प्रसाद (संपा.), ज्ञानमंडल लिमिटेड, वाराणसी, संवत् 2020
2. Dr. J.T. Vanlalngheta, The Britam Mizo-English Dictionary, Hlawndo Publishing House, Aizawl, 2020
3. English-Mizo Dictionary, Synod Literature & Publication Board, Synod Press, Aizawl, 2019
4. K. Thangchhunga, Dictionary Hindi-English-Mizo, Mualchin Publication & Paper Works, Aizawl, 2013
5. Remkunga, Mizo Tawng Dictionary, Remkunga & Sons, Aizawl, 2020